अभिमत

पक्षी संरक्षण की एक पहल राजस्थान के मेनार गांव में चल रही है। कुछ समय पहले मुझे इस गांव में जाने का मौका मिला था। यह गांव उदयपुर से 40 किलोमीटर दूर चित्तौड़गढ़ मार्ग पर स्थित है। इस गांव की पहचान पक्षियों के गांव (बर्डविलेज) के नाम से पहचान बन गई है। यहां के दो तालाब पक्षियों के लिए हैं। तालाबों का नाम भरमेला और ढंड है। यहां न कोई नाव चलती है, न मछलियों का शिकार। न कोई ध्वनि प्रदूषण है और न ही कोई मानवीय गतिविधि।

पक्षियों के संरक्षण की जरूरत

नवाचार

■ बाबा मायाराम

पक्षी हमारे लिए कई तरह से उपयोगी हैं। उनका संरक्षण बहुत जरूरी है। मेनार गांव जैसी पहल अब और भी जगहों पर चल रही हैं। पक्षी अभयारण्य, वन्य जीव अभयारण्यों में इनके संरक्षण के प्रयास किए जा रहे हैं। पक्षियों के प्रति पर्यटकों का भी रूझान बढ़ा है। पक्षी अवलोकन भी बढ़ा है। लेकिन इस तरह की पहलों की और भी जरूरत है। पक्षियों के प्रति संवेदनशीलता की आवश्यकता है।

पक्षी हमारे आसपास चारों तरफ हैं। गांव, शहर, जंगल, नदी और तालाब के आसपास, सभी जगह पक्षी देखे जा सकते हैं। लेकिन कुछ सालों से देखने में आया है कि कई कारणों से पक्षी संकट में हैं, कुछ तो विलुप्ति के कगार पर हैं। आज इस कॉलम में पक्षी और मनुष्य का रिश्ता क्या है, पर्यावरण में उनका योगदान क्या है, उनके संरक्षण की जरूरत क्यों है, इस पर बातचीत करना चाहूंगा।

छुटपन में हम देखते थे कि चिड़ियों की चहचहाहट से सुबह नींद खुलती थी। पेड़ों पर उनका कलरव होता था। गोरैया आंगन में दाना चुगने के लिए आती थीं। इधर-उधर उड़ती रहती थीं। कच्चे घरों में भी चिड़ियाएं घोंसला बनाया करती थीं। घर,गांव व नदियों के आसपास गिद्ध मंडराया करते थे।

हम देखते थे कि किसान अनाजों की बालियां पक्षियों के लिए पेड़ों पर टांग देते थे। सार्वजनिक स्थानों पर और पेड़ों पर पानी पीने के लिए सकोरे टांग दिए जाते थे। कुएं के मुंडेरों पर पक्षी पानी पीते दिखते थे। उनकी मौजूदगी वातावरण को खुशनुमा बनाती थी।

पक्षियों के बारे में कई कहानियां व गीत हैं। लोककथाएं हैं। संस्कृति और इतिहास में पक्षियों का उल्लेख है। सिनेमा में भी पक्षियों के कारनामे दिखाए जाते रहे हैं। पक्षियों की कई मूर्तियां भी हैं। छत्तीसगढ़ में सुआ नाच व मध्यप्रदेश के बुंदेलखंड में पड़की नृत्य भी प्रचलन में हैं।

हमारे देश में काफी विविधता पाई जाती है, क्योंकि यह गर्म जलवायु वाला देश है। अधिक विविधता गर्म जलवायु वाले देशों में पाई जाती है। ठंडे जलवायु वाले देशों में कम विविधता पाई जाती है। इस तरह, यहां पक्षियों की सैकड़ों प्रजातियां हैं। वे रंग-बिरंगे होते हैं। इन्हें देखना रोमांचक होता है, इनका गीत बहुत मधुर होता है। कई आकार के होते हैं और इनका गान व व्यवहार भी अलग-अलग होता है।

पक्षियों की दुनिया अलग है। मोटे तौर कह सकते हैं कि जो उड़ते हैं, वे पक्षी कहलाते हैं, उनके पंख होते हैं। ऐसा भी दिखाई देता है कि सभी पक्षी एक जैसे होते हैं- वे उड़ते हैं, घोंसला बनाते हैं, अंडे देते हैं। लेकिन बारीकी से देखने पर इनमें काफी भिन्नता है।

इन पक्षियों के अलग-अलग आवास स्थल होते हैं। जलवायु के अनुकूल ये अपने अपने आवास स्थल बनाते हैं। कोई रेगिस्तान में पाया जाता है, तो कोई बर्फीले पहाड़ों पर, कोई नदियों के किनारे तो, कोई समंदर के आसपास आशियाना बनाते है। रंग, रूप, और आवाज, और व्यवहार भी अलग-अलग होता है। ऐसे पक्षी भी होते हैं, जो हजारों किलोमीटर दूर देशों से आते हैं, इन्हें प्रवासी पक्षी कहा जाता है।

पेड़-पौधों के पुनर्जनन में, परागीकरण में, खाद्य श्रृंखला में, फसलों के कीट नियंत्रण में पक्षियों का योगदान अहम है। जंगल को बढ़ाने के लिए भी पक्षियों का योगदान है। कई पेड़ों के बीज पक्षी खाते हैं और उनकी विष्ठा के माध्यम से ये बीज मिट्टी में मिल जाते हैं, जब नमी मिलती है, तब अंकुरित हो जाते हैं। इस तरह नया पेड़ बनता है। पक्षियों की विष्ठा खेतों को उर्वर बनाती है। कौआ, चील और गिद्ध अच्छे सफाईकर्मी की तरह काम करते हैं।

पक्षी भी हमारी तरह प्रकृति का हिस्सा हैं। लेकिन पिछले कुछ सालों में पक्षियों पर कई तरह से खतरा मंडरा रहा है। कई पक्षी विलुप्ति के कगार पर है। कुछ दशकों से पर्यावरण को शुद्ध करने वाले गिद्ध अब नहीं दिखते। घर-आंगन में फुदकने वाली गोरैया भी अब कम दिखती है। तोते भी कम दिखते हैं।

प्रकृति के साथ मानवीय छेड़छाड़ के कारण पक्षियों को नुकसान पहुंचता है। मध्यप्रदेश के जिस इलाके में मैं रहता हूं वहां गेहूं के डंठल खेत साफ कराने का चलन बढ़ गया है जिससे सभी तरह से नुकसान है। खेतों में ठंडलों के साथ पेड़-पौधे व छोटे-मोटे जीव जंतु जल जाते हैं। पेड़ पर ही पक्षी रहते हैं, अगर पेड़ नहीं रहेंगे तो वे कहां रहेंगे।

इसी प्रकार, रासायनिक खेती के कारण कई बार पक्षियों के मरने की खबरें आती रहती हैं। जहरीले कीटनाशकों से उनकी मौत हो जाती हैं। कई बार मोर मरने की खबरें आई हैं। मशीन आधारित खेती के कारण खेतों के आसपास दूर-दूर तक पेड़ दिखाई नहीं देते हैं, इसके कारण पक्षी भी नहीं होते हैं। जबकि खेती के लिए पक्षी बहुत उपयोगी हैं। एक तो वे कीट नियंत्रण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और उनके बीट से भूमि उर्वर होती है।

एक कारण जलवायु बदलाव का भी है। कई बार जब मैं घूमने जाता हूं तो रास्ते में पक्षी मरे पड़े मिलते हैं। इनका एक कारण अधिक तापमान होना है। ज्यादा गर्मी सहन न करने के कारण भी पक्षी मर जाते है। हाल के दिनों में जलवायु बदलाव के कारण नदी-नाले सूखने के कारण भी पक्षियों को पीने के पानी की समस्या से जूझना पड़ता है।

बढ़ते शहरीकरण और औद्योगिकीकरण ने भी पक्षियों के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है। इसके कारण उन्हें प्राकृतिक रूप से रहने के लिए आश्रय व घोंसले बनाने के लिए पेड़ उपलब्ध नहीं रहते हैं, इससे वे बेघर हो जाते हैं। सड़क चौड़ीकरण के कारण भी बहुत पुराने पेड़ कटते हैं, पक्षियों के आवास स्थल खत्म हो जाते हैं। इसलिए इन सबके मद्देनजर पक्षियों के संरक्षण की बहुत जरूरत है।

पक्षी संरक्षण की एक पहल राजस्थान के मेनार गांव में चल रही है। कुछ समय पहले मुझे इस गांव में जाने का मौका मिला था। यह गांव उदयपुर से 40 किलोमीटर दूर चित्तौड़गढ़ मार्ग पर स्थित है। इस गांव की पहचान पक्षियों के गांव (बर्डविलेज) के नाम से पहचान बन गई है।

यहां के दो तालाब पक्षियों के लिए हैं। तालाबों का नाम भरमेला और ढंड है। यहां न कोई नाव चलती है, न मछलियों का शिकार। न कोई ध्वनि प्रदूषण है और न ही कोई मानवीय गतिविधि। एकाध साल पहले तक तालाब की जलभूमि में खेती होती थी। तरबूज-खरबूज की खेती होती थी। गांव के लोगों ने सामूहिक रूप से निर्णय लेकर उसे भी बंद करवा दिया जिससे पक्षियों की गतिविधियों में कोई खलल न पड़े।

पक्षियों की सुरक्षा के लिए गांव वाले सचेत हैं। इसके लिए गांव के लोग और पक्षी प्रेमी सचेत हैं। उन्होंने तालाब के किनारे लगे पेड़ों को काटने पर पाबंदी लगाई है। तालाब के ऊपर से बिजली का हाईटेंशन तार गया था, उसे हटवाया। इससे पक्षी तार से टकराकर मर जाते थे। प्रदूषित पानी को तालाब में जाने से रोकने के लिए फैसला लिया।

यहां पक्षियों को परेशान करने वाली किसी प्रकार की गतिविधियों पर गांव वालों की नजर रहती है। जैसे कोई फोटोग्राफर पक्षियों को उड़ा कर तस्वीरें लेता है तो भी उसे ऐसा करने से रोका जाता है। स्वाभाविक तरीके से तस्वीरें लेने पर कोई मनाही नहीं है।

पक्षियों के प्राकृतिक रूप से अनुकूल वातावरण बना रहे, इसकी कोशिश की जाती है। गांव के पक्षी मित्र धर्मेंद्र मनेरिया बताते हैं कि कई बार यह बात सामने आती है कि तालाब को पर्यटन की दृष्टि से कृत्रिम रूप से कांक्रीट-सीमेंट से बनाया जाए। लेकिन इससे पक्षियों को नुकसान होगा।

यहां 170 से ज्यादा पक्षियों की प्रजातियां हैं। जिसमें स्थानीय व प्रवासी पक्षी दोनों शामिल हैं। यहां जलीय व स्थलीय दोनों तरह के पक्षियों की प्रजातियां हैं। प्रवासी पक्षी ज्यादातर शीत ऋतु में आते हैं और यहां रहते हैं। अधिकांश चिड़ियाएं यहां जाड़े के समय आती हैं, वे ज्यादा ठंडे वालों इलाके से अपेक्षाकृत कम ठंडे इलाकों में रहना पसंद करती हैं।

अब यही शिवा डुबडुबी यहां की शान है। तालाब किनारे हम शिवा डुबडुबी को बहुत देर तक देखते रहे। सिर पर कलगी,लम्बी चोंच और पानी में खेलते इसे देखना आनंददायक था। वह जरा सी आहट पर पानी में डुबकी लगा लेती। तैराक जैसी चपलता और फुर्तीली। पानी में रहती है और पानी में ही तैरता हुआ घोंसला बनाती है, उसी में प्रजनन करती है।

यहां साल भर सैलानियों, पक्षी प्रेमियों, पक्षी निरीक्षकों, पर्यावरण कार्यकर्ताओं और प्रकृतिप्रेमियों का तांता लगा रहता है। वे यहां आते हैं, तालाब किनारे पक्षियों को निहारते हैं, उन्हें कलरव सुनते हैं और नीले समंदर की तरह विशाल तालाब में पक्षियों की अठखेलियां और क्रीडाओं का आनंद लेते हैं।

कुल मिलाकर, पक्षी हमारे लिए कई तरह से उपयोगी हैं। उनका संरक्षण बहुत जरूरी है। मेनार गांव जैसी पहल अब और भी जगहों पर चल रही हैं। पक्षी अभयारण्य, वन्य जीव अभयारण्यों में इनके संरक्षण के प्रयास किए जा रहे हैं। पक्षियों के प्रति पर्यटकों का भी रूझान बढ़ा है। पक्षी अवलोकन भी बढ़ा है। लेकिन इस तरह की पहलों की और भी जरूरत है। पक्षियों के प्रति संवेदनशीलता की आवश्यकता है।

इस दिशा में निजी स्तर पर भी पहल की जा सकती है, जैसे रासायनिक खेती की जगह प्राकृतिक खेती को अपनाना, ऐसे जहरीले पदार्थों का इस्तेमाल न करना, जिनसे पक्षियों को खतरा है। ऐसे घर बनाना जिनमें वे उनके घोंसले आसानी बना सकें। लेकिन क्या हम इस पहल में जुड़ने और उसे आगे बढ़ाने के लिए तैयार हैं ?

बीता सप्ताह

1 जून

- बेंगलुरू के राष्ट्रीय महत्व के संस्थान राष्ट्रीय मानसिंह स्वास्थ्य एवं तंत्रिका विज्ञान संस्थान (निमहांस) को स्वास्थ्य सेवा सुविधाओं की श्रेणी में नेल्सन मंडेला पुरस्कार से नवाजा गया।
- अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनान्ड ट्रम्प को एक पोर्न स्टार को चोरी-छिपे पैसे देने के मामले में 12 जूरी ने दोषी करार दिया।
- संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोरियो गुंटेरस ने भारतीय सेना की मेजर राधिका सेन को मिलिट्री जेंडर एडवोकेट ऑफ द ईयर अवार्ड प्रदान किया।
- न्यूजीलैंड की महिला क्रिकेटर बर्नडाइन बेजुइजन हॉट ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास वेने की घोषणा की।

2 जून

- लोकसभा चुनाव 2024 के अंतिम चरण में 8 राज्यों में केंद्र शासित प्रदेश की कुल 57 सीटों पर मतदान हुआ।
- प्रधानमंत्री मोदी ने 30 मई की शाम से 1 जून शाम तक कुल 45 घेटे कन्याकुमारी के विवेकानंद मेमोरियल में ध्यान साधना की।
- हैती के हूती विद्रोही संगठन की ओर से लगातार बढ़ रही हिंसा के बीच पहला संयुक्त राष्ट्र सहायता कार्गो विमान हैती पहुंचा।
- अफगानिस्तान के नागरहाट में नाव दुर्घटना में आठ लोगों की मृत्यु हो गई।

3 जून

- सिक्किम लोकसभा चुनाव में क्रांतिकारी मोर्चा एसकेएम ने बहुमत हासिल किया।
- अरुणाचल प्रदेश लोकसभा चुनाव में भाजपा ने बहुमत हासिल किया।
- दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने 21 दिन की जमानत खत्म होने के बाद तिहाड़ जेल में आत्मसमर्पण किया।
- आइसलेंड के राष्ट्रपति चुनाव में महिला कारोबारी हल्ला टॉमसडॉटि ने बाजी मारी।

4 जून

- गृह मंत्रालय ने विजया भारती सयानी को राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग का कार्यवाहक अध्यत्र बनाया।
- पाक में अल्पसंख्यक समुदाय की महिला पाकिस्तानी सेना में ईसाई महिला अधिकारी को बिग्रेडियर के पद पर पदोन्नत किया।
- श्रीलंका में पाकिस्तानी बाढ़ में सात लोगों की मौत हो गई।
- जापान के हशिकावा प्रांत में शक्तिशाली भूकंप के झटके पड़े।

5 जून

- लोकसभा चुनाव 2024 में प्रधानमंत्री मोदी की अगुआई में एनडीए गठबंधन ने 233 सीटों पर विजय प्राप्त कर बहुमत हासिल कर लिया।
- लोकसभा चुनाव में ओडिशा की 25 साल पुरानी पटनायक सरकार हार गई वहीं भाजपा ने बहुमत हासिल किया।
- आंध्रप्रदेश में लोकसभा चुनाव में चंद्रबाबू नायडू की टीडीपी पार्टी ने बहुमत हासिल किया।
- पाकिस्तान के कोयला खदान में गैस रिसाव होने के कारण 11 लोगों की मौत हो गई।

6 जून

- नरेन्द्र मोदी को राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के घटक दलों अपना नेता चुना।
- कर्नाटक की चिक्कोड से कांग्रेस उम्मीदवार प्रियंका जरकीहोली 27 साल की सबसे कम उम्र की सांसद बनीं।
- ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक लोकसभा चुनाव में हार के बाद इस्तीफा दे दिया।
- चीन के नागरिक ड्रोन ने चुगुलांगया चीनी क्षेत्र के दुनिया का पहला कार्गो उच्च ऊंचाई परिवहन परीक्षण पूरा किया।

7 जून

- लोकसभा चुनाव 2024 में 543 नवनिर्वाचित सांसदों में 257 पर आपराधिक मामले हैं। यह जानकारी एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफार्म्स (एडीआर) ने दी है।
- मंडी से सांसद और बॉलीवुड अभिनेत्री कंगना रानौत को चंडीगढ़ एयर पोर्ट पर सीआईएसएफ की महिला सिपाही ने थप्पड़ मारी।
- सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली पेयजल संकट पर सुनवाई करते हुए हिमाचल प्रदेश को 137 क्यूसेक पानी छोड़ने का आदेश दिया।
- मेक्सिको में पहली बार महिला राष्ट्रपति बनी। मेक्सिको सिटी की 61 वर्षीय पूर्व मेयर क्लाउडिया शिनबाम।

तीन महाद्वीपों में तीन राष्ट्रीय चुनावों ने दिये जीवंत लोकतंत्र के संकेत

■ नित्य चक्रवर्ती

भारत और दक्षिण अफ्रीका में सत्तारूढ़ सरकारों को दंडित किया गया है, लेकिन उन्हें कमतर दर्जा देकर शासन करने की अनुमति दी गयी है। मैक्सिको में वामपंथी मोरेना गठबंधन को उनके शानदार प्रदर्शन के लिए शानदार पुरस्कार दिया गया है। तीनों में,मतदाताओं ने लोकतंत्र के प्रति अपनी गहरी समझ दिखायी है। अच्छा प्रदर्शन करने वालों को पुरस्कृत किया गया है और जिन्होंने खराब प्रदर्शन उन्हें दंडित किया। यूरोप की तरह, दक्षिणपंथ की ओर कोई झुकाव नहीं है।

इस सप्ताह तीन दिनों की अवधि में, तीन बड़े आबादी वाले देशों- दक्षिण अफ्रीका, मैक्सिको और भारत के राष्ट्रीय चुनावों के परिणाम मिले और तीनों ने प्रत्येक देश में जीवंत लोकतंत्र की विजयी यात्रा के संकेत दिये। परिणामों ने दिखाया कि कैसे सतर्क मतदाताओं ने भारत की बहुसंख्यक हिंदू दक्षिणपंथी पार्टी भाजपा को अल्पमत में लाकर दंडित किया, अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस के बहुमत को 40प्रतिशत तक कम कर दिया और आम लोगों की आजीविका में सुधार के लिए उत्कृष्ट कार्य करने के लिए अपने राष्टपति पद के उम्मीदवार को शानदार जीत देकर मैक्सिको के वामपंथी मोरेना गठबंधन को पुरस्कृत किया।

दक्षिण अफ्रीका में 29 मई को राष्ट्रीय चुनाव हुए और 2 जून को नतीजे घोषित किये गये। पिछले 30 वर्षों से देश की सत्ताधारी पार्टी अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस ने 40प्रतिशत वोटिंग के साथ अपना बहुमत खो दिया। दक्षिण अफ्रीकी कम्युनिस्ट पार्टी (एसएसीपी) और ट्रेड यूनियन निकाय कोसाटू सहित इस केंद्र-वाम गठबंधन को हाल के वर्षों में उनके भ्रष्टाचार के लिए मतदाताओं द्वारा दंडित किया गया था, साथ ही मूल्य वृद्धि और बड़े पैमाने पर बेरोजगारी की समस्या से निपटने में विफलता के लिए भी। सबसे बड़ी पार्टी के रूप में एएनसी इस महीने के मध्य में संसद की बैठक से पहले गठबंधन सरकार के लिए विपक्ष में अन्य दलों से बात कर रही है। मतदाताओं का संदेश स्पष्ट है- एएनसी अभी भी शासन कर सकती है, लेकिन उसे बेहतर जन-हितैषी शासन के लिए अपने तरीके सुधारने होंगे।

दक्षिण अफ्रीका की आबादी छह करोड़ से अधिक है। यह ब्रिक्स का एक प्रमुख सदस्य है जिसमें ब्राजील, रूस, चीन और भारत भी शामिल हैं। राष्ट्रपति सिरिलरामफोसा का विकासशील दुनिया में बहुत सम्मान है। दक्षिण अफ्रीकी राष्ट्रपति गाजा में नरसंहार के लिए लगातार इजरायल की आलोचना करते रहे हैं। उन्होंने ही अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायालय (आईसीसी) से प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू को युद्ध अपराधी घोषित करने के लिए कहा था। दक्षिण अफ्रीकी मतदाताओं ने दक्षिणपंथी विपक्ष को सरकार में नहीं लाया, बल्कि सत्तारूढ़ एएनसी को एक बड़ी चेतावनी के रूप में छोटा कर दिया, जो उचित है।

लेकिन मेक्सिको में स्थिति पूरी तरह से अलग है। 12 करोड़ से अधिक आबादी वाले दक्षिण अमेरिकी देश में 2 जून को राष्ट्रीय चुनाव हुए और 3 जून को नतीजे घोषित किये गये। सत्तारूढ़ वामपंथी गठबंधन मोरेना की राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार क्लाउडिया शिनबाम को मुख्य दक्षिणपंथी विपक्षी उम्मीदवार ज़ोचितीगैल्वेज़ के 28.9प्रतिशत के मुकाबले लगभग 58.7प्रतिशत वोट मिले। इसका मतलब है कि वामपंथी गठबंधन की उम्मीदवार को दक्षिणपंथी विपक्षी उम्मीदवार के मुकाबले दोगुने वोट मिले। इसके अलावा, मोरेना ने संसद के चुनावों में भी क्लीन स्वीप किया।

निर्वाचित राष्ट्रपति मेक्सिको के इतिहास में सर्वोच्च पद पर आसीन होने वाली पहली महिला हैं। वह पर्यावरण वैज्ञानिकों के एक अंतर-सरकारी समूह के हिस्से के रूप में नोबेल पुरस्कार की भी भागीदार हैं। उन्हें वर्तमान राष्ट्रपति ओब्रेडोर ने चुना था, जिन्हें आमलो के नाम से जाना जाता है, जिन्होंने 2024 में पदभार संभालने के बाद पिछले छह वर्षों में मैक्सिको की अर्थव्यवस्था को बदल दिया। आमलो ने अपने कार्यकाल के दौरान आम लोगों के जीवन को व्यापक रूप से बेहतर बनाने के लिए परिवर्तन की प्रतिक्रया शुरू की है। मैक्सिकन मतदाताओं ने आम जनता के बीच उनके ठोस काम के लिए मोरेना गठबंधन को पुरस्कृत किया है।

भारत में, चुनाव 19 अप्रैल से 1 जून तक सात चरणों में हुए और नतीजे 4 जून को आये। 2014 से दस साल तक शासन करने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को कुल 97.2 करोड़ पंजीकृत मतदाताओं में से 64.2 करोड़ मतदान करने वाले मतदाताओं ने करारा झटका दिया। 17वीं लोकसभा में लोकसभा में अपनी 303 सीटें रखने वाली भाजपा 543सदस्यीय लोकसभा में 272 के बहुमत स्तर के मुकाबले 240 के अल्पमत में आ गयी। कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व वाले विपक्षी दल इंडिया ब्लॉक को करीब 234 सीटें मिली हैं।

भारत में 2024 के लोकसभा चुनाव के बाद का परिदृश्य पूरी तरह से अलग है, जिसमें भाजपा की हालत खराब है, प्रधानमंत्री कमजोर हैं, और इंडिया ब्लॉक और कांग्रेस फिर से उभरने की दिशा में हैं। 9 जून को शपथ ग्रहण के बाद शुरू होने वाली नरेंद्र मोदी सरकार का तीसरा कार्यकाल आसान नहीं होगा। भारत के सतर्क मतदाताओं ने भाजपा को आड़े हाथों लिया है और इंडिया ब्लॉक को बताया है कि उचित समय पर एनडीए शासन को बदलने में सक्षम होने के लिए गठबंधन को अभी और काम करना होगा।

इस प्रकार तीनों देशों, भारत, दक्षिण अफ्रीका और मैक्सिको में मतदाताओं ने राजनीतिक स्थिति की जमीनी हकीकत और संबंधित सरकारों के प्रदर्शन की अपनी समझ के आधार पर काम किया है। भारत और दक्षिण अफ्रीका में सत्तारूढ़ सरकारों को दंडित किया गया है, लेकिन उन्हें कमतर दर्जा देकर शासन करने की अनुमति दी गयी है। मैक्सिको में वामपंथी मोरेना गठबंधन को उनके शानदार प्रदर्शन के लिए शानदार पुरस्कार दिया गया है। तीनों में,मतदाताओं ने लोकतंत्र के प्रति अपनी गहरी समझ दिखायी है। अच्छा प्रदर्शन करने वालों को पुरस्कृत किया गया है और जिन्होंने खराब प्रदर्शन उन्हें दंडित किया। यूरोप की तरह, दक्षिणपंथ की ओर कोई झुकाव नहीं है। वास्तव में, भारत और मैक्सिको में दक्षिणपंथ को झटका लगा है। तीन महाद्वीपों में 2024 के चुनाव नागरिकों की लोकतांत्रिक समझ के बारे में बहुत कुछ बताते हैं।

पोल खुल गई मोदी मैजिक के मिथक की

जगदीश रत्तनानी

परिणाम बताते हैं कि धन बल बहुमत पाने के लिए पर्याप्त नहीं है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि सरकारी मशीनरी व मीडिया पर मोदी सरकार का पूरा नियंत्रण था। भाजपा ने बाद में घोषित अवैध चुनावी बॉन्ड और अन्य स्त्रोतों से बेशुमार धन उगाहा। इन सबके बावजूद भाजपा असफल रही। यहां वीपी सिंह की याद आती है जिन्होंने एक बार कहा था- `भारत में आप पैसों के अभाव में चुनाव हार सकते हैं लेकिन आप सिर्फ इसलिए नहीं जीत सकते कि आपके पास पैसा है।'

अब यह स्पष्ट है कि भारत के लोगों ने भारतीय जनता पार्टी के मोदीकृत संस्करण को खारिज कर दिया है। नई लोकसभा में भाजपा बहुमत से काफी पीछे है। भले ही भाजपा के नेतृत्व वाला एनडीए केंद्र में सरकार बना ले लेकिन इस समय जिस नैरेटिव को आगे बढ़ाया जा रहा है उससे इस बात की संभावना बढ़ जाती है कि गठबंधन की राजनीति के पेंचों के सामने मजबूत दिखने वाली भाजपा झुकने के लिए मजबूर हो जाएगी। भाजपा को अपने नए साझीदारों, विशेष रूप से चंद्रबाबू नायडू (तेलुगु देशम पार्टी) और नीतीश कुमार (जनता दल-यूनाइटेड) की बात सुनने के अलावा कोई विकल्प नहीं होगा जिन्होंने नई ताकत हासिल कर ली है। खबरों के मुताबिक ये दोनों पहले से ही प्रमुख विभागों की मांग कर रहे हैं। यह अपने आप में भाजपा पर ब्रेक लगाता है जो अंहकारवश धर्म की अपनी खुद की धुन बजाती है जिसे कई भारतीय नापसंद करने लगे हैं।

इन परिस्थितियों में हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में मोदी के नेतृत्व वाली कमान और नियंत्रण के प्रति आसक्त भाजपा के दिन शायद ढल गए हैं। अब यह एक रास्ते, एक चुनाव, एक व्यक्ति, एक सत्य की पार्टी नहीं हो सकती। भारत के लोगों, विशेष रूप से उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र के मतदाताओं ने यह सुनिश्चित किया है कि भाजपा इंद्रधनुष में शामिल सभी रंगों के बारे में कुछ महत्वपूर्ण सबक सीखे जिनके संयोग से सफेद रंग का सृजन होता है।

कम से कम 2024 के चुनाव कई अन्य ट्विस्ट और टर्न की संभावनाओं के साथ खबरों में हैं जिनमें भाजपा के नेतृत्व में सरकार बनने के बावजूद मोदी की शीर्ष पर बने रहने की संभावना जैसे महत्वपूर्ण प्रश्न शामिल हैं। अब तक किसी भी चुनौती को उठाने या अपने नेतृत्व के किसी भी सवाल को पूछने के लिए अभ्यस्त न होने की वजह से खोखली हुई पार्टी चुनाव परिणामों से मिले झटकों से उबरने में कुछ समय लेगी। संभवत: वह पार्टी नेतृत्व के खिलाफ आंतरिक विद्रोह करने के संकेतों के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की ओर देखेगी। यह एक ऐसी घटना हो सकती है जिसकी कुछ समय पहले तक कोई संभावना नहीं दिखती थी।

इसके अलावा, भाजपा के साथ चुनावी गठबंधन करने वाली कुछ पार्टियों की ओर से संकेत मिले हैं कि वे अपनी मूल पार्टियों की ओर लौट सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे की शिवसेना और शरद पवार की एनसीपी। मूल पार्टी से अलग हुए गुटों के वापस अपनी पार्टी में लौटने के कारण एनडीए के सिकुड़ने की संभावना बढ़ जाती है। कुछ अपुष्ट रिपोर्टों के अनुसार भाजपा के साथ गठबंधन करने वाले शिवसेना (शिंदे) के नवनिर्वाचित सांसद और विधायक उद्धव ठाकरे की शिवसेना के संपर्क में हैं। शिवसेना(उद्धव गुट) भाजपा के खिलाफ और आईएनडीआईए गठबंधन के साथ है।

इस बात की भी संभावना है कि चुनावी परिणामों से डरे हुए नरेंद्र मोदी अधिक नियंत्रण हासिल करने और विपक्ष को कोसने के साथ-साथ प्रतिशोध की राजनीति को दोगुना करने की कोशिश करेंगे। पिछले कई वर्षों से यह पार्टी की पहचान रही है और मोदी इस काम में सबसे अधिक निपुण हैं। विपक्ष को खत्म करने की यह प्रवृत्ति चुनाव के बाद के परिदृश्य में नए मोड़ ला सकती है। मंगलवार की शाम को भाजपा मुख्यालय में मोदी के दिये पहले भाषण से संकेत मिलता है कि चुनावी नतीजों ने उनमें कोई विशेष बदलाव नहीं लाया है। इस भाषण में सिर्फ एक बार उन्होंने 'मोदी की गारंटी' शब्द का इस्तेमाल किया। प्रचार अभियान के दौरान उन्होंने बार-बार 'मोदी की गारंटी' शब्द का इस्तेमाल किया था। समय बताएगा कि क्या यह एक झांसा देने वाला बड़बोलापन है या मोदी शैली की आने वाली राजनीति का संकेत है; और क्या यह आरएसएस से बैकरूम समर्थन के बाद आता है या वास्तव में पार्टी में आंतरिक रूप से उनके खिलाफ विरोध को रोकने की एक चाल है ? हालांकि मोदी द्वारा कही गई इस बात को नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए कि यह एक 'एनडीए सरकार' होगी। यह एक स्व-घोषित कदम है और मोदी में आए एक बदलाव का संकेत भी। जिस बदलाव के अभाव में भाजपा और उसकी राजनीति अब यहां तक सिमट कर रह गई है।

मोदी को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जाना जाएगा जिसने एक पार्टी की कमान संभाली और 'मोदी की गारंटी' कहे जाने वाले चुनावी वादों से लेकर योजनाओं, परियोजनाओं, संस्थानों और यहां तक कि क्रिकेट स्टेडियम तक को एक व्यक्ति की सेवा में लगा दिया। एक ऐसा व्यक्ति जो एक तरफ आत्म-मुग्ध था और दूसरी तरफ राजनीतिक संवादहीनता के कारण उत्पन्न कटुता ने जिसे निम्न स्तर पर धकेल दिया। कभी नेतृत्व की व्यापकता का दावा करने वाली पार्टी पर कब्जा, मोदी का गुणगान करने वालों को तरक्की देना और लाइमलाइट में रहने के लिए सांप्रदायिकता का इस्तेमाल सत्ता के शॉर्टकट के रूप में किया जाता था, यह सब तथाकथित 'मोदी जादू' के मिथक का निर्माण करने वाली कहानी का एक हिस्सा है। चूंकि यह सब मोदी और उनके भरोसेमंद नंबर दो- गृह मंत्री अमित शाह से जुड़ा था इसलिए चुनाव में जो कुछ भी गलत हुआ है उसका दोष इन दोनों के कंधों पर भी होगा, जिन्हें मजाकिया तौर पर भाजपा के 'डेढ़ नेतृत्व' के रूप में जाना जाता है।

इसका भी उल्लेख करना असंगत नहीं होगा कि भाजपा के स्वघोषित लक्ष्यों से पतन का एक बड़ा हिस्सा सीधे तौर पर 'डेढ़ नेतृत्व' के अहंकार से जुड़ा हुआ है। महाराष्ट्र इसका एक उदाहरण है। मोदी ने शरद पवार को 'भटकती आत्मा' कहा क्योंकि पवार के परिवार में दरार पड़ गई थी। उन्होंने बाल ठाकरे के बेटे उद्धव ठाकरे को 'नकली वारिस' या फर्जी कहा जिसके कारण भाजपा द्वारा पैदा किए गए राजनीतिक विभाजन में जहर के नए स्तर को भर दिया। फिर भी यदि मोदी-शाह की जोड़ी ने महाराष्ट्र में पिछले विधानसभा चुनावों के बाद ठाकरे को एक और कार्यकाल के लिए मुख्यमंत्री बने रहने दिया होता तो इस सबकी कोई जरूरत नहीं पड़ती।

पद देने से इनकार करके उन्होंने ठाकरे को कांग्रेस-एनसीपी से दोस्ती करने के लिए मजबूर किया और जब ठाकरे ने राज्य में सरकार बनाई तो भाजपा ने शिवसेना नेताओं के पीछे अपनी जांच एजेंसियों को लगा दिया। भाजपा ने अंतत: सरकार बनाने के लिए शिवसेना को विभाजित कर दिया। एक वरिष्ठ राजनीतिक साथी से अपेक्षित है कि वह शालीनता और परस्पर सम्मान के साथ पेश आए लेकिन भाजपा ने अल्पकालिक लाभ, दीर्घकालिक विस्तार तथा जमीनी स्तर के राजनीतिक कार्य की कीमत पर यह हासिल किया।

इसी दृष्टिकोण के साथ अन्य भागीदारों के साथ भी भाजपा इसी तरह खेल रही है जिसके कारण भाजपा नेतृत्व पर भरोसा नहीं किया जाता है। इसे गंदी चालें खेलने वाले खिलाड़ी के रूप में देखा जाता है और भागीदारों का उपयोग केवल उन्हें निगलने के लिए करता है। यह सर्वज्ञात है कि चंद्रबाबू नायडू वास्तव में भाजपा नेतृत्व, विशेष रूप से मोदी के प्रति अच्छी भावना नहीं रखते हैं। यह सच है कि इन चुनावों में भाजपा के साथ उनका गठबंधन था लेकिन भाजपा के साथ अधिकांश गठबंधन राजनीतिक मजबूरियों में और मोदी की जांच एजेंसियों द्वारा उत्पीड़न के खतरे से बचने के लिए किए गये हैं। ओडिशा में राज्य के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक के स्वास्थ्य को लेकर जबरन शुरू किया गया विवाद भी उतना ही नकारात्मक था और इसने कटुता ही पैदा की। भाजपा ने भले ही ओडिशा जीत लिया हो लेकिन वे यहां जिन तरीकों के सफल होने की उम्मीद कर रहे हैं वे वैसे ही तरीके हैं जिनके कारण उसने कहीं और सत्ता खो दी है और पार्टी का नाम बर्बाद कर दिया है। इन तरीकों को संकीर्ण, शातिर और कड़ुवाहट से भरा हुआ माना जा रहा है।

अंत में, परिणाम बताते हैं कि धन बल बहुमत पाने के लिए पर्याप्त नहीं है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि सरकारी मशीनरी व मीडिया पर मोदी सरकार का पूरा नियंत्रण था। भाजपा ने बाद में घोषित अवैध चुनावी बॉन्ड और अन्य स्त्रोतों से बेशुमार धन उगाहा। इन सबके बावजूद भाजपा असफल रही। यहां वीपी सिंह की याद आती है जिन्होंने एक बार कहा था- 'भारत में आप पैसों के अभाव में चुनाव हार सकते हैं लेकिन आप सिर्फ इसलिए नहीं जीत सकते कि आपके पास पैसा है।'

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं। सिंडिकेट: द बिलियन प्रेस)

प्रकाशक, मुद्रक : राजीव रंजन श्रीवास्तव द्वारा पत्रकार प्रकाशन प्रा. लि. के लिए 506, आई.एन.एस. बिल्डिंग, 9, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित एवं बीएफएल इंफोटेक लि., सी 9, सेक्टर-3, नोएडा से मुद्रित। सम्पादक : राजीव रंजन श्रीवास्तव, (पी.आर.बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार)। आर.एन.आई. नं. DELHIN/2008/24216. दिल्ली कार्यालय :फोन: 011-23718195,23357784, फैक्स: 011-43581404, नोएडा कार्यालय: फोन: 0120-4114404 फैक्स: 0120-4273770
ई-मेल: deshbandhudelhi@gmail.com वेब: www.deshbandhu.co.in

दैनिक
जलते दीप

जोधपुर, शनिवार 8 जून 2024

गठबंधन धर्म में दलगत स्वार्थ सबसे बड़ी बाधा

गठबंधन सरकारों में सहयोगी दलों की मंत्री पद और विभागों की मांग को लेकर खींचतान नई बात नहीं है। हर दल का मुखिया अपने नेताओं की सामूहिक आकांक्षाओं को साथ लेकर चलता है। गठबंधन का पहला धर्म होता है, नीतियों और योजनाओं पर फैसले के समय निजी या दलगत स्वार्थों से ऊपर उठ कर सहमति बनाने का। गठबंधन का एक भी दल इस धर्म का निर्वाह नहीं कर पाता, तो वह सरकार चल नहीं पाती। देश में गठबंधन सरकारें बनी और चली हैं, पर वे तब-तब गिर गई हैं, जब गठबंधन धर्म के निर्वाह में दलगत स्वार्थ या वैचारिक मतभेद आड़े आए हैं। इस बार फिर गठबंधन सरकार बनने जा रही है। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ने नरेंद्र मोदी की अगुआई में सरकार बनाने पर सहमति जता दी है। मंत्रालयों के बंटवारे आदि को लेकर मंथन चल रहा है। हर बड़े दल से बड़प्पन की अपेक्षा रहती है और वह थोड़ा झुक कर अपने सहयोगियों का मान ऊपर रख भी लेता है। मगर सरकार गठन से पहले ही जिस तरह जद (यू) और तेलगु देशम की तरफ से नीतियों को लेकर शर्तें रखी जाने लगी हैं, उससे गठबंधन के भविष्य पर आशंका गहराने लगी है। जद (यू) ने कहा है कि अग्निवीर योजना पर सरकार को पुनर्विचार करना चाहिए। यही मांग विपक्षी दल शुरू से उठाते आ रहे हैं। चुनाव प्रचार के दौरान इंडिया गठबंधन ने तो सार्वजनिक रूप से एलान किया था कि अगर उसकी सरकार बनी तो अग्निवीर योजना को खत्म कर देंगे। वही बात अगर सहयोगी करने लगेंगे, तो सरकार के लिए मुश्किल होगी। भाजपा समान नागरिक संहिता लागू करना चाहती है। इस दिशा में वह आगे भी बढ़ चुकी है। मगर उसके दोनों प्रमुख सहयोगी दलों ने इस पर भी पुनर्विचार की बात कही है। सभी राज्य सरकारों से सहमति की मांग कर रहे हैं। हालांकि ये कुछ ऐसे मुद्दे हैं, जिन पर सरकार अगर लचीला रुख अपनाए, तो सहमति बन सकती है। राजनीति में हर कदम के दूरगामी परिणाम होते हैं। कौन-सा दल किस मुद्दे पर अपनी बात मनवा लेता है, उससे उसके राजनीतिक भविष्य पर असर पड़ता है। भाजपा को इस वक्त सहयोगी दलों के साथ मिल कर सरकार चलाने की मजबूरी है, पर वह अपने सिद्धांतों और नीतियों से डिगेगी, तो नुकसान का खतरा बना रहेगा। ऐसी स्थितियों में सरकार की अगुआई कर रहे दल के सामने चुनौती होती है कि वह कैसे अपने सहयोगियों को नीतियों पर एकमत करे और किस हद तक उनकी शर्तों को माने। नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू की राजनीतिक छवि टिकाऊ और भरोसेमंद सहयोगी की नहीं रही है। इससे पहले भी वे कई बार राजग के साथ रहे, बीच में छोड़ कर चले गए, फिर आ गए हैं। बिहार और आंध्र प्रदेश को विशेष राज्य का दर्जा देने जैसी उनकी कुछ पुरानी मांगें हैं। इसके अलावा अल्पसंख्यकों के आरक्षण के मुद्दे पर भी उनके विचार अलग हैं। अब जब वे मोलभाव करने की स्थिति में हैं, ये मुद्दे उठा सकते हैं। मगर इससे सरकार की मुश्किलें बढ़ेंगी ही। गठबंधन की सरकारें शर्तों की रस्साकशी से नहीं, सहयोग और सहमति के संकल्प से चलती हैं। अगर इसकी कमी इस गठबंधन में रहेगी, तो अनिश्चितताओं के बादल शायद ही कभी छटेंगे।

पटनायक की ओडिसा से विदाई

नवीन पटनायक कुछ दिन और सत्ता में रह पाते तो उनका मुख्यमंत्री के रूप में कार्यकाल देश में सबसे ज्यादा होता। इसके बावजूद लगातार 24 साल तक उन्होंने एकछत्र राज किया। हालांकि, इस बार के लोकसभा चुनाव के साथ कराये गए ओडिशा विधानसभा चुनावों में उनकी पार्टी बीजू जनता दल को करारी हार का सामना करना पड़ा। जिस पार्टी को नब्बे के दशक में राज्य की राजनीति में पैर रखने की जगह बीजेडी ने दी थी, उसी ने उन्हें सत्ता से बेदखल कर दिया। राज्य में अब भाजपा पहली बार सरकार बनाने जा रही है। उसे विधानसभा की 78 सीटें मिली हैं। वहीं आम चुनाव में लोकसभा की कुल इक्कीस सीटों में से बीस सीटें भाजपा को मिली हैं। वक्त का पहिया कुछ ऐसा घूमा है कि लगातार पांच बार विधानसभा चुनाव जीतने और चौबीस साल तक निष्कंटक राज करने वाले नवीन पटनायक अपने एक अन्य विधानसभा क्षेत्र से चुनाव हार गए। बीजेडी को 51 विधानसभा सीटों पर सफलता जरूर मिली मगर लोकसभा की एक भी सीट बीजेडी नहीं जीत सकी। पिछले लोकसभा चुनाव में बीजेडी ने 12 व भाजपा ने आठ सीटें जीती थी। हालांकि, राजनीति के पुराने खिलाड़ी नवीन पटनायक को इस बात का बखूबी अहसास था कि भाजपा उन्हें सत्ता से विस्थापित कर सकती है। फलतः उन्होंने अपने अंतिम कार्यकाल में भाजपा की काट के लिये सांस्कृतिक राजनीति का सहारा लेना शुरू कर दिया था। वे महसूस कर रहे थे कि ओडिशा के छोटे शहरों के युवाओं का रुझान भाजपा के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की तरफ बढ़ रहा है। अब तक लोक कल्याण योजनाओं को अपनी राजनीति की धार बनाने वाले नवीन पटनायक ने अयोध्या की रणनीति के मुकाबले में श्रीजगन्नाथ मंदिर के आसपास में एक हेरिटेज कॉरिडोर को मूर्त रूप देने का प्रयास किया। राज्य के अनेक प्राचीन मंदिरों को जीर्णोद्धार के जरिये नये सिरे से निखारा गया। इसके अलावा हाल ही में पहले विश्व ओड़िया भाषा सम्मेलन आयोजित करके साहित्य व संस्कृति कर्मियों को जोड़ने का प्रयास किया गया। दरअसल, राज्य में बदलती राजनीतिक बयार के मद्देनजर नवीन पटनायक ने युवाओं पर केंद्रित कार्यक्रमों को तरजीह दी। लोकप्रिय कल्याण कार्यक्रमों से इतर पटनायक ने बीजेपी की तरफ बढ़ रहे युवाओं को साथ जोड़ने के लिये ओडिशा को देश के खेलों की राजधानी बनाने का प्रयास किया। उन्होंने उन खेलों को तरजीह दी जो क्रिकेट की सुनामी में हाशिये पर जा रहे थे। पटनायक सरकार ने हॉकी की राष्ट्रीय पुरुष व महिला हॉकी टीम को प्रायोजित किया। इसके अलावा पर्याप्त खेल संरचना के विस्तार के साथ ही राज्य में दो विश्व हॉकी कप श्रृंखला आयोजित की गई। राज्य में शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं की असंतोषजनक स्थिति के मद्देनजर अस्पतालों का आधुनिकीकरण, स्कूलों की संरचना में बदलाव, बस सेवाओं में सुधार के प्रयास पिछले कुछ समय में किए गए। लेकिन उनकी एक कमी रही कि अपनी इन सार्थक पहलों का श्रेय लेने का प्रचार करने में वे पीछे रह गए। वहीं इन योजनाओं के क्रियान्वयन का दायित्व नौकरशाहों को सौंपने की वजह से उसका लाभ पार्टी को राजनीतिक तरीके से नहीं मिल पाया। वहीं अपने राजनीतिक उत्तराधिकारी के रूप में नौकरशाह वीके पांडियन को पार्टी व शासन में अधिक अधिकार देने का खमियाजा भी नवीन पटनायक ने भुगता। दरअसल, पांडियन तमिलनाडु मूल के हैं और ओडिशा में उनकी बेहद महत्वपूर्ण भूमिका को एक बड़ा मुद्दा बना दिया गया। जिसका भाजपा ने खूब प्रचार किया। दरअसल, सत्ता में लगातार वर्चस्व बनाये रखने वाले पटनायक ने अपने आसपास किसी राजनीतिक विकल्प बनने की संभावना को कभी पनपने नहीं दिया। पांडियन प्रकरण पटनायक के लिए बेहद नुकसानदायक साबित हुआ क्योंकि ओडिशा में एक धारणा बन गई कि राज्य की बागडोर एक गैर ओड़िया व्यक्ति को सौंपी जा रही है। दरअसल, प्रशासनिक सेवा से इस्तीफा देकर पांडियन जैसे बीजेडी में शामिल हुए और उन्होंने राजनीतिक अभियानों में भाग लिया, भाजपा ने इसे ओड़िया अस्मिता का अपमान बताकर इसे बड़ा मुद्दा बना दिया। बाद में पटनायक की सफाई भी काम नहीं आई। बहरहाल, गरीबों, ग्रामीण महिलाओं तथा बुजुर्गों के लिये अनेक प्रभावी योजनाओं को सफलतापूर्वक चलाकर लोगों के दिलों में वर्षों राज करने वाले नवीन पटनायक को ओडिशा के लोग जल्दी भुला नहीं पाएंगे।

प्रसंगतः दिशाओं की पूजा

एक बार एक गृहस्थ व्यक्ति सभी दिशाओं को नमस्कार कर रहा था। उसकी इस गतिविधि को एक संत और उनके शिष्य देख रहे थे। एक शिष्य ने संत से पूछा, 'यह व्यक्ति दिशाओं की पूजा क्यों कर रहा है ?' संत बोले, 'चलो, उसी से पूछ लेते हैं। 'प्रश्न सुनकर वह व्यक्ति असमंजस में पड़ गया और बोला, 'यह तो मुझे भी नहीं पता। आप ही बताइए न। 'संत बोले, 'पूजा करने की दिशाएं भिन्न होती हैं माता - पिता और गृहपति पूर्व दिशा है। आचार्य दक्षिण, स्त्री - पुत्र - पुत्री पश्चिम और मित्र आदि उत्तर दिशा है। सेवक और श्रमण - ब्राह्मणों के लिए भी दिशाएं निर्धारित हैं। इसलिए सभी दिशाओं का पूजन किया जाता है। इन सभी दिशाओं का सच्चे हृदय से पूजन करने से लाभ होता है। 'संत का जवाब सुनकर वह व्यक्ति बोला, 'और तो सब ठीक है महाराज। मैं सबकी पूजा सच्चे हृदय से कर सकता हूं , परंतु सेवकों की पूजा कैसे की जा सकती है? सेवक तो स्वयं मेरी सेवा करते हैं। 'यह सुनकर संत बोले, 'पूजा का अर्थ केवल हाथ जोड़ना अथवा सिर झुकाना नहीं है, सेवकों की सेवा का स्वरूप उनके प्रति स्नेह और वात्सल्य दर्शाने में है , उनकी हर संभव मदद करने में है और उनसे प्रेम से बात करने में है। 'यह सुनकर वह व्यक्ति बोला, 'आपने मुझे सही ज्ञान कराया है। अभी तक तो मैं मात्र हाथ जोड़कर सिर नवाने को ही पूजन समझता था किंतु आज आपने मुझे असली दिशा पूजन की विधि समझाई है और मैं भविष्य में इसी तरह से पूजन कर अपने जीवन को सफल बनाऊंगा।'

किन नवनिर्वाचित सांसदों पर देश की रहेगी नजर

पंजाब की खडूर साहिब और फरीदकोट लोकसभा सीटों के चुनाव परिणाम सिख राजनीतिक क्षेत्र में बड़े बदलाव और पंथिक राजनीति के पुनरुत्थान का संकेत देते हैं। कट्टरपंथी प्रचारक अमृतपाल सिंह ने खडूर साहिब से और इंदिरा गांधी के हत्यारे बेअंत सिंह के बेटे सरबजीत सिंह ने फरीदकोट से जीत हासिल की है, दोनों ही निर्दलीय प्रत्याशी थे। अमृतपाल सिंह खालिस्तान के पक्ष में बोलते रहे हैं। इसी तरह से जम्मू-कश्मीर की बारामूला सीट से इंजीनियर राशिद का राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री उमेर अब्दुल्ला को हराना अपने आप में सामान्य घटना नहीं हैं। राशिद पाकिस्तान परस्त रहे हैं और फिलहाल दिल्ली की तिहाड़ जेल में बंद हैं। पर पहले बात कर लें अमृतपाल सिंह की। उन्हें पिछले साल राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम के तहत गिरफ्तार कर असम के डिब्रूगढ़ में जेल में रखा गया था। सरबजीत सिंह की जीत ने भी साबित कर दिया है कि सिख अभी तक ऑपरेशन ब्लूस्टार और उन भयानक सिख विरोधी दंगों को भूले नहीं हैं।

लोकसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद उनका गहन विश्लेषण भी हो रहा है, पर इस प्रक्रिया के दौरान उन तीन नतीजों पर भी देश को गंभीरतापूर्वक विचार करना होगा जहां से देश के खिलाफ आवाज बुलंद करने वाले तीन उम्मीदवार जीत गए हैं।

- आर.के. सिन्हा

पंजाब की खडूर साहिब और फरीदकोट लोकसभा सीटों के चुनाव परिणाम सिख राजनीतिक क्षेत्र में बड़े बदलाव और पंथिक राजनीति के पुनरुत्थान का संकेत देते हैं। कट्टरपंथी प्रचारक अमृतपाल सिंह ने खडूर साहिब से और इंदिरा गांधी के हत्यारे बेअंत सिंह के बेटे सरबजीत सिंह ने फरीदकोट से जीत हासिल की है, दोनों ही निर्दलीय प्रत्याशी थे। अमृतपाल सिंह खालिस्तान के पक्ष में बोलते रहे हैं। इसी तरह से जम्मू-कश्मीर की बारामूला सीट से इंजीनियर राशिद का राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री उमेर अब्दुल्ला को हराना अपने आप में सामान्य घटना नहीं हैं। राशिद पाकिस्तान परस्त रहे हैं और फिलहाल दिल्ली की तिहाड़ जेल में बंद हैं।

पर पहले बात कर लें अमृतपाल सिंह की। उन्हें पिछले साल राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम के तहत गिरफ्तार कर असम के डिब्रूगढ़ में जेल में रखा गया था।

सरबजीत सिंह की जीत ने भी साबित कर दिया है कि सिख अभी तक ऑपरेशन ब्लूस्टार और उन भयानक सिख विरोधी दंगों को भूले नहीं हैं। सच में फरीदकोट ने बड़ा आश्चर्यजनक नतीजा दिया जब सरबजीत सिंह ने हसौड़ लोकप्रिय अभिनेता करमजीत अनमोल को हरा दिया, जबकि उनका फरीदकोट में कोई बड़ा नेटवर्क नहीं था। जब इंदिरा गांधी की हत्या में शामिल के कारण सरबजीत सिंह के पिता को गिरफ्तार किया गया था, वे तब मात्र 6 साल के थे। उन्होंने बारहवीं कक्षा के बाद पढ़ाई छोड़ दी थी। वे पहले भी कई चुनावों में किस्मत आजमा चुके हैं। उन्होंने 2007 में बरनाला जिले के भदौर से पंजाब विधानसभा का चुनाव लड़ा और उन्हें केवल 15,702 वोट मिले। उन्होंने 2004 में बठिंडा लोकसभा सीट से लोकसभा चुनाव भी लड़ा और असफल रहे। उन्हें 1,13,490 वोट मिले। 2009 और 2014 में उन्होंने फिर से क्रमशः बठिंडा और फतेहगढ़ साहिब (आरक्षित) निर्वाचन क्षेत्रों से चुनाव लड़ा। सरबजीत सिंह की मां, बिमल कौर और उनके दादा, सुच्चा सिंह पूर्व में लोकसभा के लिए चुने गए थे। सरबजीत सिंह इस बार तो चुनाव लड़ने के मूड में नहीं थे। उनसे जब बहुत लोगों ने चुनाव लड़ने की गुजारिश की तो वे चुनाव लड़ने के लिए तैयार हुए। वे अपनी कैंपेन में सिखों के मसलों के अलावा फरीदकोट में नशे की बढ़ती समस्या से लड़ने का वादा कर भी रहे थे। फरीदकोट के लिए कहा जाता है कि यह जिला नशाखोरी की चपेट में पूरी तरह से आ चुका है।

अमृतपाल सिंह ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस के कुलबीर सिंह जीरा को आसानी से मात दे दी। यह लोकसभा सीट पंजाब में भारत-पाकिस्तान की अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित है। उनकी गैरमौजूदगी में उनके माता-पिता उनके लिए प्रचार कर रहे थे।खडूर साहिब लोकसभा क्षेत्र में अमृतसर-तरन तारन-पट्टी के क्षेत्र शामिल हैं, जो जरनैल सिंह भिंडरावाले का प्रभाव वाला क्षेत्र रहा है। यह सीट सिखों का गढ़ मानी जानी जाती है। अमृतपाल सिंह के समर्थकों ने अपने कार्यालयों में भिंडरावाले के पोस्टर भी लगाए थे। उन्होंने भी ड्रग संस्कृति को समाप्त करने और बंदी सिखों को रिहा कराने का वादा किया।

दरअसल, लोकसभा चुनाव 2024 के रिजल्ट में कई उलटफेर देखने को मिले। ऐसी ही जम्मू कश्मीर की बारामूला सीट है। यहां राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला को जेल में बंद निर्दलीय कैंडिडेट इंजीनियर अब्दुल राशिद शेख से हार का सामना करना पड़ा। इंजीनियर अब्दुल राशिद शेख फिलहाल उसी तिहाड़ जेल में बंद हैं, जिसमें दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल बंद हैं। राशिद शेख को साल 2019 में एनआईए ने टेरर फंडिंग के केस में गिरफ्तार किया था। अमृतपाल की तरह से उन्होंने भी जेल में रहते हुए चुनाव लड़ा। अब सवाल यह है कि इन संदिग्ध छवि वाले उम्मीदवारों के लोकसभा में पहुंचने से क्या संदेश गया? पंजाब में आम आदमी पार्टी (आप) और कांग्रेस के कथित असर वाले पंजाब में अमृतपाल सिंह और सरबजीत सिंह की जीत से साफ है कि इनके नेताओं को यह जवाब तो देना ही होगा कि राज्य में देश विरोधी ताकते कैसे अपने पैर जमा रही हैं? पंजाब में आप की नीतियों को लेकर तो जनता में खासा गुस्सा दिखाई दिया। राज्य की जनता आप के नेता अरविंद केजरीवाल और राज्य के मुख्यमंत्री भगवंत मान से नाराज है। आप ने पंजाब में सभी सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे। उसे उम्मीद थी कि राज्य में उसकी सरकार है, ऐसे में वह कम से कम राज्य की 13 सीटों में से 10 पर तो जीत हासिल करेगी। हालांकि, उसे तीन सीटों से ही संतोष करना पड़ा। होशियारपुर, आनंदपुर साहिब और संगरूर को छोड़कर बाकी की सभी 10 सीटों पर आप को हार का सामना करना पड़ा।

आप को दिल्ली में भी मुंह की खानी पड़ी। आप ने कांग्रेस के साथ गठबंधन किया, इसके तहत दक्षिणी दिल्ली, पूर्वी दिल्ली, पश्चिमी दिल्ली और नई दिल्ली के तौर पर चार सीटें उसके खाते में आईं। यह सब सीटें आप हार गई। आप को 2014 और 2019 के लोकसभा चुनावों में में भी एक भी सीट पर जीत नहीं मिली थी। इसी प्रकार कांग्रेस भी अपनी तीनों सीटें हार गई। इसमें ÷टुकड़े-टुकड़े गैंग÷ के कन्हैया कुमार की सीट थी। यह दिल्ली में केजरीवाल और कांग्रेस की अ-लोकप्रियता को दर्शाता है।

एक बार फिर इंजीनियर राशिद पर लौटते हैं। राशिद को वर्ष 2004 में श्रीनगर में आतंकवादियों का समर्थन करने के लिए गिरफ्तार किया गया था, जिसके बाद उसे तीन महीने और 17 दिनों के लिए जेल में रखा गया था। उस पर राष्ट्र विरोधी गतिविधियों का आरोप लगाया गया था। बाद में मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट श्रीनगर ने मानवीय आधार पर उनके खिलाफ सभी आरोप हटा दिए। उन्हें अगस्त 2019 में कश्मीर के सभी मुख्यधारा के राजनेताओं के साथ गिरफ्तार कर लिया गया था। तब अनुच्छेद 370 को निरस्त कर दिया गया था। राशिद लगातार देश और हिन्दू विरोधी हरकते कने से बाज नहीं आते। 8 अक्टूबर 2015 को इंजीनियर राशिद पर जम्मू-कश्मीर विधानसभा के अंदर भाजपा विधायकों द्वारा हमला किया गया था, क्योंकि उन्होंने सरकारी सर्किट हाउस के लॉन में गोमांस परोसने वाली एक पार्टी की मेजबानी की थी। जाहिर है, उपर्युक्त तीनों नव निर्वाचित सांसदों की गतिविधियों पर देश को पैनी नजर रखनी होगी।

मेरी तो यही शुभकामना है कि ये देश की बदली परिस्थिति में अपना चाल-चरित्र और चेहरा बदलें वरना देश की राष्ट्रवादी सरकार की सख्त कार्यवाई को भुगतने को तैयार रहें।

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं)

बंगाल में राज्य प्रायोजित हिंसा एक बदनुमा दाग

लोकसभा चुनाव के बाद एक बार फिर पश्चिम बंगाल में हिंसा का बढ़ना, लोगों में डर पैदा होना, भय का वातावरण बनना, आम जनजीवन का अनहोनी होने की आशंकाओं से घिरा होना चिंताजनक भी है और राष्ट्रीय शर्म का विषय भी है। यही वजह है कि कलकत्ता हाईकोर्ट में एक याचिका दायर की गई है, जिसमें विपक्षी पार्टी के कार्यकर्ताओं को सुरक्षा देने की मांग की गई है। याचिका में मांग की गई है कि पुलिस को निर्देश दिए जाएं कि वे विपक्षी कार्यकर्ताओं को हिंसा से बचाने के लिए सुरक्षा दें।

पश्चिम बंगाल में लोकसभा चुनाव बाद की हिंसा पर दायर याचिका की सुनवाई करते हुए कलकत्ता हाईकोर्ट ने गंभीर चिंता जताई एवं ममता बनर्जी सरकार को कड़ी फटकार लगाई। चुनाव के बाद एवं लोकसभा चुनाव के प्रचार दौरान तृणमूल कांग्रेस ने व्यापक हिंसा, आतंक एवं अराजकता का माहौल बनाया। तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ता पार्टी जीत के बाद भाजपा कार्यकर्ताओं पर जिस तरह के हिंसक हमले कर रहे हैं, वह लोकतंत्र पर एक बदनुमा दाग है। ममता बनर्जी ने चुनाव के महापर्व को हिंसक बना दिया था, उसने एवं उसके कार्यकर्ताओं ने भाजपा कार्यकर्ताओं से, हिन्दुओं से, हिन्दू मन्दिरों-भगवानों-संतों एवं हिन्दू पर्वों से नफरत का बिगुल हर मोड़ पर बजाया है। बंगाल में राजनीतिक हिंसा का सिलसिला चुनाव के पहले ही कायम हो गया था। राज्य में हिंसा की अनेक घटनाएं चुनाव के दौरान भी देखने को मिलीं और अब चुनाव समाप्त हो जाने के बाद भी देखने को मिल रही हैं, जिनमें ग्यारह लोगों की मौत होना दुर्भाग्यपूर्ण है, इसका सीधा अर्थ है कि यह हिंसा तृणमूल कांग्रेस नेताओं के इशारे पर हो रही है। हैरानी नहीं कि अराजक तत्वों को बंगाल पुलिस का मौन समर्थन हासिल हो। चुनाव परिणाम घोषित होने के बाद तृणमूल कांग्रेस ने 'आतंक का राज' फैला दिया है।

- ललित गर्ग

पश्चिमी बंगाल की ममता सरकार देश में एकमात्र ऐसी सत्तारुढ़ पार्टी बन गई है जिसका देश के संविधान, न्यायपालिका एवं लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भरोसा नहीं रह गया है। भ्रष्टाचार से लेकर मनमर्जी एवं तानाशाही का शासन चलाना मुख्यमंत्री ममता बनजम की प्रक्रिया बन गयी है। 2021 में विधानसभा चुनाव के बाद हुई

हिंसा का संज्ञान लेते हुए कलकत्ता उच्च न्यायालय ने सीबीआइ को हिंसक घटनाओं की जांच करने को कहा था। इस जांच के दौरान तृणमूल कांग्रेस के अनेक नेताओं को गिरफ्तार किया गया था, लेकिन ऐसा लगता है कि यह कार्रवाई भी तृणमूल कांग्रेस के अराजक तत्वों के दुस्साहस का दमन नहीं कर सकी। इसका प्रमाण 2023 में पंचायत चुनाव के दौरान हुई भीषण हिंसा से मिला था, जिसमें 40 से अधिक लोगों की जान गई थी। इस लोकसभा चुनाव में भी हिंसा के चलते कई लोगों की जान जा चुकी है। यह ठीक है कि चुनाव बाद हिंसा पर कलकत्ता उच्च न्यायालय ने नाराजगी व्यक्त करते हुए यहां तक कहा कि यदि राज्य सरकार हिंसा पर लगाम नहीं लगा सकती तो केंद्रीय सुरक्षा बलों को बंगाल में पांच साल तक तैनात करने का आदेश देना पड़ सकता है। उच्च न्यायालय की इस कठोर टिप्पणी के बाद भी ममता सरकार की सेहत पर शायद ही कोई असर पड़े, क्योंकि वह सारा दोष विरोधी दलों पर मढ़ देती है। वास्तव में जब तक बंगाल में हिंसा के लिए ममता सरकार को सीधे तौर पर जिम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा, तब तक राज्य के हालात सुधरने वाले नहीं हैं।

ममता वोट बैंक की राजनीति के लिये कानून एवं सुरक्षा व्यवस्था की धज्जियां बार-बार उड़ाती रही है। ममता ने देश की एकता-अखंडता और सुरक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों को नजरअंदाज किया है, कानून से खिलवाड़ जितना पश्चिमी बंगाल में हुआ है उतना शायद ही देश के किसी दूसरे राज्यों में हुआ हो। चुनावों में जितनी हिंसा बंगाल में हुई, उतनी अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिली। बंगाल का लोकतंत्र तानाशाही मानसिकता से गुजर रहा है। इन स्थितियों से तो यही लगता है कि राजनीतिक वोट बैंक के लिए ममता संविधान एवं सुरक्षा-व्यवस्था की जितनी अवमानना कर सकती है, उसने की है और आगे भी वह करती रहेगी। चुनावों में ऐसी हिंसक एवं विडम्बनापूर्ण स्थितियां लोकतंत्र पर एक धुंधलका है, जिस पर नियंत्रण जरूरी है।

लोकसभा चुनाव में जिन राज्यों के परिणामों ने पूरे देश को चौंकाया है उनमें पश्चिम बंगाल भी शुमार है। पश्चिम बंगाल में चुनाव परिणाम इसलिये भी आश्चर्य में डाल रहे हैं कि वहां तृणमूल कांग्रेस सरकार के खिलाफ व्यापक नाराजगी थी, ममता सरकार के कई मंत्रियों और विधायकों पर घोटाले के आरोप लगे थे, संदेशखाली की महिलाओं पर हुआ अत्याचार देश भर में बड़ा मुद्दा बन गया था, ममता बनर्जी के भतीजे अभिषेक बनर्जी के इर्दगिर्द ईडी का शिकंजा कसा हुआ था, ममता बनर्जी को सनातन विरोधी बताया जा रहा था, तृणमूल कांग्रेस के कई बड़े नेताओं ने चुनावों से ऐन पहले पाला बदल लिया था, तृणमूल कांग्रेस पर हिंसक एवं अराजक होने का तगमा लगा था, बावजूद ममता जीती। देखा जाये तो ममता बनर्जी की छवि जुझारू एवं कद्दावर नेता की रही है और वह अपनी पार्टी को जिताने के लिए जी-जान लगा देती हैं। चुनाव प्रचार के दौरान खुद पर होने वाले राजनीतिक हमलों को वह अपने पक्ष में मोड़ लेने में माहिर हैं। इसके अलावा, इंडिया गठबंधन के तमाम नेताओं ने विभिन्न राज्यों में सीटों का बंटवारा कर आपस में समन्वय बनाकर चुनाव लड़ा लेकिन ममता बनर्जी ने बंगाल में अकेले ही सारी चुनौती झेली। वह अपने बलबूते चुनाव जीतने का माद्दा रखती है तो फिर हिंसा का सहारा क्यों लेती है? अराजकता फैलाकर अपने ही शासन को क्यों दागदार बनाती है? क्यों अपने प्रांत की जनता को डराती है, भयभीत करती है? क्या ये प्रश्न ममता की राजनीतिक छवि पर दाग नहीं है?

ममता एवं तृणमूल कांग्रेस का एकतरफा रवैया हमेशा से समाज को दो वर्गों में बांटता रहा है एवं सामाजिक असंतुलन तथा रोष का कारण रहा है। बदले हुए राजनीतिक हालात इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि किसी भी एक वर्ग की अनदेखी कर कोई भी दल राजसत्ता का आनंद नहीं उठा सकता। मुद्दा चाहे रामनवमी पर हिंसा का हो या संदेशखाली में हिन्दू महिलाओं के साथ अत्याचारों का या साधु-संतों को डराने-धमकाने का। राज्य में शीर्ष संवैधानिक पद पर रहते हुए भी ममता बनर्जी ने अलोकतांत्रिक, गैर-कानूनी एवं राष्ट्र-विरोधी कार्यों को अंजाम दिया है। बंगाल में तो भ्रष्टाचार और साम्प्रदायिकता के जबड़े फैलाए, हिंसा की जीभ निकाले, मगरमच्छ सब कुछ निगल रहा है। ममता अपनी जातियों, गुरुपों और वोट बैंक को मजबूत कर रही हैंङ्क देश को नहीं। दुनिया के लोग केवल बुराइयों से लड़ते नहीं रह सकते, वे व्यक्तिगत एवं सामूहिक, निश्चित सकारात्मक लक्ष्य के साथ जीना चाहते हैं। अन्यथा जीवन की सार्थकता नष्ट हो जाएगी। बंगाल में आम जनजीवन की सार्थकता ही नष्ट हो रही है।

http://t.me/AllNewsPaperPdf

" जीत और हार जीवन के अहम हिस्से हैं, जिन्हें समानता के साथ देखना चाहिए। -अटल बिहारी वाजपेयी

यूनिसेफ की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक, दुनिया के करीब अठारह करोड़ बच्चे भुखमरी से जूझ रहे हैं, तो यह व्यवस्था की ही विफलता है। इस गंभीरतम मानवीय संकट से निपटने के लिए सभी देशों को सामूहिक जिम्मेदारी समझते हुए आगे आना होगा।

भूखे बच्चे

आज की दुनिया में, जहां तकनीकी और आर्थिक विकास ने हमें चमत्कारों की ओर अग्रसर किया है, वहीं एक कड़वा सच यह भी है कि दुनिया के करोड़ों बच्चे भुखमरी का शिकार हो रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (यूनिसेफ) की ताजा रिपोर्ट ने इसी स्थिति को उजागर किया है, जिसके मुताबिक, दुनिया में पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों में 27 फीसदी यानी करीब अठारह करोड़ बच्चे गंभीर खाद्य संकट का सामना कर रहे हैं। यह आंकड़ा किसी भी सभ्य समाज के लिए शर्मनाक है। बच्चों को पर्याप्त भोजन न मिल पाना उनके शारीरिक व मानसिक विकास को तो प्रभावित करता ही है, इससे उनके जीवन की गुणवत्ता नकारात्मक रूप से प्रभावित होती है और भविष्य भी अंधकारमय होता है। यूनिसेफ की इस रिपोर्ट के निष्कर्षों की पुष्टि हाल ही में जारी संयुक्त राष्ट्र की एक अन्य रिपोर्ट से भी होती है, जिसके अनुसार, 32 देशों में भूख से जूझते 3.60 करोड़ बच्चों में से पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों में कुपोषण का स्तर गंभीरतम स्तर पर है। दरअसल, आज अगर दुनिया का हर चार में से एक बच्चा गंभीर खाद्य संकट का सामना कर रहा है, तो इसकी बड़ी वजह वैश्विक युद्ध, असमानता और जलवायु संकट के अलावा विकराल गरीबी भी है। इस मामले में भारत की स्थिति भी कुछ खास अच्छी नहीं है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के आंकड़े बताते हैं कि पिछले 24 घंटों में पौष्टिक भोजन न करने वाले छह से 23 महीने के बच्चों का प्रतिशत 2016 में 17.2 फीसदी था, जो बढ़कर 2021 में 17.8 फीसदी हो गया। अमेरिका के जेएएमए ओपन नेटवर्क और हार्वर्ड की एक हालिया रिपोर्ट भी इन आंकड़ों की पुष्टि करती है। गौरतलब है कि बच्चों को अगर पौष्टिक आहार नहीं मिल पा रहा है, तो यह महज एक स्वास्थ्य संकट नहीं, बल्कि संकेत है कि हम अपने समाज और मानवता के प्रति कर्तव्यों को निभाने में भी विफल हो रहे हैं। इस मामले में बर्किना फासो और रवांडा जैसे

अफ्रीकी देश जरूर मिसाल बनकर उभरे हैं, जिन्होंने राजनीतिक व सामाजिक अस्थिरता, बेहद गरीबी, गंभीर खाद्य असुरक्षा और अनियमित वर्षा के बावजूद पिछले दस वर्षों में बच्चों में भुखमरी की समस्या को कम करने में कामयाबी पाई है। यूनिसेफ की कार्यकारी निदेशक कैथरीन रसेल का यह कहना बिल्कुल मुनासिब है कि यदि हमारे बच्चे भूख से जूझ रहे हैं, तो यह उन बच्चों के माता-पिता की नहीं, बल्कि व्यवस्था की विफलता है। ऐसे में, अगर वाकई बच्चों को भूखे मरने से बचाना है, तो इससे निपटने के लिए सभी देशों को सामूहिक जिम्मेदारी समझते हुए आगे आना होगा।

खिड़की खुली, दरवाजा बाकी

भारतीय जनता पार्टी ने दक्षिण की 130 सीटों में से 29 सीटों पर जीत दर्ज की। इस चुनाव ने साबित कर दिया कि दक्षिण में भाजपा का दबदबा बढ़ रहा है और आने वाले समय में दक्षिण भारतीय राजनीतिक समीकरण भाजपा की राजनीति के साथ एक बड़े बदलाव के लिए तैयार हैं।

भारत का बहुप्रतीक्षित आम चुनाव संपन्न हो गया है और भाजपा के नेतृत्व में राजग गठबंधन सरकार बन रही है। नरेंद्र मोदी कल तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने वाले हैं। हालांकि उत्तर भारत में भाजपा को सीटों का भारी नुकसान हुआ, पर दक्षिण भारत में दिलचस्प वोटिंग पैटर्न उभरकर सामने आए हैं, जो वहां भाजपा की चुनावी बढ़त से स्पष्ट है। बेशक दक्षिण में मिली बढ़त उत्तर भारत में हुए नुकसान की भरपाई नहीं कर सकती, पर इस चुनाव में भाजपा के संबंध में दक्षिण की मतदान प्रवृत्ति का विश्लेषण एक ऐसी अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जो दक्षिण में पैठ बनाने की इच्छुक किसी भी राष्ट्रीय पार्टी के लिए ध्यान देने योग्य है।

महेंद्र बाबू कुरुवा
राजनीतिक विश्लेषक

लंबे समय से दक्षिणी राज्यों में भाजपा को 'उत्तर भारतीय पार्टी' माना जाता रहा है। तमाम प्रयासों के बावजूद कर्नाटक को छोड़कर यह दक्षिणी राज्यों में अपनी पैठ नहीं बना पाई। हालांकि 2019 में मोदी लहर में भी आंध्र प्रदेश, केरल और तमिलनाडु में एक भी सीट नहीं जीत पाने के बाद भाजपा दक्षिण के प्रति गंभीर हो गई। इन तीनों राज्यों में भाजपा की हार के पीछे कई कारण थे। आंध्र में भाजपा के खिलाफ लोगों में काफी नाराजगी थी, क्योंकि उसने राज्य को विशेष राज्य का दर्जा नहीं दिया और जगन मोहन रेड्डी के नेतृत्व में वाईएसआर कांग्रेस ने आंध्र प्रदेश में किसी अन्य पार्टी के लिए राज्य के चुनावी मैदान में उतरने की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी थी। तमिलनाडु में पारंपरिक रूप से द्रविड़ पार्टियों की राजनीति हावी रही है। यहां तक कि केरल में भाजपा की हिंदुत्व की राजनीति भी उल्टी पड़ गई और भाजपा द्वारा उठाए गए सबरीमाला मुद्दे का ज्यादातर लाभ केरल कांग्रेस को मिला।

मगर 2024 के आम चुनाव में चीजें बदल गईं। दक्षिण भारत की 130 सीटों में से भाजपा ने 29 सीटें हासिल कीं, जिनमें से तीन आंध्र प्रदेश में, 17 कर्नाटक में, आठ तेलंगाना में और एक सीट केरल में है। आंध्र प्रदेश में पार्टी का वोट शेयर 2019 के 0.98 फीसदी से बढ़कर अब

11.28 फीसदी हो गया है। यह पूर्व राजग सहयोगी एवं तेदेपा प्रमुख चंद्रबाबू नायडू के साथ समझौते के कारण हुआ, जो अब केंद्र में 'किंग मेकर' बन गए हैं। आंध्र में भाजपा की वापसी का कारण उसके दूसरे सहयोगी और जनसेना पार्टी के फिल्म स्टार पवन कल्याण द्वारा हासिल भारी युवा वोट भी हैं। आंध्र प्रदेश से सटे तेलंगाना में हाल ही में संपन्न विधानसभा चुनाव में भाजपा की स्थिति खराब हो गई थी, लेकिन आम चुनाव में यह पूरी ताकत के साथ उभर कर सामने आई है। भाजपा ने तेलंगाना की छह में से तीन सीटें हासिल कीं, इसने बीआरएस को तीसरे स्थान पर धकेल दिया। बूथ स्तर पर अपना स्वयं का पार्टी कैडर तैयार करने के लगातार प्रयासों का नतीजा है कि भाजपा का वोट शेयर 2019 के 19.65 प्रतिशत से बढ़कर 2024 में 35.08 प्रतिशत हो गया। इसके अलावा, राज्य की कांग्रेस सरकार द्वारा तेलंगाना के किसानों से कर्ज माफी का वादा पूरा नहीं करने का लाभ भी भाजपा को मिला।

'देवताओं का अपना देश' कहे जाने वाले केरल में खाता खोलने का भाजपा का लंबे समय का सपना पूरा हो गया, क्योंकि पार्टी के प्रत्याशी ने त्रिशूर निर्वाचन क्षेत्र से जीत हासिल की। पार्टी ने कट्टर हिंदुत्व के अपने एजेंडे से विकास की तरफ अपना रुख मोड़ दिया, जिससे उसका वोट शेयर 2019 के 13 प्रतिशत से बढ़कर 2024 में 16.68 प्रतिशत हो गया। भाजपा को तमिलनाडु से काफी उम्मीदें थीं, क्योंकि उसके युवा राज्य प्रमुख अन्नामलाई पूर्व आईपीएस हैं और पार्टी ने उन्हें खुली छूट दे रखी है। लेकिन कद्दावर नेताओं के बार-बार दौरे, भाजपा की केंद्रीय इकाई द्वारा तमिल संस्कृति एवं परंपरा पर जोर दिए जाने तथा 'कच्चातिवु' मुद्दे को उठाने के बावजूद पार्टी वहां सीट नहीं जीत सकी। हालांकि 2019 के 3.66 फीसदी के मुकाबले उसका वोट शेयर बढ़कर 2024 में 11.24 फीसदी जरूर हो गया, जो कि तीन गुना ज्यादा है। भाजपा द्वारा हासिल यह वोट शेयर 1999 से भी ज्यादा है, जब वह राज्य में अपने चरम पर थी और उसने तीन सीटें जीती थीं। यह दर्शाता है कि भाजपा ने द्रविड़ पार्टियों के वोट शेयर में सेंध लगा दी है, खासकर अन्नाद्रमुक के वोट शेयर में, जो पार्टी सुप्रीमो जयललिता के निधन के बाद बदहाल है। हालांकि द्रमुक के वोट शेयर में सेंध लगाना मुश्किल है, जिसने राज्य की 39 में से 22 सीटों पर जीत दर्ज की है।

कर्नाटक का परिणाम अजीबोगरीब रहा, जहां भाजपा का वोट शेयर 2019 के 51.38 से घटकर इस बार 46.06 फीसदी रह गया है। जद (एस) के साथ गठजोड़ करना भी भाजपा को भारी पड़ गया, जद (एस) प्रज्वल रेवन्ना से संबंधित विवादों के कारण राज्य के वोट पैटर्न में जबर्दस्त बदलाव दिखा। वर्ष 1996 के बाद यह पहली बार था, जब राज्य के दोनों प्रमुख समुदाय-वोकालिंगा एवं लिंगायत भाजपा के साथ थे। इस तरह, भले ही भाजपा ने सीटें हारी हों, लेकिन उसे कुछ अप्रत्याशित समुदायों का वोट मिला है।

दक्षिण में भाजपा के समग्र प्रदर्शन से कोई भी राष्ट्रीय पार्टी चार सबक सीख सकती है। पहला, दक्षिण भारत कोई एक इकाई नहीं है, जैसा कि कई उत्तर भारतीय मानते हैं। हर राज्य के अपने सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक कारक होते हैं, जो मतदान को प्रभावित करते हैं। यही कारण है कि दक्षिण के प्रत्येक राज्य में भाजपा ने वोट शेयर और जीती गई सीटों के मामले में विरोधाभासी प्रदर्शन किया है। दूसरा, कोई भी राष्ट्रीय पार्टी दक्षिण की क्षेत्रीय पार्टियों की अनदेखी नहीं कर सकती। तेदेपा एवं जद (एस) ने इसे एक बार फिर साबित किया है। तीसरा सबक यह है कि विचारधारा और राजनीतिक बयानबाजी से वोट तो मिल सकते हैं, लेकिन सिर्फ यह वोटों के सीटों में तब्दील होने की गारंटी नहीं है। केरल और तमिलनाडु ने भाजपा के लिए इसे साबित किया है। अंतिम सबक यह है कि दक्षिण की राजनीति में अब फिल्म स्टार उतने प्रासंगिक नहीं रहे। आंध्र प्रदेश और केरल में फिल्म स्टार के साथ भाजपा के जुड़ाव और उससे मिले चुनावी लाभ से यह साफ है। कुल मिलाकर, इस चुनाव ने साबित कर दिया कि दक्षिण में भाजपा का दबदबा बढ़ रहा है और आने वाले समय में दक्षिण भारतीय राजनीतिक समीकरण भाजपा की राजनीति के साथ एक बड़े बदलाव के लिए तैयार हैं।

जीवन धारा

परमहंस योगानंद

जो कुशल हैं, उनकी कुशलता का मुख्य कारण यही है कि उनमें अहंकार की वृत्ति क्षीण होती है। वे दूसरों को प्रोत्साहन देते हैं। अगर कभी अपने किसी आदमी से कोई गलती हो जाए, तो उसे अपने सिर पर लेते हैं।

हर काम में आड़े आता है मनुष्य का अहंकार

***अहंकार** एक आवरण है। दीपक के ऊपर हांडी को उलट दें, तो उसमें प्रकाश होते हुए भी अंधकार हो जाता है। अंधकार और प्रकाश के बीच में एक दीवार खड़ी हो जाती है। ऐसे अंधकार का ही दूसरा नाम अहंकार है, जहां अज्ञानता होती है, वहां अंधकार होता है। दीपक के ऊपर हांडी दीपक को ऑक्सीजन से वंचित रखती है और दीपक अपने ही द्वारा उत्पन्न की गई कार्बन डाईऑक्साइड से घिरे रहने पर थोड़ी ही देर में बुझ जाता है। इसी प्रकार अहंकारी मनुष्य अपने इर्द-गिर्द विकार का वातावरण खड़ा कर लेता है, जिससे उसकी प्राणशक्ति क्षीण हो जाती है और उसमें दुखी होता हुआ वह एक दिन इस संसार से कूच कर जाता है। अहंकारी लोग तिल-तिल कर जीवन भर खुद को नष्ट करते रहते हैं।*

मनुष्य का अहंकार हर काम में आड़े आता है। जो मनुष्य अहंकारी होता है, वह बात-बात में अपनी महत्ता को दर्शाता है। वह 'मैंने यह काम किया, मैं बड़ा बुद्धिमान हूं' आदि डींगें हांकता रहता है। वह समझता है कि सब काम मेरी ही वजह से हो रहे हैं। उसका न किसी पर विश्वास है, न कोई उसके साथ काम करने को ही राजी होता है। सारांश यह कि किसी भी मनुष्य को अहंकारी नहीं होना चाहिए। अहंकारी से सब दूर रहना चाहते हैं। इसलिए अहंकार किसी भी काम में बड़ी बाधा है। बच्चे सब को इसलिए प्रिय लगते हैं कि उनमें अहंकार नहीं होता है। उनसे बात करने में प्रसन्नता होती है। वे सहज-सरल हैं। इसलिए उनसे सब बात करते हैं, जिससे एक प्रकार की स्फूर्ति मिलती है। जो कार्य करने में कुशल हैं, उनकी कुशलता का मुख्य कारण यही है कि उनमें अहंकार की वृत्ति क्षीण होती है। वे दूसरों को प्रोत्साहन और बढ़ावा देते हैं। अगर कभी अपने किसी आदमी से कोई गलती हो जाए, तो उसे अपने सिर पर लेते हैं। अगर कभी कोई अच्छा काम हो जाता है, तो सारी शाबाशी वे दूसरों को ही देते हैं। इससे दूसरों का दिल बढ़ता है और वे भविष्य में और अधिक प्रवीणता से काम करते हैं। वे जिनको शाबाशी देते हैं, वे व्यक्ति हृदय से आभारी होकर उनके सहयोगी बन जाते हैं। इसी प्रकार अहंकार का त्याग करने पर लोगों की आत्मा शुद्ध होती है और यश एवं शांति मिलती है। जिस प्रकार बल्ब पर काली स्याही लगा देने से उसका प्रकाश विकसित नहीं होता, उसी प्रकार अहंकार से व्यक्तित्व नहीं निखर पाता। आत्मा व परमात्मा दोनों एक ही हैं, पर परमात्मा की प्राप्ति तभी हो सकती है, जब अहं मिट जाता है। अहंकार मिट जाना ही परमात्मा का मिलन है। जब तक अहं है, तब तक परमात्मा नहीं और जहां अहं नहीं, वहां परमात्मा है। अतः हमें स्वार्थ और परमार्थ, दोनों में अहं का त्याग करना चाहिए, तभी हम संसार के सच्चे मार्गदर्शक और आत्मदर्शी हो सकते हैं। जो अपने व्यक्तित्व और अपने अहं को ब्रह्म में समाहित कर देते हैं, वे ईश्वर के साथ एकत्व प्राप्त कर लेते हैं, वे संसार के भयंकर उपद्रवों से बच जाते हैं।

साढ़े तीन हाथ...

सूत्र

जब मनुष्य अपने-आप को छिपाकर, प्रकृति के साथ एक होकर रहता है, तब वह संसार से बचा रहता है, उसके ऊपर किसी प्रकार का प्रहार नहीं होता, वह अपनी साधना में संलग्न हो अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर लेता है, जो मनुष्य साढ़े तीन हाथ के शरीर में अहं भाव भरकर 'मैं-मैं' कहता रहता है, उस मनुष्य का भी गला एक दिन मैं-मैं करने वाली बकरी की तरह कट जाता है।

दूसरा पहलू

विमानों के लिए विक्षोभ की स्थिति तब पैदा होती है, जब ऊंचाई पर दो तरह की हवा एक दूसरे से टकराती है।

जलवायु परिवर्तन से हवाई यात्रा में जोखिम

विमान यात्रियों के लिए विक्षोभ का अनुभव एक सामान्य अनुभव है। विक्षोभ की स्थिति तब पैदा होती है, जब ऊंचाई पर दो तरह की हवा एक दूसरे से टकराती है। विक्षोभ के खतरनाक स्तर पर पहुंचने के उदाहरण कम हैं, लेकिन जब ऐसे मामले सामने आते हैं, तो वे बेहद भीषण होते हैं। पिछले दिनों लंदन से सिंगापुर जाने वाली सिंगापुर एयरलाइंस के साथ हुए हादसे ने इसे फिर से साबित कर दिया है, जिसमें एक यात्री की दिल का दौरा पड़ने से मौत हो गई, और कई यात्री घायल हो गए। उस फ्लाइट की आनन-फानन में बैंकॉक में लैंडिंग कराई गई थी, ताकि घायल यात्रियों को अस्पतालों में तत्काल इलाज सुलभ हो सके।

डाउग ड्री

ऊंचाई पर भी दूसरे विमानों के नजदीक आने या खासकर सूखे के दौरान रेतीले तूफान के कारण विमानों को विक्षोभ का सामना करना पड़ सकता है।

हवाई रूटों में विक्षोभ की घटना कहीं भी हो सकती है, लेकिन विक्षोभ के मामले में कुछ हवाई रूट दूसरे रूटों की तुलना में ज्यादा खतरनाक होते हैं।

विशेषज्ञों का मानना है कि जलवायु परिवर्तन के कारण हवाई रूटों पर विक्षोभ की घटनाएं बढ़ेंगी। बल्कि कुछ अध्ययन तो बताते हैं कि पिछले कुछ दशकों में विक्षोभ की घटनाएं बढ़ गई हैं, जिस कारण हवाई सफर ज्यादा जोखिम भरा हो गया है। पिछले साल प्रकाशित एक रिपोर्ट के मुताबिक, 1979 से 2020 तक हवाई विक्षोभ की घटनाएं तेजी से बढ़ी हैं। कुछ हवाई रूटों पर विक्षोभ की घटनाओं में 35 फीसदी तक की वृद्धि हुई है। आजकल हर उड़ान को एक या दूसरे तरीके से विक्षोभ की घटनाओं का कमोबेश सामना करना पड़ता है। मसलन, यदि एक विमान के उड़ान भरने या लैंड करने के तुरंत बाद दूसरा विमान उड़ान भरता या लैंड करता है, तो पहले विमान के इंजन और उसके डैनों से निकली हवा दूसरे विमान के लिए विक्षोभ की स्थिति पैदा कर सकती है। हवाई अड्डे के आसपास के इलाके में तेज हवा चलने से भी जमीनी स्तर पर विमानों को विक्षोभ का सामना करना पड़ सकता है। इसी तरह, ऊंचाई पर भी दूसरे विमानों के नजदीक आने या खासकर सूखे के दौरान रेतीले तूफान के कारण विमानों को विक्षोभ का सामना करना पड़ सकता है। ऊंचाई पर विमानों को एक और तरह के विक्षोभ का सामना करना पड़ता है, जिसे क्लीयर एअर टर्बुलेंस कहते हैं और जो ज्यादातर पहाड़ी इलाकों में घटित होते हैं। खतरनाक बात यह है कि यह विक्षोभ अदृश्य होता है, और इससे बचा नहीं जा सकता। इस विक्षोभ की स्थिति तब होती है, जब गर्म हवा ठंडी हवा में प्रवेश करती है।

ऊंचाई पर विमानों को एक और तरह के विक्षोभ का सामना करना पड़ता है, जिसे क्लीयर एअर टर्बुलेंस कहते हैं और जो ज्यादातर पहाड़ी इलाकों में घटित होते हैं। ये काफी खतरनाक होते हैं।

आंकड़े

बीन्स उत्पादन

ताजा रिपोर्ट के अनुसार, बीन्स उत्पादन में भारत पूरी दुनिया में पहले नंबर पर है।

देश	उत्पादन
भारत	23.32%
ब्राजील	10.03%
म्यांमार	9.4%
तंजानिया	4.75%
युगांडा	4.60%

चीन छठे (4.53%) और अमेरिका सातवें (4.14%) नंबर पर | स्रोत : FAO

कुरुक्षेत्र में रहने वाले मुद्गल पूर्णिमा और अमावस के दिन ही भोजन करते थे। दुर्वासा ऋषि द्वारा परीक्षा लेने के कारण वह तीन महीने तक भूखे रहे थे।

दुर्वासा ने ली परीक्षा

अंतर्यात्रा
संकलित

द्वापर युग में मुद्गल नामक व्यक्ति कुरुक्षेत्र में रहते थे। वह पूर्ण जितेंद्रिय, सत्यवादी, दयालु और धर्मात्मा थे। वह माह में पूर्णिमा और अमावस पर ही महीने में दो दिन भोजन करते थे। इतना ही नहीं, इन दिनों में उनके घर पर कोई अतिथि आ जाए, तो उसे भी भोजन कराने के बाद बचने पर ही खुद आहार लेते थे।

इससे मुद्गल की कीर्ति चारों ओर फैल रही थी। एक बार दुर्वासा ऋषि के मन में आया कि क्यों न मुद्गल की परीक्षा ली जाए? पूर्णिमा के दिन दुर्वासा ऋषि मुद्गल के घर पहुंच गए। उन्होंने ऋषि का आदर-सत्कार कर भोजन कराया। दुर्वासा ने मुद्गल के घर में बना हुआ सारा भोजन निपटा दिया। मुद्गल ने ऋषि का धन्यवाद कर विदा किया। इसके बाद अमावस के दिन भी दुर्वासा ऋषि मुद्गल के घर पहुंचे और उन्होंने पूर्व की भांति सारा भोजन कर लिया। यह क्रम करीब तीन महीने तक चला।

तीन महीने तक मुद्गल के पेट में अन्न का एक दाना तक नहीं गया, लेकिन उनके मन में तनिक भी दुख या क्रोध का भाव नहीं आया। यह देख दुर्वासा ऋषि बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा, इस लोक में तुम्हारे समान दाता कोई और नहीं है। भूख ऐसी चीज है, जो अच्छे-अच्छों के ज्ञान और धैर्य का नाश कर डालती है। भूखे रहकर भी तुम्हारी इंद्रियां नहीं भटकीं। तुम मेरी परीक्षा में सफल हुए। मैं तुम्हें परमपद प्राप्त करने का आशीर्वाद देता हूं।

आज का इतिहास

मशहूर पटकथा लेखक, नाट्य निर्देशक हबीब तनवीर का निधन

दुनिया एक रंगमंच है और यहां हर कोई अपनी भूमिका निभाने आया है, बहुत से लोग अपनी भूमिका अच्छे से निभा पाते हैं और उनका नाम इतिहास में दर्ज हो जाता है। इस रंगमंच के ऐसे ही एक फनकार थे हबीब तनवीर। मशा, निर्देशक, कवि और अदाकार हबीब तनवीर आठ जून के दिन दुनिया के रंगमंच से विदा हुए थे। तनवीर के मशहूर नाटकों में आगरा बाजार और चरणदास चोर शामिल हैं। हबीब तनवीर ने 50 वर्ष की अपनी लंबी रंगमंच यात्रा में 100 से अधिक नाटकों का मंचन किया। शतरंज के मोहरे, लाला शोहरत राय, मिट्टी की गाड़ी, गांव का नाम ससुराल मोर नाम दामाद, पोंगा पंडित, द ब्रोकन ब्रिज, जहरीली हवा और राज रक्त उनके मशहूरों नाटकों में शुमार हैं।

सितारे हमारे-आपके बीच के लोग

भारत में चूंकि अभी इंटरनेट बाजार में पर्याप्त संभावनाएं हैं, इसलिए अभी सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर का यह दौर चलेगा, पर कुछ चिंताएं भी हैं।

मुकुल श्रीवास्तव | सोशल मीडिया

आज से पांच साल पहले किसी ने सोचा भी नहीं था कि एक ऐसा वक्त भी आएगा, जब आप कुछ न करते हुए भी बहुत कुछ करेंगे और पैसे भी कमाएंगे। बात चाहे यात्राओं की हो या खान-पान की या फिर फैशन की, देश-विदेश की बड़ी कंपनियां ऐसे लोगों को, जो इंटरनेट पर ज्यादा फॉलोवर रखते हैं, अपने उत्पाद के विज्ञापन के लिए पैसे दे रही हैं और उनके खर्चे भी उठा रही हैं।

इंटरनेट की दुनिया की खास बात है गतिशीलता। नया बहुत जल्दी पुराना हो जाता है और नई संभावनाओं के द्वार खुल जाते हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स में नए-नए फीचर जुड़ रहे हैं। इस कवायद का मतलब ऑडियंस को ज्यादा वक्त तक अपने प्लेटफॉर्म से जोड़े रखना है। बड़ा कारण इंटरनेट द्वारा पैदा हो रही

आय भी है। इसके अलावा, सोशल मीडिया रातों-रात लोगों को सेलिब्रिटी बना दे रहा है, जिसमें बड़ी भूमिका फेसबुक, इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसी साइट्स की है।

मूल्यांकन सलाहकार फर्म क्रोल की ताजा रिपोर्ट के अनुसार, एक साल में एक तिहाई भारतीय ब्रांड्स ने अपनी इन्फ्लुएंसर मार्केटिंग पर खर्च दोगुना कर दिया है। कोरोना महामारी ने बड़ी मात्रा में डिजिटलीकरण को प्रेरित किया। भारत में सोशल मीडिया की कंटेंट क्रिएटर इंडस्ट्री पच्चीस प्रतिशत की रफ्तार से बढ़ रही है, जिसके साल 2025 में 29.03 करोड़ डॉलर होने की संभावना है। सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स अब ब्रांड को एक बड़े दर्शक वर्ग पर कम खर्च में पहुंचाने का सुलभ तरीका बन रहा है। आज भारत में लगभग आठ करोड़ कंटेंट क्रिएटर हैं। डिजिटल मार्केटिंग एजेंसी आई क्यूब्स वायर के शोध से पता चलता है कि करीब 35 फीसदी ग्राहकों के खरीदारी निर्णय सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर पोस्ट, रील्स व वीडियो देखकर लिए जा रहे हैं।

सोशल मीडिया यूजर्स अपनी बड़ी फैन फॉलोइंग का फायदा 'सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर' के तौर पर उठा रहे हैं और यह विज्ञापन के नए माध्यम के रूप में तेजी से उभर रहा है। सोशल मीडिया आम इंटरनेट यूजर्स को सितारा बना रहा है। सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर, व्यक्ति और ब्रांड प्रमोशन का बड़ा औजार बनकर सामने आए हैं। सोशल मीडिया विज्ञापन का एक अपरंपरागत माध्यम है, जो बाकी सारे मीडिया से अलग है। यह एक वर्चुअल वर्ल्ड बनाता है, जिसे उपयोग करने वाला व्यक्ति सोशल मीडिया के किसी प्लेटफॉर्म आदि का उपयोग कर किसी भी इंटरनेट से जुड़े व्यक्ति तक पहुंच बना सकता है।

सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर वह आम व्यक्ति होता है, जिसके विभिन्न प्लेटफॉर्म पर कई फॉलोवर होते हैं। वह अपनी लोकप्रियता का इस्तेमाल विभिन्न तरह के उत्पाद के विज्ञापन में करता है। इसमें दूसरे विज्ञापन माध्यमों के मुकाबले निवेश पर रिटर्न अधिक है। देश के लाखों युवा सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर को एक बेहतर कॅरिअर विकल्प के रूप में देख रहे हैं। सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर जहां विज्ञापनों की दुनिया में एक नया आयाम गढ़ रहे हैं, वहीं विज्ञापनों में सेलिब्रिटी स्टेटस को खत्म भी कर रहे हैं, जहां हमारे-आपके बीच के लोग ही स्टार बन रहे हैं। भारत में चूंकि अभी इंटरनेट बाजार में पर्याप्त संभावनाएं हैं, इसलिए अभी सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर का यह दौर चलेगा, पर कुछ चिंताएं भी हैं। भारत के इन्फ्लुएंसर मार्केटिंग उद्योग को विनियमन की आवश्यकता है, ताकि तथ्यों के गलत प्रस्तुतीकरण से बचा जा सके। जनवरी 2023 में, भारत के उपभोक्ता मामले मंत्रालय ने इसके लिए गाइडलाइंस जारी करते हुए घोषणा की कि ऐसी गाइडलाइंस ग्राहक हितों की रक्षा के लिए जरूरी हैं।सोशल मीडिया पर विज्ञापन करने वाले सलेब्रिटीज भी इसके दायरे में होंगे। भ्रामक विज्ञापन करने व विनियमन संबंधी दिशा-निर्देशों को नहीं मानने पर इन्फ्लुएंसर्स को 10 लाख रुपये तक का जुर्माना देना होगा।

Special arrangements by Amar Ujala

स्वत्वाधिकारी रामगोपाल इन्वेस्टमेन्ट्स प्रा.लि. के लिए मुद्रक, प्रकाशक समीर माहेश्वरी द्वारा नवभारत प्रेस, नवभारत भवन, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जी.ई.रोड, रायपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित. प्रधान संपादक : समीर माहेश्वरी, संपादक : राजेश आर. जोशी* (पी.आर.बी. कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिये जिम्मेदार)
■ रायपुर फोन : 0771-4343434, 2535555-66-77, ■ भुवनेश्वर : 0674-2380511/2380518 ■ बिलासपुर : 07752-230591, 407748, 224563 ■ वर्ष 65 ■ अंक 113 (रजि.नं. 13045/59 आरएनआई), पो. रजिस्टर्ड नं. छ.ग./रायपुर संभाग/61/2022-24 ■ भिलाई फोन : (0788) 2294181, 4030655

सम्पादकीय

मोदी-3 : स्वतंत्र फैसलों की राह इस बार आसान नहीं

नरेन्द्र मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने की तैयारी कर रहे हैं। लेकिन इस बार स्वतंत्र रूप से फैसले लेने की उनकी राह आसान नहीं होगी। दरअसल पिछले दस साल में भाजपा को अपने दम पर बहुमत का आंकड़ा मिल रहा था और ऐसे में नरेन्द्र मोदी और अमित शाह दोनों स्वतंत्र रूप से चाहे जो फैसले ले रहे थे। इस बार सरकार गठबंधन की है। टीडीपी और जेडीयू का इतिहास बताता है कि वे किसी भी सरकार को शांति से चलने नहीं देते। ऐसे में मोदी-3 की राह आसान दिखाई नहीं देती है। नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू कई बार यूनिफॉर्म सिविल कोड, प्लेसेज ऑफ वर्शिप एक्ट को खत्म करने, मुस्लिम रिजर्वेशन और वन नेशन-वन इलेक्शन पर विरोध दर्ज कराते रहे हैं। 23 फरवरी, 2024 को दिल्ली में पीएम मोदी ने मंत्रियों से कहा था कि अगले 5 साल का रोडमैप और 100 दिनों का एक्शन प्लान बनाएं। अफसर आचार संहिता के दौरान इस पर होमवर्क करते रहे। 5 अप्रैल को राजस्थान के चूरु में एक चुनावी रैली में खुद मोदी ने कहा, 10 साल में हमने जो काम किया वो ट्रेलर था, पूरी पिक्चर अभी आनी बाकी है। मोदी वन नेशन-वन इलेक्शन, यूनिफॉर्म सिविल कोड, मुस्लिम आरक्षण खत्म करना, प्लेसेज ऑफ वर्शिप एक्ट में बदलाव, दिल्ली मास्टर प्लान, वक्फ बोर्ड खत्म करना, महिला आरक्षण, 70 साल के बुजुर्गों के लिए मुफ्त इलाज, पेपर-लीक नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय कानून, यूनियन बजट, न्यू एजुकेशन पॉलिसी, जनगणना (2026 में परिसीमन होना है), लखपति दीदी की संख्या 3 करोड़ तक ले जाना, मुफ्त बिजली योजना, किसानों के लिए ऑयल सीड्स और पल्सेज पर ध्यान, भारत को तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनाना, रिफॉर्म, परफॉर्म, ट्रांसफॉर्म पर ध्यान देना, स्केल, स्कोप, स्पीड, स्किल के एजेंडे पर काम करना आदि मुद्दों पर अपना प्लान तैयार करके बैठे थे। जेडीयू की तरफ से नीतीश कुमार ने भाजपा को सांसदों का समर्थन पत्र सौंप दिया है। इसके एक दिन के अंदर ही जेडीयू प्रवक्ता केसी त्यागी ने अग्निवीर और यूनिफॉर्म सिविल कोड पर सवाल उठा दिए हैं। केसी त्यागी ने कहा, 'अग्निवीर योजना को लेकर लोग नाराज हैं।

हमारी पार्टी इस पर विस्तार से चर्चा चाहती है। यूसीसी पर हमारा 10 साल पुराना स्टैंड है। नीतीश कुमार ने विधि आयोग को चिट्ठी लिखी थी कि इसमें सुधार होना चाहिए, लेकिन सबसे पूछकर करो। हम इसके खिलाफ नहीं हैं, लेकिन सभी के हितों का ख्याल रखकर रास्ता निकाला जाना चाहिए। वन नेशन-वन इलेक्शन पर हम साथ हैं। जातिगत गणना को पूरा देश मान रहा है, किसी की विरोध करने की हिम्मत नहीं है। वहीं टीडीपी लीडर चंद्रबाबू नायडू और मोदी के रिश्ते हमेशा से अच्छे नहीं रहे हैं। 2018 में आंध्र प्रदेश को विशेष राज्य का दर्जा नहीं मिला, तो एनडीए का साथ छोड़ दिया था। दोनों के रिश्ते इतने खराब हो गए थे कि नायडू ने मोदी को कट्टर आतंकवादी तक बता दिया। टीडीपी अविश्वास प्रस्ताव ले आई, जिसके बाद मोदी ने चंद्रबाबू नायडू को भ्रष्ट राजनीतिज्ञ बता दिया था। अब ये साथ कैसे चल पाएंगे ये देखना बहुत रोचक होगा।

अनेक कारण रहे आप पार्टी की दिल्ली व पंजाब में हार के?

मुख्यमंत्री भगवंत मान के नेतृत्व वाली पंजाब में सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी को अपने मध्यावधि परीक्षण में विफल रही, राज्य की 13 लोकसभा सीटों में से सिर्फ तीन पर उसने जीत हासिल की। मार्च 2022 में हुए विधानसभा चुनावों में इसका वोट शेयर 42 प्रतिशत से गिरकर 26.02 प्रतिशत हो गया।संगरूर, होशियारपुर और आनंदपुर साहिब ही वह सीटें हैं, जिन्हें आप ने जीता है। आप इंडिया में गठबंधन की सहयोगी है। हालांकि, उसने दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, गुजरात और असम में 22 सीटों पर चुनाव लड़ा था। मान के आग्रह पर ही आप ने पंजाब में कांग्रेस के साथ गठबंधन न करने का फैसला किया, जबकि कांग्रेस आलाकमान इसके लिए तैयार थे।

अशोक भाटिया।

आम आदमी पार्टी ने दिल्ली में सातों सीटों पर हार के बाद कांग्रेस के साथ गठबंधन खत्म करने का ऐलान कर दिया है। आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता गोपाल राय ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के घर पर गुरुवार को बैठक के बाद इसकी घोषणा की। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के साथ गठबंधन लोकसभा चुनाव के लिए ही था, विधानसभा चुनाव पार्टी अकेले लड़ने जा रही है।उन्होंने स्पष्ट किया कि 2025 की शुरुआत में होने वाले दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए कांग्रेस के साथ कोई गठबंधन नहीं होगा। गौरतलब है कि राय का यह बयान गुरुवार को आप द्वारा अपने विधायकों के साथ बैठक के बाद आया है। दिल्ली के मंत्री गोपाल राय ने कहा कि यह शुरू से ही स्पष्ट है कि इंडिया गठबंधन लोकसभा चुनाव के लिए बना था। हमने लोकसभा चुनाव साथ मिलकर लड़ा लेकिन दिल्ली विधानसभा चुनाव में देश में कोई गठबंधन नहीं है। हम दिल्ली की जनता के साथ मिलकर विधानसभा चुनाव लड़ेंगे। लोकसभा चुनाव से पहले हमने आप और कांग्रेस को चुनाव पूर्व गठबंधन बनाते हुए देखा, जिसका उद्देश्य भाजपा विरोधी वोटों के विभाजन को रोकना था। वही आप जिसने कभी कांग्रेस के खिलाफ सत्ता विरोधी लहर पर सवार होकर खुद को राजधानी में एक मजबूत ताकत के रूप में स्थापित किया था।

हालांकि, इससे दोनों दलों को कोई फायदा नहीं हुआ। भाजपा ने सभी सात सीटों पर जीत हासिल की, जबकि इंडिया ब्लॉक दूसरे स्थान पर ही रहा। दोनों पार्टियाँ इसका लाभ उठाने में विफल रहीं क्योंकि भाजपा ने राजधानी के मतदाताओं पर अपना प्रभुत्व कायम रखा। 2019 के आम चुनाव में, भाजपा को दिल्ली में 56।7त्न वोट मिले, जबकि आप पार्टी और कांग्रेस को क्रमश: 18.2त्न और 22.6त्न वोट मिले। हालाँकि, इस चुनाव में आप पार्टी और कांग्रेस के बीच एक रणनीतिक गठबंधन देखा गया, जिसमें कांग्रेस ने तीन निर्वाचन क्षेत्रों में और आप पार्टी ने चार निर्वाचन क्षेत्रों में अपने उम्मीदवार उतारे। पंजाब के खेल मंत्री गुरमीत सिंह मीत हेयर, जिन्होंने संगरूर से 1.72 लाख वोटों के अंतर से शानदार जीत दर्ज की, के अलावा आप द्वारा मैदान में उतारे गए चार अन्य कैबिनेट मंत्री और तीन विधायक अपनी सीटों पर हार गए, जिससे मतदाताओं ने स्पष्ट रूप से मान की शासन प्रणाली को नकार दिया।मान ने सभी उम्मीदवारों के लिए पूरे राज्य में काफी प्रचार किया था और दावा किया था कि उनकी पार्टी 'मिशन 13-0' के तहत पंजाब की सभी 13 सीटें जीतेगी। पिछले 25 दिनों में सीएम ने पूरे राज्य में 122 रैलियां कीं। पार्टी नेता राघव चड्ढा और दिल्ली के सीएम और आप संयोजक अरविंद केजरीवाल ने भी राज्य में प्रचार किया था। अपनी छवि खराब करने के अलावा, पंजाब में पार्टी के नेता के तौर पर मुख्यमंत्री की स्थिति भी कमज़ोर हुई है। गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर के राजनीति विज्ञान के पूर्व प्रोफेसर डॉ जगरूप सिंह सेखों ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि ये चुनाव आप को राज्य में संरचनात्मक संकट में धकेलने के लिए बाध्य हैं। वे सत्ता में हो सकते हैं, लेकिन उन्होंने अपनी

वैधता खो दी है। आम आदमी पार्टी ने पंजाब के लोगों को यह सोचकर हल्के में लिया कि वे 2022 का अपना प्रदर्शन दोहरा सकते हैं, लेकिन वे राज्य की प्रमुख चिंताओं जैसे ड्रग्स, अवैध खनन कानून और व्यवस्था और भ्रष्टाचार को दूर करने में विफल रहे। इतिहासकार परमजीत सिंह जज ने कहा कि यह मान का अहंकार ही था जिसकी वजह से राज्य में पार्टी का प्रदर्शन खराब रहा। उन्होंने मीडिया से बातचीत में कहा, "अहंकार और अच्छी राजनीति एक साथ नहीं चल सकती। अगर मान कांग्रेस के साथ गठबंधन के लिए राज़ी हो जाते तो आज नतीजे बहुत अलग होते।"लोकसभा चुनाव से पहले कांग्रेस छोड़कर आप में शामिल हुए डॉ. राजकुमार छाबेवाल ने होशियारपुर से 44,000 से अधिक मतों के अंतर से जीत हासिल की, जबकि पार्टी के मुख्य प्रवक्ता मलविंदर सिंह कंग ने आनंदपुर साहिब से 10,000 से अधिक मतों से जीत हासिल की।कैबिनेट मंत्री डॉ। बलबीर सिंह पटियाला से, कुलदीप सिंह धालीवाल अमृतसर से, गुरमीत सिंह खुड्डियां बठिंडा से, लालजीत सिंह भुल्लर खडूर साहिब से हार गए, जबकि विधायक जगदीप सिंह काका बराड़ फिरोजपुर से, अशोक पराशर पप्पी लुधियाना से और अमंशेर शेरी कलसी गुरदासपुर से हार गए।दलबदलू सुशील कुमार रिंकू (जो आप से भाजपा में शामिल हुए) और गुरप्रीत सिंह जीपी (जो कांग्रेस से आप में आए) जालंधर और फतेहगढ़ साहिब की अपनी-अपनी सीटें हार गए। मान के दोस्त और कॉमेडियन से नेता बने करमजीत अनमोल फरीदकोट से हार गए।पंजाब के विशेषज्ञ कर्नल (सेवानिवृत्त) जे एस गिल ने कहा कि सीएम मान को यह समझना होगा कि हमेशा लोगों की वाहवाही बटोरने से ज़मीनी स्तर पर जनता संतुष्ट नहीं होती। उन्होंने कहा, "जब लोग भविष्य के लिए आपका विजन और ज़मीनी स्तर पर उससे मेल खाता प्रदर्शन चाहते हैं, तो सार्वजनिक रूप से विरोधियों को नीचा दिखाने से चुनावी फायदा नहीं होता।" गिल ने भी मीडिया से कहा, "राजनीति तीन तरह की होती है- चुनावी, शासन और विधायी। आप अपने भाषणों में तीनों के लिए एक ही टेम्पलेट का इस्तेमाल नहीं कर सकते। सीएम को एक समझदार व्यक्ति होना चाहिए जो रंगला पंजाब के अपने विजन के साथ आबादी के हर वर्ग को साथ लेकर चले क्योंकि सीएम के तौर पर उनके विरोधी भी उनकी देखभाल में हैं। वे आप के नहीं बल्कि पंजाब के सीएम हैं।"मान के लिए राहत की बात यह रही कि उनकी पार्टी के छह उम्मीदवार दूसरे स्थान पर रहे - अमृतसर, बठिंडा, फरीदकोट, फतेहगढ़ साहिब, फिरोजपुर, पटियाला - और चार उम्मीदवार तीसरे स्थान पर रहे, गुरदासपुर, जालंधर, खडूर साहिब और लुधियाना सीटों पर। कांग्रेस को पंजाब में बड़ी बढ़त मिली, उसने सात सीटें जीतीं और 2022 के विधानसभा चुनावों में अपना वोट शेयर लगभग 23 प्रतिशत से बढ़ाकर 26.30 प्रतिशत कर लिया, जो इस चुनाव में राज्य में किसी भी पार्टी के लिए सबसे अधिक है।पार्टी के शीर्ष दावेदार चुनाव की कसौटी पर खरे उतरे। पूर्व मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी ने जालंधर सीट 1.75 लाख से अधिक मतों के अंतर से जीती, पूर्व उपमुख्यमंत्री सुखजिंदर सिंह रंधावा ने गुरदासपुर सीट जीती, उन्होंने इसे भाजपा से 83,000 से अधिक मतों के अंतर से छीना। राज्य कांग्रेस प्रमुख अमरिंदर सिंह राजा वड़िंग ने लुधियाना से जीत हासिल की, उन्होंने कांग्रेस सांसद से भाजपा उम्मीदवार बने रवनीत सिंह बिट्टू को लगभग 21,000 मतों के अंतर से हराया।अमृतसर से कांग्रेस के मौजूदा सांसद गुरजीत सिंह औजला ने अपनी सीट बरकरार रखी और फतेहगढ़ साहिब से मौजूदा सांसद अमर सिंह ने भी अपनी सीट बरकरार रखी। डॉ। धर्मवीर गांधी ने पटियाला में मौजूदा सांसद और भाजपा उम्मीदवार परनीत कौर को हराया, जबकि पूर्व अकाली शेर सिंह घुबाया ने फिरोजपुर सीट जीती। घुबाया 2019 में इस सीट पर शिरोमणि अकाली दल के अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल से हार गए थे।हालांकि, पार्टी 2019 के लोकसभा चुनावों के अपने प्रदर्शन को दोहराने में सक्षम नहीं रही, जब उसने आठ सीटें जीती थीं और 40।12 प्रतिशत वोट हासिल किए थे। यह चार सीटों (आनंदपुर साहिब, होशियारपुर, खडूर साहिब, संगरूर) पर दूसरे स्थान पर और दो सीटों (बठिंडा और फरीदकोट) पर तीसरे स्थान पर रही। शिरोमणि अकाली दल (शिअद) का ग्राफ इस चुनाव में और नीचे चला गया, पार्टी को केवल एक सीट, बठिंडा, पर जीत मिली। पूर्व केंद्रीय मंत्री और मौजूदा सांसद हरसिमरत कौर बादल ने इस सीट पर लगातार चौथी बार अपनी जीत दोहराई। उन्होंने लगभग 50,000 वोटों के अंतर से जीत हासिल की। वे शिअद प्रमुख सुखबीर बादल की पत्नी और वरिष्ठ अकाली नेता बिक्रम सिंह मजीठिया की बहन हैं।2019 के लोकसभा चुनावों में अकाली दल ने दो सीटें जीती थीं और 27.45 प्रतिशत वोट शेयर हासिल किया था। 2022 के विधानसभा चुनावों में पार्टी का वोट शेयर घटकर 18।38 प्रतिशत रह गया। मंगलवार को पार्टी को केवल 13.42 प्रतिशत वोट मिले, जो कई दशकों में सबसे कम है, जो ग्रामीण सिख किसानों के पंथिक पार्टी से मोहभंग की ओर इशारा करता है।हालांकि, भाजपा ने राज्य में कोई सीट नहीं जीती, लेकिन इसका वोट शेयर 2019 के संसदीय चुनावों में 9.63 प्रतिशत और 2022 के विधानसभा चुनावों में 6.6 प्रतिशत से बढ़कर 18.56 प्रतिशत हो गया। मौजूदा वोट शेयर के हिसाब से पंजाब में भाजपा के पास अकाली दल से ज़्यादा वोटर हैं।दोनों पार्टियों का संयुक्त वोट शेयर लगभग 33 प्रतिशत है। फिर से साथ आने की बातचीत विफल होने के बाद दोनों पार्टियों ने अकेले चुनाव लड़ने का फैसला किया।

आज का राशिफल

हमारे अनुभवी ज्योतिषियों की टीम के अनुसार आप कई विविध लक्ष्यों को पूरा करेंगे। क्या आप यह जानना चाहते है कि आपके जीवन के ऐसे कौनसे क्षेत्र है, जहां आपके सितारे बुलंद रहेंगे और दूसरी तरफ, आपको किस बातों से सावधान रहना चाहिए। हम न सिर्फ हमारे काम में और जटिल मुद्दों को सुलझाते वक्त सकारात्मक ऊर्जा को महसूस करेंगे, बल्कि पारम्परिक संबंधों में भी, जहां यह स्थानान्तरण हमें संताप और बातचीत में लाभ प्रदान करेगा

मेष
परोपकार के लिए किए काम आपको आंतरिक खुशी देंगे। आज आपकी वाणी का जादू किसी को अभिभूत करके आपको लाभ दिलाएगा। वाणी की सौम्यता नए संबंध स्थापित करने में सहायक होगी।

वृष
स्नेहीजनों एवं मित्रों से उपहार मिल सकता है। उच्च अधिकारियों की कृपादृष्टि बनी रहेगी। सांसारिक जीवन में आनंद का अनुभव करेंगे। कार्यक्षेत्र में उच्च अधिकारियों के खुश रहने से पदोन्नति की संभावना बढ़ेगी।

मिथुन
लंबी अवधि की आर्थिक योजना के लिए दिन अनुकूल है। आर्थिक और व्यावसायिक दृष्टि से दिन लाभदायक होगा। शारीरिक और मानसिक स्फूर्ति और ताजगी का अनुभव होगा। मित्रों तथा स्वजनों की ओर से उपहार मिलेगा।

कर्क
पठन-लेखन जैसी साहित्यिक प्रवृत्तियों में अभिरुचि बढ़ेगी। परिश्रम का अपेक्षित परिणाम नहीं मिलने से थोड़े निराश हो सकते हैं। विद्यार्थी पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन कर सकेंगे। पेट की तकलीफ से परेशानी हो सकती है। सगे-संबंधियों के साथ अनबन होगा।

सिंह
उत्तम भोजन की प्राप्ति होगी। निर्धारित कार्यों में कम सफलता मिलेगी। आज आपकी वैचारिक समृद्धि बढ़ेगी। मीठी वाणी से आप लाभप्रद, सौहार्द्रपूर्ण संबंध विकसित कर सकेंगे। उत्तम भोजन, भेंट उपहारों और वस्त्रों की प्राप्ति होगी।

कन्या
मानसिक दुविधा में होने के कारण आप महत्वपूर्ण निर्णय नहीं ले सकेंगे। पानी वाली जगहों तथा अन्य गर्म तरल पदार्थों से सावधान रहें। परिवार या जमीन से संबंधित मामलों पर चर्चा और कहीं जाने की योजना टालें। दुर्घटना से बचें। नए काम करने की प्रेरणा मिलेगी।

तुला
शारीरिक तथा मानसिक स्वस्थता बनी रहेगी। आनंद की प्राप्ति, जीवनसाथी की निकटता और प्रवास-पर्यटन से आपका दिन खुशहाल रहेगा। आज के दिन ज़रा सा भी असंयमित और अनैतिक व्यवहार आपको तकलीफ में डाल सकते हैं।

वृश्चिक
वाणी की शिथिलता के कारण उग्र तकरार हो सकती है। सगे-संबंधियों के साथ अनबन होगा। मनोरंजन या घूमने-फिरने के पीछे पैसे खर्च होंगे। शारीरिक, मानसिक व्यग्रता कम करने के लिए आध्यात्मिकता सहायक साबित होगी।

धनु
पारिवारिक सदस्यों के साथ सुख-शांति में दिन व्यतीत होगा। उनका सहयोग मिलेगा। दूरस्थ मित्र और स्नेहीजनों के साथ संपर्क लाभदायक साबित होंगे। अपनी प्रभावशाली वाणी से अन्य लोगों का ध्यान आकर्षित कर सकेंगे।

मकर
शारीरिक और मानसिक ताजगी के साथ घर में भी आनंद का वातावरण रहेगा। दोस्तों से लाभ होगा। कार्य सफलता और प्रिय व्यक्ति का साथ आनंदप्रद रहेगा। आर्थिक लाभ और भाग्य वृद्धि की संभावनाएं हैं।

कुंभ
नौकरी-धंधे या व्यवसाय में लाभ की प्राप्ति होगी। मित्रों के साथ मुलाकात, प्रवास का आयोजन होगा। विवाहोत्सुक युवक-युवतियों के लिए सुनहरे अवसर आएंगे। पुत्र तथा पत्नी से लाभ होगा। घर के बुजुर्गों के जरिए लाभ मिलेगा।

मीन
स्वास्थ्य अच्छा बना रहेगा। परिवार में आनंद का वातावरण रहेगा। पिता तथा सरकार से लाभ मिलेगा। आर्थिक योजना अच्छी तरह पूरी कर सकेंगे। व्यापार-धंधे के लिए प्रवास की संभावना है। अन्य लोगों की सहायता करने का प्रयत्न करेंगे। मान-सम्मान में वृद्धि होगी।

आज का इतिहास

8 जून की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

- लुई पंचम डी लुए 979 में फ्रांस के सम्राट बने।
- इंग्लैंड ने 1557 में फ्रांस के खिलाफ युद्ध की घोषणा की।
- यहूदियों ने 1655 को रोम के खिलाफ बगावत की।
- औरंगजेब ने 1658 में आगरे के क़िले पर क़ब्ज़ा किया।
- बादशाह मुअज्जम (शाह आलम) ने 1707 में आगरा के समीप जजाउ क्षेत्र में उत्तराधिकार की लड़ाई में बादशाह आजम को हराया।
- आइसक्रीम के लिए व्यावसायिक तौर पर पहला विज्ञापन 1786 में बनाया गया।
- नोह कुशिंग ने 1824 में वाशिंग मशीन का पेंटेट कराया।
- जर्मनी के आविष्कारक कैम्बर्ज़ ने 1830 ईसवी को माचिस बनाई।
- पुर्तगाल की राजधानी लिसबन 1855 ईसवी को भीषण भूकम्प और उससे लगने वाली आग के कारण पूरी तरह तबाह हो गया।
- सन 1869 को शिकागो के आइविस डब्ल्यू मैकजैफी के पहले वैक्यूम क्लीनर का पेटेंट हुआ।
- भारत के सरकारी रेडियो नेटवर्क का 1936 में नाम बदलकर ऑल इंडिया रेडियो रखा गया।
- अमेरिका में न्यूयार्क शहर के एक बोटेनिकल गार्डन में 1937 को दुनिया का सबसे बड़ा फूल खिला।
- 93वें तत्व नेपप्टुनियम की खोज की घोषणा 1940 में की गई।
- भारत की पहली विमान सेवा एयर इंडिया ने भारत और ब्रिटेन के बिच हवाई सेवा 1948 में शुरू की।
- स्याम का नाम 1949 में बदलकर थाईलैंड किया गया।
- अमेरिकी हृदय संघ एजेंसी सिगरेट के विरोध में 1963 में अभियान चलाने वाली पहली एजेंसी बनी।
- बरमुडा में 1968 को संविधान को अंगीकार किया गया।
- इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर टॉनी ग्रेग ने 1972 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट करियर का आगाज किया।
- जर्मनी के म्यूनिख में 1975 में हुए दो ट्रेनों की भिड़ंत में लगभग 35 लोगों की मौत हुई।
- ब्राजीली विमान बी-727 1982 में दुर्घटनाग्रस्त होने से तकरीबन 130 लोगों की मौत हुई।
- इराकी जेट विमान ने 1986 में असादाबाद उपग्रह स्टेशन पर हमला किया।
- ईसवी को ज़ायोनी शासन की गुप्तचर संस्था मोसाद ने इस अवैध शासन को मज़बूत बनाने के लिए 1992 को विदेश में एक अन्य फिलिस्तीनी अधिकारी की हत्या कर दी!
- ब्राजील में 1992 को पहली बार वर्ल्ड ओशियन डे मनाया गया।
- पेरिस में फ्रेंच ओपन टेनिस प्रतियोगिता में भारत के महेश भूपति ने 1997 को म्रिश्रित युगल ख़िताब जीतकर इतिहास बनाया।
- 16 लाख कारों में प्रदूषणरहित उपकरण हटाने के बदले होंडा को 1998 में 17.1 लाख डॉलर चुकाने पड़े।
- फिलीपींस के राष्ट्रपति ने 2002 में आतंकवादी संगठन अबू सय्याफ़ के विरुद्ध अभियान शुरू करने का आदेश दिया।
- दक्षिणी सोमालिया में आतंकवादियों ने 2008 में ब्रिटिश ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन के एक स्थानीय पत्रकार की गोली मारकर हत्या कर दी।

विशेष आलेख

बंगाल में राज्य प्रायोजित हिंसा एक बदनुमा दाग

ललित गर्ग

लोकसभा चुनाव के बाद एक बार फिर पश्चिम बंगाल में हिंसा का बढ़ना, लोगों में डर पैदा होना, भय का वातावरण बनना, आम जनजीवन का अनहोनी होने की आशंकाओं से घिरा होना चिंताजनक भी है और राष्ट्रीय शर्म का विषय भी है। यही वजह है कि कलकत्ता हाईकोर्ट में एक याचिका दायर की गई है, जिसमें विपक्षी पार्टी के कार्यकर्ताओं को सुरक्षा देने की मांग की गई है। याचिका में मांग की गई है कि पुलिस को निर्देश दिए जाएं कि वे विपक्षी कार्यकर्ताओं को हिंसा से बचाने के लिए सुरक्षा दें। पश्चिम बंगाल में लोकसभा चुनाव बाद की हिंसा पर दायर याचिका की सुनवाई करते हुए कलकत्ता हाईकोर्ट ने गंभीर चिंता जताई एवं ममता बनर्जी सरकार को कड़ी फटकार लगाई। चुनाव के बाद एवं लोकसभा चुनाव के प्रचार दौरान तृणमूल कांग्रेस ने व्यापक हिंसा, आतंक एवं अराजकता का माहौल बनाया। तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ता पार्टी जीत के बाद भाजपा कार्यकर्ताओं पर जिस तरह के हिंसक हमले कर रहे हैं, वह लोकतंत्र पर एक बदनुमा दाग है। ममता बनर्जी ने चुनाव के महापर्व को हिंसक बना दिया था, उसने एवं उसके कार्यकर्ताओं ने भाजपा कार्यकर्ताओं से, हिन्दुओं से, हिन्दू मन्दिरों-भगवानों-संतों एवं हिन्दू पर्वों से नफरत का बिगुल हर मोड़ पर बजाया है। बंगाल में राजनीतिक हिंसा का सिलसिला चुनाव के पहले ही कायम हो गया था। राज्य में हिंसा की अनेक घटनाएं चुनाव के दौरान भी देखने को मिलीं और अब चुनाव समाप्त हो जाने के बाद भी देखने को मिल रही हैं, जिनमें ग्यारह लोगों की मौत होना दुर्भाग्यपूर्ण है, इसका सीधा अर्थ है कि यह हिंसा तृणमूल कांग्रेस नेताओं के इशारे पर हो रही है। हैरानी नहीं कि अराजक तत्वों को बंगाल पुलिस का मौन समर्थन हासिल हो। चुनाव परिणाम घोषित होने के बाद तृणमूल कांग्रेस ने 'आतंक का राज' फैला दिया है।

तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ता विरोधी दलों और विशेष रूप से भाजपा नेताओं एवं कार्यकर्ताओं को निशाना बना रहे हैं। ऐसा तब हो रहा है, जब चुनाव आयोग के निर्देश पर बंगाल में केंद्रीय सुरक्षा बलों की तैनाती 19 जून तक बढ़ा दी गई है। ऐसा चुनाव बाद हिंसा की प्रबल आशंका को देखते हुए किया गया था। यह आश्चर्यजनक है कि बंगाल में केंद्रीय सुरक्षा बलों की चार सौ कंपनियां तैनात हैं और फिर भी वहां व्यापक हिंसा हो रही है। इससे सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि तृणमूल कांग्रेस हिंसा को कितने नियोजित ढंग से अंजाम दे रही है। इस हिंसा एवं अराजकता के बढ़ने के प्रबल आसार इसलिए हैं, क्योंकि राज्य में विधानसभा चुनाव के दौरान भी बड़े पैमाने पर जो हिंसा हुई थी, लोकसभा चुनाव में भी हिंसा हुई, पूर्व के अन्य चुनावों में भी हिंसा का बोलबाला रहा है। ऐसी स्थितियों में बंगाल में लोकतंत्र की भावना एवं मर्यादा का खुला हनन हो रहा है। इतनी व्यापक हिंसा बंगाल पुलिस के मूकदर्शक बने रहने एवं उसके सहयोग के बिना असंभव है। इसी के चलते तमाम भाजपा कार्यकर्ता और उसके समर्थकों की हत्या की गई थी। पूर्व की हिंसा एवं आतंक के समय ऐसा माहौल बनाया गया था कि कई लोगों को अपना घर-बार छोड़कर पलायन करते हुए पड़ोसी राज्य असम में शरण लेनी पड़ी थी। इन जटिल होती स्थितियों को देखते हुए न्यायालय को हस्तक्षेप करना पड़ रहा है, जो एक लोकतांत्रिक सरकार के लिये लज्जाजनक है। पश्चिमी बंगाल की ममता सरकार देश में एकमात्र ऐसी सत्तारुढ़ पार्टी बन गई है जिसका देश के संविधान, न्यायपालिका एवं लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भरोसा नहीं रह गया है। भ्रष्टाचार से लेकर मनमर्जी एवं तानाशाही का शासन चलाना मुख्यमंत्री ममता बनजम की प्रक्रिया बन गयी है। 2021 में विधानसभा चुनाव के बाद हुई हिंसा का संज्ञान लेते हुए कलकत्ता उच्च न्यायालय ने सीबीआइ को हिंसक घटनाओं की जांच करने को कहा था। इस जांच के दौरान तृणमूल कांग्रेस के अनेक नेताओं को गिरफ्तार किया गया था, लेकिन ऐसा लगता है कि यह कार्रवाई भी तृणमूल कांग्रेस के अराजक तत्वों के दुस्साहस का दमन नहीं कर सकी। इसका प्रमाण 2023 में पंचायत चुनाव के दौरान हुई भीषण हिंसा से मिला था, जिसमें 40 से अधिक लोगों की जान गई थी। इस लोकसभा चुनाव में भी हिंसा के चलते कई लोगों की जान जा चुकी है। यह ठीक है कि चुनाव बाद हिंसा पर कलकत्ता उच्च न्यायालय ने नाराजगी व्यक्त करते हुए यहां तक कहा कि यदि राज्य सरकार हिंसा पर लगाम नहीं लगा सकती तो केंद्रीय सुरक्षा बलों को बंगाल में पांच साल तक तैनात करने का आदेश देना पड़ सकता है। उच्च न्यायालय की इस कठोर टिप्पणी के बाद भी ममता सरकार की सेहत पर शायद ही कोई असर पड़े, क्योंकि वह सारा दोष विरोधी दलों पर मढ़ देती है। वास्तव में जब तक बंगाल में हिंसा के लिए ममता सरकार को सीधे तौर पर जिम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा, तब तक राज्य के हालात सुधरने वाले नहीं हैं। ममता वोट बैंक की राजनीति के लिये कानून एवं सुरक्षा व्यवस्था की धज्जियां बार-बार उड़ाती रही है। ममता ने देश की एकता-अखंडता और सुरक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों को नजरअंदाज किया है, कानून से खिलवाड़ जितना पश्चिमी बंगाल में हुआ है उतना शायद ही देश के किसी दूसरे राज्यों में हुआ हो। चुनावों में जितनी हिंसा बंगाल में हुई, उतनी अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिली। बंगाल का लोकतंत्र तानाशाही मानसिकता से गुजर रहा है। इन स्थितियों से तो यही लगता है कि राजनीतिक वोट बैंक के लिए ममता संविधान एवं सुरक्षा-व्यवस्था की जितनी अवमानना कर सकती है, उसने की है और आगे भी वह करती रहेगी। चुनावों में ऐसी हिंसक एवं विडम्बनापूर्ण स्थितियां लोकतंत्र पर एक धुंधलका है, जिस पर नियंत्रण जरूरी है। लोकसभा चुनाव में जिन राज्यों के परिणामों ने पूरे देश को चौंकाया है उनमें पश्चिम बंगाल भी शुमार है। पश्चिम बंगाल में चुनाव परिणाम इसलिये भी आश्चर्य में डाल रहे हैं कि वहां तृणमूल कांग्रेस सरकार के खिलाफ व्यापक नाराजगी थी, ममता सरकार के कई मंत्रियों और विधायकों पर घोटाले के आरोप लगे थे, संदेशखाली की महिलाओं पर हुआ अत्याचार देश भर में बड़ा मुद्दा बन गया था, ममता बनर्जी के भतीजे अभिषेक बनर्जी के इर्दगिर्द ईडी का शिकंजा कसा हुआ था, ममता बनर्जी को सनातन विरोधी बताया जा रहा था, तृणमूल कांग्रेस के कई बड़े नेताओं ने चुनावों से ऐन पहले पाला बदल लिया था, तृणमूल कांग्रेस पर हिंसक एवं अराजक होने का तगमा लगा था, बावजूद ममता जीती। देखा जाये तो ममता बनर्जी की छवि जुझारू एवं कद्दावर नेता की रही है और वह अपनी पार्टी को जिताने के लिए जी-जान लगा देती हैं। चुनाव प्रचार के दौरान खुद पर होने वाले राजनीतिक हमलों को वह अपने पक्ष में मोड़ लेने में माहिर हैं। इसके अलावा, इंडिया गठबंधन के तमाम नेताओं ने विभिन्न राज्यों में सीटों का बंटवारा कर आपस में समन्वय बनाकर चुनाव लड़ा लेकिन ममता बनर्जी ने बंगाल में अकेले ही सारी चुनौती झेली। वह अपने बलबूते चुनाव जीतने का माद्दा रखती है तो फिर हिंसा का सहारा क्यों लेती है? अराजकता फैलाकर अपने ही शासन को क्यों दागदार बनाती है? क्यों अपने प्रांत की जनता को डराती है, भयभीत करती है? क्या ये प्रश्न ममता की राजनीतिक छवि पर दाग नहीं है?

लोकसभा चुनाव - प्रदेश कांग्रेस में जीत का श्रेय लेने की होड़

रामस्वरूप रावतसरे

राजस्थान में लोकसभा चुनाव परिणामों में कांग्रेस ने बेहतर प्रदर्शन कर सभी को चौंका दिया। इस जीत से कांग्रेस ने अपनी पिछली हारों का बदला लेकर इंडिया गठबंधन के साथ मिलकर राजस्थान में 11 सीटों पर कब्जा किया। इस दौरान कांग्रेस की सियासत में जीत को लेकर क्रेडिट लेने पर बहस छिड़ गई है। सियासी चर्चा यह है कि कांग्रेस की जीती गई 11 सीटों में 6 सीटों पर कांग्रेस के महासचिव सचिन पायलट का दबदबा देखने को मिला हैं। इसको लेकर माना जा रहा है कि पायलट की मेहनत और प्रयास के चलते कांग्रेस ने यहां से जीत हासिल की हैं। इधर, कांग्रेस की जीत के क्रेडिट को लेकर पीसीसी अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने भी मीडिया के सामने अपनी प्रतिक्रिया दे दी है। उन्होंने मीडिया में बातचीत करते हुए कांग्रेस की जीत के लिए सामूहिक तौर पर किए गए प्रयास को ही जिम्मेदार बताया हैं। राजस्थान में कांग्रेस की जीत को लेकर सियासी गलियारों में इसका क्रेडिट किस दिग्गज के खाते में जाएगा? इसको लेकर चर्चाओं का बाजार गर्म है। राजनीतिक जानकार इस क्रेडिट को लेकर अपने-अपने मायने निकाल रहे हैं। इस बीच डोटासरा का बड़ा बयान आया है। इस दौरान मीडिया ने सवाल पूछा कि राजस्थान के पूर्वी क्षेत्र में सचिन पायलट का प्रभाव रहा है। ऐसे में पार्टी की जीत का श्रेय पायलट को देंगे या नहीं? इस पर डोटासरा ने कहा कि किसी एक व्यक्ति को जीत का श्रेय नहीं दिया जा सकता हैं। पार्टी ने सामूहिक प्रयास से जीत दर्ज की है। वोटर्स को एकजुट करने में पार्टी के सभी नेताओं ने मेहनत की है। मैंने भी पूरे राज्य में काम किया। विशेषकर अपने गृह जिला सीकर में किया, लेकिन मैं यह नहीं कह सकता कि राज्य के शेखावाटी बेल्ट में मेरे कारण पार्टी को जीत मिली है। यह सब सामूहिक प्रयास से हुआ है।

राजस्थान के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ने इंडिया गठबंधन के साथ 11 सीटों पर कब्जा किया। इनमें अधिकांश सीटें राजस्थान के पूर्वी क्षेत्र की है। जहां कांग्रेस के दिग्गज सचिन पायलट का दबदबा देखने को मिला है। लोकसभा चुनाव में पायलट अपने करीबी समर्थक उम्मीदवारों को टिकट दिलाने में कामयाब रहें। इस दौरान चुनाव परिणाम में भी पायलट अपने मंसूबों पर खरे उतरे। पायलट के प्रभाव वाली लोकसभा सीटें भरतपुर, दौसा, धौलपुर करौली, टोंक सवाई माधोपुर, झुंझुनू और सीकर समेत आधा दर्जन लोकसभा सीटों पर पायलट ने जमकर पसीना बहाया। इसके चलते चर्चा है कि जयपुर ग्रामीण से अनिल चोपड़ा की सीट को छोड़कर पायलट ने अपनी लगभग सभी सीटों पर उम्मीदवारों को जीत दिलाने में बड़ी भूमिका निभाई हैं। ऐसे में चर्चा है कि राजस्थान कांग्रेस की ओर से जीती गई 11 लोकसभा सीटों में 6 सीटें पायलट के प्रभाव के कारण जीती गई है। लोक सभा चुनाव परिणाम को लेकर सचिन पायलट ने मीडिया से अपने विधानसभा क्षेत्र टोंक में बात की। इस दौरान पायलट ने जहां पार्टी के जीते हुए कैंडिडेंट्स को बधाई दी। वहीं अशोक गहलोत के बेटे वैभव गहलोत की हार और दूसरे अन्य कांग्रेस उम्मीदवारों की हार के मुद्दे पर अपनी बात रखी। सचिन पायलट ने कहा कि पार्टी ने कई युवा नेताओं को मौका दिया।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

बंगाल में राज्य प्रायोजित हिंसा एक बदनुमा दाग

-ललित गर्ग

लोकसभा चुनाव के बाद एक बार फिर पश्चिम बंगाल में हिंसा का बढ़ना, लोगों में डर पैदा होना, भय का वातावरण बनना, आम जनजीवन का अनहोनी होने की आशंकाओं से घिरा होना चिंताजनक भी है और राष्ट्रीय शर्म का विषय भी है। यही वजह है कि कलकत्ता हाईकोर्ट में एक याचिका दायर की गई है, जिसमें विपक्षी पार्टी के कार्यकर्ताओं को सुरक्षा देने की मांग की गई है। याचिका में मांग की गई है कि पुलिस को निर्देश दिए जाएं कि वे विपक्षी कार्यकर्ताओं को हिंसा से बचाने के लिए सुरक्षा दें। पश्चिम बंगाल में लोकसभा चुनाव बाद की हिंसा पर दायर याचिका की सुनवाई करते हुए कलकत्ता हाईकोर्ट ने गंभीर चिंता जताई एवं ममता बनर्जी सरकार को कड़ी फटकार लगाई। चुनाव के बाद एवं लोकसभा चुनाव के प्रचार दौरान तृणमूल कांग्रेस ने व्यापक हिंसा, आतंक एवं अराजकता का माहौल बनाया। तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ता पार्टी जीत के बाद भाजपा कार्यकर्ताओं पर जिस तरह के हिंसक हमले कर रहे हैं, वह लोकतंत्र पर एक बदनुमा दाग है। ममता बनर्जी ने चुनाव के महापर्व को हिंसक बना दिया था, उसने एवं उसके कार्यकर्ताओं ने भाजपा कार्यकर्ताओं से, हिन्दुओं से, हिन्दू मन्दिरों-भगवानों-संतों एवं हिन्दू पर्वों से नफरत का बिगुल हर मोड़ पर बजाया है। बंगाल में राजनीतिक हिंसा का सिलसिला चुनाव के पहले ही कायम हो गया था। राज्य में हिंसा की अनेक घटनाएं चुनाव के दौरान भी देखने को मिलीं और अब चुनाव समाप्त हो जाने के बाद भी देखने को मिल रही हैं, जिनमें ग्यारह लोगों की मौत होना दुर्भाग्यपूर्ण है, इसका सीधा अर्थ है कि यह हिंसा तृणमूल कांग्रेस नेताओं के इशारे पर हो रही है। हैरानी नहीं कि अराजक तत्वों को बंगाल पुलिस का मौन समर्थन हासिल हो। चुनाव परिणाम घोषित होने के बाद तृणमूल कांग्रेस ने ह्यआतंक का राज्य फैला दिया है।

तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ता विरोधी दलों और विशेष रूप से भाजपा नेताओं एवं कार्यकर्ताओं को निशाना बना रहे हैं। ऐसा तब हो रहा है, जब चुनाव आयोग के निर्देश पर बंगाल में केंद्रीय सुरक्षा बलों की तैनाती 19 जून तक बढ़ा दी गई है। ऐसा चुनाव बाद हिंसा की प्रबल आशंका को देखते हुए किया गया था। यह आश्चर्यजनक है कि बंगाल में केंद्रीय सुरक्षा बलों की चार सौ कंपनियां तैनात हैं और फिर भी वहां व्यापक हिंसा हो रही है। इससे सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि तृणमूल कांग्रेस हिंसा को कितने नियोजित ढंग से अंजाम दे रही है। इस हिंसा एवं अराजकता के बढ़ने के प्रबल आसार इसलिए हैं, क्योंकि राज्य में विधानसभा चुनाव के दौरान भी बड़े पैमाने पर जो हिंसा हुई थी, लोकसभा चुनाव में भी हिंसा हुई, पूर्व के अन्य चुनावों में भी हिंसा का बोलबाला रहा है। ऐसी स्थितियों में बंगाल में लोकतंत्र की भावना एवं मयार्दा का खुला हनन हो रहा है। इतनी व्यापक हिंसा बंगाल पुलिस के मूकदर्शक बने रहने एवं उसके सहयोग के बिना असंभव है। इसी के चलते तमाम भाजपा कार्यकर्ता और उसके समर्थकों की हत्या की गई थी। पूर्व की हिंसा एवं आतंक के समय ऐसा माहौल बनाया गया था कि कई लोगों को अपना घर-बार छोड़कर पलायन करते हुए पड़ोसी राज्य असम में शरण लेनी पड़ी थी। जब जटिल होती स्थितियों को देखते हुए न्यायालय को हस्तक्षेप करना पड़ रहा है, जो एक लोकतांत्रिक सरकार के लिये लज्जाजनक है।

पश्चिमी बंगाल की ममता सरकार देश में एकमात्र ऐसी सत्तारूढ़ पार्टी बन गई है जिसका देश के संविधान, न्यायपालिका एवं लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भरोसा नहीं रह गया है। भ्रष्टाचार से लेकर मनमर्जी एवं तानाशाही का शासन चलाना मुख्यमंत्री ममता बनजम की प्रक्रिया बन गयी है। 2021 में विधानसभा चुनाव के बाद हुई हिंसा का संज्ञान लेते हुए कलकत्ता उच्च न्यायालय ने सीबीआइ को हिंसक घटनाओं की जांच करने को कहा था। इस जांच के दौरान तृणमूल कांग्रेस के अनेक नेताओं को गिरफ्तार किया गया था, लेकिन ऐसा लगता है कि यह कार्रवाई भी तृणमूल कांग्रेस के अराजक तत्वों के दुस्साहस का दमन नहीं कर सकी। इसका प्रमाण 2023 में पंचायत चुनाव के दौरान हुई भीषण हिंसा से मिला था, जिसमें 40 से अधिक लोगों की जान गई थी। इस लोकसभा चुनाव में भी हिंसा के चलते कई लोगों की जान जा चुकी है। यह ठीक है कि चुनाव बाद हिंसा पर कलकत्ता उच्च न्यायालय ने नाराजगी व्यक्त करते हुए यहां तक कह दिया कि यदि राज्य सरकार हिंसा पर लगाम नहीं लगा सकती तो केंद्रीय सुरक्षा बलों को बंगाल में पांच साल तक तैनात करने का आदेश देना पड़ सकता है। उच्च न्यायालय की इस कठोर टिप्पणी के बाद भी ममता सरकार की सेहत पर शायद ही कोई असर पड़े, क्योंकि वह सारा दोष विरोधी दलों पर मढ़ देती है। वास्तव में जब तक बंगाल में हिंसा के लिए ममता सरकार को सीधे तौर पर जिम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा, तब तक राज्य के हालात सुधरने वाले नहीं हैं।

ममता वोट बैंक की राजनीति के लिये कानून एवं सुरक्षा व्यवस्था की धज्जियां बार-बार उड़ाती रही है। ममता ने देश की एकता-अखंडता और सुरक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों को नजरअंदाज किया है, कानून से खिलवाड़ जितना पश्चिमी बंगाल में हुआ है उतना शायद ही देश के किसी दूसरे राज्यों में हुआ हो। चुनावों में जितनी हिंसा बंगाल में हुई, उतनी अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिली। बंगाल का राजनीतिक तानाशाही मानसिकता से गुजर रहा है। इन स्थितियों से तो यही लगता है कि राजनीतिक वोट बैंक के लिए ममता संविधान एवं सुरक्षा-व्यवस्था की जितनी अवमानना कर सकती है, उसने की है और आगे भी वह करती रहेगी। चुनावों में ऐसी हिंसक एवं विडम्बनापूर्ण स्थितियां लोकतंत्र पर एक धुंधलका है, जिस पर नियंत्रण जरूरी है।

लोकसभा चुनाव में जिन राज्यों के परिणामों ने पूरे देश को चौंकाया है उनमें पश्चिम बंगाल भी शुमार है। पश्चिम बंगाल में चुनाव परिणाम इसलिये भी आश्चर्य में डाल रहे हैं कि वहां तृणमूल कांग्रेस सरकार के खिलाफ व्यापक नाराजगी थी, ममता सरकार के कई मंत्रियों और विधायकों पर घोटाले के आरोप लगे थे, संदेशखाली की महिलाओं पर हुआ अत्याचार देश भर में बड़ा मुद्दा बन गया था, ममता बनर्जी के भतीजे अभिषेक बनर्जी के इर्दगिर्द ईडी का शिकंजा कसा हुआ था, ममता बनर्जी को सनातन विरोधी बताया जा रहा था, तृणमूल कांग्रेस के कई बड़े नेताओं ने चुनावों से ऐन पहले पाला बदल लिया था, तृणमूल कांग्रेस पर हिंसक एवं अराजक होने का तगमा लगा था, बावजूद ममता जीती। देखा जाये तो ममता बनर्जी की छवि जुझारू एवं कद्दावर नेता की रही है और वह अपनी पार्टी को जिताने के लिए जान-जान लगा देती हैं। चुनाव प्रचार के दौरान खुद पर होने वाले राजनीतिक हमलों को वह अपने पक्ष में मोड़ लेने में माहिर हैं। इसके अलावा, इंडिया गठबंधन के तमाम नेताओं से विभिन्न मुद्दों पर सीटों को बंटवारा कर आपस में समन्वय बनाकर चुनाव लड़ा लेकिन ममता बनर्जी ने बंगाल में अकेले ही सारी चुनौती झेली। वह अपने बलबूते चुनाव जीतना का माद्दा रखती है तो फिर हिंसा का सहारा क्यों लेती है? अराजकता फैलाकर अपने ही शासन को क्यों दागदार बनाती है? क्यों अपने राज्य की जनता को डराती है, भयभीत करती है? क्या ये प्रश्न ममता की राजनीतिक छवि पर दाग नहीं हैं?

ममता एवं तृणमूल कांग्रेस का एकतरफा रवैया हमेशा से समाज को दो वर्गों में बांटता रहा है एवं सामाजिक असंतुलन तथा रोष का कारण रहा है। बदले हुए राजनीतिक हालात इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि किसी भी एक वर्ग की अनदेखी कर कोई भी दल राजसत्ता का आनंद नहीं उठा सकता। मुद्दा चाहे रामनवमी पर हिंसा का हो या संदेशखाली में हिन्दू महिलाओं के साथ अत्याचारों का या साधु-संतों को डराने-धमकाने का। राज्य में शीर्ष संवैधानिक पद पर रहते हुए भी ममता बनर्जी ने अलोकतांत्रिक, गैर-कानूनी एवं राष्ट्र-विरोधी कार्यों को अंजाम दिया है। बंगाल में तो भ्रष्टाचार और साम्प्रदायिकता के जबड़े फैलाए, हिंसा की जीभ निकाले, मगरमच्छ सब कुछ निगल रहा है। ममता अपनी जातियों, ग्रुपों और वोट बैंक को मजबूत कर रही हैं-- देश को नहीं। दुनिया के लोग केवल बुराइयों से लड़ते नहीं रह सकते, वे व्यक्तिगत एवं सामूहिक, निश्चित सकारात्मक लक्ष्य के साथ जीना चाहते हैं। अन्यथा जीवन की सार्थकता नष्ट हो जाएगी। बंगाल में आम जनजीवन की सार्थकता ही नष्ट हो रही है।

अनेक कारण रहे आप पार्टी की दिल्ली व पंजाब में हार के?

अशोक भाटिया

आम आदमी पार्टी ने दिल्ली में सातों सीटों पर हार के बाद कांग्रेस के साथ गठबंधन खत्म करने का ऐलान कर दिया है। आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता गोपाल राय ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के घर पर गुरुवार को बैठक के बाद इसकी घोषणा की। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के साथ गठबंधन लोकसभा चुनाव के लिए ही था, विधानसभा चुनाव पार्टी अकेले लड़ने जा रही है।उन्होंने स्पष्ट किया कि 2025 की शुरूआत में होने वाले दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए कांग्रेस के साथ कोई गठबंधन नहीं होगा। गौरतलब है कि राय का यह बयान गुरुवार को आप द्वारा अपने विधायकों के साथ बैठक के बाद आया है। दिल्ली के मंत्री गोपाल राय ने कहा कि यह शुरू से ही स्पष्ट है कि इंडिया गठबंधन लोकसभा चुनाव के लिए बना था। हमने लोकसभा चुनाव साथ मिलकर लड़ा लेकिन दिल्ली विधानसभा चुनाव में देश में कोई गठबंधन नहीं है। हम दिल्ली की जनता के साथ मिलकर विधानसभा चुनाव लड़ेंगे। लोकसभा चुनाव से पहले हमने आप और कांग्रेस को चुनाव पूर्व गठबंधन बनाते हुए देखा, जिसका उद्देश्य भाजपा विरोधी वोटों के विभाजन को रोकना था। वही आप जिसने कभी कांग्रेस के खिलाफ सत्ता विरोधी लहर पर सवार होकर खुद को राजधानी में एक मजबूत ताकत के रूप में स्थापित किया था।

हालांकि, इससे दोनों दलों को कोई फायदा नहीं हुआ। भाजपा ने सभी सात सीटों पर जीत हासिल की, जबकि इंडिया ब्लॉक दूसरे स्थान पर ही रहा। दोनों पार्टियाँ इसका लाभ उठाने में विफल रहीं क्योंकि भाजपा ने राजधानी के मतदाताओं पर अपना प्रभुत्व कायम रखा। 2019 के आम चुनाव में, भाजपा को दिल्ली में 56।7% वोट मिले, जबकि आप पार्टी और कांग्रेस को क्रमशः 18.2% और 22.6% वोट मिले। हालाँकि, इस चुनाव में आप पार्टी और कांग्रेस के बीच एक रणनीतिक गठबंधन देखा गया, जिसमें कांग्रेस ने तीन निर्वाचन क्षेत्रों में और आप पार्टी ने चार निर्वाचन क्षेत्रों में अपने उम्मीदवार उतारे। उधर मुख्यमंत्री भगवंत मान के नेतृत्व वाली पंजाब में सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी को अपने मध्यावधि परीक्षण में विफल रही, राज्य की 13 लोकसभा सीटों में से सिर्फ तीन पर उसने जीत हासिल की। मार्च 2022 में हुए विधानसभा चुनावों में इसका वोट शेयर 42 प्रतिशत से गिरकर 26.02 प्रतिशत हो गया।संगरूर, होशियारपुर और आनंदपुर साहिब ही वह सीटें हैं, जिन्हें आप ने जीता है। आप इंडिया में गठबंधन की सहयोगी है। हालांकि, उसने दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, गुजरात और असम में 22 सीटों पर चुनाव लड़ा था। मान के आग्रह पर ही आप ने पंजाब में कांग्रेस के साथ गठबंधन न करने का फैसला किया, जबकि कांग्रेस आलाकमान इसके लिए तैयार थे।

पंजाब के खेल मंत्री गुरमीत सिंह मीत हेयर, जिन्होंने संगरूर से 1.72 लाख वोटों के अंतर से शानदार जीत दर्ज की, के अलावा आप द्वारा मैदान में उतारे गए चार अन्य कैबिनेट मंत्री और तीन विधायक अपनी सीटों पर हार गए, जिससे मतदाताओं ने स्पष्ट रूप से मान की शासन प्रणाली को नकार दिया। मान ने सभी उम्मीदवारों के लिए पूरे राज्य में काफी प्रचार किया था और दावा किया था कि उनकी पार्टी मिशन 13-0 के तहत पंजाब की सभी 13 सीटें जीतेगी। पिछले 25 दिनों में सीएम ने पूरे राज्य में 122 रैलियां कीं। पार्टी नेता राघव चड्ढा और दिल्ली के सीएम और आप संयोजक अरविंद केजरीवाल ने भी राज्य में प्रचार किया था। अपनी छवि खराब करने के अलावा, पंजाब में पार्टी के नेता के तौर पर मुख्यमंत्री की स्थिति भी कमजोर हुई है।

गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर के राजनीति विज्ञान के पूर्व प्रोफेसर डॉ जगरूप सिंह सेखों ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि ये चुनाव आप को राज्य में संरचनात्मक संकट में धकेलने के लिए बाध्य हैं। वे सत्ता में हो सकते हैं, लेकिन उन्होंने अपनी वैधता खो दी है। आम आदमी पार्टी ने पंजाब के लोगों को यह सोचकर हल्के में लिया कि वे 2022 का अपना प्रदर्शन दोहरा सकते हैं, लेकिन वे राज्य की प्रमुख चिंताओं जैसे ड्रग्स, अवैध खनन कानून और व्यवस्था और भ्रष्टाचार को दूर करने में विफल रहे। इतिहासकार परमजीत सिंह जज ने कहा कि यह मान का अहंकार ही था जिसकी वजह से राज्य में पार्टी का प्रदर्शन खराब रहा। उन्होंने मीडिया से बातचीत में कहा, ह्यह्यअहंकार और अच्छी राजनीति एक साथ नहीं चल सकती। अगर मान कांग्रेस के साथ गठबंधन के लिए राजी हो जाते तो आज नतीजे बहुत अलग होते। लोकसभा चुनाव से पहले कांग्रेस छोड़कर आप में शामिल हुए डॉ. राजकुमार छाबेवाल ने होशियारपुर से 44,000 से अधिक मतों के अंतर से जीत हासिल की, जबकि पार्टी के मुख्य प्रवक्ता मलविंदर सिंह कंग ने आनंदपुर साहिब से 10,000 से अधिक मतों से जीत हासिल की कैबिनेट मंत्री डॉ। बलबीर सिंह पटियाला से, कुलदीप सिंह धालीवाल अमृतसर से, गुरमीत सिंह खुड्डियां बठिंडा से, लालजीत सिंह भुल्लर खडूर साहिब से हार गए, जबकि विधायक जगदीप सिंह काका बराड़ फिरोजपुर से, अशोक पराशर पप्पी लुधियाना से और अमंशेर शेरी कलसी गुरदासपुर से हार गए। दलबदलू सुशील कुमार रिंकू (जो आप से भाजपा में शामिल हुए) और गुरप्रीत सिंह जीपी (जो कांग्रेस से आप में आए) जालंधर और फतेहगढ़ साहिब की अपनी-अपनी सीटें हार गए। मान के दोस्त और कॉमेडियन से नेता बने करमजीत अनमोल फरीदकोट से हार गए।पंजाब के विशेषज्ञ कर्नल (सेवानिवृत्त) जे एस गिल ने कहा कि सीएम मान को यह समझना होगा कि हमेशा लोगों की वाहवाही बटोरने से जमीनी स्तर पर जनता संतुष्ट नहीं होती। उन्होंने कहा, ह्यह्यजब लोग भविष्य के लिए आपका विजन और जमीनी स्तर पर उससे मेल खाता प्रदर्शन चाहते हैं, तो सार्वजनिक रूप से विरोधियों को नीचा दिखाने से चुनावी फायदा नहीं होता। गिल ने भी मीडिया से कहा, राजनीति तीन तरह की होती है- चुनावी, शासन और विधायी। आप अपने भाषणों में तीनों के लिए एक ही टेम्पलेट का इस्तेमाल नहीं कर सकते। सीएम को एक समझदार व्यक्ति होना चाहिए जो रंगला पंजाब के अपने विजन के साथ आबादी के हर वर्ग को साथ लेकर चले क्योंकि सीएम के तौर पर उनके विरोधी भी उनकी देखभाल में हैं। वे आप के नहीं बल्कि पंजाब के सीएम हैं। मान के लिए राहत की बात यह रही कि उनकी पार्टी के छह उम्मीदवार दूसरे स्थान पर रहे झ अमृतसर, बठिंडा, फरीदकोट, फतेहगढ़ साहिब, फिरोजपुर, पटियाला झ और चार उम्मीदवार तीसरे स्थान पर रहे, गुरदासपुर, जालंधर, खडूर साहिब और लुधियाना सीटों पर।

कांग्रेस को पंजाब में बड़ी बढ़त मिली, उसने सात सीटें जीतीं और 2022 के विधानसभा चुनावों में अपना वोट शेयर लगभग 23 प्रतिशत से बढ़ाकर 26.30 प्रतिशत कर लिया, जो इस चुनाव में राज्य में किसी भी पार्टी के लिए सबसे अधिक है।पार्टी के शीर्ष दावेदार चुनाव की कसौटी पर खरे उतरे। पूर्व मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी ने जालंधर सीट 1.75 लाख से अधिक मतों के अंतर से जीती, पूर्व उपमुख्यमंत्री सुखजिंदर सिंह रंधावा ने गुरदासपुर सीट जीती, उन्होंने इसे भाजपा से 83,000 से अधिक मतों के अंतर से छीना। राज्य कांग्रेस प्रमुख अमरिंदर सिंह राजा वडिंग ने लुधियाना से जीत हासिल की, उन्होंने कांग्रेस सांसद से भाजपा उम्मीदवार बने रवनीत सिंह बिट्टू को लगभग 21,000 मतों के अंतर से हराया। अमृतसर से कांग्रेस के मौजूदा सांसद गुरजीत सिंह औजला ने अपनी सीट बरकरार रखी और फतेहगढ़ साहिब से मौजूदा सांसद अमर सिंह ने भी अपनी सीट बरकरार रखी। डॉ। धर्मवीर गांधी ने पटियाला में मौजूदा सांसद और भाजपा उम्मीदवार परनीत कौर को हराया, जबकि पूर्व अकाली शेर सिंह घुबाया ने फिरोजपुर सीट जीती। घुबाया 2019 में इस सीट पर शिरोमणि अकाली दल के अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल से हार गए थे।हालांकि, पार्टी 2019 के लोकसभा चुनावों के अपने प्रदर्शन को दोहराने में सक्षम नहीं रही, जब उसने आठ सीटें जीती थीं और 40।12 प्रतिशत वोट हासिल किए थे। यह चार सीटों (आनंदपुर साहिब, होशियारपुर, खडूर साहिब, संगरूर) पर दूसरे स्थान पर और दो सीटों (बठिंडा और फरीदकोट) पर तीसरे स्थान पर रही।

शिरोमणि अकाली दल (शिअद) का ग्राफ इस चुनाव में और नीचे चला गया, पार्टी को केवल एक सीट, बठिंडा, पर जीत मिली। पूर्व केंद्रीय मंत्री और मौजूदा सांसद हरसिमरत कौर बादल ने इस सीट पर लगातार चौथी बार अपनी जीत दोहराई। उन्होंने लगभग 50,000 वोटों के अंतर से जीत हासिल की। वे शिअद प्रमुख सुखबीर बादल की पत्नी और वरिष्ठ अकाली नेता बिक्रम सिंह मजीठिया की बहन हैं।2019 के लोकसभा चुनावों में अकाली दल ने दो सीटें जीती थीं और 27.45 प्रतिशत वोट शेयर हासिल किया था। 2022 के विधानसभा चुनावों में पार्टी का वोट शेयर घटकर 18।38 प्रतिशत रह गया। मंगलवार को पार्टी को केवल 13.42 प्रतिशत वोट मिले, जो कई दशकों में सबसे कम है, जो ग्रामीण सिख किसानों के पंथिक पार्टी से मोहभंग की ओर इशारा करता है।

हालांकि, भाजपा ने राज्य में कोई सीट नहीं जीती, लेकिन इसका वोट शेयर 2019 के संसदीय चुनावों में 9.63 प्रतिशत और 2022 के विधानसभा चुनावों में 6.6 प्रतिशत से बढ़कर 18.56 प्रतिशत हो गया। मौजूदा वोट शेयर के हिसाब से पंजाब में भाजपा के पास अकाली दल से ज्यादा वोटर हैं।दोनों पार्टियों का संयुक्त वोट शेयर लगभग 33 प्रतिशत है। फिर से साथ आने की बातचीत विफल होने के बाद दोनों पार्टियों ने अकेले चुनाव लड़ने का फैसला किया।

भाजपा उम्मीदवारों के ज्यादातर चुनाव प्रचार में किसानों के प्रदर्शन के कारण बाधा आई, जिन्होंने पटियाला के पास शंभू सीमा पर किसानों के आंदोलन के मद्देनजर भाजपा उम्मीदवारों को अपने गांवों में घुसने नहीं देने का फैसला किया था।भाजपा ने 2019 में अभिनेता से नेता बने सनी देओल द्वारा जीती गई गुरदासपुर सीट कांग्रेस से और नौकरशाह से नेता बने सोम प्रकाश द्वारा 2019 में जीती गई होशियारपुर सीट आप के राज कुमार छाबेवाल से हार गई।पार्टी गुरदासपुर, जालंधर और लुधियाना में दूसरे स्थान पर रही और अमृतसर, आनंदपुर साहिब, फतेहगढ़ साहिब, फिरोजपुर, होशियारपुर और पटियाला में तीसरे स्थान पर रही।

महासागरों में बढ़ते प्रदूषण को रोकना होगा

-रमेश सर्राफ धमोरा

8 जून विश्व महासागर दिवस पर विशेष

महासागर इस दुनिया में मनुष्य के जीवित रहने का एक प्रमुख कारण है। महासागर हमें पीने के लिए पानी और सांस लेने के लिए ताजी हवा प्रदान करता है। इसलिए महासागर प्रदूषण का मुद्दा महत्वपूर्ण है। हम अपने जीवन में बहुत कुछ महासागर पर निर्भर हैं। महासागर प्रदूषण एक बड़ी समस्या बनता जा रहा है। हमारे महासागरों में कचरा जमा हो रहा है लेकिन सवाल यह है कि कचरा कहाँ से आ रहा हैं। आज जब विश्व की कुल जनसंख्या का 30 प्रतिशत तटीय क्षेत्रों में निवास करता है तो ऐसी स्थिति में महासागर उनके लिए खाद्य पदार्थों का प्रमुख स्रोत साबित हो सकते हैं। सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण होने के कारण महासागर अत्यंत उपयोगी हैं। पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व यहां उपस्थित वायुमंडल और महासागरों जैसे कुछ विशेष कारकों के कारण ही संभव हो पाया है। अपने आरंभिक काल से आज तक महासागर जीवन के विविध रूपों को संजोए हुए हैं। पृथ्वी के विशाल क्षेत्र में फैले अथाह जल का भंडार होने के साथ ही महासागर अपने अंदर व आसपास अनेक छोटे-छोटे नाजुक पारितंत्रों को पनाह देते हैं। जिससे उन स्थानों पर विभिन्न प्रकार के जीव-जंतु व वनस्पतियां पनपती हैं।

वर्तमान में मानवीय गतिविधियों का प्रभाव समुद्रों पर भी दिखाई देने लगा है। महासागरों के तटीय क्षेत्रों में दिनों-दिन प्रदूषण का स्तर बढ़ रहा है। जहां तटीय क्षेत्र विशेष कर नदियों के मुहानों पर सूर्य के प्रकाश की पर्याप्तता के कारण अधिक जैव-विविधता वाले क्षेत्रों के रूप में पहचाने जाते थे। वहीं अब इन क्षेत्रों के समुद्री जल में भारी मात्रा में प्रदूषणकारी तत्वों के मिलने से वहां जीवन संकट में हैं। तेलवाहक जहाजों से तेल के रिसाव के कारण एवं समुद्री जल के मटमैला होने पर उसमें सूर्य का प्रकाश गहराई तक नहीं पहुंच पाता है। जिससे वहां जीवन को पनपने में परेशानी होती है और उन स्थानों पर जैव-विविधता भी प्रभावित होती है।

हर साल जून 8 को दुनिया भर में विश्व महासागर दिवस मनाया जाता है। 1987 में ब्रंटलैंड की एक रिपोर्ट में टिप्पणी की गयी थी की विश्व के जो महासागर हैं उन पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जा रहा है। इसी रिपोर्ट से प्रेरित होकर कनाडा ने विश्व महासागर दिवस मानाने का प्रस्ताव रखा। 1992 में कनाडा के इंटरनेशनल सेंटर फॉर ओशन डेवलपमेंट ने इस दिवस को मानाने का प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र के एक सम्मेलन अर्थ समिट में रखा था। 8 जून 2009 को पहला विश्व महासागर दिवस मनाया गया। इसके बाद से प्रतिवर्ष 8 जून को विश्व महासागर दिवस मनाया जाता है। हर साल विश्व महासागर दिवस के अवसर पर विश्व में महासागर से जुड़े विषयों पर विभिन्न आयोजन किए जाते हैं। जो महासागर के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं के प्रति जागरूकता पैदा करने में मुख्य भूमिका निभाते हैं। महासागर हमारी पृथ्वी पर न सिर्फ जीवन के प्रतीक है बल्कि पर्यावरण संतुलन में भी प्रमुख भूमिका अदा करते है। पृथ्वी पर जीवन का आरंभ महासागरों से माना जाता है। महासागरो में असीम जैव विविधता का भंडार समाया है। पृथ्वी का लगभग 70 प्रतिशत भाग महासागरों से घिरा है। पृथ्वी पर उपलब्ध समस्त जल का लगभग 97 प्रतिशत जल महासागरों में समाया हुआ है। महासागरों की विशालता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि यदि पृथ्वी के सभी महासागरों को एक विशाल महासागर मान लिया जाए तो उसकी तुलना में पृथ्वी के सभी महाद्वीप एक छोटे द्वीप से प्रतीत होंगे। महासागर खाद्य पदार्थों का एक प्रमुख स्रोत होने के कारण हमारी अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। आज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की मदद से महासागरों से पेट्रोलियम सहित अनेक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधनों को निकाला जा रहा है। इसके अलावा जलवायु परिवर्तन सहित अनेक मौसमी घटनाओं को समझने के लिए समुद्रों का अध्ययन भी महत्वपूर्ण है। पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति महासागरों में ही हुई है। आज भी महासागर जीवन के लिए आवश्यक परिस्थितियों को बनाए रखने में सहायक हैं। महासागर पृथ्वी के एक तिहाई से अधिक क्षेत्र में फैले हैं। इसलिए महासागरीय पारितंत्र में थोड़ा सा परिवर्तन पृथ्वी के समूचे तंत्र को अव्यवस्थित करने का सामर्थ्य रखता है।

प्रशांत महासागर पृथ्वी पर सबसे बड़ा महासागर है। पृथ्वी की सतह का यह लगभग 30 प्रतिशत हिस्सा है। इस महासागर की गहराई 35 हजार फुट और इसका आकार ट्राईगल यानि त्रिभुजाकार है। प्रशांत महासागर में करीब 25,000 द्वीप हैं। अटलांटिक महासागर क्षेत्रफल और विस्तार की दृष्टि से दुनिया का दूसरे सबसे बड़ा महासागर है। इसके पास पृथ्वी का 21 प्रतिशत से अधिक भाग है। अटलांटिक महासागर का आकार अंग्रेजी के 8 की संख्या के जैसा है। इस महासागर की कुछ वनस्पतियां खुद से चमकती हैं क्योंकि यहां सूर्य की रोशनी नहीं पहुंचती।

हिंद महासागर दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा महासागर है। यह धरती का लगभग 14 प्रतिशत हिस्सा है। हिंद महासागर को रत्नसागर नाम से भी जाना जाता है। हिन्द महासागर इकलौता ऐसा महासागर है जिसका नाम किसी देश के नाम पर रखा गया है। अंटार्कटिका महासागरों में चैथा सबसे बड़ा महासागर है। इस महासागर को ऑस्ट्रल महासागर के नाम से भी जाना जाता है। इस महासागर में आइसबर्ग तैरते हुए देखे जाते हैं। अंटार्कटिका की बर्फीली जमीन के अंदर 400 से भी अधिक झीलें हैं। आर्कटिक महासागर पांच महासागरों में सबसे छोटा और उथला महासागर है। इसे उत्तरी ध्रुवीय महासागर भी कहते हैं। सर्दियों में यह महासागर पूर्णतः समुद्री बर्फ से ढका रहता है।

महासागरों में बढ़ता प्रदूषण चिंता का विषय बनता जा रहा है। अरबों टन प्लास्टिक का कचरा हर साल महासागरों में समा जाता है। आसानी से विघटित नहीं होने के कारण यह कचरा महासागरो में जस का तस पड़ा रहता है। अकेले हिंद महासागर में भारतीय उपमहाद्वीप से पहुंचने वाली भारी धातुओं और लवणीय प्रदूषण की मात्रा प्रतिवर्ष करोड़ों टन है। विषैले रसायनों के रोजाना मिलने से समद्री जैव विविधता भी प्रभावित होती है। इन विषैले रसायनों के कारण समुद्री वनस्पति की वृद्धि पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखने वाले परितंत्रों में महासागर की उपयोगिता को देखते हुए यह आवश्यक है कि हम महासागरीय पारितंत्र के संतुलन को बनाए रखें तभी हमारा भविष्य सुरक्षित रहेगा।

अपने आरंभिक काल से आज तक महासागर जीवन के विविध रूपों को संजोए हुए हैं। पृथ्वी के विशाल क्षेत्र में फैले अथाह जल का भंडार होने के साथ महासागर अपने अंदर व आस-पास अनेक छोटे-छोटे नाजुक पारितंत्रो को पनाह देते हैं। जिससे उन स्थानों पर विभिन्न प्रकार के जीव व वनस्पतियां पनपती हैं। इसी प्रकार तटीय क्षेत्रों में स्थित मैन्ग्रोव जैसी वनस्पतियों से संपन्न वन समुद्र के अनेक जीवों के लिए नर्सरी का काम करते हुए विभिन्न जीवों को आश्रय प्रदान करते हैं। महासागरों में पृथ्वी का सबसे विशालकाय जीव व्हेल से लेकर सूक्ष्म जीव भी मिलते हैं। एक अनुमान के अनुसार केवल महासागर के अंदर करीब दस लाख प्रजातियां उपस्थित हो सकती हैं।

हम सांस लेने के लिए जिस ऑक्सीजन का प्रयोग करते हैं। उसकी दस फीसद मात्रा हमें समुद्र से ही प्राप्त होती है। समुद्र में मौजूद सूक्ष्म वैक्टीरिया ऑक्सीजन का उत्सर्जन करते हैं जो पृथ्वी पर मौजूद जीवन के लिए बेहद जरूरी है। समुद्र में प्लास्टिक से होने वाले प्रदूषण की वजह से ये वैक्टीरिया पनप नहीं पा रहे हैं। जिसके कारण समुद्र में ऑक्सीजन की मात्रा भी लगातार घट रही है। यदि हम समय रहते नहीं चेते तो यह पशु-पक्षियों के साथ-साथ इंसानों के लिए भी बहुत बड़ा खतरा बन सकता है।

तमसो मां ज्योतिर्गमय : गायत्री नमामि नमामि नमामि

- सुरेश सिंह बैस शाश्वत

गायत्री जयंती ज्येष्ठ महीने में शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को तो कहीं एकादशी के दिन मनायी जाती है। वहीं कहीं पर यह श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन भी मनाई जाती है। गायत्री जयंती पर्व मां गायत्री देवी का जन्मोत्सव है। धार्मिक मान्यता के अनुसार इसी दिन मां गायत्री का अवतरण हुआ था। गायत्री मां से ही चारों वेदों की उत्पति मानी जाती हैं। इसलिये वेदों का सार भी गायत्री मंत्र को माना जाता है। मान्यता है कि चारों वेदों का ज्ञान लेने के बाद जिस पुण्य की प्राप्ति होती है अकेले गायत्री मंत्र को समझने मात्र से चारों वेदों का ज्ञान मिलता जाता है। गायत्री मां को हिंदू भारतीय संस्कृति की जन्मदात्री मानते हैं। मां गायत्री के जन्म दिवस को लेकर भिन्न-भिन्न मत प्रचलित हैं। कुछ जगहों पर गायत्री जयंती और गंगा दशहरा की तिथि को एक समान बताया जाता है। तो वहीं कुछ लोग इसको गंगा दशहरा के एक दिन आगे यानी जेष्ठ मास के एकादशी तिथि को मनाने की परंपरा का निर्वहन करते हैं। तो वहीं कुछ जगह श्रावण पूर्णिमा के दिन भी गायत्री जयंती मनाए जाने की परंपरा है अधिकतर स्थानों पर श्रावण पूर्णिमा के दिन गायत्री जयंती उत्सव मनाया जाने को मान्यता प्रदान की गई है। लेकिन जेष्ठ शुक्ल दशमी एकादशी के दिन भी गायत्री जयंती उत्सव मनाया जाने की मान्यता भी लोक प्रचलित है। चारों वेद, शास्त्र और श्रुतियां सभी गायत्री से ही पैदा हुए माने जाते हैं। वेदों की उत्पति के कारण इन्हें वेदमाता कहा जाता है, ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों देवताओं की आराध्य भी इन्हें ही माना जाता है इसलिये इन्हें देवमाता भी कहा जाता है। समस्त ज्ञान की देवी भी गायत्री हैं इस कारण गायत्री को ज्ञान-गंगा भी कहा जाता है। इन्हें भगवान ब्रह्मा की दूसरी पत्नी भी माना जाता है। मां पार्वती, सरस्वती, लक्ष्मी की अवतार भी गायत्री को कहा जाता है। कहा जाता है कि एक बार भगवान ब्रह्मा यज्ञ में शामिल होने जा रहे थे। मान्यता है कि यदि धार्मिक कार्यों में पत्नी साथ हो तो उसका फल अवश्य मिलता है लेकिन उस समय किसी कारणवश ब्रह्मा जी के साथ उनकी पत्नी सावित्री मौजूद नहीं थी इस कारण उन्होंनें यज्ञ में शामिल होने के लिए वहां मौजूद देवी गायत्री से विवाह कर लिया। माना जाता है कि सृष्टि के आदि में ब्रह्मा जी पर गायत्री मंत्र प्रकट हुआ। मां गायत्री की कृपा से ब्रह्मा जी ने गायत्री मंत्र की व्याख्या अपने चारों मुखों से चार वेदों के रुप में की। आरंभ में गायत्री सिर्फ देवताओं तक सीमित थी लेकिन जिस प्रकार भगीरथ कड़े तप से गंगा मैया को स्वर्ग से धरती पर उतार लाए उसी तरह विश्वामित्र ने भी कठोर साधना कर मां गायत्री की महिमा अर्थात गायत्री मंत्र को सर्वसाधारण तक पंहुचाया। गायत्री की महिमा में प्राचीन भारत के ऋषि मुनियों से लेकर आधुनिक भारत के विचारकों तक अनेक बातें कही हैं । वेद, शास्त्र और पुराण तो गायत्री मां की महिमा गाते ही हैं। अथर्ववेद में मां गायत्री को आयु, प्राण, शक्ति, कीर्ति, धन और ब्रह्मतेज प्रदान करने वाली देवी कहा गया है।महाभारत के रचयिता वेद व्यास गायत्री की महिमा में कहते हैं जैसे फूलों में शहद, दूध में घी सार रूप में होता है वैसे ही समस्त वेदों का सार गायत्री है। यदि गायत्री को सिद्ध कर लिया जाये तो यह कामधेनू (इच्छा पूरी करने वाली दैवीय गाय के समान है। जैसे गंगा शरीर के पापों को धो कर तन मन को निर्मल करती है उसी प्रकार गायत्री रूपी ब्रह्म गंगा से आत्मा पवित्र हो जाती है। गायत्री को सर्वसाधारण तक पहुंचाने वाले राजर्षि विश्वामित्र कहते हैं कि ब्रह्मा जी ने तीनों वेदों का सार तीन चरण वाला गायत्री मंत्र निकाला है। गायत्री से बढ़कर पवित्र करने वाला मंत्र और कोई नहीं है। जो मनुष्य नियमित रूप से गायत्री का जप करता है वह पापों से वैसे ही मुक्त हो जाता है जैसे केंचुली से छूटने पर सांप होता है।

- सुरेश सिंह बैस शाश्वत

नशीली दवाओं और शराब की लत

आजकल नशीली दवाओं और शराब का सेवन समाज में अत्यधिक रूप से होने लगा है. भारी संख्याँ में अब लोग नशीली दवाओं और शराब का सेवन करने लगे हैं. नशीली दवाओं और शराब के सेवन से अब समाज में अति तीव्रगति से शारिरिक और मानसिक बदलाव मानव समाज में बढ़ता हुआ प्रतिदिन देखने को मिल रहा है. जिसका असर मानव जीवनशैली पर गंभीर रूप से पड़ रहा है. जो लोग नशीली दवाओं और शराब का सेवन करते हैं उनमें विषाक्तता तथा अत्यधिक सेवन से मृत्यु, शारिरिक और मनोवैज्ञानिक निर्भरता, मस्तिष्क, हृदय यकृति जैसे महत्वपूर्ण अंगों पर बुरे असर पड़ने लगते हैं. मनोविकृति और गंभीर चिंता सहित मनोवैज्ञानिक समस्यायें लोगों में बढ़ने लगती है. इसलिए जो लोग नशे के आदी हैं उनको नशा करने से दूर रखने की आवश्यकता है. नशा करने वाला या शराबी खुद को बड़ा ज्ञानी समझता है. किसी की दी हुई अच्छी सलाह को दरकिनार करते हुए और नशे में धुत्त होशोहवास खोये परिवार की पीड़ा को नही समझता है. परिवार में पत्नी, बच्चे, माता-पिता, सभी को भूल जाता है. जो स्वयं नशे का आदी हो, वह अपने खुद के बच्चे और परिवार को क्या शिक्षा दे सकता है ? घर की शांति को भंग कर अपने ही परिवार को नर्क बना देता है ? समाज में अच्छे लोगों से मिलना-जुलना छोड़ देता है. और गंभीर से गंभीर विमारियों से ग्रस्त हो जाता है. इसतरह फलते-फूलते, हंसते-खेलते परिवार में एक से बढ़कर एक संकट अपनी बांहों में समेट लेते हैं. बसे-बसाये, घर परिवार में नशे के कारण विपत्तियों के पहाड़ टूट पड़ते हैं. व्यसन के आदी लोग समाज में दूसरों के साथ गाली-गलौज, मार-पीट, और बदसलूकियाँ करने लगते हैं. जिससे सभ्य और अच्छे लोग नशा करने वाले इंसान से दूर रहने लगते हैं. इसतरह से नशेड़ी इंसान का घर बर्बाद होने लगता है जिसका जिम्मेदार वह खुद होता है. नशीली दवाओं और शराब की विक्री पर अंकुश लगने के बावजूद दुगुने चौगुने पैसे देकर पीने-खाने वाले लोग नशीली दवायें और शराब को हासिल कर, सेवन कर ही लेते है. आज कल तो खुलेआम नशीली दवायें और शराब लोग पीने खाने लगे है. जरूरत है समाज में रहने वाले अच्छे सामाजिक लोगों की जो बढ़ते हुए इस चलन को बंद करें. और नशा करने वाले इंसान को सुधारें और उसके विखरते हुए परिवार में एकजुटता लायें. नशीली दवाओं और शराब की लत से दूर रखने के लिए बहुत सारे एनजीओ और सरकारी संस्थायें भी हैं जो शक्रीयता से प्रयत्नशील रहती है. जो आजके दौर में नाकाफी है. -विक्रम दयाल

https://t.me/AllNewsPaperPaid

भारत की गठबन्धन सरकारें

वर्तमान लोकसभा चुनावों को विचारधाराओं का महायुद्ध कहा जा सकता है जिसमें गांधीवादी समन्वित विचारधारा और हिन्दुत्ववादी राष्ट्रवादी विचारधारा के बीच सीधी टक्कर थी। इनका आधार आर्थिक सोच ही था जो हमें लोक कल्याणकारी राज और बाजारवादी संशोधन वाद के रूप में नजर आया। ये चुनाव मूल आर्थिक प्रश्नों को केन्द्र में रख कर भी लड़े गये। जाहिर है कि इन चुनावों में भाजपा का विमर्श हारा क्योंकि इसकी लोकसभा में 303 सीटों से घट कर 240 रह गई जबकि कांग्रेस की 52 सीटों से बढ़ कर 99 हो गईं। भाजपा ने कुल 92 सीटें पुरानी गंवाई जबकि 32 नई पाईं। इससे यह पता चलता है कि चुनावी मैदान में जो विमर्श भाजपा ने रखा था वह कांग्रेस के विमर्श के समक्ष ढीला साबित हुआ। परन्तु इन चुनावों के बाद जो राजनैतिक तस्वीर उभरी वह किसी एक पार्टी की पूर्ण बहुमत की सरकार की जगह कई दलों की मिली-जुली सरकार बनने की उभरी। भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए गठबन्धन को 292 सीटें प्राप्त हुईं जबकि कांग्रेस के गठबन्धन को 232 सीटों पर ही सन्तोष करना पड़ा। जाहिर है कि अब जो सरकार भाजपा के नेता नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में गठित होने जा रही है वह किसी एक पार्टी की सरकार नहीं होगी। अतः विभिन्न राजनैतिक दलों का एजेंडा इस सरकार का स्थायी भाव होगा। भारत में गठबन्धन सरकारों का अपना इतिहास रहा है। ये सरकारें एक दल की सरकारों से ज्यादा कारगर भी रही हैं ।

इसका उदाहरण डा. मनमोहन सिंह के नेतृत्व में दस साल तक चली यूपीए सरकार को माना जाता है। इससे पहले भाजपा नेता अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में भी 24 से अधिक दलों की गठबन्धन सरकार पूरे पांच साल 1999 से लेकर 2004 तक चली थी। मनमोहन सरकार ने जहां भारत के लोगों को भोजन का अधिकार से लेकर शिक्षा का अधिकार व सूचना का अधिकार जैसे कानून दिये वहीं ग्रामीण रोजगार कानून भी दिया। गठबन्धन सरकारें भारत की विविधता को देखते हुए ही कारगर मानी जाती रही हैं। इनमें उत्तर से लेकर दक्षिण व पूर्व से लेकर पश्चिम तक का प्रचुर प्रतिनिधित्व रहा है। एक पार्टी की सरकार में भारत की विविधता की झलक खटकती रही है। विशेष कर भाजपा की पिछली दस साल की सरकार के दौरान दक्षिण का प्रतिनिधित्व हाशिये पर रहा है जिसकी वजह से राष्ट्रीय राजनैतिक सन्तुलन भी गड़बड़ाता रहा है जबकि पिछली भाजपा की अटल बिहारी वाजपेयी सरकार में ऐसा नहीं था क्योंकि इसमें दक्षिण की पार्टी द्रमुक सरकार में शामिल थी। गठबन्धन सरकारों का असली दौर 1989 से चालू हुआ जब स्व. विश्वनाथ प्रताप सिंह ने पहली बार जनता दल का गठन करके सरकार बनाई।

इस सरकार को एक तरफ भाजपा का समर्थन प्राप्त था तो दूसरी तरफ वामपंथी मोर्चे का भी समर्थन प्राप्त था। जबकि कांग्रेस पार्टी दूसरी बार विपक्ष में बैठी थी। हालांकि इससे पहले 1977 में इमरजेंसी के बाद जनता पार्टी की मोरारजी देसाई के नेतृत्व में गठित सरकार भी गठबन्धन की ही सरकार थी क्योंकि जनता पार्टी में भारतीय लोकदल, जनसंघ व संगठन कांग्रेस का विलय हो गया था जबकि इससे पूर्व 1974 में लोकदल में स्वतन्त्र पार्टी, संसोपा, भारतीय क्रान्ति दल व बीजू पटनायक की कांग्रेस का विलय हो चुका था।

मगर यह सरकार बामुश्किल दो साल चली और बिखर गई। इससे पूर्व कांग्रेस के राज में कभी भी उत्तर-दक्षिण का सवाल नहीं उठा क्योंकि इस पार्टी का चरित्र मूल रूप से अखिल भारतीय था जिसमें हर प्रदेश व क्षेत्र का समुचित प्रतिनिधित्व हुआ करता था। यही वजह थी कि 1977 में जनता पार्टी दक्षिण के चारों राज्यों में कांग्रेस से बुरी तरह पराजित हुई थी। परन्तु 1989 के आते-आते हालात बदले और उत्तर भारत में ही मुख्य रूप से विजय प्राप्त करने वाले जनता दल की सरकार गठित हुई।इसके बाद 1990 में कांग्रेस ने बाहर से समर्थन देकर स्व. चन्द्रशेखर की सरकार बनवाई और बाद में 1991 के मध्यावधि चुनावों में कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी 240 से अधिक सीटें लेकर उभरी और उसने अपने बूते पर ही यह सरकार लोकसभा में बहुमत का आंकड़ा जुटा कर चलाई। परन्तु 1996 के चुनावों में भाजपा सबसे बड़ा दल के रूप में 160 से अधिक सीटें लेकर आयी और इसकी सरकार को बाहर या भीतर से किसी अन्य दल का समर्थन नहीं मिला। परिणामस्वरूप यह 13 दिनों में ही गिर गई। तब इस 13 दिन सरकार के मुखिया अटल बिहारी वाजपेयी ने प्रधानमन्त्री पद से इस्तीफा देने से पहले कहा था कि राजनीति में 'अछूत' कोई नहीं होता है। श्री वाजपेयी की इस बात का असर हमें बाद में राष्ट्रीय राजनीति में देखने को मिला। मगर 13 दिन की सरकार गिरने के बाद श्री देवगौड़ा व स्व. गुजराल की सांझा सरकारें गठित हुई। ये ऐसी सरकारें थीं जिनमें पहली बार कम्युनिस्ट पार्टी भी शामिल हुई और इसके नेता स्व. इंद्रजीत गुप्ता देश के गृहमन्त्री बने। यह सरकार संयुक्त मोर्चे की सरकार थी जिसके सूत्रधार आन्ध्र प्रदेश के नेता श्री चन्द्रबाबू नायडू थे। इस सरकार को बाहर से कांग्रेस का समर्थन प्राप्त था परन्तु दो साल बाद इसने अपना समर्थन वापस ले लिया और साझा सरकार गिर गई। 1998 में चुनाव हुए और भाजपा की 180 से अधिक सीटें आयी। इसके नेतृत्व में तब एनडीए का गठन हुआ और स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में सरकार 13 महीने चली क्योंकि तब दक्षिण की नेता जयललिता ने इससे अपना समर्थन वापस ले लिया था। इस सरकार के गिरने के बाद 1999 में चुनाव हुए और भाजपा ने चुनाव से पूर्व ही मजबूत एनडीए गठबन्धन तैयार किया और इसे बहुमत प्राप्त हो गया। इस गठबन्धन के आकर्षण स्वयं अटल बिहारी वाजपेयी थे जिनका उदार स्वभाव सभी प्रकार के राजनैतिक दलों को एनडीए से जोड़ देता था। सत्ता के लिए बने गठबन्धन में पूर्वोत्तर राज्यों के दल भी भाजपा के साथ आते गये। परन्तु इसके बाद 2004 में कांग्रेस के नेतृत्व में जो गठबन्धन यूपीए तैयार हुआ उसमें सैद्धान्तिक पक्ष प्रमुख रहा और सामाजिक न्याय व समाजवादी विचारधारा के दलों का इसे साथ भी मिला जबकि स्व. मुलायम सिंह की समाजवादी पार्टी ने इसका बाहर रह कर समर्थन किया।

मैक्सिको में सिर चढ़ बोला शीनबाम का काम चर्चा में चेहरा

दरअसल, राष्ट्रपति बनने से पहले क्लाउडिया शीनबाम मैक्सिको सिटी की पहली महिला मेयर रह चुकी हैं। उनके महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता की चर्चा मैक्सिको ही नहीं, पूरी दुनिया में हुई। खासकर उन्होंने अपराधों पर नियंत्रण के लिये जो सुनियोजित अभियान चलाए, उसके चलते इस शहर के अपराधों में पचास फीसदी तक की कमी आई थी।

यह साल पूरी दुनिया में बड़े लोकतंत्रों में चुनावों का साल है। भारत में लंबे चुनाव अभियान के बाद सरकार बनने जा रही है, तो हाल ही के महीनों में पाक व बांग्लादेश में चुनाव संपन्न हुए हैं। सबसे बड़े लोकतंत्र भारत के बाद अब दुनिया के सबसे ताकतवर लोकतंत्र अमेरिका में चुनावों की गहमागहमी शुरू हो चुकी है। इस बीच लैटिन अमेरिकी देश मैक्सिको से एक उम्मीद जगाती खबर आई है। इस देश की आजादी के दौ सौ सालों में पहली बार एक महिला राष्ट्रपति बनी है। क्लाउडिया शीनबाम की लोकप्रियता का आलम यह है कि उन्होंने अपनी निकटतम प्रतिद्वंद्वी को दुगने से अधिक वोटों के अंतर से हराया। उन्हें अपनी निकटतम महिला प्रतिद्वंद्वी गैल्वेज रुईज से तीस फीसदी अधिक मत मिले। पूर्व सीनेटर एवं तकनीकी उद्यमी गैल्वेज ने मादक पदार्थों से जुड़े गिरोहों से निपटने का वादा किया था। दरअसल, क्लाउडिया शीनबाम का शानदार अकादमी करिअर रहा है। वे मूलतः जलवायु वैज्ञानिक रही हैं। उन्होंने भौतिक विज्ञान और ऊर्जा इंजीनियरिंग में शिक्षा हासिल की है। कालांतर में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की डिग्री हासिल की है। इतना ही नहीं, शीनबाम वर्ष 2007 में नोबेल पीस प्राइज पुरस्कार पाने वाली मैक्सिको की इंटर गवर्नमेंटल कमेटी का हिस्सा रही हैं।

यह बेहद महत्वपूर्ण बात है कि दुनिया के एक बड़े कैथोलिक देश में राष्ट्रपति के पद पर यहूदी महिला शीनबाम की ताजपोशी हुई है। लेकिन उन्होंने यह जगह अपने काम के बूते बनायी है। वे लंबे समय से मैक्सिको में वामपंथी राजनीति में सक्रिय रही हैं। यह विचित्र संयोग ही है कि एक तेल उत्पादक देश में सौर ऊर्जा की समर्थक रही हैं। पर्यावरण इंजीनियर के रूप में काम करने से पहले एक बैले डांसर भी रही हैं। उनकी पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता देखकर ही राष्ट्रपति लोपेज ने शीनबाम को अपने साथ जोड़ा था। हालांकि, अपने राजनीतिक गुरु निवर्तमान राष्ट्रपति आंद्रेस मैनुअल लोपेज ओब्रेडोर की सरकार में शीनबाम पर्यावरण मंत्री रही हैं। उनकी लोपेज के प्रति प्रतिबद्धता को देखकर उनके विरोधी आरोप लगाते हैं कि वह एक कठपुतली राष्ट्रपति की तरह काम करेंगी।

दरअसल, बेहद अनुशासित और जुनूनी शीनबान खामोशी के साथ काम करने में यकीन करती हैं और अपनी उपलब्धियों का बखान करने से परहेज करती हैं। शीनबान मैक्सिकों में महिलाओं के खिलाफ व्यापक हिंसा के खिलाफ सख्त कदम उठाने में यकीन करती हैं। यही वजह है कि उन्हें हालिया चुनाव में महिलाओं का व्यापक समर्थन मिला है। इस चुनाव में भी महिला प्रत्याशियों के खिलाफ व्यापक हिंसा की खबरें आई हैं। निस्संदेह कार्टेल हिंसा व अवैध प्रवास की समस्या को दूर करना उनकी प्राथमिकता रहेगी।

दरअसल, राष्ट्रपति बनने से पहले क्लाउडिया शीनबाम मैक्सिको सिटी की पहली महिला मेयर रह चुकी हैं। उनके महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता की चर्चा मैक्सिको ही नहीं, पूरी दुनिया में हुई। खासकर उन्होंने अपराधों पर नियंत्रण के लिये जो सुनियोजित अभियान चलाए, उसके चलते इस शहर के अपराधों में पचास फीसदी तक की कमी आई थी। क्लाउडिया ने मैक्सिको सिटी की मेयर रहते हुए कारगर रणनीति व पुलिस के आधुनिकीकरण से अपराधों पर नियंत्रण में बड़ी सफलता पाई। पुलिस को खुफिया ताकत देकर तथा अपराध नियंत्रण में नागरिकों की भूमिका बढ़ाकर उन्होंने गैंगवार की कमर तोड़ी थी। उन्होंने पुलिसकर्मियों को हाइटैक अपराधों से निपटने के लिये प्रशिक्षित किया। संगठित अपराधियों की कमर तोड़ने के लिये उन्होंने कम्युनिटी पुलिसिंग के सफल प्रयोग भी किये। जिसमें उन्हें संयुक्त राष्ट्र के विभिन्न संगठनों की मदद भी मिली। साथ ही नागरिकों को सोशल मीडिया के माध्यम से सुरक्षा प्राप्त करने के उपायों की जानकारी भी दी गई। इतना ही नहीं, युवाओं को अपराध से दूर करने के लिए विशेष कार्यक्रम संचालित किये गए।

दल-बदलुओं को जनता ने किया बैक टू होम

उनका अपना व्यक्तित्व, जनता में उनकी लोकप्रियता भी आप पार्टी से चुनाव जीतने में बड़ा कारण रही, लेकिन कुछ बड़े-बड़े दिग्गज जो वर्षों तक अपनी पार्टी के बल से हलवा मांडा खाकर वीवीआईपी बने रहे, वे भी दल बदलकर कोई बड़ी छलांग लगाना चाहते थे। उन्हें भी मालूम नहीं था कि उनकी पार्टी हार जाएगी।

चुनाव की घोषणा होते ही अपने पूरे देश में राजनीतिक दलों के नेताओं ने अपने अपने फील्ड बदले, दल बदले, दिल भी बदले और पहले जिस पार्टी के दम पर संसद या विधानसभाओं में पहुंचे। राजनीतिक पदों का सरकार में आनंद लिया, उसी पार्टी को छोड़कर दूसरी पार्टी में चले गए शायद बेहतर राजनीतिक भविष्य के लिए। केवल अपने लिए ही नहीं, अपितु अपने वंशजों की भी राजनीतिक नींव मजबूत करने के लिए पूरे देशभर में अनेक लोगों ने दल बदला। चुनाव से पूर्व पूरे देश में जो सबसे बड़ी लहर चली वह दल बदल की थी। वैसे सही स्थिति तो यह रही कि चुनाव के चार-पांच चरण पूरे होने के बाद भी ये दल बदलने वाले रुके नहीं और जहां से भी अवसर मिला, पैठ बना ली। मेरा तो यह मानना है कि जिस प्रकार डूबते जहाज से पहले चूहे कूदते हैं उसी प्रकार हमारे राजनीतिक महारथी अपना-अपना जहाज छोड़कर दूसरे जहाज में पहुंचने के लिए बेचैन जैसे हो गए और देश की सभी राजनीतिक पार्टियों की यह स्थिति है कि वह किसी भी पार्टी से कोई दल बदलता है, चाहे आपराधिक पृष्ठभूमि का ही क्यों न हो उसे लेने के लिए तैयार हो जाते हैं। देश के कुछ प्रांतों में सबने देखा कि करोड़ों-अरबों के घोटाले करने वाले सीबीआई या ईडी के डर से दल बदलकर सत्ता पक्ष में पहुंच गए और सुरक्षित हो गए। जिस पार्टी में ये गए वह संभवतः सोचते होंगे कि उनकी पार्टी मजबूत हो गई, पर वे सत्तापति नेता यह अनुमान ही नहीं कर पाए कि जनता अब जागरूक है। वह यह सहन करने के लिए तैयार नहीं कि अगर कोई अरबों के घोटाले करता है या महिलाओं का अपमान करके भी नेता बना रहता है वह दल बदलकर चुनाव लड़ने के लिए आ जाए तो भारत की जनता उसे स्वीकार कर लेगी।

इस बार वही हुआ कि हरियाणा के महिला पहलवानों से यह सहा नहीं गया कि महिलाओं का अपमान करने के बाद अपराधी पिता के पुत्र को संसद का टिकट दे दिया जाए या महाराष्ट्र में अरबों रुपये घोटालेबाज नेता को सत्ता पक्ष संसद का टिकट देकर माननीय बनाने की तैयार की। समाचार तो यह है कि पूरे देश में ही दल बदलुओं को नकारा गया। सच्चाई कटु है, पर यह है कि अगर देश की सबसे बड़ी पार्टी को पिछले चुनावों से कम सीटें मिली हैं तो उसका कारण भी बहुत से अवांछित जनता की न स्वीकार्य लोगों को अपनी पार्टी में उन्हें संसद के लिए उम्मीदवार बनाया गया। पूरे देश के लोगों ने दल बदलुओं को कितना हराया, यह विवरण तो अभी मेरे पास पूरा नहीं, पर पंजाब के लोगों में दल बदलुओं व मौकापरस्तों को चुन-चुन कर हराया। केवल एक डा. चब्बेवाल ही रहे जिन्होंने चुनाव जीत लिया, दल बदलने के बाद भी, पर यह देखना होगा कि डा. चब्बेवाल दल बदलते ही टिकट नहीं दिया, अपितु वह विधायक पद से इस्तीफा देकर चुनाव से कई महीने पहले कांग्रेस छोड़कर आप पार्टी में आ गए थे। उनका अपना व्यक्तित्व, जनता में उनकी लोकप्रियता भी आप पार्टी से चुनाव जीतने में बड़ा कारण रही, लेकिन कुछ बड़े-बड़े दिगगज जो वर्षों तक अपनी पार्टी के बल से हलवा मांडा खाकर वीवीआईपी बने रहे, वे भी दल बदलकर कोई बड़ी छलांग लगाना चाहते थे। उन्हें भी मालूम नहीं था कि उनकी पार्टी हार जाएगी।

जो पार्टी चार बार सांसद बनाए, फिर उसे बुरा कहकर अपने दादा की विरासत पर दाग लगाकर पार्टी बदल ले और अपनी पार्टी को बुरा कहे तो जनता ने यह समझ लिया कि यह व्यक्ति इस योग्य नहीं कि इसे अपना जनप्रतिनिधि बनाएं। लुधियाना से श्री रवनीत बिट्टू ने यही किया और भाजपा का आंचल पकड़कर भी वे संसद में नहीं पहुंच सके, क्योंकि उनके क्षेत्र की जागरूक जनता ने दल बदलु को स्वीकार नहीं किया। इसी प्रकार पटियाला में अमरिंदर परिवार पूरे का पूरा ही दल बदल गया और श्रीमती परनीत कौर को दल बदलते ही नए दल में सांसद प्रत्याशी बना लिया गया, उसे पटियाला की जनता ने अस्वीकार कर दिया। वे संसद में शायद ही कभी पहुंच पाएं। जालंधर के सुशील रिंकू ने तो बड़ा खेल खेला। पहले कांग्रेस छोड़ी आप ने सिर-माथे पर बिठाया और फिर आप से पलटी मारकर भाजपा में गए। जनता ने उन्हें उनकी असलियत दिखा दी। एक और दल बदलने में कुशल जीपी भी संसद में नहीं पहुंच पाए।

संपादकीय

भाजपा की हार और रार का कारण मोदी शाह की नीति!

सबका साथ - अपनों का विकास

अनुज अग्रवाल
संपादक डायलॉग इंडिया

1) अमित शाह टिकिट वितरण में मनमानी व पैसों का खेल - जानबूझकर लोकप्रिय व आंतरिक सर्वे में एक नंबर रहे नेताओं को टिकिट नहीं दी गई ताकि वे भविष्य में चुनौती न बन सकें)

2) पुराने भाजपाइयों को निपटाने की ज़िद व ज़मीनी कार्यकर्ताओं की उपेक्षा व यस बॉस शैली वाले नेताओं को टिकिट बाँटे गए। मोदी - शाह की नई भाजपा खड़ा करने की ज़िद। (इसीलिए संघ , योगी, वसुंधरा व गडकरी की टीम द्वारा सारे चुनावी समीकरण बिगाड़ दिए गए)

3) बाहरी दलों से आयातित उम्मीदवारों पर भरोसा और चुनाव प्रचार में ग़लत मुद्दों का चयन।

4) हिंदुत्व के मुद्दे व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को दरकिनार करना व अक्षम नडडा को पार्टी अध्यक्ष बनाना।

5) जाटों के बाद राजपूतों व मराठाओं को नाराज़ करना। बड़े स्तर पर कल्याणकारी कार्य करने के बाद भी मुस्लिम, सिख व ईसाइयों में मोदी से नफ़रत।

5) पिछले दस वर्षों में केंद्र व भाजपा शासित राज्यों में आधे से अधिक ठेके गुजरातियों को देना और फिर उनके द्वारा बिना कुछ किए आधे रेट पर आउटसोर्स कर देना

6) कमीशन व भ्रष्टाचार का बोलबाला

7) अश्लीलता, व्यभिचार, ड्रग्स, नशेबाजी, पोर्न , सट्टा आदि पर लगाम न लगा पाना

8) युवाओं के मुद्दे जैसे रोज़गार, पेपर लीक, प्रवेश परीक्षाओं में गड़बड़ी व दिशाहीनता, अग्निवीर, महँगी होती प्राइवेट शिक्षा आदि पर कोई प्रभावी नीति का अभाव

9) कोविड व उसके बाद के परिदृश्य में बीमारियों व आकस्मिक मौत से लगभग हर घर में उभरी परेशानियों व आर्थिक चुनौतियों का समाधान न दे पाना

10) न्यायिक सुधार न लागू कर पाने के कारण न्यायपालिका की मनमानी और भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ व्यापक अभियान चलाने के बीच पार्टी व सरकार के लोगों द्वारा आकंठ भ्रष्टाचार । केंद्र व भाजपा शासित राज्यों की नौकरशाही व जाँच एजेंसियो की मनमानी व लूट पर कोई नियंत्रण नहीं।

एक त्रुटिपूर्ण रणनीति का बेढंगा निपटान

विद्रोही इसे 'हकां दी लड़ाई' करार दे रहे थे। उनके लिए, हिंसा पुलिसिया जबर की प्रतिक्रिया थी और राजसत्ता से संवाद का एक अन्य ढंग भी, उनके अपने तरीके का। चूंकि विद्रोहियों को संवैधानिक रूप से वैधता प्राप्त नहीं होती इसलिए वे विद्वान मार्क जुएर्गेंस्मेयर के शब्दों में 'धर्म प्रदत अधि-नैतिकता' को अपनी स्वीकार्यता का आधार बताते हैं। तत्पश्चात हिंसा उतरोत्तर बढ़ती गई। पाकिस्तान ने विद्रोहियों को प्रशिक्षण और हथियार देकर अपना खेल शुरू कर दिया।

वर्ष 1984 एक विध्वंसक साल रहा। इसमें घटित बड़े प्रसंग गौरतलब हैंङ्क ऑपरेशन ब्लू स्टार, प्रधानमंत्री की हत्या और सिख विरोधी नरसंहारङ्क इस एक बरस ने राष्ट्र के आंतरिक विमर्श और इतिहास का जिस प्रकार निर्धारण किया उतना शायद आजादी के उपरांत किसी अन्य साल ने नहीं किया।

40 साल गुजरना भी इसके आघात की टीस नहीं भर पाया। प्रभावित हुए लोगों को न्याय न मिलने की धारणा और त्रासदी की चुभन अभी भी सालती है। तमाम संबंधित पक्षों ङ्क राजनीतिक तत्व, सरकार के इशारे पर काम करने वाले, आतंकवादी और नरसंहार में लिप्त भीड़- की जवाबदेही तय करने के लिए यदि सत्य एवं सुलहकारी कोई आयोग बनाया गया होता तो शायद न्यायिक प्रक्रिया एवं मान-मनौव्वल से अंततः आहत भावनाओं के मामले का संतोषप्रद समाधान हो पाता।

क्या ऑपरेशन ब्लू स्टार करने से बचा जा सकता था? तत्कालीन केंद्रीय सरकार आतंकवाद को खत्म के वास्ते इस कार्रवाई को बतौर एक अवश्यंभावी उपाय पेश करती रही। उस वक्त हथियारबंद विद्रोहियों ने पूरे स्वर्ण मंदिर परिसर पर कब्जा कर रखा था और हथियारों से लैस चौकियां बना डाली और संवैधानिक रूप से स्थापित राष्ट्र-नीति की वैधता को चुनौती देने को उद्यत थे। आम दलील अक्सर यह आती है- यदि स्वर्ण मंदिर परिसर में सशस्त्र विद्रोही किलेबंदी न करते तब क्योंकर सेना लगाने की जरूरत पड़ती। आस्थावानों की धारणा किंतु इससे विपरीत है। ऑपरेशन ब्लू स्टार को सिखों के सबसे पवित्रतम स्थल को अपमानित करने की एक पूर्व निर्धारित योजना के रूप में देखा जाता है, जिसके पीछे मकसद था ध्रुवीकरण पैदा करके कुछ महीने बाद होने वाले आम चुनाव में राजनीतिक लाभ उठाना। इसको समझने के लिए आठवीं लोकसभा के चुनाव प्रचार में जारी विज्ञापनों में ध्रुवीकरण करती इबारत बांचें तो ङ्क'क्या देश की सीमा अतंतः आपकी दहलीज़ तक आ जाएगी' या सिख चालक वाली टैक्सी दिखाकर संलग्न किया सवाल ऱ 'क्या आप इस टैक्सी में सुरक्षित महसूस करेंगे'। विध्वंसक घटनाएं अक्सर उद्देश्य को ढांप देती है, विशेषकर आस्था के मामले में। ब्लू स्टार के मामले में अब कुछ तथ्य पूरी तरह स्थापित एवं किंतु-परंतु से इतर स्पष्ट हैं। संक्षेप में घटनाक्रम बताएं तो, अकाली दल ने 4 अगस्त, 1982 को अपनी दस मांगों को लेकर मोर्चा लगाने का ऐलान कियाङ्क इनमें धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक और अंतर-राज्यीय विवाद संबंधी मुद्दे थे। इसके लिए प्रदर्शनकारी रोज शांतिपूर्ण ढंग से गिरफ्तारियां देते थे। जून 1984 तक, लगभग 1 लाख 70 हजार कार्यकर्ताओं ने गिरफ्तारी दी। पंजाब के लगभग 12000 गांवों में शायद ही कोई ऐसा होगा जहां से लोगों ने इस आंदोलन में भाग न लिया हो। अकालियों को अपने अनाड़ीपन में लगता था कि यदि वे जेलें भर देंगे तो केंद्र सरकार उनकी मांगें मानने को मजबूर हो जाएगी। लगभग दो साल चले इस आंदोलन में कोई 26 मौके ऐसे आए जब समझौते के प्रयास सिरे चढ़ते महसूस हुए, कुछ में प्रधानमंत्री और विपक्षी नेताओं ने भी भाग लिया। कम से कम दो अवसर ऐसे रहे जब सहमति पूरी तरह बन गई लेकिन केंद्र सरकार ऐन मौके पर पीछे हट गई। लगता है सरकार ने राजनीतिक हल न निकालने का मन बना लिया था और कैबिनेट की उप समिति ने मई 1984 में समस्या का सैन्य समाधान करना चुना। प्रणब मुखर्जी द्वारा पेश चेतावनी को किनारे करते हुए प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने कहा ऱ 'प्रणब, मुझे नतीजों के बारे में ज्ञान हैऱ यह निर्णय बदला नहीं जा सकता'। फिर 25 मई को सेना प्रमुख को सेना को अमृतसर पहुंचाने के आदेश दिए गए हालांकि दिखावे के तौर पर 29 मई को अकालियों के एक प्रतिनिधिमंडल से केंद्रीय मंत्रियों का समझौता वार्ता का क्रम जारी रहा। इसमें आम सहमति बन भी गई लेकिन बाद में केंद्रीय मंत्री अपनी बात से यह कहकर पीछे हट गए ऱ 'मैडम नहीं मान रहीं'। पंजाब के तत्कालीन राज्यपाल बीडी पांडे को सेना बुलाने के लिए अर्जी देने के कहा गया और इसके वास्ते औपचारिक आदेश पंजाब के गृह सचिव ने 2 जून को जारी किए। सेना ने स्वर्ण मंदिर और अन्य 42 गुरुद्वारों पर कार्रवाई की। राज्यपाल पांडे ने सैन्य अभियान न किए जाने की गुहार लगाई और बाद में पुष्टि की कि प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी राजनीतिक हल नहीं चाहती थीं। उधर जरनैल सिंह भिंडरावाले के साथ भी सरकार की प्रस्तावित वार्ताएं दो बार स्थगित हुई ङ्क जिसमें एक सीधी राजीव गांधी से होनी थीङ्क तब जरनैल सिंह भिंडरांवाले ने अपने समर्थकों से कहा ऱ 'वार्ता भले जारी रखो, लेकिन अपनी तैयारी भी पूरी रखो'। और यह तैयारी थी सशस्त्र आंदोलन की, जो अकाली दल के शांतिपूर्ण मोर्चे के समानांतर चली हुई थी।

विद्रोही इसे 'हकां दी लड़ाई' करार दे रहे थे। उनके लिए, हिंसा पुलिसिया जबर की प्रतिक्रिया थी और राजसत्ता से संवाद का एक अन्य ढंग भी, उनके अपने तरीके का। चूंकि विद्रोहियों को संवैधानिक रूप से वैधता प्राप्त नहीं होती इसलिए वे विद्वान मार्क जुएर्गेंस्मेयर के शब्दों में 'धर्म प्रदत अधि-नैतिकता' को अपनी स्वीकार्यता का आधार बताते हैं। तत्पश्चात हिंसा उतरोत्तर बढ़ती गई। पाकिस्तान ने विद्रोहियों को प्रशिक्षण और हथियार देकर अपना खेल शुरू कर दिया। राज्य व्यवस्था यद्यपि सुस्त न थी तो भी निष्प्रभावी लगने लगी। स्वर्ण मंदिर परिसर के अंदर मशीनगन सहित हथियारबंद किलेबंदी होने लगी। तत्कालीन पुलिस प्रमुख प्रीतम सिंह भिंडर की मानें तो अंदर पहुंचाए जाने वाले हथियारों की जब्ती इसलिए नहीं की गई क्योंकि जून से दो माह पहले तक ऐसा न करने का मौखिक आदेश 'ऊपर से' था, लिहाजा कार सेवा के ट्रकों की तलाशी नहीं ली जाती थी। सेना ने 3 जून की रात को स्वर्ण मंदिर परिसर को घेर लिया। सेना ने विद्रोहियों से समर्पण करवाने हेतु वार्ता का प्रयास नहीं किया। विद्रोहियों का नेतृत्व मेजर जनरल शबेग सिंह के हाथ में था जोकि भारतीय सैन्य अकादमी में उस वक्त प्रशिक्षक थे जब ऑपरेशन ब्लू स्टार में सैनिकों के कमांडर मेजर जनरल कुलदीप सिंह बरार वहां कैडेट थे। दोनों एक-दूसरे को भलीभांति जानते थे। यदि उनकी आपस में बातचीत होती तो शायद इस खूनी त्रासदी को टाला जा सकता था। लेकिन यह वह किंतु-परंतु हैं, जिनसे इतिहास रचा होता है। फिर, चरमपंथियों ने लड़ाई की, पश्चिमी सैन्य कमान के जीओसी रहे ले. जनरल वीके नायर के शब्दों में ऱ 'क्योंकि उनको और कोई विकल्प नहीं दिया गया'। 5 और 6 जून की मध्य रात्रि भयावह थी। अकाल तख्त, जोकि मुगल एवं अफगान आक्रांताओं के विरुद्ध सिख सार्वभौमिकता और संघर्ष का ऐतिहासिक प्रतीक रहा है, वह खंडहर में तब्दील हो गया। सैन्य कार्रवाई में लगभग 330 सुरक्षाकर्मी और 780 सिविलियन मारे गए, जिनमें वे श्रद्धालु भी शामिल थे जो स्वर्ण मंदिर के संस्थापक गुरु अर्जुन देव के शहीदी पर्व के अवसर पर इकट्ठा हुए थे। निशाने से चूके गोलों की वजह से परिसर के पश्चिमी सिरे से सटे निजी भवनों का बहुत नुकसान हुआ।

आज का इतिहास

- लुई पंचम डी लुए 979 में फ्रांस के सम्राट बने।
- इंग्लैंड ने 1557 में फ्रांस के खिलाफ युद्ध की घोषणा की।
- यहूदियों ने 1655 को रोम के खिलाफ बगावत की।
- औरंगज़ेब ने 1658 में आगरे के क़िले पर क़ब्ज़ा किया।
- बादशाह मुअज्जम (शाह आलम) ने 1707 में आगरा के समीप जजाउ क्षेत्र में उत्तराधिकार की लड़ाई में बादशाह आजम को हराया।
- आइसक्रीम के लिए व्यावसायिक तौर पर पहला विज्ञापन 1786 में बनाया गया।
- नोह कुशिंग ने 1824 में वाशिंग मशीन का पेंटेट कराया।
- जर्मनी के आविष्कारक कैम्बर्ज़ ने 1830 ईसवी को माचिस बनाई।
- पुर्तगाल की राजधानी लिसबन 1855 ईसवी को भीषण भूकम्प और उससे लगने वाली आग के कारण पूरी तरह तबाह हो गया।
- सन 1869 को शिकागो के आइविस डब्ल्यू मैकजैफी के पहले वैक्यूम क्लीनर का पेटेंट हुआ।
- भारत के सरकारी रेडियो नेटवर्क का 1936 में नाम बदलकर ऑल इंडिया रेडियो रखा गया।
- अमेरिका में न्यूयार्क शहर के एक बोटेनिकल गार्डन में 1937 को दुनिया का सबसे बड़ा फूल खिला।
- 93वें तत्व नेपच्युनियम की खोज की घोषणा 1940 में की गई।
- भारत की पहली विमान सेवा एयर इंडिया ने भारत और ब्रिटेन के बिच हवाई सेवा 1948 में शुरू की।
- स्याम का नाम 1949 में बदलकर थाईलैंड किया गया।
- अमेरिकी हृदय संघ एजेंसी ( ) सिगरेट के विरोध में 1963 में अभियान चलाने वाली पहली एजेंसी बनी।
- बरमुडा में 1968 को संविधान को अंगीकार किया गया।
- इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर टॉनी ग्रेग ने 1972 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट करियर का आगाज किया।
- जर्मनी के म्यूनिख में 1975 में हुए दो ट्रेनों की भिड़ंत में लगभग 35 लोगों की मौत हुई।
- ब्राजीली विमान फ्बी-727फ् 1982 में दुर्घटनाग्रस्त होने से तक़रीबन 130 लोगों की मौत हुई।
- इराकी जेट विमान ने 1986 में असादाबाद उपग्रह स्टेशन पर हमला किया।
- ईसवी को ज़ायोनी शासन की गुप्तचर संस्था मोसाद ने इस अवैध शासन को मज़बूत बनाने के लिए 1992 को विदेश में एक अन्य फिलिस्तीनी अधिकारी की हत्या कर
- दी!
- ब्राजील में 1992 को पहली बार वर्ल्ड ओशियन डे (ङ्खशह्म्द्यस्र ह्रष्द्गड्डठ्ठ ष्ठड्ड4) मनाया गया।
- पेरिस में फ्रेंच ओपन टेनिस प्रतियोगिता में भारत के महेश भूपति ने 1997 को मिश्रित युगल ख़िताब जीतकर इतिहास बनाया।
- 16 लाख कारों में प्रदूषणरहित उपकरण हटाने के बदले होंडा को 1998 में 17.1 लाख डॉलर चुकाने पड़े।
- फिलीपींस के राष्ट्रपति ने 2002 में आतंकवादी संगठन अबू सय्याफ़ के विरुद्ध अभियान शुरू करने का आदेश दिया।
- दक्षिणी सोमालिया में आतंकवादियों ने 2008 में ब्रिटिश ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन के एक स्थानीय पत्रकार की गोली मारकर हत्या कर दी।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

एक-चौथाई सदी की पारी के बाद जननायक की विदाई

नवीन पटनायक कुछ दिन और सत्ता में रह पाते तो उनका मुख्यमंत्री के रूप में कार्यकाल देश में सबसे ज्यादा होता। इसके बावजूद लगातार 24 साल तक उन्होंने एकछत्र राज किया। हालांकि, इस बार के लोकसभा चुनाव के साथ कराए गए ओडिशा विधानसभा चुनावों में उनकी पार्टी बीजू जनता दल को करारी हार का सामना करना पड़ा है। जिस पार्टी को नब्बे के दशक में राज्य की राजनीति में पैर रखने की जगह बीजद ने दी थी, उसी ने उन्हें सत्ता से बेदखल कर दिया। राज्य में अब भाजपा पहली बार सरकार बनाने जा रही है। उसे विधानसभा की 78 सीटें मिली हैं। वहीं आम चुनाव में लोकसभा की कुल इक्कीस सीटों में से बीस सीटें भाजपा को मिली हैं। वक्त का पहिया कुछ ऐसा घूमा है कि लगातार पांच बार विधानसभा चुनाव जीतने और चौबीस साल तक निष्कंटक राज करने वाले नवीन पटनायक अपने एक अन्य विधानसभा क्षेत्र से चुनाव हार गए। बीजद को 51 विधानसभा सीटों पर सफलता जरूर मिली मगर लोकसभा की एक भी सीट बीजद नहीं जीत सकी। पिछले लोकसभा चुनाव में बीजद ने 12 व भाजपा ने आठ सीटें जीती थी। हालांकि, राजनीति के पुराने खिलाड़ी नवीन पटनायक को इस बात का बखूबी अहसास था कि भाजपा उन्हें सत्ता से विस्थापित कर सकती है। फलतः उन्होंने अपने अंतिम कार्यकाल में भाजपा की काट के लिए सांस्कृतिक राजनीति का सहारा लेना शुरू कर दिया था। वे महसूस कर रहे थे कि ओडिशा के छोटे शहरों के युवाओं का रुझान भाजपा के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की तरफ बढ़ रहा है। अब तक लोक कल्याण योजनाओं को अपनी राजनीति की धार बनाने वाले नवीन पटनायक ने अयोध्या की रणनीति के मुकाबले में श्री जगन्नाथ मंदिर के आसपास में एक हेरिटेज कॉरिडोर को मूर्त रूप देने का प्रयास किया। राज्य के अनेक प्राचीन मंदिरों को जीर्णोद्धार के जरिये नये सिरे से निखारा गया। इसके अलावा हाल ही में पहले विश्व उड़िया भाषा सम्मेलन आयोजित करके साहित्य व संस्कृति कर्मियों को जोड़ने का प्रयास किया गया। दरअसल, राज्य में बदलती राजनीतिक बयार के मद्देनजर नवीन पटनायक ने युवाओं पर केंद्रित कार्यक्रमों को तरजीह दी। लोकप्रिय कल्याण कार्यक्रमों से इतर पटनायक ने बीजेपी की तरफ बढ़ रहे युवाओं को साथ जोड़ने के लिये ओडिशा को देश के खेलों की राजधानी बनाने का प्रयास किया। उन्होंने उन खेलों को तरजीह दी जो क्रिकेट की सुनामी में हाशिये पर जा रहे थे। पटनायक सरकार ने हॉकी की राष्ट्रीय पुरुष व महिला हॉकी टीम को प्रायोजित किया। इसके अलावा पर्याप्त खेल संरचना के विस्तार के साथ ही राज्य में दो विश्व हॉकी कप श्रृंखला आयोजित की गई। राज्य में शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं की असंतोषजनक स्थिति के मद्देनजर अस्पतालों का आधुनिकीकरण, स्कूलों की संरचना में बदलाव, बस सेवाओं में सुधार के प्रयास पिछले कुछ समय में किए गए।

किन नवनिर्वाचित सांसदों पर देश की रहेगी नजर

आर.के. सिन्हा

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं)

लोकसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद उनका गहन विश्लेषण भी हो रहा है, पर इस प्रक्रिया के दौरान उन तीन नतीजों पर भी देश को गंभीरतापूर्वक विचार करना होगा जहां से देश के खिलाफ आवाज बुलंद करने वाले तीन उम्मीदवार जीत गए हैं। पंजाब की खडूर साहिब और फरीदकोट लोकसभा सीटों के चुनाव परिणाम सिख राजनीतिक क्षेत्र में बड़े बदलाव और पंथिक राजनीति के पुनरुत्थान का संकेत देते हैं। कट्टरपंथी प्रचारक अमृतपाल सिंह ने खडूर साहिब से और इंदिरा गांधी के हत्यारे बेअंत सिंह के बेटे सरबजीत सिंह ने फरीदकोट से जीत हासिल की है, दोनों ही निर्दलीय प्रत्याशी थे। अमृतपाल सिंह खालिस्तान के पक्ष में बोलते रहे हैं। इसी तरह से जम्मू-कश्मीर की बारामूला सीट से इंजीनियर राशिद का राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री उमेर अब्दुल्ला को हराना अपने आप में सामान्य घटना नहीं हैं। राशिद पाकिस्तान परस्त रहे हैं और फिलहाल दिल्ली की तिहाड़ जेल में बंद हैं।

अमृतपाल सिंह ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस के कुलबीर सिंह जीरा को आसानी से मात दे दी। यह लोकसभा सीट पंजाब में भारत-पाकिस्तान की अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित है। उनकी गैरमौजूदगी में उनके माता-पिता उनके लिए प्रचार कर रहे थे।खडूर साहिब लोकसभा क्षेत्र में अमृतसर-तरन तारन-पट्टी के क्षेत्र शामिल हैं, जो जरनैल सिंह भिंडरावाले का प्रभाव वाला क्षेत्र रहा है। यह सीट सिखों का गढ़ मानी जानी जाती है। अमृतपाल सिंह के समर्थकों ने अपने कार्यालयों में भिंडरावाले के पोस्टर भी लगाए थे। उन्होंने भी ड्रग संस्कृति को समाप्त करने और बंदी सिखों को रिहा कराने का वादा किया।

पर पहले बात कर लें अमृतपाल सिंह की। उन्हें पिछले साल राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम के तहत गिरफ्तार कर असम के डिब्रूगढ़ में जेल में रखा गया था। सरबजीत सिंह की जीत ने भी साबित कर दिया है कि सिख अभी तक ऑपरेशन ब्लूस्टार और उन भयानक सिख विरोधी दंगों को भूले नहीं हैं। सच में फरीदकोट ने बड़ा आश्चर्यजनक नतीजा दिया जब सरबजीत सिंह ने हसौड़ लोकप्रिय अभिनेता करमजीत अनमोल को हरा दिया, जबकि उनका फरीदकोट में कोई बड़ा नेटवर्क नहीं था। जब इंदिरा गांधी की हत्या में शामिल के कारण सरबजीत सिंह के पिता को गिरफ्तार किया गया था, वे तब मात्र 6 साल के थे। उन्होंने बारहवीं कक्षा के बाद पढ़ाई छोड़ दी थी। वे पहले भी कई चुनावों में किस्मत आजमा चुके हैं। उन्होंने 2007 में बरनाला जिले के भदौर से पंजाब विधानसभा का चुनाव लड़ा और उन्हें केवल 15,702 वोट मिले। उन्होंने 2004 में बठिंडा लोकसभा सीट से लोकसभा चुनाव भी लड़ा और असफल रहे। उन्हें 1,13,490 वोट मिले। 2009 और 2014 में उन्होंने फिर से क्रमशः बठिंडा और फतेहगढ़ साहिब (आरक्षित) निर्वाचन क्षेत्रों से चुनाव लड़ा। सरबजीत सिंह की मां, बिमल कौर और उनके दादा, सुच्चा सिंह पूर्व में लोकसभा के लिए चुने गए थे। सरबजीत सिंह इस बार तो चुनाव लड़ने के मूड में नहीं थे। उनसे जब बहुत लोगों ने चुनाव लड़ने की गुजारिश की तो वे चुनाव लड़ने के लिए तैयार हुए। वे अपनी कैंपेन में सिखों के मसलों के अलावा फरीदकोट में नशे की बढ़ती समस्या से लड़ने का वादा कर भी रहे थे। फरीदकोट के लिए कहा जाता है कि यह जिला नशाखोरी की चपेट में पूरी तरह से आ चुका है।

अमृतपाल सिंह ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस के कुलबीर सिंह जीरा को आसानी से मात दे दी। यह लोकसभा सीट पंजाब में भारत-पाकिस्तान की अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित है। उनकी गैरमौजूदगी में उनके माता-पिता उनके लिए प्रचार कर रहे थे।खडूर साहिब लोकसभा क्षेत्र में अमृतसर-तरन तारन-पट्टी के क्षेत्र शामिल हैं, जो जरनैल सिंह भिंडरावाले का प्रभाव वाला क्षेत्र रहा है। यह सीट सिखों का गढ़ मानी जानी जाती है।

अमृतपाल सिंह के समर्थकों ने अपने कार्यालयों में भिंडरावाले के पोस्टर भी लगाए थे। उन्होंने भी ड्रग संस्कृति को समाप्त करने और बंदी सिखों को रिहा कराने का वादा किया।

दरअसल, लोकसभा चुनाव 2024 के रिजल्ट में कई उलटफेर देखने को मिले। ऐसी ही जम्मू कश्मीर की बारामूला सीट है। यहां राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला को जेल में बंद निर्दलीय कैंडिडेट इंजीनियर अब्दुल राशिद शेख से हार का सामना करना पड़ा। इंजीनियर अब्दुल राशिद शेख फिलहाल उसी तिहाड़ जेल में बंद हैं, जिसमें दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल बंद हैं। राशिद शेख को साल 2019 में एनआईए ने टेरर फंडिंग के केस में गिरफ्तार किया था। अमृतपाल की तरह से उन्होंने भी जेल में रहते हुए चुनाव लड़ा। अब सवाल यह है कि इन संदिग्ध छवि वाले उम्मीदवारों के लोकसभा में पहुंचने से क्या संदेश गया? पंजाब में आम आदमी पार्टी (आप) और कांग्रेस के कथित असर वाले पंजाब में अमृतपाल सिंह और सरबजीत सिंह की जीत से साफ है कि इनके नेताओं को यह जवाब तो देना ही होगा कि राज्य में देश विरोधी ताकते कैसे अपने पैर जमा रही हैं? पंजाब में आप की नीतियों को लेकर तो जनता में खासा गुस्सा दिखाई दिया। राज्य की जनता आप के नेता अरविंद केजरीवाल और राज्य के मुख्यमंत्री भगवंत मान से नाराज है। आप ने पंजाब में सभी सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे। उसे उम्मीद थी कि राज्य में उसकी सरकार है, ऐसे में वह कम से कम राज्य की 13 सीटों में से 10 पर तो जीत हासिल करेगी। हालांकि, उसे तीन सीटों से ही संतोष करना पड़ा। होशियारपुर, आनंदपुर साहिब और संगरूर को छोड़कर बाकी की सभी 10 सीटों पर आप को हार का सामना करना पड़ा।

आप को दिल्ली में भी मुंह की खानी पड़ी। आप ने कांग्रेस के साथ गठबंधन किया, इसके तहत दक्षिणी दिल्ली, पूर्वी दिल्ली, पश्चिमी दिल्ली और नई दिल्ली के तौर पर चार सीटें उसके खाते में आईं। यह सब सीटें आप हार गई। आप को 2014 और 2019 के लोकसभा चुनावों में में भी एक भी सीट पर जीत नहीं मिली थी। इसी प्रकार कांग्रेस भी अपनी तीनों सीटें हार गई। इसमें ह्वटुकड़े-टुकड़े गैंगह्व के कन्हैया कुमार की सीट थी। यह दिल्ली में केजरीवाल और कांग्रेस की अ-लोकप्रियता को दर्शार्ता है।

एक बार फिर इंजीनियर राशिद पर लौटते हैं। राशिद को वर्ष 2004 में श्रीनगर में आतंकवादियों का समर्थन करने के लिए गिरफ्तार किया गया था, जिसके बाद उसे तीन महीने और 17 दिनों के लिए जेल में रखा गया था। उस पर राष्ट्र विरोधी गतिविधियों का आरोप लगाया गया था। बाद में मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट श्रीनगर ने मानवीय आधार पर उनके खिलाफ सभी आरोप हटा दिए। उन्हें अगस्त 2019 में कश्मीर के सभी मुख्यधारा के राजनेताओं के साथ गिरफ्तार कर लिया गया था। तब अनुच्छेद 370 को निरस्त कर दिया गया था। राशिद लगातार देश और हिन्दू विरोधी हरकते कने से बाज नहीं आते। 8 अक्टूबर 2015 को इंजीनियर राशिद पर जम्मू-कश्मीर विधानसभा के अंदर भाजपा विधायकों द्वारा हमला किया गया था, क्योंकि उन्होंने सरकारी सर्किट हाउस के लॉन में गोमांस परोसने वाली एक पार्टी की मेजबानी की थी।

जाहिर है, उपर्युक्त तीनों नव निर्वाचित सांसदों की गतिविधियों पर देश को पैनी नजर रखनी होगी मेरी तो यही शुभकामना है कि ये देश की बदली परिस्थिति में अपना चाल-चरित्र और चेहरा बदलें वरना देश की राष्ट्रवादी सरकार की सख्त कार्रवाई को भुगतने को तैयार रहें।

एक त्रुटिपूर्ण रणनीति का बेढंगा निपटान

रमेश इन्दर सिंह

लेखक पंजाब के गृह सचिव रहे हैं

देश के लिए वर्ष 1984 एक विध्वंसक साल रहा। इसमें घटित बड़े प्रसंग गौरतलब हैंझ ऑपरेशन ब्लू स्टार, प्रधानमंत्री की हत्या और सिख विरोधी नरसंहारझ इस एक वर्ष ने राष्ट्र के आंतरिक विमर्श और इतिहास का जिस प्रकार निर्धारण किया उतना शायद आजादी के उपरांत किसी अन्य साल ने नहीं किया। 40 साल गुजरना भी इसके आघात की टीस नहीं भर पाया। प्रभावित हुए लोगों को न्याय न मिलने की धारणा और त्रासदी की चुभन अभी भी सालती है। तमाम संबंधित पक्षों झ राजनीतिक तत्व, सरकार के इशारे पर काम करने वाले, आतंकवादी और नरसंहार में लिप्त भीड़- की जवाबदेही तय करने के लिए यदि सत्य एवं सुलहकारी कोई आयोग बनाया गया होता तो शायद न्यायिक प्रक्रिया एवं मान-मनौव्वल से अंततः आहत भावनाओं के मामले का संतोषप्रद समाधान हो पाता।

क्या ऑपरेशन ब्लू स्टार करने से बचा जा सकता था? तत्कालीन केंद्रीय सरकार आतंकवाद को खत्म के वास्ते इस कार्रवाई को बतौर एक अवश्यंभावी उपाय पेश करती रही। उस वक्त हथियारबंद विद्रोहियों ने पूरे स्वर्ण मंदिर परिसर पर कब्जा कर रखा था और हथियारों से लैस चौकियां बना डाली और संवैधानिक रूप से स्थापित राष्ट्र-नीति की वैधता को चुनौती देने को उद्यत थे। आम दलील अक्सर यह आती है- यदि स्वर्ण मंदिर परिसर में सशस्त्र विद्रोही किलेबंदी न करते तब क्योंकर सेना लगाने की जरूरत पड़ती।

आस्थावानों की धारणा किंतु इससे विपरीत है। ऑपरेशन ब्लू स्टार को सिखों के सबसे पवित्रतम स्थल को अपमानित करने की एक पूर्व निर्धारित योजना के रूप में देखा जाता है, जिसके पीछे मकसद था ध्रुवीकरण पैदा करके कुछ महीने बाद होने वाले आम चुनाव में राजनीतिक लाभ उठाना। इसको समझने के लिए आठवीं लोकसभा के चुनाव प्रचार में जारी विज्ञापनों में ध्रुवीकरण करती इबारत बांचें तो झह्वक्या देश की सीमा अंततः आपकी दहलीज तक आ जाएगीह्व या सिख चालक वाली टैक्सी दिखाकर संलग्न किया सवाल : ह्वक्या आप इस टैक्सी में सुरक्षित महसूस करेंगेह्व।

विध्वंसक घटनाएं अक्सर उद्देश्य को ढांप देती है, विशेषकर आस्था के मामले में। ब्लू स्टार के मामले में अब कुछ तथ्य पूरी तरह स्थापित एवं किंतु-परंतु से इतर स्पष्ट हैं। संक्षेप में घटनाक्रम बताएं तो, अकाली दल ने 4 अगस्त, 1982 को अपनी दस मांगों को लेकर मोर्चा लगाने का ऐलान कियाझ इनमें धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक और अंतरराज्यीय विवाद संबंधी मुद्दे थे। इसके लिए प्रदर्शनकारी रोज शांतिपूर्ण ढंग से गिरफ्तारियां देते थे। जून 1984 तक, लगभग 1 लाख 70 हजार कार्यकताओं ने गिरफ्तारी दी। पंजाब के लगभग 12000 गांवों में शायद ही कोई ऐसा होगा जहां से लोगों ने इस आंदोलन में भाग न लिया हो। अकालियों को अपने अनाड़ीपन में लगता था कि यदि वे जेलें भर देंगे तो केंद्र सरकार उनकी मांगें मानने को मजबूर हो जाएगी। लगभग दो साल चले इस आंदोलन में कोई 26 मौके ऐसे आए जब समझौते के प्रयास सिरे चढ़ते महसूस हुए, कुछ में प्रधानमंत्री और विपक्षी नेताओं ने भी भाग लिया। कम से कम दो अवसर ऐसे रहे जब सहमति पूरी तरह बन गई लेकिन केंद्र सरकार ऐन मौके पर पीछे हट गई। लगता है सरकार ने राजनीतिक हल न निकालने का मन बना लिया था और कैबिनेट की उप समिति ने मई 1984 में समस्या का सैन्य समाधान करना चुना। प्रणब मुखर्जी द्वारा पेश चेतावनी को किनारे करते हुए प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने कहा : ह्वप्रणब, मुझे नतीजों के बारे में ज्ञान हैह्व यह निर्णय बदला नहीं जा सकताह्व। फिर 25 मई को सेना प्रमुख को सेना को अमृतसर पहुंचाने के आदेश दिए गए हालांकि दिखावे के तौर पर 29 मई को अकालियों के एक प्रतिनिधिमंडल से केंद्रीय मंत्रियों का समझौता वार्ता का क्रम जारी रहा। इसमें आम सहमति बन भी गई लेकिन बाद में केंद्रीय मंत्री अपनी बात से यह कहकर पीछे हट गए : ह्वमैडम नहीं मान रहींह्व।

पंजाब के तत्कालीन राज्यपाल बीडी पांडे को सेना बुलाने के लिए अर्जी देने के कहा गया और इसके वास्ते औपचारिक आदेश पंजाब के गृह सचिव ने 2 जून को जारी किए। सेना ने स्वर्ण मंदिर और अन्य 42 गुरुद्वारों पर कार्रवाई की। राज्यपाल पांडे ने सैन्य अभियान न किए जाने की गुहार लगाई और बाद में पुष्टि की कि प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी राजनीतिक हल नहीं चाहती थीं। उधर जरनैल सिंह भिंडरावाले के साथ भी सरकार की प्रस्तावित वाताएं दो बार स्थगित हुईं झ जिसमें एक सीधी राजीव गांधी से होनी थीझ तब जरनैल सिंह भिंडरांवाले ने अपने समर्थकों से कहा : ह्ववार्ता भले जारी रखो, लेकिन अपनी तैयारी भी पूरी रखोह्व। और यह तैयारी थी सशस्त्र आंदोलन की, जो अकाली दल के शांतिपूर्ण मोर्चे के समानांतर चली हुई थी।

विद्रोही इसे ह्वहकां दी लड़ाईह्व करार दे रहे थे। उनके लिए, हिंसा पुलिसिया जबर की प्रतिक्रिया थी और राजसत्ता से संवाद का एक अन्य ढंग भी, उनके अपने तरीके का। चूंकि विद्रोहियों को संवैधानिक रूप से वैधता प्राप्त नहीं होती इसलिए वे विद्वान मार्क जुर्गेन मेयर के शब्दों में ह्वधर्म प्रदत अधि-नैतिकताह्व को अपनी स्वीकार्यता का आधार बताते हैं। तत्पश्चात हिंसा उतरोत्तर बढ़ती गई। पाकिस्तान ने विद्रोहियों को प्रशिक्षण और हथियार देकर अपना खेल शुरू कर दिया। राज्य व्यवस्था यद्यपि सुस्त न थी तो भी निष्प्रभावी लगने लगी। स्वर्ण मंदिर परिसर के अंदर मशीनगन सहित हथियारबंद किलेबंदी होने लगी। तत्कालीन पुलिस प्रमुख प्रीतम सिंह भिंडर की मानें तो अंदर पहुंचाए जाने वाले हथियारों की जब्ती इसलिए नहीं की गई क्योंकि जून से दो माह पहले तक ऐसा न करने का मौखिक आदेश ह्वऊपर सेह्व था, लिहाजा कार सेवा के ट्रकों की तलाशी नहीं ली जाती थी। सेना ने 3 जून की रात को स्वर्ण मंदिर परिसर को घेर लिया। सेना ने विद्रोहियों से समर्पण करवाने हेतु वार्ता का प्रयास नहीं किया।

विद्रोहियों का नेतृत्व मेजर जनरल शबेग सिंह के हाथ में था जोकि भारतीय सैन्य अकादमी में उस वक्त प्रशिक्षक थे जब ऑपरेशन ब्लू स्टार में सैनिकों के कमांडर मेजर जनरल कुलदीप सिंह बरार वहां कैडेट थे। दोनों एक-दूसरे को भलीभांति जानते थे। यदि उनकी आपस में बातचीत होती तो शायद इस खूनी त्रासदी को टाला जा सकता थाझ लेकिन यह वह किंतु-परंतु हैं, जिनसे इतिहास रचा होता है। फिर, चरमपंथियों ने लड़ाई की, पश्चिमी सैन्य कमान के जीओसी रहे ले. जनरल वीके नायर के शब्दों में : ह्वक्योंकि उनको और कोई विकल्प नहीं दिया गयाह्व।

5 और 6 जून की मध्यरात्रि भयावह थी। अकाल तख्त, जो कि मुगल एवं अफगान आक्रांताओं के विरुद्ध सिख सार्वभौमिकता और संघर्ष का ऐतिहासिक प्रतीक रहा है, वह खंडहर में तब्दील हो गया। सैन्य कार्रवाई में लगभग 330 सुरक्षाकर्मी और 780 सिविलियन मारे गए, जिनमें वे श्रद्धालु भी शामिल थे जो स्वर्ण मंदिर के संस्थापक गुरु अर्जुन देव के शहीदी पर्व के अवसर पर इकट्ठा हुए थे। निशाने से चूके गोलों की वजह से परिसर के पश्चिमी सिरे से सटे निजी भवनों का बहुत नुकसान हुआ। लगभग 160 दुकानें और 15 घर तबाह हुए। लेकिन इस सबसे हासिल क्या हुआ? सेना ने कुछ सौ सशस्त्र लड़ाकों को मार गिराया, तथापि विजय विनाशकारी रही। ब्लू स्टार ने जातीय-राष्ट्रीय संघर्ष के बीज बो डाले, जिससे आगे और ज्यादा हिंसा जन्मी। देश अपने और अपनों के विरुद्ध लड़ने लगा, जिसमें कुछ सैनिकों ने हथियार सहित बैरकें छोड़कर विद्रोह कर दिया। विद्रोही तत्व जल्दी ही फिर से स्वर्ण मंदिर परिसर पर काबिज हो गए और अप्रैल 1986 को परिसर से खालिस्तान की घोषणा कर दी। तत्पश्चात ऑपरेशन ब्लैक थंडर 1 एवं 2 करने पड़े।

पंजाब की समस्याओं पर गौर करे तो बेढंगी रणनीति और बुरे तरीके से क्रियान्वयन वाला ऑपरेशन ब्लू स्टार एक भयंकर भूल साबित हुआ। राजीव-लोंगोवाल समझौता कुछ आगे की राह दिखा सकता था किंतु इस पर भी अमल नहीं हुआ। पंजाब का बहुत ज्यादा नुकसान हुआ। एक दशक तक चली हिंसा के दौरान लगभग 30000 लोग मारे गए। देशभर में पहले पायदान पर रहा यह सूबा अधिकांश सामाजिक-आर्थिक पैमानों पर फिसलकर 15वें स्थान पर जा गिरा। जातीय-राष्ट्रीय आंदोलन भले ही खत्म हो गया किंतु विदेशों में बैठे एक धड़े में अभी भी इसका स्पंदन जीवित है और यह भारत के लिए चिंताजनक है।

t.me/AllNewsPaperPaid

अयोध्या सीट

भाजपा पराजित

अयोध्या को शामिल करने वाली फैजाबाद संसदीय सीट पर भाजपा को पराजय का सामना करना पड़ा है। विपक्ष इसे भाजपा की बड़ी विफलता की तरह पेश कर रहा है। भाजपा जनता में व्याप्त यह विश्वास दुहराती रही है कि 'जो राम को लाए हैं, हम उनको लाएंगे।' लेकिन लगता है कि यह भावना सारी जनता तक पूरी भावनात्मकता से नहीं पहुंची थी। वैसे तो अयोध्या में भाजपा की पराजय के अनेक कारण हो सकते हैं, पर लगता है कि इस सीट पर जनता का बड़ा हिस्सा असाधारण विकास से स्वयं को मिलने वाले लाभों के बारे में आश्वस्त नहीं था। अयोध्या में भव्य राम मंदिर के निर्माण के साथ ही यहां असाधारण, अभूतपूर्व व अकल्पनीय विकास हुआ है। इस विकास में अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डा तथा अनेक पंचसितारा होटल शामिल हैं। अब रोज लाखों देशी-विदेशी तीर्थयात्री अयोध्या आ रहे हैं। इससे अयोध्या नगरी विश्व पर्यटन मानचित्र पर प्रमुखता से उभरी है। इसका लाभ अंतत: अयोध्यावासियों को भी मिलेगा। लेकिन संभवत: व्यापक विकास गतिविधियों के कारण पैदा अव्यवस्था तथा भारी संख्या में पर्यटकों के आने से पैदा थोड़ी मानसिक अशांति ने लोगों को व्यथित किया है। शायद भाजपा अपनी बात भी जनता तक ठीक से नहीं पहुंचा सकी। इसका नतीजा फैजाबाद से भाजपा सांसद लल्लू सिंह की सपा उम्मीदवार अवधेश प्रसाद से पराजय के रूप में सामने आया है। लल्लू सिंह भाजपा के दो बार सांसद रह चुके हैं और इस बार वे हैट्रिक लगाने की तैयारी में थे। इस तथ्य से भी इनकार नहीं किया जा सकता है कि 2017 में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में भाजपा सरकार बनने से पहले अयोध्या समेत फैजाबाद बहुत पिछड़ा क्षेत्र था। अयोध्या में

अक्सर अराजकता जैसी स्थिति रहती थी तथा खराब ढांचागत व्यवस्था के कारण यहां आने वाले श्रद्धालुओं को बहुत कष्ट होता था। अब ये सारी चीजें काफी सीमा तक बदल गई हैं, पर इसके साथ ही जनता की महत्वाकांक्षायें भी परवान चढ़ी हैं। इसी कारण शायद वह अपने सांसद से पूर्ण संतुष्ट नहीं थी।

जहां तक राम मंदिर से जुड़ी धार्मिक भावनाओं का मामला है, प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में बनी भाजपा सरकार शुरू से ही 'विरासत भी, विकास भी' के मार्ग पर चल रही है। इसके पहले की सरकारें 'छद्म पंथनिरपेक्षता' के नाम पर भगवान राम का अस्तित्व ही स्वीकार करने को तैयार नहीं थीं तथा उन्होंने अदालत में राम मंदिर पर फैसले को यथासंभव टालने और उलझाने का काम किया था। सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के बाद भी अयोध्या में मंदिर निर्माण के काम में बाधायें पैदा करने के प्रयास हुए। विपक्ष ने अयोध्या के विकास से प्रभावित लोगों को समुचित मुआवजा न मिलने का आरोप लगाया है, पर वह इसके एक भी प्रमाण नहीं दे सका है। अयोध्या की अधिकांश जनता भव्य राम मंदिर बनने के बाद अपने शहर के असाधारण विकास से अभिभूत है, लेकिन वह पूरे फैजाबाद संसदीय क्षेत्र का बहुत छोटा हिस्सा है। भाजपा को निश्चित रूप से अन्य क्षेत्रों के साथ फैजाबाद संसदीय सीट में पराजय पर आत्मावलोकन और विश्लेषण करना चाहिए। लेकिन अयोध्या में भाजपा उम्मीदवार की पराजय को भाजपा की सैद्धान्तिकी या विकास दृष्टिकोण में विकृति के रूप में पेश करना किसी प्रकार उचित नहीं है। इसे 'विकास बनाम आध्यात्मिकता' के रूप में भी पेश करना गलत होगा। भाजपा सरकार ने हमेशा विरासत संरक्षण के साथ आर्थिक विकास पर जोर दिया है। भव्य श्रीराम मंदिर बनने के बाद अयोध्या 'विश्व नगरी' बनने जा रही है जिसका लाभ सभी भारतवासियों के साथ अयोध्यावासियों को भी मिलेगा।

समाज कार्य का सांस्कृतिक पुनरुद्धार

आधुनिक व स्वदेशी विधियों को भारतीय समाज कार्य से जोड़ने पर उसे ज्यादा गहराई मिलती है और उसका प्रभाव बढ़ता है। हमें भारतीय समाज कार्य दिवस मनाना चाहिए।

विनीत प्रकाश
(लेखक, समाज कार्य क्षेत्र से संबद्ध हैं)

हर पेशा अपने आप में विशिष्ट है और उसका सामाजिक विकास तथा वृद्धि के लिए महत्व है। लेकिन समाज कार्य पर जिम्मेदारी बहुत अधिक है। उसे लोगों और समुदायों की सेवा करते हुए उनको ऊपर उठाने का प्रयास करना होता है। इसमें जनता व उसके परिवेश के साथ काम करते हुए एकसाथ बाहरी और आंतरिक आयामों पर ध्यान देना होता है। समाज कार्य का अर्थ केवल लोगों की परिस्थितियों के प्रति संवेदनशीलता न होकर उनकी समस्याओं के संभावित समाधान तथा विकल्प खोजना है। वर्तमान भारत में समाज कार्य एक पेशे के रूप में एक महत्वपूर्ण क्षेत्र की तरह विकसित हो रहा है। पिछले दशक में इस पेशे ने अपने दायरे का विस्तार किया है तथा पूरे देश में स्वयं को स्थापित किया है।

यह देख कर खुशी होती है कि बढ़ती संख्या में युवा पेशेवर इसे अपने कॅरियर का मार्ग बना रहे हैं। भारत को ऐसे युवा मस्तिष्कों तथा पेशेवरों की आवश्यकता है जो जमीनी स्तर पर काम करते हुए ऐसी नीतियां बना सकें जिनसे महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों को संबोधित किया जा सके। लेकिन यहां यह सवाल पूछना जरूरी है कि क्या हम सचमुच यह आवश्यकता पूरी कर रहे हैं। समाज कार्य ऐसा पेशा है जिसका वैश्विक स्तर पर समृद्ध इतिहास है।

इसकी शुरुआत बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में विश्वविद्यालयों में समाज कार्य शिक्षा कार्यक्रमों से हुई थी। अमेरिका और यूरोप ने समाज कार्य के विकास में केन्द्रीय भूमिका अदा की। उन्होंने सामाजिक मुद्दों को संबोधित करने के लिए विभिन्न वैज्ञानिक विधियों तथा व्यवस्थित दृष्टिकोण पर खासतौर से जोर दिया। भारत में समाज कार्य की गहरी जड़े हैं जो प्राचीन काल में 'सेवा' की अवधारणा से जुड़ी हैं। यह हमारे सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग रहा है। आधुनिक काल में इस पेशे की शुरुआत औपनिवेशिक काल में हुई जब अवस्थापना ने औपचारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए। 1936 में स्थापित टाटा इंस्टीट्यूट आफ सोशल साइंसेज़-टिस की स्थापना हुई जो भारत में पेशेवर समाज कार्य शिक्षण देने वाला पहला संस्थान था। इसके बाद से इस पेशे का काफी विकास हुआ और इसने देश की विशिष्ट सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक संदर्भों को अपने भीतर समाहित किया।

भारत की शक्ति उसकी विविधता में है जिसमें विभिन्न भाषायें, भोजन व्यवहार, संस्कृतियां एवं परिवेश शामिल हैं। हमारा देश अनेक धर्मों, जातियों और कबीलों का देश है जिनमें से प्रत्येक के अपने अलग विशिष्ट सामाजिक मुद्दे हैं। इन समस्याओं का समाधान सबके लिए एक जैसा नहीं हो सकता है और उनको विशिष्ट समुदायों तथा स्थितियों के अनुकूल बनाना होता है। भारत के स्वदेशी दृष्टिकोण को कठोर चुनौतियों से निपटने में सहायता मिली है। इसके साथ ही आधुनिक समाज कार्य व्यवहारों के समायोजन से इन मूल्यवान परंपराओं को संरक्षित व प्रोत्साहित किया जा सकता है। स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, बी.आर. अंबेडकर, सावित्री बाई फुले, सैय्यद अहमद खान, पंडिता रमाबाई, विनोबा भावे और अनेक अन्य समाज सुधारकों ने न केवल अपने समय की जटिल चुनौतियों को संबोधित किया, बल्कि उन सिद्धान्तों की नीव डाली जा आज भी हमें निर्देशित कर रहे हैं। लेकिन भारत में समाज कार्य का वर्तमान पाठ्यक्रम तथा शिक्षण विषयवस्तु में स्वदेशी दृष्टिकोण के बजाय औपनिवेशिक युग के प्रभाव अधिक हैं। समय आ गया है कि हम आवश्यक सुधारों के लिए आत्मावलोकन करें। स्वतंत्रता के 75 साल बाद आवश्यक है कि समाज कार्य शिक्षा तथा व्यवहार का भारतीयकरण किया जाए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वह भारतीय संदर्भों में प्रासांगिक हो। हालांकि, विचारों का आदान-प्रदान महत्वपूर्ण है, पर यह बहुआयामी होना चाहिए तथा इसमें भारत में समृद्ध समाज कार्य विरासत को समाहित किया जाए। ऐतिहासिक रूप से भारत में समाज कार्य की जड़ें सामुदायिक विकास, सार्वजनिक स्वास्थ्य, शिक्षा, आपदा प्रतिक्रिया एवं राहत तथा एडवोकेसी व मानवाधिकार व्यवहारों से जुड़ी हैं जिनमें स्वदेशी दृष्टिकोण दिखाई देता है।

स्वतंत्रता के पहले सामुदायिक विकास एक प्रभावशाली उपकरण के रूप में उभरा जिसका उद्देश्य ग्रामीण गरीबी को संबोधित करना, कृषि व्यवहारों को बढ़ावा देना, तथा विश्वसनीय व सामूहिक लेनदेन शक्ति बढ़ा कर किसानों का सशक्तीकरण था। स्वतंत्रता के बाद चिपको आंदोलन ने समुदाय संचालित पर्यावरण एक्टिविज्म का उदाहरण पेश किया जिसमें ग्रामीण व खासकर महिलाओं ने निर्वनीकरण रोकने के लिए पेड़ों को गले लगाया था। इससे टिकाऊ विकास में सामुदायिक सहभागिता का महत्व प्रकट होता है।

स्वतंत्रता के पहले परंपरागत स्वास्थ्यरक्षा व्यवहार, जैसे योग, आयुर्वेद व यूनानी ने आसान पहुंच वाली स्वास्थ्यरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में इनका व्यवहार करने वालों ने सामुदायिक स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण योगदान किया। स्वतंत्रता के पश्चात पल्स पोलियो प्रतिरक्षीकरण अभियान ने दिखाया कि प्रभावी सार्वजनिक स्वास्थ्य समाज कार्य के माध्यम से सरकारी एजेंसियों, एनजीओ तथा स्थानीय समुदायों के बीच महत्वपूर्ण संपर्क विकसित किए जा सकते हैं जिन्होंने पोलियो उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

शिक्षा के क्षेत्र में स्वतंत्रता के पहले परंपरागत गुरुकुल व्यवस्था ने समग्र व मूल्य-आधारित शिक्षा को प्रोत्साहित किया जिसमें भौतिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास को व्यक्तिगत शिक्षण के माध्यम से बढ़ावा दिया गया था। स्वतंत्रता के पश्चात भारत ने शिक्षा पहलों का प्रयोग किया जिनमें स्वदेशी समाज कार्य दृष्टिकोण शामिल थे। इनमें सर्वशिक्षा अभियान, मिडडे मील योजना तथ शिक्षा अधिकार कानून शामिल हैं।

इन सबमें समावेशन और सामुदायिक सहभागिता पर जोर दिया गया था। स्वतंत्रता के पहले राजा राममोहन राय तथा ईश्वर चंद्र विद्यासागर जैसे समाज सुधारकों ने सती और बाल विवाह जैसी सामजिक बुराइयों के उन्मूलन में योगदान किया। इससे सामाजिक मानकों तथा व्यवहारों में महत्वपूर्ण बदलाव आए। स्वतंत्रता के बाद सूचना अधिकार-आरटीआई आंदोलन ने नागरिकों का सशक्तीकरण कर उनको सरकार को जवाबदेह ठहराने, पारदर्शिता को बढ़ावा देने तथा सुशासन को प्रोत्साहित करने में योगदान किया। इन उदाहरणों से भारत में समाज कार्य का असली इतिहास सामने आता है जो गहराई से स्वदेशी व्यवहारों तथा मूल्यों से जुड़ा है। इसमें सामुदायिक सहभागिता, टिकाऊपन तथा सांस्कृतिक प्रासांगिकता पर जोर दिया गया था। इन स्वदेशी व्यवहारों को आधुनिक समाज कार्य व्यवहारों में जोड़ने से इन मूल्यों और परंपराओं को संरक्षण देने के साथ ही समकालीन सामाजिक चुनौतियों का सामना करने में सहायता मिलती है।

समाज कार्य में आधुनिक और परंपरागत दृष्टिकोणों के बीच संवाद समुदायों पर टिकाऊ प्रभाव के लिए जरूरी है। आधुनिक क्रियाविधियों में खोजी विचारों और तकनीकों पर जोर दिया गया है जिनमें प्रमाण-आधारित व्यवहार तथा डेटा-संचालित निर्णय प्रक्रियायें शामिल हैं ताकि इनके प्रभावों का मापन किया जा सके। दूसरी ओर स्वदेशी दृष्टिकोण स्थानीय संदर्भों की गहरी व मूल्यवान जानकारी देते हैं, सामुदायिक सहभागिता पर जोर देते हैं तथा दीर्घकालीन प्रभाव व टिकाऊपन के लिए सांस्कृतिक प्रासांगिकता को महत्व देता है। इन दृष्टिकोणों को समाहित कर सामाजिक कार्यकर्ता दोनों की शक्तियों का लाभ उठा सकते हैं, विश्वास बना सकते हैं, स्थानीय परंपराओं का सम्मान कर सकते हैं तथा समुदायों को ज्यादा टिकाऊ व प्रभावशाली हस्तक्षेपों से सशक्त बना सकते हैं। हर साल मार्च के तीसरे मंगलवार को विश्व सामाजिक कार्यदिवस मनाया जाता है। इस वर्ष इसे 19 मार्च, 2014 को मनाया गया। भारत के लंबे इतिहास तथा समाज कार्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रभाव को देखते हुए अब समय आ गया है कि हम एक दिन को 'भारतीय समाज कार्यदिवस' के रूप में मनाएं। इससे न केवल भारतीय समाज सुधारकों व सामाजिक कार्यकर्ताओं की विरासत का सम्मान होगा, बल्कि हम भारतीय जनता की बेहतर सेवा के लिए स्वदेशी व्यवहारों को प्रोत्साहित कर सकेंगे।

मोदी की तीसरी पारी में, उम्मीदें, चुनौतियां व अवसर

शशांक सौरव
(लेखक, लोक नीति विश्लेषक हैं)

पीएम मोदी के नेतृत्व में एनडीए ने आम चुनाव में मामूली जीत दर्ज की है और यह हमारे संसदीय लोकतंत्र में एक ऐतिहासिक क्षण है जब किसी नेता ने लगातार तीन बार जीत हासिल की है। रिकॉर्ड के लिए, पंडित जवाहरलाल नेहरू और श्रीमती इंदिरा गांधी ने भी तीन चुनाव जीते और सरकार बनाई, लेकिन इक्कीसवीं सदी के भारत में यह करिश्मा एक और महत्व रखता है क्योंकि अब हमारा लोकतंत्र अधिक परिपक्व है और जनता तक सूचना आसानी से पहुंच रही है। जबकि एनडीए सरकार द्वारा उठाए गए जन-हितैषी कदमों के बारे में पहले ही बहुत कुछ कहा जा चुका है, जिसके कारण यह जीत मिली है, अब समय आ गया है कि हम इस बात पर ध्यान दें कि हमें मोदी 3.0 से क्या उम्मीद करनी चाहिए, क्योंकि यह कार्यकाल पीएम मोदी की विरासत को परिभाषित करने वाला है। कांग्रेस के नेतृत्व वाले गठबंधन की चुनावी वापसी को प्रधानमंत्री की व्यक्तिगत छवि में गिरावट के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए। हम ऐसे युग में रह रहे हैं जब ब्रांड मोदी पहले से कहीं अधिक लोकप्रिय है और लोग पीएम के समर्थन से जनप्रतिनिधि बन रहे हैं, तो उन्हें अपनी आभा और ताकत का इस्तेमाल स्वच्छ राजनीति को बढ़ावा देने के लिए करना चाहिए। ऐसी आशंका है कि धीरे-धीरे हमारा लोकतंत्र अभिजात वर्ग बन जाएगा, जहां साधारण पृष्ठभूमि से आए लोगों को खड़े होने की जगह नहीं मिलेगी।

यह एक ऐसी घटना है जिसे हम दक्षिण एशिया में देख रहे हैं, जहां राजनीतिक प्रतिनिधित्व एक वंशानुगत वंश की तरह होता जा रहा है। मेरा यह मतलब नहीं है कि साधारण पृष्ठभूमि से आए लोगों के लिए इस व्यवस्था में कोई जगह नहीं है, लेकिन एक आम आदमी के लिए स्थापित राजनीतिक खिलाड़ियों के पैसे और ताकत का सामना करना मुश्किल होता जा रहा है। राहुल गांधी के विचार इस देश के लिए खतरा हैं और यह देश के लिए अच्छा है कि इंडी गठबंधन का विभाजनकारी एजेंडा खुलकर सामने आ गया। हालांकि, इस देश को पीएम मोदी से बहुत उम्मीदें

हैं। यह एक खुला रहस्य था कि यह लड़ाई मोदी के नाम पर लड़ी गई थी और वह अभियान का चेहरा थे, चाहे उनकी पार्टी का कोई भी उम्मीदवार हो। यह बहुत अच्छा होता अगर पीएम मोदी इस अवसर का उपयोग हमारे राजनीतिक ढांचे को वंशवाद और दलबदलुओं के चंगुल से मुक्त करने के लिए करते। क्षेत्रीय दल बहुत पहले ही परिवार के स्वामित्व वाली निजी लिमिटेड कंपनियां बन चुके हैं, लेकिन विचारधारा और सिद्धांतों की राजनीति की बात करें तो भाजपा हमेशा दूसरों से अलग रही है। इसका संबंध भाजपा पर संघ के वैचारिक प्रभाव से अधिक है, जो भाजपा के लिए अन्य राजनीतिक दलों की तुलना में नैतिक मानदंड को ऊंचा करता है। यह चुनाव कई क्षेत्रीय दलों के लिए वाटरलू साबित हुआ और कुछ ने अच्छा प्रदर्शन किया जबकि अन्य खत्म हो गए। संख्या के खेल ने मोदी और उनकी टीम को ऐसी स्थिति में ला खड़ा किया है, जहां उन्हें अपने सहयोगियों के साथ बातचीत करनी होगी और यह सौदा कठिन होने वाला है। अगली सरकार भी पीएम मोदी की क्षमता का परीक्षण करेगी, क्योंकि वह अपने राजनीतिक जीवन में पहली बार गठबंधन सरकार का नेतृत्व करेंगे। मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली यूपीए 2 के दौरान भ्रष्टाचार के पीछे गठबंधन राजनीति की मजबूरियां प्रमुख कारणों में से एक थीं। अब भाजपा की दक्षिणी भारत में मजबूत उपस्थिति है और बहुत जल्द यह वहां भी एक प्रमुख खिलाड़ी बन सकती है। हालांकि भाजपा ने कर्नाटक में अपने दम पर सरकार बनाई थी, लेकिन मोदी को इसे अखिल भारतीय पार्टी में बदलने का श्रेय दिया जाना चाहिए। हालांकि, इस चुनाव ने क्षेत्रीय दलों के पुनरुत्थान पर भी मजबूत संकेत दिए हैं। उदाहरण के लिए, बिहार ने यह संदेश दिया है कि हालांकि मतदाता पीएम मोदी पर भरोसा करते हैं, लेकिन भाजपा को एक मजबूत स्थानीय चेहरे की जरूरत है।

स्थानीय स्तर पर मजबूत नेतृत्व तैयार करने से अन्य राज्यों में लाभ मिला है और बिहार जैसे राज्यों में भी इसे दोहराने का समय आ गया है। भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व को ऐसे युवाओं को आगे लाना चाहिए जो विचारधारा से जुड़े हों और जिनमें योग्यता हो। बहुत से लोग सक्षम हैं और राजनीति में प्रवेश करना चाहते हैं, लेकिन वे असमर्थ हैं क्योंकि उनके पास आवश्यक साधन और संपर्क नहीं हैं।

यह देखते हुए कि मोदी को पूरी छूट नहीं मिल सकती है, एक और बिंदु जिस पर मोदी 3.0 में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी, वह है उन मुद्दों से निपटना जो मूल विचारधारा और सांस्कृतिक कायाकल्प से संबंधित हैं। हमने पिछले 10 वर्षों में देखा है कि हमारी जड़ों को पोषित करना और विकास एक साथ हो सकता है। विकास एक सतत प्रक्रिया है, लेकिन सभ्यतागत क्षति अपरिवर्तनीय है और हमने अपने इतिहास में इसका गवाह बनना पड़ा है। कई मुद्दे कानून के दायरे में हैं और भाजपा अक्सर कांग्रेस पर इन गलतियों का आरोप लगाती है।

अगर एनडीए सरकार 2029 तक बनी रहती है तो भाजपा आजादी के बाद से सत्ता में दो दशक से अधिक समय पूरा कर लेगी और मोदी जवाहरलाल नेहरू के बाद सबसे लंबे समय तक सेवा करने वाले प्रधानमंत्री बन जाएंगे। ऐसी कई बड़ी भूलें और ऐतिहासिक अन्याय हैं जिन्हें संसद के अधिनियम द्वारा निरस्त किया जा सकता है, इसलिए यह देखना दिलचस्प होगा कि मोदी 3.0 इन्हें किस प्रकार प्राथमिकता देता है।

आप की बात

एकजुट एनडीए

एनडीए के दलों ने एकजुट होकर नरेंद्र मोदी को एक बार फिर प्रधानमंत्री पद के लिए समर्थन दिया है। इससे स्पष्ट है कि एनडीए पहले की तरह मजबूत है। तेलुगू देशम, जनता दल यूनाइटेड व अन्य सहयोगियों के शामिल होने से एनडीए का कुनबा आज और बढ़कर 300 पार चला गया है। वैसे तो कांग्रेस और इंडिया के नेताओं ने एनडीए में शामिल चंद्रबाबू नायडू व नीतीश कुमार को अपने साथ लाने के सारे प्रयास किए, लेकिन ये प्रयास विफल हो जाने पर उनको कहना पड़ा कि वे भविष्य में उचित समय की प्रतीक्षा करेंगे। यह उसी लोमड़ी की तरह है जो तमाम प्रयासों के बावजूद अंगूर न मिलने पर अंगूर खट्टे हैं, कह कर भाग गई थी। भाजपा ने आंध्र प्रदेश में काफी सोच-विचार के बाद चंद्रबाबू नायडू की पार्टी से गठबंधन किया था और अब नायडू अपने राज्य में मुख्यमंत्री बनने जा रहे हैं। विधानसभा में भाजपा-तेदेपा गठबंधन ने वाईएसआर कांग्रेस को सत्ता से हटाने में सफलता पाई है। ऐसे में स्वाभाविक रूप से नायडू केन्द्र के सहयोग से अपने प्रदेश के विकास पर पूरा ध्यान देंगे। नीतीश कुमार अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव में एनडीए का मुख्यमंत्री चेहरा हैं। ऐसे में एनडीए की एकजुटता पर संदेश विपक्ष का मुंगेरी लाल के हसीन सपने जैसा सपना ही लगता है।

– **मनमोहन राजावत,** शाजापुर

राहुल की लफ्फाजी

चुनाव नतीजों के बाद राहुल गांधी ने कहा कि शेयर बाजार में स्कैम हुआ है जिससे निवेशकों को 30 लाख करोड़ का नुकसान हो गया। राहुल गांधी की इस लफ्फाजी का कोई अर्थ नहीं है। हालांकि, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह ने चुनाव पूर्व कहा था कि केंद्र में स्थायी सरकार और शेयर बाजार में तेजी आएगी। ये एक सामान्य सी बात है कि शेयर बाजार बहुत ही संवेदनशील होता है। केंद्र में सत्ता परिवर्तन से मार्केट प्रभावित होता है। लेकिन इसे घोटाला कहना राहुल गांधी की अति-सक्रियता तथा मोदी को येन-केन-प्रकारेण घेरने की इच्छा का ही प्रतीक है। नतीजों के पूरे होते ही सकारात्मक स्थिति बनते देख बाजार में फिर रौनक लौटने लगी है। मोदी सरकार पर गठबंधन सहयोगियों के संभावित दबाव के बावजूद उन पर बाजार का विश्वास बना हुआ है। इसमें राजनीति करने तथा जांच के लिए जेपीसी गठित करने की मांग केवल बयानबाजी के सिवा और कुछ नहीं है। ऐसे में पीयूष गोयल का यह कहना ईक है कि भले ही राहुल गांधी सत्ता तक न पहुंच पाए हों, पर वे अंध मोदी-विरोध में देश की अर्थव्यवस्था को परोक्ष रूप से नुकसान पहुंचाने का प्रयास जरूर कर रहे हैं।

– **शकुंतला महेश नेनावा,** इंदौर

पर्यावरण की चिन्ता

अंतराष्ट्रीय पर्यावरण दिवस की औपचारिकता देश दुनिया में पूरी की गयी। राष्ट्रसंघ महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने न्यूयॉर्क में अमेरिकी प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय से जलवायु कार्रवाई पर अपना विशेष संबोधन दिया। उन्होंने भावुक अपील करते हुए कहा कि हम सत्य के क्षण पर खड़े हैं। जलवायु के मामले में हम डायनासोर नहीं हैं, हम उल्का हैं। हम न केवल खतरे में हैं, बल्कि हम स्वयं खतरा हैं। लेकिन हम समाधान भी हैं। यूरोपीय आयोग की जलवायु परिवर्तन सेवा की नवीनतम रिपोर्ट में कहा गया है कि पिछली मई इतिहास में सबसे गर्म महीना था। गुटेरेस ने कहा कि 1.5 डिग्री सेल्सियस तापमान वृद्धि सीमा को पूर्व-औद्योगिक स्तरों से ऊपर बनाए रखने के लिए वैश्विक उत्सर्जन में हर साल नौ प्रतिशत कमी जरूरी है। गुटेरेस ने मांग की है कि तेल, गैस और कोयले के विज्ञापन पर प्रतिबंध लगाया जाए क्योंकि ये ग्लोबल वार्मिंग के मुख्य कारक हैं। पर्यावरण संकट का खतरा हमारे और आपके दरवाजे पर दस्तक देना प्रारंभ कर चूका है। लू लगने के कारण इस साल सबसे ज्यादा मौतें भारत में हुई है। पर्यावरण के प्रति गंभीरता जरूरी है क्योंकि केवल औपचरिकता कर हम भावी पीढ़ी को प्रकृति के प्रकोप से बचा नहीं पाएंगे।

– **जंग बहादुर सिंह,** जमशेदपुर

कंगना रनौत पर हमला

चंडीगढ़ हवाई अड्डे पर नव-निर्वाचित सांसद कंगना रनौत पर एक महिला सीआईएसएफ कांस्टेबल द्वारा गाली गलौज कर थप्पड़ मारने जैसी शर्मनाक हरकत नितान्त निन्दनीय है। यदि कंगना रनौत ने किसान आंदोलन के दौरान किसी को न पसंद आने वाला कोई बयान दिया भी हो तो उसे उनके खिलाफ हिंसा का कारण बनाना उचित नहीं है। सुरक्षा बल में तैनात महिला द्वारा किसी आम आदमी व खासकर सांसद के खिलाफ हिंसा को उचित नहीं ठहराया जा सकता है। इसकी जितनी भी भर्त्सना की जाए कम है। अब कंगना रनौत अभिनेत्री ही नहीं बल्कि एक जिम्मेदार सांसद भी बन गई है जिसपर उसकी लोकसभा क्षेत्र के विकास की जिम्मेदारी है। देश और खासकर पंजाब में हिंसा की बढ़ती घटनाओं पर रोक लगाना इसलिए भी जरूरी है कि एक इस्लामी अतिवादी और एक सिख अतिवादी जेल में बंद होने के बावजूद संसद सदस्य बनने में सफल हुए हैं। पिछली संसद में कुछ अराजक तत्वों द्वारा की गई घटना से सबक लेकर सांसदों की सुरक्षा व्यवस्था संसद के बाहर भी और मजबूत की जानी चाहिए।

– **भगवानदास छारिया,** इंदौर

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

epaper.dailypioneer.com

संपादकीय

बसपा के भविष्य पर प्रश्न चिन्ह

इस लोकसभा चुनाव में बीजेपी के बाद सबसे तगड़ा झटका मायावती की पार्टी बहुजन समाज पार्टी को लगा है। बीएसपी को चुनाव में एक भी सीट नहीं मिली। यहां तक कि उसका वोट शेयर भी घटकर 2 फीसदी रह गया। इन नतीजों से भड़कीं मायावती ने कहा कि आइंदा वो मुसलमानों को सोच समझकर ही टिकट देंगी। एक बयान में मायावती ने कहा कि लोकसभा चुनाव में उचित प्रतिनिधित्व देने के बावजूद मुस्लिम समाज ने हमारा साथ नहीं दिया। चुनाव में हुए नुकसान का हम गहन विश्लेषण करेंगे और देश के करोड़ों, गरीबों, दलितों, शोषितों, आदिवासियों, पिछड़ों और धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए काम करते रहेंगे। गौरतलब है कि इस बार लोकसभा चुनाव में बसपा ने अकेले ही चुनाव लड़ने का फैसला किया था। हालांकि 2014 के लोकसभा चुनाव में भी बसपा को कोई सीट नहीं मिली थी, लेकिन 2019 में मायावती ने सपा व रालोद के साथ गठबंधन किया और उसे लोस चुनाव में 10 सीटों पर जीत मिली थी। इस दफा उसे एक भी सीट नहीं मिली, लेकिन राज्य में उभर रहे युवा दलित नेता चंद्रशेखर आजाद रावण को नगीना सीट से जीत मिली है। यह मायावती के लिए चिंता का बड़ा कारण है। दूसरा बड़ा कारण यह है कि इस दफा दलित वोटों का बड़ा हिस्सा समाजवादी पार्टी की तरफ खिसक गया। इसका कारण यह अफवाह थी कि अगर भाजपा 400 सीटें जीती तो वह संविधान बदल देगी और आरक्षण खत्म कर देगी। दरअसल बसपा की इस हालत के पीछे कारण भी खुद मायावती ही हैं। मायावती के भाजपा के साथ नरम रिश्तों को लेकर मुसलमान तो पहले ही शंकित थे। बाद में दलित भी बिफर गए। यह माना जा रहा था कि मायावती पर दायर भ्रष्टाचार के मामलों के चलते बहनजी भाजपा की परोक्ष रूप से मदद कर रही हैं। इसीलिए उन्होंने अकेले चुनाव लड़ने का फैसला लिया है। लिहाजा मुसलमानों ने बसपा से पल्ला झाड़ लिया। इसी तरह बीच चुनाव में उन्होंने अपने घोषित उत्तराधिकारी आकाश आनंद को भी पद से हटाकर चुनाव प्रचार से भी रोक दिया। हालांकि खुद मायावती ने यूपी के 26 जिलों में प्रचार किया, लेकिन उसका कुछ खास असर दिखाई नहीं दिया। चुनाव में पूरे देश में उसे महज 2.06 फीसद वोट ही मिले हैं। ऐसे में उसकी राष्ट्रीय पार्टी की मान्यता भी खतरे में पड़ सकती है। मायावती ने कुछ जगह भाजपा प्रत्याशियों को भी नुकसान पहुंचाया। प्रदेश की हमीरपुर लोकसभा सीट पर समाजवादी पार्टी के राजेंद्र सिंह ने 2629 वोटों से बीजेपी के कुंवर पुष्पेंद्र सिंह को हराया। इस सीट पर बीएसपी के निर्दोष कुमार दीक्षित 94696 वोटों के साथ तीसरे स्थान पर रहे। कुल मिलाकर इन चुनाव नतीजों ने बसपा के राजनीतिक भविष्य पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। क्योंकि मायावती मनमर्जी से पार्टी चलाती हैं। वहां पर 1 से 10 तक सिर्फ मायावती ही हैं। नेताओं और कार्यकर्ताओं की हैसियत सेवकों जैसी है। वो किसको कब क्या बना दें, किसको हटा दें, कहा नहीं जा सकता। उनका कोई उत्तराधिकारी भी नहीं है। अभी तक जाटव जाति मायावती के प्रति निष्ठावान रही है। लेकिन इस समुदाय की निष्ठा भी डोलने लगी है। मायावती की बसपा को नया खतरा युवा दलित नेता चंद्रशेखर आजाद की आजाद समाज पार्टी से है। चंद्रशेखर नगीना सीट से सांसद चुने गए हैं। उन्हें आक्रामक नेता माना जाता है, जिसकी वजह से युवा दलित तेजी से आजाद समाज पार्टी की ओर आकर्षित हो रहे हैं। आने वाले समय में मायावती को बसपा का वजूद बचाने के लिए भाजपा की शरण में जाना पड़ सकता है। मुमकिन है कि यूपी में अगले विस चुनाव में दोनों के बीच गठबंधन हो जाए।

उद्धव और पवार की असली पार्टी पर मुहर लगाई

चुनाव नतीजे के बाद असली एनसीपी के नेता शरद पवार ने राज्य की जनता और कार्यकर्ताओं का आभार मानते हुए कहा कि राज्य की जनता ने बीजेपी की तोड़फोड़ की राजनीति को करारा जवाब दिया है। उधर, मोदी पर तंज कसते हुए असली शिवसेना यानी उद्धव गुट के नेता संजय राऊत ने कहा कि नकली भगवान (मोदी) हार गए, नकली संतान (उद्धव) ने आपको हराया है। ध्यान रहे कि मोदी ने उद्धव को बाल ठाकरे का नकली संतान कहा था।

नवीन कुमार

महाराष्ट्र में जनता की अदालत ने उद्धव ठाकरे की शिवसेना और शरद पवार की एनसीपी पर असली पार्टी की मुहर लगा दी। शिवसेना और एनसीपी में विभाजन के बाद उद्धव और शरद को जब मुख्य चुनाव आयोग और अदालत से न्याय नहीं मिला, तो उन्होंने जनता की अदालत में ही जाने का फैसला किया। इस बार के लोकसभा चुनाव में जनता ने अपना फैसला दे दिया। उद्धव की शिवसेना ने एकनाथ शिंदे की शिवसेना से ज्यादा सीटें हासिल की है तो शरद की एनसीपी ने भी अजित पवार की एनसीपी को बुरी तरह से परास्त कर दिया है। अजित की एनसीपी को एक ही सीट मिली है। शिंदे तो राज्य के मुख्यमंत्री भी हैं और उनके नेतृत्व में चुनाव भी लड़ा गया। लेकिन जनता ने असली पार्टी के पक्ष में अपना मत जाहिर किया है। इस चुनाव में उद्धव एक बेहतरीन राजनीतिक खिलाड़ी के रूप में उभरकर सामने आए हैं जिन्होंने न सिर्फ शिवसैनिकों का मनोबल बढ़ाया बल्कि महाविकास आघाड़ी के घटक दलों कांग्रेस और एनसीपी को भी फायदा दिलाया। नरम हिंदुत्व के बल पर अल्पसंख्यकों का भी विश्वास जीता है।

बीजेपी ने पहले उद्धव की शिवसेना में विभाजन कराया और उद्धव के नेतृत्व वाली महा विकास आघाड़ी सरकार को गिरा दिया। इसके बाद बीजेपी ने शिवसेना के विभाजित गुट के नेता शिंदे के नेतृत्व में राज्य में सरकार बनाई। विपक्ष को और कमजोर करने के लिए बीजेपी ने शरद की एनसीपी में भी विभाजन करा दिया। विभाजन के बाद बीजेपी ने अजित गुट को भी शिंदे सरकार में शामिल करा दिया। बीजेपी पर आरोप है कि उसने शरद की पार्टी में ही विभाजन नहीं कराया बल्कि राजनीति के चक्र में फंसाकर अजित के माध्यम से पवार परिवार में भी विभाजन की रेखा खींच दी गई। यह राज्य के राजनीतिक इतिहास में अनोखा था जिसकी खूब आलोचना भी हुई। इस आलोचना के अलावा राज्य की जनता ने भी इसे अपनी तरह से देखा और परखा। उद्धव और शरद को भरोसा था कि राज्य की जनता अपने फैसले से गंदी राजनीति करने वालों को जवाब देगी और इस चुनाव में जवाब देखने को मिला।

उद्धव और शरद की पार्टी में विभाजन की राजनीति विपक्ष को कमजोर वाली थी। लेकिन, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जब उनकी पार्टी को नकली कहना शुरू किया तो राज्य की जनता इसे अलग तरह से देखने लगी। इसी बीच मोदी ने उद्धव को बाल ठाकरे का नकली पुत्र भी कहा तो इसे न सिर्फ शिवसैनिकों बल्कि राज्य की जनता ने इसे अपमानित करने वाली बात मान ली। जनता खामोश रही। जनता ने मोदी का शिंदे की शिवसेना और अजित की एनसीपी को असली पार्टी कहना भी चुपचाप सुन लिया। अब लोकसभा चुनाव के जो नतीजे आए हैं उसमें स्पष्ट है कि जनता को शिवसेना और एनसीपी में विभाजन के साथ मोदी की बात नागवार गुजरी थी और जनता ने जो अपना फैसला दिया उसमें मोदी और बीजेपी महागठबंधन महायुति को जोर का झटका दिख रहा है। उद्धव की शिवसेना और शरद की एनसीपी में विभाजन के बाद बीजेपी खुद को राज्य की सबसे ताकतवर पार्टी मानने लगी थी। उसके अंदर इतना तो अहंकार आ ही गया था कि इस बार लोकसभा चुनाव में उद्धव और शरद का नामोनिशान खत्म कर दिया जाएगा। लेकिन, यह सच है कि महाराष्ट्र में बाल ठाकरे और उनकी पार्टी शिवसेना को मिटाना आसान नहीं है। उद्धव ने भी कहा था कि राज्य की राजनीति ठाकरे ब्रांड से चलती है। बीजेपी ने पहले विभाजन कराकर शिवसेना और उसके निशान को चुराया और उसके बाद बाल ठाकरे के भतीजे और मनसे अध्यक्ष राज ठाकरे से हाथ मिलाकर ठाकरे ब्रांड को भी चुराने की कोशिश की गई। लेकिन, बाल ठाकरे के शिवसैनिकों को पता है कि असली शिवसेना कौन है। उधर 83 साल के शरद अपने भतीजे अजित को परास्त करने के लिए मैदान में उतर गए और उन्होंने जता दिया कि उनकी चाणक्य नीति कैसे भारी पड़ती है। उद्धव और शरद के साथ सहानुभूति की लहर चली और राज्य में बीजेपी की चुनावी रणनीति को ध्वस्त कर दिया।

महाराष्ट्र ऐसा राज्य है जिसके सहारे बीजेपी 400 पार का सपना साकार करना चाहती थी। इसलिए मोदी ने राज्य में लगभग 18 रैलियां की। लेकिन, उद्धव और शरद मोदी के आगे चुनौती के रूप में खड़े हो गए और उनके साथ बीजेपी पर लगातार हमला करते रहे। मोदी ने जब शरद को भटकती आत्मा कहा तो शरद उससे विचलित नहीं हुए। बल्कि, जवाब में कहा कि हां, मैं किसानों की समस्या सुलझाने के लिए भटकता रहता हूं। शरद की इस भावना का किसानों पर सकारात्मक असर पड़ा। उधर, उद्धव ने भी एक नारा बुलंद किया कि अब की बार बीजेपी तड़ीपार। इसका भी मतदान पर असर पड़ा। अब देखिए, महाराष्ट्र की राजनीति में सबसे ताकतवर पार्टी वही है जिसका मुंबई पर कब्जा रहता है। राज्य में महायुति (बीजेपी, शिंदे गुट शिवसेना, अजित गुट एनसीपी) और महा विकास आघाड़ी (कांग्रेस, उद्धव गुट शिवसेना, शरद गुट एनसीपी) में सीधा मुकाबला रहा है। आघाड़ी के घटक दलों ने एकता कायम रखी। मुंबई पर राज करने के लिए मोदी ने रोड शो किया और राज ठाकरे के साथ ऐतिहासिक शिवाजी पार्क में सभा की ताकि उद्धव के मराठी वोटों को खींचा जा सके। मुंबई में लोकसभा की छह सीटें हैं। अब नतीजा भी देख लीजिए। एक तरह से उद्धव ने मुंबई से बीजेपी और शिंदे की शिवसेना को तड़ीपार करा दिया है। बीजेपी और शिंदे गुट को मुंबई में दो-दो सीटों पर हार मिली और मोदी ने मुंबई उत्तर-पूर्व लोकसभा सीट पर अपने जिस गुजराती उम्मीदवार मिहिर कोटेचा के लिए रोड शो किया था उसे भी हार मिली है। मोदी का 400 पार का सपना चूर हुआ और मोदी को राज्य की जनता ने नकार दिया। बीजेपी मुंबई में सिर्फ पियुष गोयल और शिंदे रवींद्र वायकर वाली सीट बचाने में कामयाब हो पाई। शिदे ने कांग्रेसी नेता मिलिंद देवरा को अपनी पार्टी में शामिल कर उन्हें राज्यसभा में भी भेजा। लेकिन, शिंदे के लिए मिलिंद दक्षिण मुंबई में मददगार साबित नहीं हो पाए। शिंदे के सभी उम्मीदवार वैसे थे जो ईडी से जान बचाने के लिए उद्धव का साथ छोड़ गए थे। शिंदे इस बात से खुश हैं कि उन्होंने अपने ठाणे गढ़ को बचा लिया है। इस गढ़ में ठाणे के अलावा कल्याण सीट से वह अपने बेटे डॉ श्रीकांत शिंदे को जिताने में कामयाब हुए हैं। अब बीजेपी की हालत तो यह हो गई कि खुद तो डूबेंगे सनम तुझे भी ले डूबेंगे। राज्य में 48 लोकसभा की सीटें हैं। पिछले चुनाव में बीजेपी 22 सीटों पर जीत हासिल करके राज्य की बड़ी पार्टी बनी थी। इस बार चुनाव में वह आधी से भी कम यानी 9 हो गई है जबकि उसने 28 सीटों पर चुनाव लड़ा था। फिसड्डी रहने वाली कांग्रेस को नया जीवन मिल गया है और उसने 17 सीटों पर चुनाव लड़कर 13 सीटें जीती और राज्य की बड़ी पार्टी हो गई है। जबकि पिछले चुनाव में उसने एक ही सीट पर जीत हासिल की थी। बीजेपी ने नांदेड़ से कांग्रेस के ताकतवर नेता अशोक चव्हाण से बगावत कराई और उन्हें राज्यसभा में भी भेजा। लेकिन नांदेड़ में कांग्रेस ने अपनी सीट बरकरार रखी है।

अमरावती में नवनीत राणा का हारना बीजेपी के लिए सदमे से कम नहीं है। नवनीत ने ही उद्धव के खिलाफ हनुमान चालीसा का पाठ करके सुर्खियां बटोरी थी। लेकिन उन्हें कांग्रेस के उम्मीदवार से हार मिली है। उद्धव ने 21 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे थे जिसमें से 13 सीटों पर शिंदे गुट के उम्मीदवारों से मुकाबला था। उद्धव गुट ने शिंदे गुट को परास्त करने के साथ 9 सीटों पर जीत दर्ज कर ली। इससे जाहिर है कि शिवसैनिक उद्धव के साथ हैं। 15 सीटों पर चुनाव लड़ने वाले शिंदे गुट को 7 सीटों पर ही जीत मिली है। इधर 10 सीटों पर चुनाव लड़ने वाले शरद ने 8 सीटों पर जीत हासिल की और अपनी बारामती की सीट भी बचा ली। बारामती को जीतने के लिए शरद के भतीजे अजित ने अपनी पत्नी सुनेत्रा पवार को सुप्रिया सुले के सामने खड़ा किया था। लेकिन अजित अपनी पत्नी को जीत नहीं दिला पाए। इससे पहले पिछले चुनाव में उन्होंने अपने बेटे पार्थ पवार को भी मैदान में उतारा था। लेकिन वह बेटे पार्थ को जिताने में सफल नहीं हुए थे। इस चुनावी नतीजे पर शरद ने कहा है कि यह परिवर्तन की दिशा है। इस परिवर्तन की दिशा का इशारा पांच महीने के अंदर होने वाले राज्य विधानसभा के चुनाव की तरफ भी है।

अध्यात्म

बुरी स्मृतियाँ भुला ही देनी चाहिए

दो भाई थे। परस्पर बड़े ही स्नेह तथा सद्भावपूर्वक रहते थे। बड़े भाई कोई वस्तु लाते तो भाई तथा उसके परिवार के लिए भी अवश्य ही लाते, छोटा भाई भी सदा उनको आदर तथा सम्मान की दृष्टि से देखता। पर एक दिन किसी बात पर दोनों में कहा सुनी हो गई। बात बढ़ गई और छोटे भाई ने बड़े भाई के प्रति अपशब्द कह दिए। बस फिर क्या था ? दोनों के बीच दरार पड़ ही तो गई। उस दिन से ही दोनों अलग-अलग रहने लगे और कोई किसी से नहीं बोला। कई वर्ष बीत गये। मार्ग में आमने सामने भी पड़ जाते तो कतराकर दृष्टि बचा जाते, छोटे भाई की कन्या का विवाह आया। उसने सोचा बड़े अंत में बड़े ही हैं, जाकर मना लाना चाहिए। वह बड़े भाई के पास गया और पैरों में पड़कर पिछली बातों के लिए क्षमा माँगने लगा। बोला अब चलिए और विवाह कार्य संभालिए। पर बड़ा भाई न पसीजा, चलने से साफ मना कर दिया। छोटे भाई को दु:ख हुआ। अब वह इसी चिंता में रहने लगा कि कैसे भाई को मनाकर लगा जाए इधर विवाह के भी बहित ही थोडे दिन रह गये थे। संबंधी आने लगे थे। किसी ने कहा-उसका बडा भाई एक संत के पास नित्य जाता है और उनका कहना भी मानता है। छोटा भाई उन संत के पास पहुँचा और पिछली सारी बात बताते हुए अपनी त्रुटि के लिए क्षमा याचना की तथा गहरा पश्चात्ताप व्यक्त किया और प्रार्थना की कि आप किसी भी प्रकार मेरे भाई को मेरे यही आने के लिए तैयार कर दे। दूसरे दिन जब बड़ा भाई सत्संग में गया तो संत ने पूछा क्यों तुम्हारे छोटे भाई के यहाँ कन्या का विवाह है ? तुम क्या-क्या काम संभाल रहे हो ? बड़ा भाई बोला: मैं विवाह में सम्मिलित नहीं हो रहा। कुछ वर्ष पूर्व मेरे छोटे भाई ने मुझे ऐसे कड़वे वचन कहे थे, जो आज भी मेरे हृदय में काँटे की तरह खटक रहे हैं। संत जी ने कहा: जब सत्संग समाप्त हो जाए तो जरा मुझसे मिलते जाना। सत्संग समाप्त होने पर वह संत के पास पहुँचा, उन्होंने पूछा: मैंने गत रविवार को जो प्रवचन दिया था उसमें क्या बतलाया था? बडा भाई मौन? कहा कुछ याद नहीं पडता कौन सा विषय था? संत ने कहा: अच्छी तरह याद करके बताओ। पर प्रयत्न करने पर उसे वह विषय याद न आया। संत बोले: देखो! मेरी बताई हुई अच्छी बात तो तुम्हें आठ दिन भी याद न रहीं और छोटे भाई के कडवे बोल जो एक वर्ष पहले कहे गये थे, वे तुम्हें अभी तक हृदय में चुभ रहे है। जब तुम अच्छी बातों को याद ही नहीं रख सकते, तब उन्हें जीवन में कैसे उतारोगे और जब जीवन नहीं सुधारा तब सत्सग में आने का लाभ ही क्या रहा? अत: कल से यहाँ मत आया करो।

अब बड़े भाई की आँखें खुली। अब उसने आत्म-चिंतन किया और देखा कि मैं वास्तव में ही गलत मार्ग पर हूँ। छोटों की बुराई भूल ही जाना चाहिए। इसी में बडप्पन है। उसने संत के चरणों में सिर नवाते हुए कहा मैं समझ गया गुरुदेव! अभी छोटे भाई के पास जाता हूँ, आज मैंने अपना गंतव्य पा लिया।

उत्तर में किन प्रश्नों का मिला उत्तर?

पंजाब के दक्षिण पूर्वी सीमा से सटे हरियाणा में भाजपा ने 2019 की तुलना में 5 सीटें खोयी हैं और कांग्रेस ने 5 अर्जित की हैं। राज्य सरकार को लेकर भाजपा ने यहां जिस तरह की राजनीति की, जिस तरह ऐन वक्त पर मुख्यमंत्री बदल दिया गया, मुख्यमंत्री पर जिस तरह सवाल उठे, गठबंधन की नीयत को लेकर भाजपा के रवैये पर जो आलोचनाएं हुईं, उन तमाम प्रश्नों के जवाब में जनता ने भाजपा के लिए अपना विश्वास आधा कर दिया। हरियाणा के पड़ोसी राज्य उत्तराखंड में पिछली बार की ही तरह पांचों सीटें भाजपा के खाते में आयीं। यहां राज्य सरकारों के संदर्भ में प्रचलित धारणा रही कि जनता बारी-बारी से कांग्रेस व भाजपा को मौक़ा देती रही, लेकिन पिछले विधानसभा चुनाव में यह मिथक भाजपा ने तोड़ दिया था। आम चुनाव में भी भाजपा की सियासी ज़मीन यहां मज़बूत होती दिखी है।

भवेश दिलशाद

जनता ने इस बार विपक्ष को मज़बूत किया, सरकार को कमज़ोर। यह पूरे देश को समझ आ चुका है। अब आंकड़ों और चुनाव परिणामों के विश्लेषण से समझना ज़रूरी है कि मूल प्रश्न क्या थे और उनका क्या हुआ या होगा। उत्तर भारत के सात राज्यों में कुल 38 संसदीय क्षेत्रों में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी को सिर्फ़ 14 ही इस बार हाथ लगे। 2019 की तुलना में कुल 10 सीटों का सीधा नुक़सान है। ये वही राज्य हैं, जहां भाजपा ने संविधान संशोधन करते हुए 2019 में नये राज्यों का गठन किया, नये ढंग से सीमाएं तय कीं। ये वो राज्य भी हैं जहां भाजपा की निर्वाचित सरकार पर संकट रहा, सवाल उठे और वह राज्य भी है, जिसने ऐसा आंदोलन छेड़ा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को घुटने टेकने पड़े।

चुनाव से पहले ही भारत के कुछ हिस्सों में विशेष रूप से भाजपा की प्रतिष्ठा और नैतिकता दांव पर लगी थी। केंद्र सरकार के निवर्तमान कार्यकाल में विशेषकर पंजाब के किसानों ने दो बार लंबी लड़ाई लड़ी। सीधे केंद्र सरकार से टकराये किसानों ने पहले क़रीब 11 महीने के हल्ला बोल के दौरान दिल्ली से भिड़ंत की तो भाजपा की आईटी सेल ने किसानों के खिलाफ़ ख़ालिस्तानी और पाकिस्तानी होने तक का नैरैटिव चला दिया लेकिन अंततः प्रधानमंत्री मोदी को उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव से ऐन पहले तीनों कृषि क़ानून वापस लेने पड़े थे। पंजाब के लोकसभा नतीजे बता रहे हैं यहां भाजपा का सूपड़ा साफ़ हुआ। पिछली बार जो दो सीटें मिली थीं, वह भी जाती रहीं। पंजाब में प्रधानमंत्री मोदी ने रैलियां कीं। कांग्रेस के जिन नेताओं को तोड़ा, वो भी भाजपा के लिए सीट न जीत सके। प्रश्न था भाजपा यहां ख़ुद को कैसे किसान हितैषी व साफ़नीयत साबित करेगी! स्पष्ट है भाजपा की नीतियों और फ़ैसलों को पंजाब ने सिरे से ख़ारिज कर दिया।

पंजाब के दक्षिण पूर्वी सीमा से सटे हरियाणा में भाजपा ने 2019 की तुलना में 5 सीटें खोयी हैं और कांग्रेस ने 5 अर्जित की हैं। राज्य सरकार को लेकर भाजपा ने यहां जिस तरह की राजनीति की, जिस तरह ऐन वक्त पर मुख्यमंत्री बदल दिया गया, मुख्यमंत्री पर जिस तरह सवाल उठे, गठबंधन की नीयत को लेकर भाजपा के रवैये पर जो आलोचनाएं हुईं, उन तमाम प्रश्नों के जवाब में जनता ने भाजपा के लिए अपना विश्वास आधा कर दिया। हरियाणा के पड़ोसी राज्य उत्तराखंड में पिछली बार की ही तरह पांचों सीटें भाजपा के खाते में आयीं। यहां राज्य सरकारों के संदर्भ में प्रचलित धारणा रही कि जनता बारी-बारी से कांग्रेस व भाजपा को मौक़ा देती रही, लेकिन पिछले विधानसभा चुनाव में यह मिथक भाजपा ने तोड़ दिया था। आम चुनाव में भी भाजपा की सियासी ज़मीन यहां मज़बूत होती दिखी है। आम चुनाव में, हिमाचल में भी 2019 की ही तरह भाजपा ने चारों सीटें जीती हैं, लेकिन यहां विधानसभा उपचुनाव महत्वपूर्ण विषय है।

हिमाचल में 1 जून को उन छह विधानसभा सीटों के लिए भी वोटिंग हुई, जो कांग्रेस के विधायकों की बर्खास्तगी की वजह से खाली हुई थीं। कांग्रेस का आरोप था कि उसके इन विधायकों ने राज्यसभा के लिए भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में वोटिंग इसलिए की क्योंकि भाजपा ने यहां 'ऑपरेशन लोटस' चलाकर सरकार गिराने तक की साज़िश रची थी। अब छह में से 4 सीटें जीतकर कांग्रेस की सुक्खू सरकार फ़िलहाल बच गयी है। हालांकि यहां सरकार उखाड़ने-पछाड़ने की कोशिशों के अंदेशे अब भी रह सकते हैं।

अब बात भारत के शीर्ष की, जो 2019 में दो-फाड़ कर दिया गया। अनुच्छेद 370 को ख़त्म कर भाजपा सरकार ने यहां जम्मू-कश्मीर को एक अलग राज्य और लद्दाख को केंद्रशासित प्रदेश बनाकर नये ढंग से सीमांकन किया। संसदीय क्षेत्रों का परिसीमन भी किया गया और हिंदू-मुस्लिम वोटों का ध्रुवीकरण भी। इस पूरी कवायद के बावजूद आम चुनाव से ऐन पहले भाजपा ने जम्मू की हिंदू बहुल दो सीटों पर तो चुनाव लड़ा लेकिन कश्मीर की 3 सीटों पर मैदान छोड़ दिया। यहां 2 सीटें नेशनल कॉन्फ्रेंस ने जीतीं तो एक निर्दलीय ने। ध्यान देने योग्य है कि बारामूला सीट पर उमर अब्दुल्ला को हराने वाले प्रत्याशी शेख अब्दुल रशीद ने तिहाड़ जेल में बंद होते हुए यहां चुनाव लड़ा है। रशीद को आतंकी फंडिंग के आरोप में 2019 में यूएपीए क़ानून के तहत जेल में डाल दिया गया था। उनके बेटों अबरार और असरार ने उनका चुनाव अभियान चलाया और पहले भी कश्मीर में दो बार विधायक रह चुके रशीद ने निर्दलीय लड़ते हुए उमर को शिकस्त दी।

लद्दाख की एक सीट की बात भी बेहद ज़रूरी है। इस सीट पर 2014 और 2019 में भाजपा ने चुनाव जीता था लेकिन इस बार भाजपा यहां तीसरे नंबर पर रही है। यहां मोहम्मद हनीफ़ा ने जीत दर्ज की, जो पहले नेशनल कॉन्फ्रेंस से जुड़े रहे। दूसरे नंबर पर कांग्रेस रही। जम्मू, कश्मीर और लद्दाख की कुल 6 सीटों में से 3 पर भाजपा रणछोड़ रही। जिन तीन पर लड़ी उनमें से भी एक गंवा बैठी। प्रश्न यह कि अनुच्छेद 370 हटाने के फ़ैसले पर क्या इसे जनता का उत्तर माना जाये?

महाराष्ट्र में जिस तरह झटका लगा, भाजपा को आम चुनाव न सही पर हिमाचल उपचुनाव में उसी तरह का झटका लगना क्या साबित करता है? भाजपा की वैचारिकता से क्या जनता ने असहमति नहीं जतायी? आंदोलनकारियों के ख़िलाफ़ एक दमनकारी नज़रिया अपनाना क्या भाजपा को पंजाब में महंगा पड़ा? भ्रष्टाचार और कुर्सी के प्रश्न अन्य कई राज्यों में भाजपा के सामने रहे। प्रतिष्ठा और नैतिकता के प्रश्न पर भाजपा उत्तरी राज्यों में कितनी निरुत्तर दिखी? इससे भी बड़ा प्रश्न यह है कि क्या अब भाजपा के दृष्टिकोण और नैतिकता में कोई परिवर्तन आएगा।

आज का कार्टून

राशिफल

मेष
धन को लेकर आप काफी परेशान हो सकते हैं। ऋण लेने के कारण आपको परेशानी महसूस होगी। वैवाहिक जीवन में तनाव होने की आशंका है।

वृषभ
परिस्थितियों को लेकर आप काफी प्रसन्न रहेंगे। लोग आपसे काफी आकर्षित हो सकते हैं। परिवार का माहौल बहुत अच्छा रहेगा।

मिथुन
प्रबन्धन से जुड़े कार्यों में उत्तम सफलता मिलेगी। परिजन आपसे किसी गम्भीर मामले पर चर्चा कर सकते हैं। समाज में आपका वर्चस्व बढ़ेगा।

कर्क
पैतृक सम्पत्ति से जुड़े मामलों में सफलता मिलेगी। प्राचीन विद्याओं को सीखने की रुचि मन में हो सकती है। घर के बुजुर्ग आपसे काफी खुश रहेंगे।

सिंह
अपनी क्षमता से ज्यादा काम न करें। इससे एक तो आपके काम रुकेंगे दूसरा आपकी विश्वसनीयता में भारी कमी आ सकती है।

कन्या
आज आपसे लोग काफी प्रसन्न रहेंगे। आपको प्रबुद्ध लोगों का मार्गदर्शन प्राप्त होगा। धार्मिक क्रियाकलापों में आपकी सक्रियता बढ़ेगी।

तुला
मन में अज्ञात भय रहेगा। स्थान परिवर्तन को लेकर परिवार में चर्चा करेंगे। अपने विरोधियों की गतिविधियों पर ध्यान रखना आवश्यक है।

वृश्चिक
आज आप थोड़े उदास हो सकते हैं। व्यवसाय में आपको काफी सुधार करने की आवश्यकता है। व्यापारी अपने ग्राहकों को लेकर थोड़े कठोर हो सकते हैं।

धनु
विरोधी आपका नुकसान करने की योजना बना सकते हैं। इसके लिये आज आपको चौकन्ना और धैर्यवान रहना होगा। व्यक्तिगत कार्यों के लिये आप दूसरों पर ज्यादा निर्भर न रहें।

मकर
आज का दिन आपके लिये शुभ रहेगा। अधीनस्थ कर्मचारियों के ऊपर आपका प्रभाव मजबूत होगा। यदि आप अपने प्रेमी को विवाह के लिये प्रपोज करना चाह रहे हैं, तो दिन बेहद शुभ है।

कुंभ
किसी परेशानी को लेकर सोच-विचार में रहेंगे। आप कुछ महत्वपूर्ण लोगों से सम्पर्क करना चाहेंगे, किन्तु ध्यान रखें गुप्त बातों को शेयर न करें।

मीन
आज आपका मन काफी प्रसन्न रहेगा। कुछ अच्छी सूचनायें मिलने से आपकी चिन्ता दूर होगी। अधिकारी वर्ग के लोगों के साथ तनाव दूर होगा।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

खाने में मिलाएं बस एक चुटकी Hing, मिलेंगे ये 8 हैरान करने वाले फायदे

हींग एक ऐसा मसाला है जो हर रसोई में बड़ी ही आसानी से मिल जाता है। खाने में इसे बस एक चुटकी डालने भर से भी खाने का स्वाद ऐसा निखरकर आता है कि सभी उंगलियां चाटते रह जाते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि यह खाने की खुशबू और स्वाद के साथ-साथ सेहत के लिए भी काफी फायदेमंद होता है। आइए जानते हैं Hing Benefits के बारे में।

Hing खाने का स्वाद बढ़ाने के साथ-साथ सेहत के लिए भी फायदेमंद माना जाता है। इसका उपयोग पाचन को सुधारने, गैस और एसिडिटी को कम करने और पेट दर्द जैसी अन्य समस्याओं से राहत दिलाने में भी मदद करता है। इतना ही नहीं, यह खांसी और सर्दी में भी लाभकारी होता है।**Hing** असल में फेरूलाङ्कफोइटिडा नामक एक पौधे का रस होता है, जिसे सुखाकर हींग (Asafoetida) बनाई जाती है। इसकी उपज विशेष रूप से अफगानिस्तान, पाकिस्तान, इरान, बलूचिस्तान और काबुल के पहाड़ी क्षेत्रों में होती है। वहां से इसे भारत में पंजाब और मुंबई में लाया जाता है, क्योंकि भारत में इसकी खेती बहुत ही कम होती है।

औषधीय गुणों से भरपूर हींग को नियमित रूप से खाने में शामिल करने से आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है और आपको स्वस्थ रहने में मदद मिलती है। ऐसे ही और भी कई लाभ एक चुटकी हींग आपको दे सकती है और यही कारण है कि सदियों से इसका इस्तेमाल खाने में होता आ रहा है। आइए जानते हैं हींग के सेवन से हमें क्या-क्या फायदे (Hing Benefits) मिल सकते हैं।

हींग से होने वाले फायदे

हींग में एंटीइंफ्लेमेटरी गुण होते हैं, जो शरीर में सूजन कम करने में मदद करता है। इससे जोड़ों के दर्द से राहत मिलती है और सेहत से जुड़ी अन्य समस्याओं से भी बचाव होता है।

इसमें एंटीबैक्टीरियल और एंटीफंगल गुण होते हैं, जिसके कारण स्किन की जैसे कि एक्ने आदि को कम करने में मदद मिलती है।

हींग में विभिन्न प्रकार के रोगाणुओं के खिलाफ लड़ने में मदद करती है।

इसमें एनाल्जेसिक और एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं, जो पीरियड्स के दौरान होने वाले दर्द और ब्लोटिंग को कम करने में मदद करते हैं।

हींग में पाए जाने वाले तत्व रक्तचाप को नियंत्रित करने में मदद करते हैं, जिससे हृदय संबंधी समस्याओं को कम किया जा सकता है। इसके अलावा, यह रक्त को पतला करने में मदद करता है, जिससे रक्त प्रवाह समान रहता है और ब्लड प्रेशर नॉर्मल रहता है।

हींग खाने को अच्छे से पचाने में मदद करता है, जिससे पेट की समस्याओं को कम किया जा सकता है।

यह गैस और एसिडिटी को नियंत्रित करने में मदद करता है।

हींग खांसी और सर्दी के लिए भी लाभकारी होता है, जिससे यह हमारे स्वास्थ्य के लिए लाभदायक सिद्ध होता है।

हींग श्वासनली को स्वस्थ रखने में मदद करता है, इसलिए यह रेस्पिरेटरी इन्फेक्शन से बचाने में मदद करता है।

इस चुनाव के दो खलनायक : गोदी मीडिया और चुनाव आयोग

चार जून को देखा जाएगा। विपक्ष ने यह चुनाव बहुत अच्छा लड़ा है। जनता के मुद्दे उठाए। जनता को भरोसा दिया कि आने के बाद वह उनकी सुनेगा। अपने मन की बात नहीं करेगा। जनता ने भी इस बार विपक्ष को खूब सुना। माहौल वह बिल्कुल नहीं है जो एक्जिट पोल बता रहा है। सारी जिम्मेदारी चुनाव आयोग पर जिलों के चुनाव अधिकारियों पर है कि वह पूरी ईमानदारी, निष्पक्षता और बिना किसी डर के काम करें। जनता से पंगा अच्छी बात नहीं है!चार जून को देखा जाएगा। विपक्ष ने यह चुनाव बहुत अच्छा लड़ा है। जनता के मुद्दे उठाए। जनता को भरोसा दिया कि आने के बाद वह उनकी सुनेगा। अपने मन की बात नहीं करेगा। जनता ने भी इस बार विपक्ष को खूब सुना। माहौल वह बिल्कुल नहीं है जो एक्जिट पोल बता रहा है। सारी जिम्मेदारी चुनाव आयोग पर जिलों के चुनाव अधिकारियों पर है कि वह पूरी ईमानदारी, निष्पक्षता और बिना किसी डर के काम करें। जनता से पंगा अच्छी बात नहीं है!या गोदी मीडिया के एक्जिट पोल सही साबित होंगे? हो सकते हैं, अगर चुनाव मशीनरी उससे मिली हुई हो! ज़मीन पर तो कहीं मोदी के जीतने के संकेत नहीं थे। हर जगह बेरोजगारी, महंगाई, अग्निवीर में युवाओं की जवानी बर्बाद होने की चिंता और संविधान बचाने की बातें थीं।जो हिन्दू=मुसलमान मोदी ने किया, मंदिर-मस्जिद लाए, मंगलसूत्र और भैंस तक छीनने की बात ले आए उसका तो जमीन पर कहीं असर दिखा नहीं। अपने काम की बात उन्होंने की नहीं। कांग्रेस ने यह किया कांग्रेस ने यह नहीं किया ही बोलते रहे। दस साल में आपने क्या किया इसके बारे में एक भी शब्द नहीं। बेरोजगारी, महंगाई शब्द ही एक बार भी मुंह से नहीं निकला। फिर ये 350 से 400 तक के आंकड़े कैसे? कोई एक आदमी ऐसा मिलता नहीं जो बताता हो कि एक्जिट पोल वाले उसके पास आए थे। फिर ये पोल किसका?रविवार सुबह के अखबार देखे। कुछ संयमित लगे। लिखा अनुमान हैं ये। पहले की तरह दावा नहीं लिखा। जाहिर है अखबारों के पास भी माहौल समझने का कुछ विवेक है। उसके संवाददाता भी जगह-जगह घूमे हैं। जिला स्तर पर और ब्लाक तक अभी भी अखबारों के संपर्क हैं। उनके संवाददाता हैं। यह अलग बात है कि उनकी खबरें पूरी तरह अब नहीं छपतीं। मगर संपादक और दूसरे वरिष्ठ पत्रकारों के आंखों के सामने से गुजरती हैं।

एक उदाहरण देते हैं। ग्वालियर में एक अख़बार हुआ करता था- स्वदेश। अभी भी है। 45 साल पहले वह ग्वालियर शहर और पूरे संभाग का प्रमुख अख़बार हुआ करता था। संघ का अख़बार था। स्टाफ भी सारा संघ का ही होता था। जिला और तहसील तक सारे संवाददाता भी प्रचारक या संघ के आदमी होते थे। लेकिन जब भी चुनाव आते थे। खबरें विश्लेषण तो वह भाजपा, जनसंघ के हिसाब से करता था। मगर मालूम उसे सब होता था। बड़ा अखबार होने की वजह से हर वर्ग के लोगों के संपर्क में रहता था। तो करना कुछ भी पड़ता हो मगर जानता सब था कि चल क्या रहा है। जनता क्या सोच रही है। चुनावों के बारे में जो दूसरे अख़बार समझते थे उनकी सूचनाएं होती थीं वही उसकी होती थी। संवाददाता संघ का होता था खबर उसके एंगल से लिखता था। मगर संपादक को बता देता था कि क्षेत्र की सही तस्वीर क्या है।ऐसा आज भी है। अखबारों को मालूम है कि जमीन पर क्या हुआ। इसलिए उन्होंने उछल कर नहीं दबा कर एक्जिट पोल पर लिखा। और अख़बार क्या खुद एक्जिट पोल करने वाले टीवी भी पहले की तरह नहीं फुदक रहे थे। उनके मुख्य एंकर अपने जोश पर बार-बार ब्रेक लगाते थे। और संवाददाताओं की आवाज में तो कहीं उत्साह था नहीं। पहले तो वे इस तरह खबर बताते थे जैसे मोदी जी का दिग्विजय अभियान पूरा होने वाला हो। तो मतलब कहानी इतनी आसान नहीं है।जनता ने क्या फैसला दिया है। यह उसकी बातों उसकी समस्याओं से मालूम पड़ता है। घर-घर में बेरोजगारी वाली जनता घर-घर मोदी वाला नारा सुनने को तैयार नहीं थी। महंगाई से पीड़ित जनता कांग्रेस यह ले जाएगी वह ले जाएगी सुनना नहीं चाहती थी। बचा क्या है जो कांग्रेस ले जाएगी?यह सारे सवाल थे। मगर एक्जिट पोल इसके ठीक विपरीत हैं। वे मोदी मोदी कर रहे हैं। इसलिए जनता को शक है कि गोदी मीडिया से माहौल बनवाकर कहीं चुनाव आयोग उसी के अनुसार नतीजे न दे दे।कांग्रेस के कोषाध्यक्ष अजय माकन ने बड़ा सनसनीखेज खुलासा किया है कि इस बार प्रत्याशी के मतगणना एजेंट को मतगणना टेबल तक नहीं जाने दिया जाएगा। मतलब चुनाव अधिकारी को खुली छूट होगी कि वह जो चाहे करे। माकन ने अपने इस खुलासे पर चुनाव आयोग से स्पष्टीकरण मांगा है मगर वह नहीं आया।1977 से हमने सब चुनाव देखे हैं। 77 से ही मतगणना केन्द्र में ही रहकर गिनती भी देखी है। मगर ऐसा कभी नहीं हुआ कि प्रत्याशियों के अधिकृत एजेंटों को मतगणना टेबल से दूर रखा जाए। फिर वह देखेगा क्या? पत्रकार भी अंदर होते हैं वे भी देखते हैं। प्रत्याशी के एजेंट, पत्रकार अगर वोट से ही दूर रहेंगे तो मतगणना केन्द्र में उनके जाने का फायदा क्या? बहुत गंभीर सवाल है। इससे पहले एक करोड़ सात लाख से ऊपर जाली वोट ईवीएम में करवाने का आरोप चुनाव आयोग पर है। पहले फेज के मतदान के बाद 11 दिन तक कितना मतदान हुआ इसका आंकड़ा सार्वजनिक नहीं किया गया था। बाद में मतदान प्रतिशत बढ़ाकर दिखाया गया। यह जो अतिरिक्त वोट दिखाए गए। जिन्हें विपक्ष एक करोड़ सात लाख से ज्यादा बता रहा है वह किसके खाते में गए?चुनाव आयोग बहुत संदेह के घेरे में है। इसलिए कहा जा रहा है कि गोदी मीडिया से ऐसा एक्जिट पोल करवाया गया कि वह आयोग के चार जून के बताए जाने वाले नतीजों के अनुरूप हो। पहले गोदी मीडिया से कहलवा दो फिर वैसा ही नतीजा बता दो। जनता मान जाएगी।लेकिन अब जनता सवाल कर रही है कि यह गोदी मीडिया जब खबरें गलत बताता है। तो एक्जिट पोल सही कैसे बता देगा?जब रोजगार का सवाल चला तो मोदी ने तो एक बार भी उसका नाम नहीं लिया। मगर गोदी मीडिया ने बता दिया कि मोदी ने दो करोड़ प्रतिवर्ष रोजगार देने के अपने वादे के अनुरूप 20 करोड़ रोजगार लोगों को दे दिए हैं। लोग हैरान कि यह रोजगार कहां गए? हमारे परिवार में एक भी नहीं आया। गांव में भी किसी को नहीं मिला। फिर ये गए कहां? तो लोगों को गोदी मीडिया की खबरों पर ही जब भरोसा नहीं है तो एक्जिट पोल पर कैसे बनेगा?नतीजे कुछ भी हों मगर इस चुनाव में दो खलनायक सामने आ गए हैं। एक गोदी मीडिया और दूसरा चुनाव आयोग। जन विरोधी। दोनों ने अपनी विश्वसनीयता तो पूरी तरह खतम की ही है जनता को ऐसा लगने लगा है कि दोनों मिलकर उसका अस्तित्व भी खतम कर रहे हैं। वोट ही तो उसकी ताकत है। वही अगर उसने दिया किसी को चला कहीं और जाए तो उसका क्या महत्व रहेगा?लोकतंत्र में निष्पक्षता, पारदर्शिता बहुत जरूरी है। इसी से जनता का विश्वास बना रहता है। अभी इतने एक्जिट पोल आए जनता का सवाल बिल्कुल जायज है कि कभी आज तक कोई भी उनसे पूछने नहीं आया कि किसे वोट दिया है? और साथ ही लोग यह भी कहते हैं कि वोट डालने के बाद क्या कोई इनको बता देगा कि फलाने को वोट डालकर आए हैं।एक्जिट पोल एक खेल की तरह, धंधे की तरह भी ठीक था। मगर अब यह जनादेश बदलने के लिए उपयोग में लाया जा रहा है। पहले कहा चार सौ पार। फिर उसका माहौल बनाया। एक्जिट पोल लाया। और फिर आगे?चार जून को देखा जाएगा। विपक्ष ने यह चुनाव बहुत अच्छा लड़ा है। जनता के मुद्दे उठाए। जनता को भरोसा दिया कि आने के बाद वह उनकी सुनेगा। अपने मन की बात नहीं करेगा। जनता ने भी इस बार विपक्ष को खूब सुना। माहौल वह बिल्कुल नहीं है जो एक्जिट पोल बता रहा है। सारी जिम्मेदारी चुनाव आयोग पर जिलों के चुनाव अधिकारियों पर है कि वह पूरी ईमानदारी, निष्पक्षता और बिना किसी डर के काम करें।

संपादकीय

अब नतीजों का इंतज़ार

लोकसभा चुनाव के सातवें व अंतिम चरण का मतदान शनिवार को सम्पन्न हो जाने के बाद विभिन्न न्यूज़ चैनलों एवं सर्वे एजेंसियों ने उसी शाम 6.30 बजे के बाद से अपने एक्जिट पोल्स दिखला दिये हैं और अपने-अपने अनुमानों के अनुसार सत्तारुढ़ भारतीय जनता पार्टी प्रणीत नेशनल डेमोक्रेटिक एलाएंस यानी एनडीए अथवा उसके खिलाफ कांग्रेस के नेतृत्व में लामबन्द हुए इंडिया को जीतता हुआ बतला रहे हैं। भाजपा के स्टार प्रचारक नरेन्द्र मोदी के बहुप्रचारित खुद की पार्टी के बल पर 370 और एनडीए के बूते 400 पार के नारे की तो बात अब हो नहीं रही है लेकिन ट्रेंड यह दिख रहा है कि सत्ता के नजदीक माना जाने वाला मुख्यधारा का मीडिया एनडीए को तथा स्वतंत्र व डिजिटल मीडिया, जिनमें ज्यादातर यू ट्यूबर हैं- इंडिया की जीत का अनुमान जाहिर कर रहे हैं। जो भी हो, मंगलवार को स्थिति साफ हो जायेगी जब परिणाम सामने आ जायेंगे।यह चुनाव जिस तरीके से लड़ा गया है, वह कई सवाल खड़े करता है। पहला तो यही कि केन्द्रीय निर्वाचन आयोग, जिस पर निष्पक्षतापूर्वक व भयरहित वातावरण में चुनाव कराने की जिम्मेदारी थी, वह ऐसा करने में पूरी तरह से नाकाम रहा है। जिस दिन से इसकी घोषणा हुई थी, तभी से उसने अपनी आंखें, कानों और मुंह को बन्द कर रखा है। गहन संदेहों के घेरे में आई हुई इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों के जरिये ही चुनाव कराने पर सरकार के इशारे पर आमादा निर्वाचन आयोग 2019 के चुनाव के समय से ही सरकार के पक्ष में खड़ा दिखा था। उसने अपना वही रवैया इस बार भी बनाये रखा। ईवीएम के साथ ही इलेक्टोरल बॉन्ड्स के कारण विपक्षी आलोचना के केन्द्र में रही भाजपा सरकार पर यह भी आरोप लगा कि उसने अपनी जांच एजेंसियों के जरिये खूब चुनावी चंदा बटोरा है और उसके बल पर वह न केवल चुनाव लड़ रही है बल्कि उसने कथित %ऑपरेशन लोटसट के माध्यम से विरोधी दलों को कमजोर किया, उसकी राज्य सरकारें गिराईं और एक तरह से संघवाद को कुचल दिया है।

इसके अलावा भाजपा ने कई प्रकार से आचार संहिता का उल्लंघन किया जिसमें निर्वाचन आयोग ने भरपूर साथ दिया। मोदी के चुनावी भाषणों में आचार संहिता के किसी भी नियम का ख्याल नहीं रखा गया। उन्होंने अलग-अलग सन्दर्भों में खूब हिन्दू-मुसलमान किया, कांग्रेस व अन्य विरोधी दलों के नेताओं के खिलाफ आधारहीन व अमर्यादित टिप्पणियां कीं। पहले तो उन्होंने इंडिया गठबन्धन को अपमानजनक शब्दों से सम्बोधित किया, फिर कांग्रेस के घोषणापत्र पर %मुस्लिम लीग की छायाट बतलाई तथा उलजुलूल आरोप लगाये। गैरजिम्मेदारीपूर्ण व्यवहार का परिचय देते हुए उन्होंने यह कहा कि कांग्रेस की सरकार बनी तो वह लोगों के मंगलसूत्र छीनकर %कई बच्चे वालों' को दे देगी। उनका संकेत मुस्लिमों की ओर था। उन्होंने इंडिया सरकार द्वारा एक्सरे कर लोगों के घरों का सोना छीन लेने और सबकी बिजली-पानी काट देने का डर भी दिखाया। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के एक भाषण को गलत उद्धृत करते हुए मोदी ने कह डाला कि यूपीए सरकार का मानना था कि देश के संसाधनों पर पहला हक मुस्लिमों का है। मोदी इस दौरान भविष्य में विकसित भारत बनाने की तो बातें करते रहे परन्तु वे अपने 10 वर्ष के कार्यकाल के दौरान क्या विकास कर सके, इस बाबत चुप्पी साधे रखी। मोदी व भाजपा ने प्रतिपक्ष के कई नेताओं को अपमानित किया। ओडिशा के सुसंस्कृत मुख्यमंत्री नवीन पटनायक के बारे में अभद्र बातें कहीं। हालांकि इनमें उनकी कुछ टिप्पणियां ऐसी थीं कि स्वयं मोदी ही हास्य के पात्र बन गये।भारत के इतिहास में यह पहला चुनाव है जिनमें कई घटनाएं पहली बार हुईं। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को गिरफ्तार किया गया। इसका मकसद दोनों को चुनाव प्रचार से रोकना था। हेमंत तो मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देकर जेल गये पर केजरीवाल ने पद नहीं छोड़ा। इतना ही नहीं, उन्होंने जमानत पाकर करीब दो हफ्ते जमकर प्रचार किया और अब फिर रविवार को उन्होंने जेल जाने के लिए समर्पण कर दिया। यह कदम भाजपा के लिये आत्मघाती साबित होता दिख रहा है क्योंकि इससे इंडिया और भी मजबूत बन गया तथा दोनों राज्यों में सहानुभूति लहर चल पड़ी। अन्य मामलों की तरह ही निर्वाचन आयोग इस मामले पर भी मौन बना रहा। शनिवार को कांग्रेस के जयराम रमेश ने यह कहकर सनसनी फैलाई कि केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह कलेक्टरों को व्यक्तिगत रूप से फोन कर धमका रहे हैं। ये वही शाह हैं जिनका दावा है कि पांचवें चरण के बाद ही एनडीए को 300 से 310 सीटें मिल चुकी हैं। यानी वह सत्ता बनाने की स्थिति में आ गया है। ऐसा है तो शाह के लिये क्या ज़रूरत है कि वे कलेक्टरों को धमकियां दें? यह इस बात की ओर स्पष्ट संकेत है कि शाह जो कह रहे हैं वैसा कुछ है नहीं। यानी एनडीए सरकार बनाने की स्थिति में नहीं आया है।जिस प्रकार मोदी 2019 के चुनाव प्रचार के दौरान अपने निर्वाचन क्षेत्र में मतदान के पहले एक गुफा में ध्यान लगाने चले गये थे .

https://t.me/AllNewsPaperPaid

चाबहार बंदरगाह भारत, ईरान और अफ़गानिस्तान के लिए एक रणनीतिक जरूरत

चाबहार भारत के अफगानिस्तान में अपनी उपस्थिति को फिर से स्थापित करने के बारे में भी है, ठीक उसी तरह जैसे उसने 2001 और 2021 के बीच गणतंत्र सरकार और अफगान लोगों के साथ मजबूत संबंध बनाये थे। 2016 के चाबहार समझौते का एक महत्वपूर्ण हिस्सा पाकिस्तान के कराची और ग्वादर बंदरगाहों से बचते हुए भूमि से घिरे अफगानिस्तान को समुद्र तक पहुंच देना था।भारत आज ईरान में लंबे समय से लंबित चाबहार बंदरगाह परियोजना को पुनर्जीवित करने के लिए काम कर रहा है। 13 मई को, इंडिया पोर्ट्स ग्लोबल लिमिटेड (आईपीजीएल) और ईरान के बंदरगाह और समुद्री संगठन ने 10 साल के समझौते पर हस्ताक्षर किये। यह सौदा भारत को चाबहार बंदरगाह को विकसित करने और संचालित करने की अनुमति देता है।आईपीजीएल लगभग 120 मिलियन डॉलर का निवेश करेगा, जिसमें अतिरिक्त 250 मिलियन डॉलर का वित्तपोषण होगा, जिससे अनुबंध का कुल मूल्य 370 मिलियन डॉलर हो जायेगा।भारत, अफ़गानिस्तान और ईरान को जोड़ने वाला परिवहन और पारगमन मार्ग बनाने के लिए %चाबहार समझौता% मूलरूप से मई 2016 में हुआ था। इस समझौते का उद्देश्य भारत, अफ़गानिस्तान और ईरान के बीच माल और यात्रियों को ले जाने के लिए बंदरगाह का उपयोग करना था। इससे अन्य देशों से माल और यात्रियों को आकर्षित करने की भी उम्मीद थी।उस समय ईरान के राष्ट्रपति हसन रूहानी ने दिसंबर 2017 में चाबहार बंदरगाह के पहले चरण का शुभारंभ किया। आईपीजीएस ने 2018 के अंत में बंदरगाह संचालन का प्रबंधन शुरू किया। तब से, इसने 90,000 टीईयू (ट्वेंटी फुट इक्विवेलेंट यूनिट्स) से अधिक कंटेनर ट्रैफ़िक और 8.4 मिलियन टन से अधिक बल्क और सामान्य कार्गो को संभाला है। 2018 में, ट्रम्प प्रशासन ने एक छूट दी, जिसने चाबहार को अमेरिकी प्रतिबंधों से बाहर रखा, जिससे बंदरगाह का उपयोग अफ़गान पुनर्निर्माण प्रयासों का समर्थन करने के लिए किया जा सके। विदेश विभाग के प्रवक्ता ने कहा कि- राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की %दक्षिण एशिया रणनीति अफ़गानिस्तान की आर्थिक वृद्धि और विकास के लिए हमारे निरंतर समर्थन को उजागर करती है, साथ ही भारत के साथ हमारी मजबूत साझेदारी भी, जैसा कि द डिप्लोमैट की एक रिपोर्ट में बताया गया है।अमेरिकी प्रवक्ता ने कहा कि यह अपवाद अफ़गानिस्तान के लिए पुनर्निर्माण सहायता और आर्थिक विकास से जुड़ा है, जो देश के विकास का समर्थन करने और मानवीय राहत प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। हाल ही में हुए समझौते के जवाब में, संयुक्त राज्य अमेरिका ने एक चेतावनी जारी की है। उसने संकेत दिया कि अगर भारतीय कंपनी आईपीजीएल निवेश के साथ आगे बढ़ती है तो उसे प्रतिबंधों का सामना करना पड़ सकता है।अगस्त 2021 में अमेरिका के अफगानिस्तान छोड़ने के बाद से चाबहार पर अमेरिकी दृष्टिकोण बदल गये हैं। वाशिंगटन तालिबान के नेतृत्व वाली सरकार को मान्यता देने की योजना नहीं बना रहा है जिसने गणराज्य से सत्ता संभाली है और उसने तालिबान की प्रतिबंधात्मक नीतियों को बदलने की कोशिश करने के लिए वित्तीय दबाव का उपयोग करने की रणनीति लागू की है। भले ही यह रणनीति अब तक काम नहीं आई है, लेकिन चाबहार को तालिबान को लाभ पहुंचाने वाला एक प्रमुख व्यापार और पारगमन केंद्र बनाना अमेरिकी रणनीति के सफल होने की संभावनाओं को कमजोर कर सकता है।हालांकि, भारत के लिए चाबहार कई फायदे प्रदान करता है। यह ईरान के साथ अपने लंबे समय से चले आ रहे संबंधों को बनाये रखने में मदद करता है, जो भारत द्वारा ईरानी तेल आयात करना बंद करने और विभिन्न मुद्दों पर उनकी नीतियों के अलग होने के कारण तनावपूर्ण हो गया था। चाबहार निष्क्रिय अंतरराष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारे (आईएनएसटीसी) को पुनर्जीवित करने के लिए भी महत्वपूर्ण है, जिसका उद्देश्य भारत, ईरान, रूस और कई मध्य और पश्चिम एशियाई देशों के बीच व्यापार को बढ़ावा देना है। भारत-मध्य पूर्व आर्थिक गलियारा (आईएमईसी) परियोजना, जिसे 2023 में बहुत उत्साह के साथ लॉन्च किया गया था, अब गाजा में इजरायल के युद्ध के कारण लगभग छोड़ दिया गया है, और यूरोपीय संघ और यू.के. के साथ

मुक्त व्यापार समझौते की वार्ता ठप हो गयी है, और भारत की वैकल्पिक व्यापार मार्गों की आवश्यकता भी काफी बढ़ गई है।चाबहार भारत के अफगानिस्तान में अपनी उपस्थिति को फिर से स्थापित करने के बारे में भी है, ठीक उसी तरह जैसे उसने 2001 और 2021 के बीच गणतंत्र सरकार और अफगान लोगों के साथ मजबूत संबंध बनाये थे। 2016 के चाबहार समझौते का एक महत्वपूर्ण हिस्सा पाकिस्तान के कराची और ग्वादर बंदरगाहों से बचते हुए भूमि से घिरे अफगानिस्तान को समुद्र तक पहुंच देना था। कई वर्षों से, पाकिस्तान ने अक्सर अफगानिस्तान के लिए अपनी सीमाओं को बंद कर दिया है, जिससे देश की समुद्र तक पहुँच अवरुद्ध हो गयी है और भारत और दक्षिण एशिया के साथ व्यापार और पारगमन में बाधा उत्पन्न हुई है। अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच तनावपूर्ण संबंधों के कारण यह एक बार फिर प्रासंगिक हो गया है।चाबहार को वैकल्पिक मार्ग के रूप में फिर से सक्रिय करने के प्रयासों को कई खुली और पर्दे के पीछे की बातचीत के माध्यम से गति दी गयी है। हाल के महीनों में, भारत तालिबान के करीब आ गया है, जबकि अफ़गानिस्तान और पाकिस्तान के बीच संबंध खराब हो गये हैं, और तेहरान और इस्लामाबाद के बीच तनावबढ़ गया है। तालिबान के अधिकारियों ने सार्वजनिक रूप से खुद को एक ऐसे देश पाकिस्तान से दूर रखने का उल्लेख किया है जो अफ़गानिस्तान के मामलों में बहुत अधिक शामिल रहा है।मार्च 2024 में, तालिबान के विदेश मंत्री आमिर खान मुत्ताकी और भारत के विदेश मंत्रालय के अफ़गानिस्तान और पाकिस्तान प्रभाग के प्रमुख जे.पी. सिंह के बीच काबुल में एक बैठक के दौरान, उन्होंने चाबहार पर चर्चा की। 28 मार्च को, तालिबान के विदेश मंत्रालय ने एक बयान जारी किया जिसमें चाबहार बंदरगाह के माध्यम से दोनों देशों के बीच व्यापार बढ़ाने के लिए भारत के समर्थन पर प्रकाश डाला गया। उस महीने की शुरुआत में, तालिबान ने चाबहार बंदरगाह में लगभग 35 मिलियन डॉलर का निवेश करने की योजना की घोषणा की। भारत और ईरान दोनों ने तालिबान के साथ जुड़ने के लिए अपनी रणनीतियों को संरेखित किया है। यह स्पष्ट है कि नई दिल्ली, तेहरान और काबुल मूल चाबहार योजना को पुनर्जीवित करने और पिछली चुनौतियों से आगे बढ़ने के लिए मिलकर काम कर रहे हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका से स्पष्ट स्वीकृति के बिना आगे बढ़ने के कारण, ये क्षेत्रीय खिलाड़ी क्षेत्रीय मंच पर जोखिम उठाने को तैयार हैं।अमेरिका के साथ बैक चैनल कूटनीति और मजबूत रणनीतिक संबंधों ने पहले भारत को रूस से एस-400 मिसाइल और तेल आयात करते समय अमेरिकी प्रतिबंधों को दरकिनार करने में सक्षम बनाया है। इस बार, नई दिल्ली को विश्वास है कि वह, जैसा कि भारतीय विदेश मंत्री ने कहा, चाबहार सौदे पर संयुक्त राज्य अमेरिका से संवाद कर सकता है, समझा सकता है और चुपचाप स्वीकृति प्राप्त कर सकता है, इसलिए आईपीजीएल को प्रतिबंधों का सामना नहीं करना पड़ेगा।चीन के साथ प्रतिस्पर्धा में नई दिल्ली अमेरिका के लिए एक महत्वपूर्ण भागीदार है, और वाशिंगटन द्वारा कठोर उपायों से बचने की संभावना है, खासकर चुनावी वर्ष के दौरान।

स्वामित्वाधिकारी, मुद्रक और प्रकाशक व संपादक सरोज चौधरी द्वारा विजय प्रेस, नया टोला पटना से मुद्रित तथा 302, मां तारा कंपलेक्स, नारायण मूर्ति पथ, नागेश्वर कॉलोनी, बोरिंग रोड पटना से प्रकाशित! संपादक सरोज चौधरी, R.N.I. No:- BIHHIN/ 2016/72168

संपादकीय

सहयोगी पर बढ़ी निर्भरता

रुपेश कुमार सिंह
संपादक
चौथी वाणी

लोकसभा चुनाव के नतीजों के बाद अब नई सरकार बनाने के लिए गहमागहमी का दौर शुरू हो गया है। दरअसल इस बार बीजेपी बहुमत का आंकड़ा पार नहीं कर पाई है। जिसके बाद अब अब पहली बार मोदी की अगुआई में ऐसी सरकार बनने के आसार दिख रहे हैं, लोकसभा चुनावों के नतीजे आने के बाद स्वाभाविक ही राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में सरकार गठन को लेकर गहमागहमी शुरू हो गई है। बहुमत बेशक NDA के पास है, लेकिन विपक्षी गठबंधन I.N.D.I.A. भी अपेक्षा से ज्यादा सीटें लाने की वजह से उत्साह में है।

दूसरे दलों पर निर्भरता : प्रधानमंत्री के तौर पर नरेंद्र मोदी के अब तक के दोनों कार्यकाल ऐसे रहे हैं, जिसमें उनकी अपनी पार्टी BJP को बहुमत हासिल रहा है। इसके बावजूद उन्होंने NDA को साथ लेकर सरकार चलाई, लेकिन इखढ के बहुमत की वजह से सहयोगी दलों के पास ज्यादा सौदेबाजी करने की गुंजाइश तब नहीं थी। अब पहली बार मोदी की अगुआई में ऐसी सरकार बनने के आसार दिख रहे हैं, जो अस्तित्व के लिए सहयोगी दलों के समर्थन पर निर्भर होगी।

मांगों का सिलसिला : ऐसी स्थिति में अक्सर सरकार को समर्थन देने वाले दल अलग-अलग रूपों में इसकी कीमत वसूलना चाहते हैं। इस बार सहयोगी दलों की ओर से आधिकारिक तौर पर ऐसी कोई मांग सामने आने की सूचना अभी तक नहीं है, लेकिन सूत्रों के हवाले से मीडिया में ऐसी खबरें चलने लगी हैं कि लोकसभा अध्यक्ष पद और विशेष राज्य का दर्जा जैसी मांगें आगे की जा चुकी हैं।

अनुभवी नेतृत्व : इसमें दो राय नहीं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पास राजनीति का इतना लंबा अनुभव है कि उनके लिए इस तरह के दबावों को झेलना और तालमेल बनाए रखना ज्यादा मुश्किल नहीं होना चाहिए। लेकिन एन चंद्रबाबू नायडू और नीतीश कुमार दोनों अटल बिहारी वाजपेयी के दौर में भी NDA का हिस्सा रह चुके हैं। उस दौर में वाजपेयी सरकार को NDA के सहयोगी दलों के दबाव में तीन अहम मुद्दों झ राम मंदिर, अनुच्छेद 370 और समान आचार संहिता झ से दूरी बनाए रखनी पड़ी थी।

घटक दलों का अंकुश : सवाल उठना लाजिमी है कि क्या इस बार भी मोदी की अगुआई वाली सरकार को सहयोगी दलों की ओर से इस तरह की बंदिशों के बीच काम करना पड़ेगा। अगर हां तो यह सरकार के कामकाज की गति और दिशा पर किस तरह का प्रभाव डालेगा? मगर इन सवालों से पहले यह देखना होगा कि सरकार गठन की प्रक्रिया बिना किसी बाधा के पूरी हो जाती है या नहीं।

मजबूत विपक्ष: दिलचस्प है कि I.N.D.I.A. के भी कुछ घटक दलों की ओर से सरकार बनाने की इच्छा जताई गई है, लेकिन बहुमत से दूर होने की वजह से उनकी इच्छा पूरी होती नहीं दिख रही। यह जरूर है कि कठ.ऊकअ. के बेहतर प्रदर्शन की बदौलत देश को लंबे अर्से बाद मजबूत विपक्ष मिला है। उम्मीद है कि सहयोगी दलों के तालमेल वाली सरकार और मजबूत विपक्ष का समन्वय देश में न केवल लोकतंत्र को मजबूती देगा बल्कि खुशहाली का नया दौर लाएगा।

मोदी सरकार की नई पारी

राष्ट्र प्रथम का ध्येय और विकसित भारत का संकल्प

सुदीप शुक्ल

भारतीय लोकतंत्र के लिए ऐतिहासिक अवसर रहा जब राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) ने श्री नरेंद्र मोदी को तीसरी बार संसदीय दल का नेता चुन लिया। निवृतमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जब एक बार फिर प्रधानमंत्री पद की शपथ लेंगे, तब तीसरी बार यह दायित्व संभालने वाले दूसरे ऐसे प्रधानमंत्री के रूप में इतिहास के पृष्ठों में उनका नाम दर्ज हो जाएगा। शुक्रवार को एनडीए के संसदीय दल की बैठक में सभी घटक दलों के नेताओं ने भारतीय जनता पार्टी और प्रधानमंत्री के रूप में श्री नरेंद्र मोदी पर भरोसा जताते हुए उनकी खुले तौर पर प्रशंसा की। इस अवसर पर अपने उद्बोधन में श्री नरेंद्र मोदी ने स्पष्ट कर दिया कि राष्ट्र प्रथम की मूल भावना के साथ विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने के लिए यह कार्यकाल महत्वपूर्ण रहने वाला है। उन्होंने कहा कि एनडीए नीत केंद्र सरकार भारत के लोगों के सपनों और संकल्पों को पूरा करने के लिए काम करेगी। उनके इस संबोधन के आलोक में सरकार के आगामी प्रयासों, कार्यों, योजनाओं, आत्मविश्वास और भावनाओं को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन का इतिहास लगभग ढाई दशक पुराना होने जा रहा है। इसी गठबंधन ने प्रधानमंत्री के रूप में श्री अटल बिहारी वाजपेयी और फिर श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पिछले दो कार्यकाल में सत्ता संभाली है। संसदीय दल की बैठक में घटक दलों के नेताओं ने जिस प्रकार प्रधानमंत्री के रूप में श्री नरेंद्र मोदी पर विश्वास जताया है वह यह बताने के लिए काफी है कि सरकार निश्चिंत होकर अपना आगामी कार्यकाल और योजनाओं को मूर्तरूप देने का कार्य पूर्ण कर सकेगी। 18 वीं लोकसभा में चुनकर आए नए-पुराने सांसदों के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का उद्बोधन वेलकम नोट ही नहीं था बल्कि देश-दुनिया को यह संदेश देने वाला भी रहा कि भारत अपनी प्रगति की रफ्तार को किसी भी कीमत पर न तो रोकने जा रहा है और न ही यह कम होगी। उनके उद्बोधन का सारांश यही रहा कि 2047 तक भारत को विकसित बनाने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सरकार दिन-रात एक करने वाली है। उन्होंने इस बात को एक बार फिर दोहराया कि सरकार का पिछले 10 वर्षों का कार्यकाल तो सिर्फ ट्रेलर है, मेरा कमिटमेंट तेज गति से काम करना है और देश की आकांक्षाओं को पूरा करने में हमें रत्ती भर भी देर नहीं करना है। प्रधानमंत्री ने जो प्रमुख बातें कहीं वे स्पष्ट रूप से यह बताती हैं कि भाजपा और घटक दलों के रिश्ते राजनीतिक होने के साथ-साथ और भी गहरे से जुड़े हैं। उन्होंने कहा कि हमारा गठबंधन ऑर्गेनिक है और हम राष्ट्र प्रथम की भावना से काम करते हैं। हमारा 10 वर्ष का अनुभव है। हम सबसे मजबूत और विश्वसनीय अलायंस हैं। चुनावों में मिली सफलता को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि यह एनडीए की महाविजय है। यह दुनिया मानती है। विपक्षियों को लगा था कि हम हार गए लेकिन हम न कभी हारे थे, न हारे हैं और न हारेंगे। दक्षिण में एनडीए ने नई राजनीति की नींव मजबूत की है। तेलंगाना, कर्नाटक में सफलता पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि भले ही हम तमिलनाडु में सीट नहीं जीत पाए लेकिन जिस प्रकार से वहां गठबंधन का व्यास बढ़ा है उससे स्पष्ट दिख रहा है कि वहां आने वाला कल हमारा है। उन्होंने यह भी विशेष रूप से कहा कि आज पहली बार केरल से हमारा प्रतिनिधि चुनकर आ गया है। आंध्र का उल्लेख करते हुए उन्होंने इसे ऐतिहासिक विजय बताया और कहा कि आन्ध्र ने इतना बड़ा जनमत दिया है। भगवान जगन्नाथ को स्मरण करते हुए उन्होंने ओडिशा की विजय को क्रांति बताया। साथ ही कहा कि आने वाले 25 वर्षों में महाप्रभु जगन्नाथ जी की कृपा से विकसित भारत का संकल्प अवश्य पूरा होगा। इसके साथ ही उन्होंने अन्य राज्यों की विजय को भी रेखांकित किया।

अपने संबोधन में श्री मोदी ने विपक्ष पर भी प्रहार किया। ईवीएम संबंधी विवाद पर चुटकी लेने के साथ ही उन्होंने कहा कि विपक्ष ने ऐसी स्थितियां निर्मित कीं कि लोकतांत्रिक प्रक्रिया पर लोगों का भरोसा कम हो जाए लेकिन भारत के लोकतंत्र की शक्ति आज दुनिया के सामने है। यह भी पहली बार हुआ जब विपक्ष ने चुनाव आयोग के काम में बाधा डालने के लिए सुप्रीम कोर्ट का रुख किया। यह दुनिया के सामने भारत को बदनाम करने के षड्यंत्र का हिस्सा था। यह चिंता का विषय है कि दुनिया में भारत के लोकतंत्र को, भारत की चुनाव प्रक्रिया को कमजोर करने का षड्यंत्र विरोधियों द्वारा रचा गया लेकिन अब दुनिया भारत की लोकतांत्रिक प्रक्रिया, विविधता, विशालता को जानने के लिए उत्सुक होगी। उन्होंने यह भी कहा कि चुनाव एक ऐसा लोकोत्सव है जिसमें ज्यादा से ज्यादा लोगों को जोड़ने का प्रयास किया जाता है, तोड़ने का नहीं। उन्होंने करारा प्रहार करते हुए कहा कि चुनाव प्रचार में विरोधियों का चरित्र भी दिखाई दिया, वे राज्यों में आपस में लड़ते रहे और एक-दूसरे की पीठ में छुरा घोंपते रहे। प्रधानमंत्री ने कहा कि हम विजय को पचाना जानते हैं। हमारे संस्कार ऐसे हैं कि विजय की गोद में उन्माद पैदा नहीं होता, न ही पराजित लोगों का उपहास उड़ाने की विकृति हम में है। यह हमारे संस्कार हैं। लोकतंत्र हमें सबका सम्मान करना सिखाता है, ऐसा कहते हुए उन्होंने विपक्ष से चुनकर आए सांसदों को भी बधाई दी। उन्होंने अपनी सरकार की आगामी योजनाओं को भी देश के समक्ष रखा जिनमें 3 करोड़ लोगों को नए घर देना, 70 साल से अधिक के वृद्धजनों को पांच लाख तक निशुल्क उपचार, नारी सशक्तीकरण, अर्थव्यवस्था को विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाना, गरीब-मध्य वर्ग को शक्ति बनाना, मध्य वर्ग की बचत बढ़ाना और उनका जीवन स तर कैसे और बेहतर हो इसके लिए कार्य करने की बात कही। सार रूप में प्रधानमंत्री ने इस बात को पुनः दोहराया कि भारत माता ही उनका मिशन है। देश के 140 करोड़ लोगों के सपनों को पूरा करना, मुसीबतों से मुक्ति दिलाने के साथ ही विश्व में भारतीयों का मान बढ़ाना ही उनका उद्देश्य है। उन्होंने कहा कि मेरा पल-पल देश के नाम है, मैं 24 घंटे, सातों दिन उपलब्ध हूं और हमें मिलकर देश को आगे बढ़ाना है। गठबंधन धर्म का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि पहले भी एनडीए था, आज भी है और कल भी एनडीए रहेगा।

विकसित भारत संकल्प यात्रा

सुरक्षा कर्मियों व चुनाव प्रक्रिया में भाग लेने वाले करोड़ों मतदाताओं की सराहना की

चुनाव आयोग ने राष्ट्रपति को नवनिर्वाचित सांसदों की लिस्ट सौंपी-आचार संहिता हटाई-नई सरकार के गठन की प्रक्रिया शुरू

लेखक
किशन सनमुखदास भावनानी
गोंदिया (महाराष्ट्र)

18 वीं लोकसभा का कार्यकाल 17 जून से शुरू होने के पहले नई सरकार का गठन करने को रेखांकित करना जरूरी-एडवोकेट किशन भावनानी

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर पूरी दुनियंत की नजरें भारत में संपन्न हुए सबसे बड़े चुनावी महापर्व पर लगी हुई थी जिससे सभी को उम्मीद थी कि सत्ताधारी दल वापसी करेगा,क्योंकि 17वीं लोकसभा के मंत्रिमंडल के नेतृत्व से पूरी दुनियां के अनेकों रणनीतिक साझेदारी कार्यक्रम अनुबंधित थे और देशवासियों को भी उनसे काफी उम्मीदें हैं, परंतु रिजल्ट में ऐसा देखा गया कि कहीं ना कहीं कुछ छूट गया है जो सत्ताधारी दल को क्लीन मेजोरिटी नहीं आई, परंतु गठबंधन को जरूर पूरी क्लीन मेजोरिटी आई है,इसलिए एनडीए की सरकार बनना तय है, जिसकी प्रक्रिया शुरू है। 5 जून को एनडीए ने अपना नेता चुना व 7 जून 2024 को एनडीए सांसदों ने अपना नेता चुना। अब माननीय राष्ट्रपति के पास सरकार बनाने के लिए अपना दावा प्रस्तुत कियाजाएगा। इस बीच दिनांक 6 जून 2024 को देर शाम मुख्य चुनाव आयुक्त अपने दो आयुक्तों के साथ माननीय राष्ट्रपति को 18 वीं लोकसभा के लिए संपन्न कराए गए चुनाव में चुने गए सांसदों की सूची व आचार संहिता हटने की घोषणा की अधिसूचना सौंपी, अब माननीय राष्ट्रपति महोदया नें सरकार बनाने की प्रक्रिया शुरू कर दी है, यानें कुल मिलाकर निष्कर्ष निकाले तो भारतीय चुनाव आयोग ने इतने बड़े लोकतंत्र के चुनाव में इतिहास रच दिया है, जिसकी तारीफ व सराहना माननीय राष्ट्रपति द्वारा की गई है।जबकि बता दें कि अभी-अभी दक्षिण अफ्रीका में हुए चुनाव में वहां किसी को बहुमत नहीं आया है, एक तरह से हंग नतीजे में गहमा गहमी चल रही है, जिसमें नेल्सन मंडेला की सबसे बड़ी पार्टी को 400 में से 159 सीटें मिली है अब सरकार बनने की कवायत शुरू है, परंतु भारत में उम्मीद है कि 9 जून 2024 को प्रधानमंत्री का शपथ ग्रहण समारोह होगाक्योंकि चुनाव आयोग ने माननीय राष्ट्रपति को नवनिर्वाचित सदस्यों की लिस्ट शॉप दी है, आचार संहिता हटा दी है,अब नई सरकार के गठन की प्रक्रिया शुरू हो गई है। इसलिए आज हम मीडिया पीआईबी में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, 18वीं लोकसभा का कार्यकाल 17 जून से शुरू होने के पहले नई सरकार का गठन करने को रेखांकित करना जरूरी है। साथियों बात अगर हम चुनाव आयोग द्वारा माननीय राष्ट्रपति को 6 जून 2024 को शाम 18 वीं लोकसभा के लिए चुने गए सांसदों की सूची सौंपने की करें तो,मुख्य चुनाव आयुक्त नें गुरुवार को राष्ट्रपति से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने 18वीं लोकसभा के गठन की प्रक्रिया शुरू करने के लिए नव निर्वाचित सदस्यों की सूची राष्ट्रपति को सौंपी। अब राष्ट्रपति नई सरकार के गठन की औपचारिक प्रक्रिया शुरू करेंगी। राष्ट्रपति मुर्मु ने चुनावी प्रक्रिया की सफलता पर मुख्य चुनाव आयुक्त को बधाई दी। उन्होंने स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कराने में पुलिस और सुरक्षा कर्मियों के प्रयासों की भी प्रशंसा की। राष्ट्रपति ने बड़ी संख्या में चुनाव प्रक्रिया में भाग लेने वाले लाखों मतदाताओं की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह हमारे संविधान और भारत की गहरी और अटल लोकतांत्रिक परंपराओं के अनुरूप है। मौजूदा लोकसभा का कार्यकाल 16 जून को खत्म हो रहा, गौरतलब है कि राष्ट्रपति ने पीएम के नेतृत्व वाले मंत्रिमंडल की सलाह पर बुधवार को 17वीं लोकसभा भंग कर दी थी। मौजूदा लोकसभा का कार्यकाल 16 जून को खत्म हो रहा है और उससे पहले नई सरकार का गठन करना होगा। भाजपा के नेतृत्व वाले राजग ने हाल ही में संपन्न आम चुनावों में बहुमत हासिल किया है। जहां राजग 543 सदस्यीय लोकसभा में 293 सीटें जीतकर 272 के बहुमत के आंकड़े से ऊपर है, वहीं 240 सीटें जीतने वाली भाजपा 2014 के बाद पहली बार पूर्ण बहुमत से पीछे रह गई है। विपक्षी गठबंधन आईएनडीआईए ने 234 सीटें जीती हैं।मुख्य चुनाव आयुक्त ने कहा कि अब लोकसभा चुनाव के परिणाम जारी हो चुके हैं, जो कि आप सबके सामने हैं। ईवीएम को कुछ दिन अब आराम करने देते हैं। अगले चुनाव में उसको फिर से निकालेंगे, वो फिर अपने काम पर लगेगी। उन्होंने ईवीएम पर उठने वाले सवालों पर कहा कि ईवीएम को हर चुनाव में कोसा जाता है। शायद उसका अविष्कार उसी मुहूर्त में हुआ है कि उसको हर बार संदेह का सामना करना पड़ता है।उन्होंने बताया कि कर्नाटक, महाराष्ट्र और तेलंगाना के स्नातक और शिक्षक निर्वाचन क्षेत्रों में द्विवार्षिक/उपचुनावों के कारण आदर्श आचार संहिता लागू है। मुख्य चुनाव आयुक्त ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में चुनाव लंबित है। उन्होंने कहा कि हम 12 मार्च को वहां गए थे, हमने संकेत दिया था कि सही समय पर चुनाव कराया जाएगा। उन्होंने बताया कि हम वहां के लोगों को जल्द से जल्द अपनी सरकार बनाने और अपनी पसंद का प्रतिनिधि चुनने का मौका देंगे। साथियों बात अगर हम 2024 के चुनाव में कुल मतदान प्रतिशत 65.79 प्रतिशत होने की करें तो आम चुनाव 2024 में मतदान केंद्रों पर 65.79 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया। राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों से प्राप्त मानक प्रथा के अनुसार, डाक मतों की संख्या तथा सकल मतदान की विस्तृत सांख्यिकीय रिपोर्टें अंतिम रूप दिए जाने के पश्चात आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध कराई जाएंगी। डाक मतपत्रों में सेवा मतदाता, अनुपस्थित मतदाता (85+, दिव्यांग, आवश्यक सेवाएं आदि) और चुनाव ड्यूटी पर लगे मतदाता शामिल हैं। साथियों बात अगर हम महात्मा गांधी के अहिंसा संदेश से शांतिपूर्ण हिंसा मुक्त चुनाव के प्रति प्रतिबद्धता के प्रण की बात ईसी द्वारा करने की करें तो,माननीय राष्ट्रपति को 18वीं लोकसभा के लिए निर्वाचित सदस्यों के नाम सौंपने के बाद आज शाम राजघाट पर राष्ट्रपिता को श्रद्धांजलि अर्पित की।

कर्नाटक, महाराष्ट्र और तेलंगाना के ग्रेजुएट और टीचर्स निर्वाचन क्षेत्रों को छोड़कर, जहां तत्काल प्रभाव से आदर्श आचार संहिता लागू नहीं रहेगी, वहां ग्रेजुएट और टीचर्स निर्वाचन क्षेत्रों में विधान परिषद के द्विवार्षिक/उप-चुनावों के कारण एमसीसी लागू है। उन्होने कहा हम यहां राष्ट्र द्वारा हमें सौंपे गए पवित्र कार्य, 18वीं लोकसभा के आम चुनाव सम् पन् न कराने के बाद राष्ट्रपिता को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए खड़े हैं। हम भारत के लोगों की इच्छा को लगभग अहिंसक तरीके से उत्प्रेरित करने के बाद अपने दिल में विनम्रता लिए हुए यहां खड़े हैं।लोकतंत्र में हिंसा के लिए कोई जगह नहीं है, यह वह स्पष्ट प्रतिबद्धता थी जिसके साथ 16 मार्च, 2024 को 18वीं लोकसभा के चुनावों की घोषणा की गई थी। चुनावी प्रक्रिया को हिंसा से मुक्त रखने की इस प्रतिज्ञा के पीछे हमारी प्रेरणा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी थे। उन्होंने इंसान के बीच समानता की वकालत की और सभी के लिए लोकतांत्रिक अधिकारोंकी वकालतकी,महात्मा के विचारों में वयस्क मताधिकार सभी प्रकार के वर्गों की सभी उचित आकांक्षाओं को पूरा करने में सक्षम बनाता है। मतदान केन् द्रों पर उत्सव के मूड में लंबी कतारें और मतपत्र के माध्यम से अपने भविष्य का फैसला करने का दृढ़ संकल्प महात्मा के पोषित आदर्शों और भारत की सभ्यतागत विरासत का प्रमाण था।आयोग ने पूरे दिल, दिमाग और पूरी ईमानदारी के साथ यह सुनिश्चित करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया है कि सबसे आम भारतीय का मताधिकार किसी भी कीमत पर नकारा न जाए, बल्कि इसे सख्ती से सक्षम बनाया जाए; कि दुनिया की सबसे बड़ी चुनावी प्रतियोगिता लोकतांत्रिक अधिशेष पैदा करे; और हमारे विशाल परिदृश्य में शामिल करोड़ों लोगों के गहन कार्यों में किसी भी रूप में हिंसा की थोड़ी सी भी छाया पड़ने की अनुमति न हो। जम्मू-कश्मीर और मणिपुर समेत भारत के सभी राज्यों और केन् द्र शासित प्रदेशों ने अपने परिपक्व आचरण से एक मिसाल कायम की है जो भविष्य के लिए शुभ संकेत है। शांति और विकास का रास्ता गोली नहीं बल्कि मतपत्र है।हम इस शपथ के साथ अपनी बात समाप्त करते हैं कि भारत के निर्वाचन आयोग की राष्ट्र के प्रति सेवा, जो अब अपने 76वें वर्ष में है, अडिग समर्पण के साथ जारी रहेगी। हमने अफवाहों और निराधार संदेहों के साथ चुनावी प्रक्रिया को दूषित करने के सभी प्रयासों को खारिज कर दिया, जो अशांति भड़का सकते थे। भारत की लोकतांत्रिक संस्थाओं में अपार आस्था रखने वाले आम आदमी की इच्छा और बुद्धि की जीत हुई है। हम नैतिक और कानूनी रूप से स्वतंत्र, निष्पक्ष और समावेशी चुनाव आयोजित करके हमेशा इसी भावना को बनाए रखने के लिए बाध्य हैं। साथियों बात अगर हम चुनाव 2024 में लगी आचार संहिता हटाने की करें तो, लोकसभा चुनावी प्रक्रिया खत्म होने के साथ ही गुरुवार शाम को भारतीय चुनाव आयोग के मुख्य चुनाव आयुक्त राष्ट्रपति से मुलाकात की। उन्होंने जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 73 के तहत आयोग द्वारा जारी अधिसूचना की एक कॉपी राष्ट्रपति को सौंपी। जिसमें 18वीं लोकसभा के आम चुनावों के बाद चुने गए सभी 543 लोकसभा सदस्यों के नाम भी थे। इसी के बाद आयोग द्वारा देशभर में 16 मार्च से लगी आदर्श आचार संहिता को भी 6 जून की शाम को तुरंत प्रभाव से हटा लिया गया।

अनेक कारण रहे आप पार्टी की दिल्ली व पंजाब में हार के?

आम आदमी पार्टी ने दिल्ली में सातों सीटों पर हार के बाद कांग्रेस के साथ गठबंधन खत्म करने का ऐलान कर दिया है। आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता गोपाल राय ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के घर पर गुरुवार को बैठक के बाद इसकी घोषणा की। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के साथ गठबंधन लोकसभा चुनाव के लिए ही था, विधानसभा चुनाव पार्टी अकेले लड़ने जा रही है।उन्होंने स्पष्ट किया कि 2025 की शुरूआत में होने वाले दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए कांग्रेस के साथ कोई गठबंधन नहीं होगा। गौरतलब है कि राय का यह बयान गुरुवार को आप द्वारा अपने विधायकों के साथ बैठक के बाद आया है। दिल्ली के मंत्री गोपाल राय ने कहा कि यह शुरू से ही स्पष्ट है कि इंडिया गठबंधन लोकसभा चुनाव के लिए बना था। हमने लोकसभा चुनाव साथ मिलकर लड़ा लेकिन दिल्ली विधानसभा चुनाव में देश में कोई गठबंधन नहीं है। हम दिल्ली की जनता के साथ मिलकर विधानसभा चुनाव लड़ेंगे। लोकसभा चुनाव से पहले हमने आप और कांग्रेस को चुनाव पूर्व गठबंधन बनाते हुए देखा, जिसका उद्देश्य भाजपा विरोधी वोटों के विभाजन को रोकना था। वही आप जिसने कभी कांग्रेस के खिलाफ सत्ता विरोधी लहर पर सवार होकर खुद को राजधानी में एक मजबूत ताकत के रूप में स्थापित किया था। हालांकि, इससे दोनों दलों को कोई फायदा नहीं हुआ। भाजपा ने सभी सात सीटों पर जीत हासिल की, जबकि इंडिया ब्लॉक दूसरे स्थान पर ही रहा। दोनों पार्टियाँ इसका लाभ उठाने में विफल रहीं क्योंकि भाजपा ने राजधानी के मतदाताओं पर अपना प्रभुत्व कायम रखा। 2019 के आम चुनाव में, भाजपा को दिल्ली में 56।7% वोट मिले, जबकि आप पार्टी और कांग्रेस को क्रमशः 18.2% और 22.6% वोट मिले। हालाँकि, इस चुनाव में आप पार्टी और कांग्रेस के बीच एक रणनीतिक गठबंधन देखा गया, जिसमें कांग्रेस ने तीन निर्वाचन क्षेत्रों में और आप पार्टी ने चार निर्वाचन क्षेत्रों में अपने उम्मीदवार उतारे। उधर मुख्यमंत्री भगवंत मान के नेतृत्व वाली पंजाब में सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी को अपने ॣमध्यावधि परीक्षणॣ में विफल रही, राज्य की 13 लोकसभा सीटों में से सिर्फ तीन पर उसने जीत हासिल की। मार्च 2022 में हुए विधानसभा चुनावों में इसका वोट शेयर 42 प्रतिशत से गिरकर 26.02 प्रतिशत हो गया।संगरूर, होशियारपुर और आनंदपुर साहिब ही वह सीटें हैं, जिन्हें आप ने जीता है। आप इंडिया में गठबंधन की सहयोगी है। हालांकि, उसने दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, गुजरात और असम में 22 सीटों पर चुनाव लड़ा था। मान के आग्रह पर ही आप ने पंजाब में कांग्रेस के साथ गठबंधन न करने का फैसला किया, जबकि कांग्रेस आलाकमान इसके लिए तैयार थे। पंजाब के खेल मंत्री गुरमीत सिंह मीत हेयर, जिन्होंने संगरूर से 1.72 लाख वोटों के अंतर से शानदार जीत दर्ज की, के अलावा आप द्वारा मैदान में उतारे गए चार अन्य कैबिनेट मंत्री और तीन विधायक अपनी सीटों पर हार गए, जिससे मतदाताओं ने स्पष्ट रूप से मान की शासन प्रणाली को नकार दिया। मान ने सभी उम्मीदवारों के लिए पूरे राज्य में काफी प्रचार किया था और दावा किया था कि उनकी पार्टी ह्यमिशन 13-0ह्व के तहत पंजाब की सभी 13 सीटें जीतेगी। पिछले 25 दिनों में सीएम ने पूरे राज्य में 122 रैलियां कीं। पार्टी नेता राघव चड्ढा और दिल्ली के सीएम और आप संयोजक अरविंद केजरीवाल ने भी राज्य में प्रचार किया था। अपनी छवि खराब करने के अलावा, पंजाब में पार्टी के नेता के तौर पर मुख्यमंत्री की स्थिति भी कमजोर हुई है। गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर के राजनीति विज्ञान के पूर्व प्रोफेसर डॉ जगरूप सिंह सेखों ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि ये चुनाव आप को राज्य में संरचनात्मक संकट में धकेलने के लिए बाध्य हैं। वे सत्ता में हो सकते हैं, लेकिन उन्होंने अपनी वैधता खो दी है। आम आदमी पार्टी ने पंजाब के लोगों को यह सोचकर हल्के में लिया कि वे 2022 का अपना प्रदर्शन दोहरा सकते हैं, लेकिन वे राज्य की प्रमुख चिंताओं जैसे ड्रग्स, अवैध खनन कानून और व्यवस्था और भ्रष्टाचार को दूर करने में विफल रहे। इतिहासकार परमजीत सिंह जज ने कहा कि यह मान का अहंकार ही था जिसकी वजह से राज्य में पार्टी का प्रदर्शन खराब रहा। उन्होंने मीडिया से बातचीत में कहा, ह्यह्यअहंकार और अच्छी राजनीति एक साथ नहीं चल सकती। अगर मान कांग्रेस के साथ गठबंधन के लिए राजी हो जाते तो आज नतीजे बहुत अलग होते।ॣॣलोकसभा चुनाव से पहले कांग्रेस छोड़कर आप में शामिल हुए डॉ. राजकुमार छाबेवाल ने होशियारपुर से 44,000 से अधिक मतों के अंतर से जीत हासिल की, जबकि पार्टी के मुख्य प्रवक्ता मलविंदर सिंह कंग ने आनंदपुर साहिब से 10,000 से अधिक मतों से जीत हासिल की।कैबिनेट मंत्री डॉ। बलबीर सिंह पटियाला से, कुलदीप सिंह धालीवाल अमृतसर से, गुरमीत सिंह खुड्डियां बठिंडा से, लालजीत सिंह भुल्लर खडूर साहिब से हार गए, जबकि विधायक जगदीप सिंह काका बराड़ फिरोजपुर से, अशोक पराशर पप्पी लुधियाना से और अमंशेर शेरी कलसी गुरदासपुर से हार गए। दलबदलू सुशील कुमार रिंकू (जो आप से भाजपा में शामिल हुए) और गुरप्रीत सिंह जीपी (जो कांग्रेस से आप में आए) जालंधर और फतेहगढ़ साहिब की अपनी-अपनी सीटें हार गए। मान के दोस्त और कॉमेडियन से नेता बने करमजीत अनमोल फरीदकोट से हार गए।पंजाब के विशेषज्ञ कर्नल (सेवानिवृत्त) जे एस गिल ने कहा कि सीएम मान को यह समझना होगा कि हमेशा लोगों की वाहवाही बटोरने से जमीनी स्तर पर जनता संतुष्ट नहीं होती। उन्होंने कहा, ह्यह्यजब लोग भविष्य के लिए आपका विजन और जमीनी स्तर पर उससे मेल खाता प्रदर्शन चाहते हैं, तो सार्वजनिक रूप से विरोधियों को नीचा दिखाने से चुनावी फायदा नहीं होता।ॣॣ गिल ने भी मीडिया से कहा, ह्यह्यराजनीति तीन तरह की होती है- चुनावी, शासन और विधायी। आप अपने भाषणों में तीनों के लिए एक ही टेम्पलेट का इस्तेमाल नहीं कर सकते। सीएम को एक समझदार व्यक्ति होना चाहिए जो रंगला पंजाब के अपने विजन के साथ आबादी के हर वर्ग को साथ लेकर चले क्योंकि सीएम के तौर पर उनके विरोधी भी उनकी देखभाल में हैं। वे आप के नहीं बल्कि पंजाब के सीएम हैं।ॣॣमान के लिए राहत की बात यह रही कि उनकी पार्टी के छह उम्मीदवार दूसरे स्थान पर रहे झ अमृतसर, बठिंडा, फरीदकोट, फतेहगढ़ साहिब, फिरोजपुर, पटियाला झ और चार उम्मीदवार तीसरे स्थान पर रहे, गुरदासपुर, जालंधर, खडूर साहिब और लुधियाना सीटों पर। कांग्रेस को पंजाब में बड़ी बढ़त मिली, उसने सात सीटें जीतीं और 2022 के विधानसभा चुनावों में अपना वोट शेयर लगभग 23 प्रतिशत से बढ़ाकर 26.30 प्रतिशत कर लिया, जो इस चुनाव में राज्य में किसी भी पार्टी के लिए सबसे अधिक है।पार्टी के शीर्ष दावेदार चुनाव की कसौटी पर खरे उतरे। पूर्व मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी ने जालंधर सीट 1.75 लाख से अधिक मतों के अंतर से जीती, पूर्व उपमुख्यमंत्री सुखजिंदर सिंह रंधावा ने गुरदासपुर सीट जीती, उन्होंने इसे भाजपा से 83,000 से अधिक मतों के अंतर से छीना। राज्य कांग्रेस प्रमुख अमरिंदर सिंह राजा वडिंग ने लुधियाना से जीत हासिल की, उन्होंने कांग्रेस सांसद से भाजपा उम्मीदवार बने रवनीत सिंह बिट्टू को लगभग 21,000 मतों के अंतर से हराया। अमृतसर से कांग्रेस के मौजूदा सांसद गुरजीत सिंह औजला ने अपनी सीट बरकरार रखी और फतेहगढ़ साहिब से मौजूदा सांसद अमर सिंह ने भी अपनी सीट बरकरार रखी। डॉ। धर्मवीर गांधी ने पटियाला में मौजूदा सांसद और भाजपा उम्मीदवार परनीत कौर को हराया, जबकि पूर्व अकाली शेर सिंह घुबाया ने फिरोजपुर सीट जीती। घुबाया 2019 में इस सीट पर शिरोमणि अकाली दल के अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल से हार गए थे।हालांकि, पार्टी 2019 के लोकसभा चुनावों के अपने प्रदर्शन को दोहराने में सक्षम नहीं रही, जब उसने आठ सीटें जीती थीं और 40।12 प्रतिशत वोट हासिल किए थे। यह चार सीटों (आनंदपुर साहिब, होशियारपुर, खडूर साहिब, संगरूर) पर दूसरे स्थान पर और दो सीटों (बठिंडा और फरीदकोट) पर तीसरे स्थान पर रही। शिरोमणि अकाली दल (शिअद) का ग्राफ इस चुनाव में और नीचे चला गया, पार्टी को केवल एक सीट, बठिंडा, पर जीत मिली। पूर्व केंद्रीय मंत्री और मौजूदा सांसद हरसिमरत कौर बादल ने इस सीट पर लगातार चौथी बार अपनी जीत दोहराई।

लेखक
अशोक भाटिया
वसई पूर्व, मुंबई

प्रकाशक, संपादक, मुद्रक रूपेश कुमार सिंह, रैप एक्सप्रर्टस प्राइवेट लिमिटेड पटना द्वारा, कौमी तंजीम पब्लिसर्स प्रा. लिमिटेड, अमीन मंजिल, सब्जीबाग, पटना-800004 से मुद्रित। ज्योति प्रकाश भवन, जकरियापुर एसएफसी कॉलोनी, जीरो माइल गंगा पेट्रोल पंप के नजदीक, पटना से प्रकाशित। संपर्क सूत्र : 9835055017 / 7004145686, RNI NO–BIHHIN/2021/85413, RNI TITLE CODE : BIHHIN/11898

बिज़नेस स्टैंडर्ड
वर्ष 17 अंक 97

उम्र से जुड़ी बहस

भारत में कार्यस्थलों पर कामगारों की आयु को लेकर समस्या देखने को मिल रही है। भर्ती एजेंसी रैंडस्टैड द्वारा करीब 1,000 प्रतिभागियों पर किए गए सर्वेक्षण के मुताबिक उनमें से 40 फीसदी को कार्यस्थल पर उम्र से संबंधित भेदभाव का सामना करना पड़ा या वे ऐसी घटनाओं के साक्षी बने। 55 वर्ष से कम आयु के 42 फीसदी प्रतिभागियों ने उम्र संबंधी भेदभाव का सामना किया या उसके गवाह बने जबकि 55 वर्ष से अधिक आयु के 29 फीसदी प्रतिभागियों के साथ ऐसा हुआ। सर्वेक्षण में शामिल 55 से कम उम्र के आधे से थोड़े अधिक प्रतिभागियों ने कहा कि उन्हें लगता है उनकी कदर की जाती है जबकि 55 से अधिक उम्र के 63 फीसदी कर्मचारियों ने ऐसा कहा। 35 वर्ष से कम आयु के 32 फीसदी प्रतिभागियों ने कहा कि उन्हें लगता है कि उनकी कदर नहीं की जाती है या उन्हें पर्याप्त वेतन नहीं मिलता। यह पूर्वग्रह रोजगार के विज्ञापनों में भी नजर आता है और यहां 61 फीसदी ने नौकरी के लिए आयु या अनुभव वर्षों को मानक बनाया है। इस क्षेत्र में बहुराष्ट्रीय कंपनियां अग्रणी हैं। अन्य तरह के पूर्वग्रह भी आयु से संबंधी भेदभाव को बढ़ाते हैं। 42 फीसदी महिलाओं ने कहा कि उन्हें ऐसे भेदभाव का अनुभव होता है जबकि ऐसा महसूस करने वाले पुरुषों की तादाद केवल 37 फीसदी थी।

एक स्तर पर कार्यस्थल पर रिवर्स एजिस्म (युवाओं के साथ भेदभाव) चकित नहीं भी करता है क्योंकि भारत की जनांकिकी युवा है और देश की 65 फीसदी से अधिक आबादी 35 वर्ष से कम उम्र की है। हमारी पारंपरिक सामाजिक भावना भी बुद्धि और काबिलियत को उम्र से जोड़कर देखने की रही है। परंतु व्यापक पैमाने पर देखें तो इस सर्वेक्षण में शामिल युवाओं जैसे काबिल युवा जरूरी अनुभव प्राप्त करके रिवर्स एजिस्म की समस्या से निजात पा सकते हैं। वास्तव में चिंता इस बात को लेकर होनी चाहिए कि संस्थानों में आयु संबंधी भेदभाव की प्रवृत्ति घर कर गई है। दो अंतःसंबंधित तथ्य अगली पीढ़ी में कार्यस्थल को प्रभावित करेंगे पहला तो यह कि संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनपीएफ) के अनुसार बुजुर्गों की दशकवार वृद्धि की दर 2011-21 के 35.5 फीसदी से बढ़कर 2021-31 तक 41 फीसदी हो जाएगी और आबादी में बुजुर्गों की हिस्सेदारी भी दोगुनी होकर 20 फीसदी से अधिक हो जाएगी। यूएनपीएफ के अनुसार 2046 तक बुजुर्गों की आबादी 15 वर्ष और उससे कम उम्र के बच्चों की आबादी को पार कर जाएगी।

अप्रत्याशित और तीव्र गति से उम्रदराज होती आबादी और बढ़ती जीवन प्रत्याशा के साथ अगर इस तथ्य को शामिल कर लिया जाए कि भारत में सेवानिवृत्ति की आयु विश्व स्तर पर प्रायः सबसे कम है तो इससे यही संकेत मिलता है कि जल्दी ही देश की आबादी का बड़ा हिस्सा ऐसे सेवानिवृत्त लोगों का होगा जो अपनी बचत पर निर्भर होंगे। भारत में कंपनियों और सरकारी उपक्रमों में सेवानिवृत्ति की आयु 58 से 60 वर्ष के बीच है जबकि पूर्णकालिक निदेशकों के लिए यह अधिकतम 70 वर्ष एवं गैर कार्यकारी निदेशकों के लिए 75 वर्ष तक है। आइसलैंड, ऑस्ट्रेलिया, स्पेन और इटली जैसे विकसित देशों में यह आयु 66-67 वर्ष है। फ्रांस में जहां कामगार 50-60 वर्ष में सेवानिवृत्त होना पसंद करते हैं, वहां पेंशन की आयु को 62 से 64 करने के प्रस्ताव का तीखा विरोध हुआ। सिंगापुर में हाल ही में सेवानिवृत्ति की आयु को 63 से 64 वर्ष कर दिया गया और दोबारा नौकरी की आयु को 68 से 69 वर्ष किया गया। इनमें से अधिकांश देश तेजी से बूढ़ी होती आबादी के हिसाब से समायोजन कर रहे हैं। दूसरी ओर भारत में युवाओं की बेरोजगारी का स्तर ऊंचा है और कुशल युवाओं की मांग लगातार बढ़ रही है। ऐसे में कार्यस्थलों पर सेवानिवृत्ति की आयु बढ़ाने तथा बुजुर्ग कामगारों के अनुभव से अधिकतम लाभ लेने की विरोधाभासी नीति को अपनाना लाभदायक हो सकता है।

विकेंद्रीकरण: हकीकत या महज दिखावा?

सत्ताधारी दल और विपक्ष दोनों ही स्थानीय निकायों को सशक्त बनाना चाहते हैं मगर इसके लिए सबसे पहले विकेंद्रीकरण की 'जन्मजात खामी' को दूर करना होगा। बता रहे हैं एम गोविंद राव

संविधान में 73वां और 74वां संशोधन हुए तीन दशक बीत चुके हैं। इतनी लंबी अवधि गुजरने के बाद भी पंचायती राज इकाइयों का वित्तीय सशक्तीकरण नहीं हो पाया है। ये दोनों संशोधन वर्ष 1993 में प्रभावी हुए थे मगर तब से स्थानीय निकायों का वित्तीय सशक्तीकरण महज दिखावा बन कर रह गया है। सत्ताधारी दल और विपक्ष दोनों ही मान रहे हैं कि स्थानीय निकाय वित्तीय रूप से सशक्त नहीं हो पाए हैं। वे अपने चुनावी घोषणापत्रों में भी इस विषय को उठाने लगे हैं।

सत्ताधारी दल पंचायतों को अधिक वित्तीय ताकत देना चाहता है, वहीं विपक्ष संविधान में 73वें और 74वें संशोधनों का श्रेय ले रहे है। विपक्ष यह भी वादा कर रहा है कि वे अनुच्छेद 243 के अंतर्गत निहित प्रावधानों को उनकी मूल भावना के साथ लागू करने के लिए राज्यों को प्रेरित करने में सफल रहेगा। यद्यपि, दोनों ही पक्ष विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया आगे बढ़ाने के महत्त्व को रेखांकित करते हैं मगर यह स्पष्ट नहीं है कि यह लक्ष्य किस तरह प्राप्त किया जा सकता है।

राजकोषीय विकेंद्रीकरण के संबंध में लागू होने वाला एक महत्त्वपूर्ण नियम यह है कि स्थानीय निकायों को दिए जाने वाले दायित्व स्पष्ट होने चाहिए, उनके पास सार्वजनिक सेवाओं के वित्त पोषण के लिए पर्याप्त संसाधन होने चाहिए और ये सेवाएं मुहैया कराने वाले कर्मचारियों एवं पदाधिकारियों को नियुक्त करने एवं उनके कार्य प्रबंधन का अधिकार मिलना चाहिए। राजस्व के पर्याप्त एवं निश्चित स्रोत नहीं होने के कारण स्थानीय निकायों के कार्य आर्थिक संसाधन के अभाव में पूरे नहीं हो पाते हैं। भारत के संदर्भ में बात करें तो यह स्पष्ट है कि 73वें और 74वें संविधान संशोधनों के माध्यम से शुरू हुई विकेंद्रीकरण प्रक्रिया में गंभीर खामी है और वित्तीय तौर पर स्थानीय निकायों को दुरुस्त करने वाले किसी प्रयास को सबसे पहले इस खामी को दूर करना चाहिए।

स्थानीय निकायों को आवंटित कार्य भी स्पष्ट नहीं हैं। उन्हें राजस्व के पर्याप्त स्रोत नहीं दिए जाते हैं और इस कारण उन्हें राज्य एवं केंद्र सरकार से मिलने वाली मदद पर निर्भर रहना पड़ता है। स्थानीय निकायों के कर्मचारियों एवं अधिकारियों की नियुक्ति भी राज्य सरकारें करती हैं। यद्यपि, संविधान संशोधन में उन्हें स्थानीय स्व-शासन का हिस्सा बनाने की बात कही गई है मगर इसकी जवाबदेही राज्य सूची की 7वीं अनुसूची में प्रविष्टि 5 के अंतर्गत राज्यों पर छोड़ दी गई है। यानी अनुच्छेद 243-जी और 243-डब्ल्यू ग्रामीण एवं शहरी स्थानीय निकायों को आर्थिक विकास योजनाएं तैयार करने एवं विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन (11वीं एवं 12वीं अनुसूचियों में सूचीबद्ध योजनाओं सहित) का अधिकार देते हैं मगर कार्यों का वास्तविक निर्धारण पूरी तरह राज्य सरकारों की इच्छा पर छोड़ दिया गया है। इससे साफ होता है कि स्थानीय निकायों के कार्य स्पष्ट नहीं हैं क्योंकि इनमें राज्यों का हस्तक्षेप होता है।

वित्तीय संसाधनों से जुड़ी समस्या तो और भी कठिन है। अनुच्छेद 243-एच और 243 एक्स के अंतर्गत राज्यों को निर्देश दिए गए है कि वे कर लगाने का अधिकार पंचायतों एवं शहरी स्थानीय निकायों को दें मगर कितना कर लगाया जाए और इनके आधार या दरों में बदलाव का अधिकार पूरी तरह राज्यों के पास हैं। अब समस्या यह है कि राज्य कर संबंधी अधिकार या पर्याप्त संसाधन स्थानीय निकायों को स्थानांतरित नहीं कर रहे हैं।

नतीजा यह होता है कि स्थानीय निकायों के पास योजनाओं से जुड़े अधिकार तो हैं मगर उन्हें पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं हैं। विकेंद्रीकरण का एक महत्त्वपूर्ण लाभ यह होता है कि इससे राजस्व और व्यय से जुड़े निर्णय एक दूसरे से जुड़ जाते हैं मगर उपयुक्त आवंटन व्यवस्था नहीं होने से इसका कोई सीधा लाभ नहीं मिलता है। दुनिया में जायदाद कर स्थानीय राजस्व का सबसे महत्त्वपूर्ण स्रोत होता है मगर भारत में यह सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का मात्र 0.2 प्रतिशत के स्तर पर बताया जा रहा है।

जितनी मात्रा में राजस्व अंतरित होता है वह भी अपर्याप्त है। अनुच्छेद 243-आई और 243-वाई के अंतर्गत किसी राज्य के राज्यपाल को प्रत्येक पांच वर्षों पर राज्य वित्त आयोग (एसएफसी) का गठन करना होता है। यह आयोग ग्रामीण एवं शहरी इकाइयों को करों एवं अनुदानों का विभाजन निर्धारित करता है।

हालांकि, पिछले तीन दशकों का इतिहास इस बात का गवाह है कि राज्य तय प्रावधानों की अनदेखी करते हुए राज्य वित्त आयोग की नियुक्ति नहीं करते हैं। जब कभी आयोग गठित होता है तो रिपोर्ट की गुणवत्ता क्रियान्वयन के योग्य नहीं होती है और राज्य इन रिपोर्ट को और इनके आधार पर उठाए गए कदमों को विधानसभा में नहीं रखते हैं। राज्यों के लिए ऐसा करना आवश्यक होता है। अब तक छह राज्य वित्त आयोगों को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करनी चाहिए थी मगर केवल कुछ ही राज्यों में ऐसा हो पाया है। राज्य स्थानीय निकायों को कुछ अस्थायी अनुदान दे रहे हैं मगर ये अपर्याप्त होते हैं और उनको मिलने पर भी अनिश्चितता बनी रहती है।

73वें और 74वें संशोधनों के साथ अनुच्छेद में बदलाव किए गए। इस बदलाव का मकसद राज्य वित्त आयोगों के सुझावों के आधार पर ग्रामीण एवं शहरी स्थानीय निकायों को अतिरिक्त संसाधन देने के लिए राज्य की संचित निधि को बढ़ाने का रास्ता खोजना था। यद्यपि, इनका सूक्ष्मता से अध्ययन करें तो सीधा अभिप्राय अनुदान से नहीं है और इसे लेकर एसएफसी रिपोर्ट भी उपलब्ध नहीं हैं, मगर केंद्रीय वित्त आयोग कुछ अस्थायी अनुदान की सिफारिश करते रहे हैं। 15वें वित्त आयोग ने पांच वर्षों के लिए शहरी एवं ग्रामीण निकायों के लिए 4.36 लाख करोड़ रुपये देने की अनुशंसा की है। दिवंगत अर्थशास्त्री राजा चलैया ने एक बार कहा था, 'हर कोई विकेंद्रीकरण का हिमायती है मगर उसी सीमा तक इसकी बात करता है जहां तक यह उसके अनुकूल जान पड़ता है।' राज्य भी लगातार यह कहते आ रहे हैं कि उन्हें पर्याप्त स्वायत्तता नहीं मिली है जितनी मिलनी चाहिए थी मगर इसके साथ वे भी स्वयं विकेंद्रीकरण के सिद्धांतों का अनुपालन नहीं कर पा रहे हैं। राजकोषीय विकेंद्रीकरण की दयनीय हालत देखते हुए 15वें वित्त आयोग ने ऐसे अनुदान का लाभ उठाने के लिए कुछ शर्तें लगा दी हैं। इनमें अंकेक्षित लेखा (ऑडिटेड अकाउंट) तैयार करने और उन्हें प्रस्तुत करने जैसी शर्तें शामिल हैं। राज्यों के लिए एसएफसी की नियुक्ति और राज्य विधानसभा में रिपोर्ट रखना भी अनिवार्य कर दिया गया है। 13वें वित्त आयोग ने भी कम से कम 13 शर्तें रखी थीं। हालांकि, समस्या यह है कि इन शर्तों का पालन नहीं करने पर राज्यों के लिए किसी तरह के दंड का प्रावधान नहीं है और अंत में नुकसान स्थानीय निकायों को उठाना पड़ता है।

यह स्पष्ट है कि स्थानीय निकायों को राजकोषीय रूप से मजबूत करने के लिए प्रोत्साहित करने का उपाय कारगर नहीं दिख रहा है। प्रभावी विकेंद्रीकरण तभी होगा जब स्थानीय निकायों को प्रत्यक्ष या सीधे सशक्त बनाने के कदम उठाए जाएं। इसके लिए कार्यों का निर्धारण एवं राजस्व के स्रोतों का स्पष्ट होना जरूरी है। मगर इसके लिए संविधान का संशोधन कर सातवीं अनुसूची में सामाजिक सूची जोड़नी होगी और एसएफसी नियुक्त नहीं करने के लिए राज्य (न कि स्थानीय निकायों को) को दंडित करने का प्रावधान तैयार करना होगा। क्षमता निर्माण जरूरी है और इस कार्य में स्थानीय निकायों की सहायता करनी होगी। अंततः विकेंद्रीकरण सही मायने में प्रभावी हो जाएगा और एक टिकाऊ व्यवस्था की तरह काम करेगा।

(लेखक एनआईपीएफपी के निदेशक और 14वें वित्त आयोग के सदस्य रह चुके हैं)

राजनीतिक फलक पर चंद्रशेखर आजाद का उभार

सियासी हलचल

आदिति फडणीस

वह बोर्ड जहां से चंद्रशेखर आजाद की यात्रा शुरू हुई थी वह आज भी अपनी जगह पर लगा हुआ है। आजाद उत्तर प्रदेश की नगीना लोक सभा सीट से सांसद बन चुके हैं।

इस बोर्ड में गर्व के साथ लिखा गया है, 'दा ग्रेट चमार डॉ. भीमराव अम्बेडकर गांव घड़कौली आपका अभिनन्दन करता है।' सहारनपुर के निकट स्थित घड़कौली गांव में ब्राह्मणों और राजपूतों के अलावा बड़ी तादाद में दलित-चमार और मुस्लिम समुदाय के लोग रहते हैं। गांव को दा ग्रेट चमार गांव बताने वाला बोर्ड 2016 में लगाया गया था। गांव के उच्च जातियों के लोगों ने इस पर आपत्ति की थी। दलितों ने इसे हटाने से मना कर दिया था। दोनों जातियों के बीच बातचीत विफल रही और एक दिन इस बोर्ड को बिगाड़ दिया गया।

उस समय चंद्रशेखर आजाद मोटरसाइकिल सवारों के दस्ते के साथ 'जय भीम' और 'जय भीम आर्मी' के नारे बुलंद करते हुए पहुंचे। तनाव बढ़ा। दोनों पक्षों ने एक दूसरे पर पत्थर फेंके और जांच के लिए भेजे गए पुलिसकर्मियों तक को घसीट दिया गया।

इसके साथ ही सीधे टकराव वाली दलित राजनीति का दौर शुरू हुआ जो युवा पीढ़ी ने नहीं देखा था। उसी महीने राजपूत राजा महाराणा प्रताप के जन्मदिवस के अवसर पर जिले में और अधिक ठाकुर-दलित झड़पें हुईं।

राज्य सरकार ने आजाद की भीम आर्मी को हिंसा भड़काने का दोषी माना। आजाद ने दावा किया कि सरकार उस आंदोलन को मलिन करने के लिए उसे निशाना बना रही है और ऊंची जातियों के अपराधियों को बचा रही है। राज्य प्रशासन ने आजाद को गिरफ्तार कर लिया। मामला न्यायालय में पहुंचा और उच्च न्यायालय ने उन्हें बरी कर दिया।

परंतु इसके कुछ ही घंटे के भीतर योगी आदित्यनाथ की सरकार ने उन्हें राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत दोबारा गिरफ्तार करने का आदेश दे दिया। नागरिक अधिकार समूहों के भारी विरोध के बीच उन्हें दोबारा जेल में डाला गया और इसी दबाव में उन्हें छोड़ा भी गया। जेल से बाहर आने के बाद 2020 में आजाद ने आजाद समाज पार्टी का गठन किया और चुनाव लड़ने का इरादा जताया। आजाद समाज पार्टी ने भारतीय जनता पार्टी के कड़े प्रतिरोध के बीच 2022 में उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव में हिस्सा लिया। बहुजन समाज पार्टी ने भी उसका विरोध किया क्योंकि उसे अपने किले में सेंध लगती नजर आ रही थी। आजाद ने गोरखपुर से योगी आदित्यनाथ के खिलाफ चुनाव लड़ा लेकिन 4,000 से थोड़े अधिक मतों के साथ वह चौथे स्थान पर रहे। परंतु इन बातों ने उन्हें राजनीतिक परिदृश्य पर स्थापित कर दिया।

जब वह जेल और अस्पताल में थे तब प्रियंका गांधी ने उन्हें फोन किया। आजाद ने इस सप्ताह के आरंभ में घोषणा की कि वह इंडिया गठबंधन का समर्थन करेंगे। उनकी इस घोषणा को उस दौर में बने संबंधों की परिणति माना जा सकता है।

चंद्रशेखर आजाद का जन्म सहारनपुर के घड़कौली गांव में एक चमार परिवार में हुआ था। उन्होंने ठाकुर समुदाय द्वारा संचालित एक कॉलेज में अध्ययन किया और दलित छात्रों के साथ भेदभाव को करीब से देखा। उन्होंने इससे लड़ने की ठानी। उनके पिता एक सरकारी स्कूल में शिक्षक थे। उन्होंने आजाद को सलाह दी कि वह अपनी लड़ाई में न्याय के साथ खड़े हों। यह बात अधिक लोग नहीं जानते लेकिन आजाद ने अपना राजनीतिक करियर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के साथ शुरू किया था जो भारतीय जनता पार्टी का छात्र संगठन है। वह अपने साक्षात्कारों में कह चुके हैं उन्होंने भाजपा छोड़ने का निर्णय लिया क्योंकि उन्होंने देखा कि दलितों और मुस्लिमों के बीच लड़ाई में तो भाजपा दलितों का साथ देती लेकिन ऊंची जातियों और दलितों के बीच लड़ाई में वह गायब हो जाती।

एक आंबेडकरवादी और कांशीराम (लेकिन मायावती नहीं) के प्रशंसक होने के नाते उन्होंने भी दलितों को एकजुट करने के लिए कांशीराम के ही तौर तरीके अपनाने की ठानी। उन्होंने शिक्षा, अफसरशाही और आत्मरक्षा का मार्ग चुना।

आजाद समाज पार्टी की पूर्ववर्ती भीम आर्मी ने 18 वर्ष से अधिक आयु के दलितों से आग्रह किया कि वे उसके साथ जुड़ें। अधिकांश सदस्य चमार समुदाय या उसकी उपजाति जाटव से हैं लेकिन यहां मुस्लिमों का भी स्वागत है। इसका कोई औपचारिक ढांचा नहीं है लेकिन दावा है कि सहारनपुर में तथा उसके आसपास इसके हजारों सदस्य हैं। इसका जोर दलितों के सम्मान की रक्षा, उसके बचाव और उसकी बहाली के लिए सीधी लड़ाई लड़ने पर है। यह सहारनपुर जिले में 300 से अधिक भीम आर्मी स्कूल चलाती है जहां बच्चों को जाति और लिंग से परे निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा प्रदान की जाती है। यह आत्मरक्षा की कक्षाएं भी चलाती है और दलितों को इस बात के लिए प्रोत्साहित करती है कि वे जातीय संघर्ष वाली हर जगह पर मोटरसाइकिल का जुलूस लेकर पहुंचें ताकि उच्च जातियों का मुकाबला किया जा सके।

2022 के विधानसभा चुनाव के पहले आजाद ने समाजवादी पार्टी के अखिलेश यादव से बात की ताकि किसी तरह का समझौता हो सके। बातचीत नाकाम रही क्योंकि दोनों पक्ष एक दूसरे पर भरोसा नहीं कर सके। आजाद को लगा कि समाजवादी पार्टी दलितों के वोट बैंक को इस्तेमाल करना चाहती है लेकिन उनकी समस्याओं को हल करने की इच्छुक नहीं है। उन्होंने 2024 का चुनाव अपने बूते पर लड़ने का फैसला किया। उनकी जीत दिखाती है कि एक प्रतिबद्ध नेता को रोका नहीं जा सकता है।

जाहिर सी बात है कि बहुजन समाज पार्टी उन्हें चुनौती मानती है। परंतु भीम आर्मी और आजाद समाज पार्टी दोनों तेजी से बढ़ रहे हैं जबकि बहुजन समाज पार्टी कमजोर पड़ रही है। अभी यह कहना बहुत जल्दबाजी होगी कि चंद्रशेखर आजाद के तौर तरीके और रणनीति बहुजन समाज पार्टी को कमजोर करके उसका स्थान ले सकेगी या नहीं। वह दलित हितों का प्रतिनिधित्व करने वाली एक सामाजिक शक्ति के रूप में उभरी है। परंतु अभी उसे पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बाहर एक राजनीतिक शक्ति के रूप में अपनी जगह बनानी है।

आपका पक्ष

आग से बचाव के लिए सख्त कदमों की जरूरत

आज विज्ञान ने आग बुझाने या आग न लग पाए इसके लिए बहुत से उपाय खोज लिए हैं मगर देश में आग का तांडव जारी है और समय समय पर बड़ी-बड़ी इमारतों में आग की घटनाएं सामने आ रही है। इनमें जान माल की भारी हानि भी होती है लेकिन इससे न तो लोग, न प्रशासन और न ही सरकारें सबक लेती है। आग लगने का मुख्य कारण अधिकतर बिजली के शॉर्ट सर्किट को माना जाता है। अधिकतर इमारतों में आपात-कालीन दरवाजे या खिड़कियां भी नहीं होती हैं और दमकल की गाड़ियों का इंतजाम भी समय पर नहीं हो पाता। भविष्य में अगलगी की कोई घटना न हो इसके लिए सरकारों और प्रशासन को सख्त कदम उठाने चाहिए। समय समय पर सभी अस्पतालों, मॉल, शिक्षा संस्थानों, कोचिंग संस्थानों आदि सभी इमारतों की जांच करनी चाहिए और नियमों का उल्लंघन करने वाले लोगों के प्रति सख्ती करनी चाहिए और उनकी इमारतों को पब्लिक के लिए तब तक बंद कर देना चाहिए जब तक कि वो आग के कारणों की कमियां दूर नहीं कर लेते। अगलगी की घटनाओं से बचाव के प्रति सरकार और प्रशासन के साथ-साथ आमलोगों को भी जागरूक होना पड़ेगा। इसके साथ ही लोगों को भी समय-समय पर घर के बिजली उपकरणों की जांच करवानी चाहिए और किसी भी तरह की खामी मिलने पर तत्काल उसे ठीक कराना चाहिए। घरों में बिजली के अच्छी गुणवत्ता वाली तारों का इस्तेमाल करने से भी ऐसी भयानक घटनाओं से बचा जा सकता है।

राजेश कुमार चौहान, जालंधर

बीते दिनों नई दिल्ली के एक अस्पताल में आग लग गई। हाल के दिनों में राष्ट्रीय राजधानी के अस्पतालों में आग की यह तीसरी घटना थी

बहुआयामी उपायों से ही घटनाओं को रोकना संभव

नए भवन के निर्माण के समय ही अग्नि सुरक्षा मानकों का ध्यान रखकर अग्नि प्रतिरोधक सामग्री का उपयोग करते हुए आपात-कालीन निकास मार्ग बनाना चाहिए। उच्च गुणवत्ता वाले विद्युत उपकरणों का इस्तेमाल करते हुए समय समय पर विद्युत तारों की सुरक्षा की जांच की जानी चाहिए। घर और कार्यालय में आग बुझाने वाले उपकरण रखकर समय समय पर उनकी जांच करना भी आवश्यक है। रसोईघर में गैस सिलिंडर के उपयोग के बाद गैस प्रवाह बंद करना चाहिए। इन सावधानियों से आगजनी की घटनाओं को रोका जा सकता है।

रमेशचंद्र कर्नावट, उज्जैन

अग्निरोधी भवन सामग्री का उपयोग और निरीक्षण जरूरी

राजकोट गेम जोन अग्निकांड के बाद तो यह जरूरी हो गया है कि लोगों को आग से संबंधित सूचनाओं और जागरूकता के लिए बोर्ड लगाए जाएं और वहीं पर आग बुझाने वाले उपकरणों का कैसे प्रयोग करना, उन पर एक्सपायरी डेट और उनका रखरखाव, अलार्म सिस्टम और आग निवारक सामग्री की जानकारी लिखी होना चाहिए। घर, कारखाने में उचित वायरिंग, अग्निरोधी बिल्डिंग मैटेरियल का उपयोग और नियमित निरीक्षण होना चाहिए। अग्निकांड की दशा में क्या कदम उठाए जाएं के साथ साथ सामुदायिक संगठन, स्थानीय सरकार और जनता का सहयोग भी जरूरी है।

भगवानदास छारिया, इंदौर

पाठक अपनी राय हमें इस पते पर भेज सकते हैं : संपादक, बिज़नेस स्टैंडर्ड, 4, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली 110002. आप हमें ईमेल भी कर सकते हैं : lettershindi@bsmail.in
पत्र/ईमेल में अपना डाक पता और टेलीफोन नंबर अवश्य लिखें।

देश-दुनिया

फोटो – पीटीआई

अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने शुक्रवार को पहली बार सार्वजनिक रूप से यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की से अमेरिकी सैन्य सहायता में महीनों की देरी के लिए माफी मांगी। हथियारों की आपूर्ति में देरी के कारण रूस को युद्ध के मैदान में बढ़त हासिल करने में मदद मिली।

संपादकीय

नवनिर्वाचित सांसद

एसोसिएशन ऑफ डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) के आंकड़े दर्शाते हैं कि वर्तमान लोकसभा में करोड़पति सांसदों की हिस्सेदारी 93 फीसदी हो गई है। यह पिछले चुनावों में 88 फीसदी थी। साल 2009 में करीब 58 फीसदी सांसद करोड़पति थे। साल 2014 के 14.7 करोड़ रुपये की तुलना में इस बार विजेताओं के पास औसत 46.3 करोड़ रुपये मूल्य की संपत्ति है। बदलते समय के साथ प्रत्याशियों की औसत संपत्ति में भी इजाफा हुआ है। यह साल 2024 में 6.23 करोड़ रुपये है, जो साल 2019 में 4.14 करोड़ रुपये थी। उससे पहले साल 2014 में 4.92 करोड़ रुपये और साल 2009 में 1.11 करोड़ रुपये थी। साल 2009 में सबसे अमीर प्रत्याशी वीएम सिंह थे, जिनके पास 632 करोड़ रुपये मूल्य की संपत्ति थी। साल 2014 के चुनावों में आईटी सेवा कंपनी इन्फोसिस के सह-संस्थापक नंदन नीलकेणी सबसे अमीर प्रत्याशियों में से एक थे। नीलकेणी के पास 7,710 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति थी। साल 2019 के लोक सभा चुनावों में रमेश शर्मा सबसे अमीर प्रत्याशी थे, जिनके पास कुल 1,108 करोड़ रुपये मूल्य की संपत्ति थी। इस साल 5,705 करोड़ रुपये मूल्य की संपत्ति के साथ डॉ. चंद्रशेखर पेम्मासानि सबसे धनाढ्य प्रत्याशी रहे। पीआरएस लेजिस्लेटिव रिसर्च के आंकड़ों से पता चलता है कि सभी सांसदों में से 52 फीसदी सांसदों की उम्र 55 वर्ष से अधिक है। 58 विजेता ऐसे हैं जिनकी आयु 40 साल या उससे कम है। पीआरएस लेजिस्लेटिव रिसर्च के आंकड़ों के मुताबिक, इस बार निर्वाचित सदस्यों में कॉलेज तक की पढ़ाई करने वाले अधिक है। साल 2024 में 78 फीसदी सांसद स्नातक हैं। यह साल 2019 में 72 फीसदी था। हालांकि, यह साल 2009 के 79 फीसदी से कम है। पीआरएस लेजिस्लेटिव रिसर्च के आंकड़े यह भी बताते हैं कि भारत की 18वीं लोकसभा में पिछली लोकसभा की तुलना में अधिक पुरुष हैं। अठारहवीं लोकसभा के 251 यानी 46 फीसदी नवनिर्वाचित सांसदों के खिलाफ आपराधिक मामले चल रहे हैं। इनमें से 170 यानी 31 प्रतिशत पर दुष्कर्म, हत्या, हत्या का प्रयास, अपहरण व महिलाओं के विरुद्ध अपराध समेत गंभीर मामले दर्ज हैं। 27 को दोषी भी ठहराया गया है। यह दावा एसोसिएशन ऑफ डेमोक्रेटिक रिफॉर्म (एडीआर) ने अपनी रिपोर्ट में किया है। निचले सदन में चुने गए आपराधिक मामलों वाले सांसदों की यह सबसे अधिक संख्या है। एडीआर के मुताबिक, चार सांसदों पर हत्या और 27 पर हत्या के प्रयास के मामले हैं। 15 सांसदों के खिलाफ महिलाओं से जुड़े अपराध का मामला है, इनमें से दो दुष्कर्म के आरोपी हैं। इसके अलावा चार सांसदों पर अपहरण व 43 पर नफरती भाषण का मामला दर्ज है। भाजपा के 240 में से 94 यानी 39 फीसदी सांसदों ने अपने खिलाफ आपराधिक मामलों की घोषणा की है। कांग्रेस के 49 सांसदों व सपा के 21 सांसदों के खिलाफ आपराधिक केस हैं। तृणमूल कांग्रेस व द्रमुक के 13-13, टीडीपी के आठ व शिवसेना के पांच सांसदों पर आपराधिक मामले हैं। राजद के चारों सांसदों पर गंभीर मामले दर्ज हैं। उत्तर प्रदेश के 50 प्रतिशत यानी 40 सांसदों के खिलाफ आपराधिक मामले हैं। इनमें से 34 पर गंभीर मामले हैं। चार सांसदों यूपी के गाजीपुर से सपा के अफजाल अंसारी, महाराष्ट्र में भाजपा के श्रीमत चौधरी उदयनराजे, प्रतापसिंह महाराज भोसले और आंध्र प्रदेश के वाईएस अविनाश रेड्डी पर हत्या के मामले हैं। इस बार चुनी गई 16 फीसदी महिला सांसद 40 वर्ष से कम उम्र की हैं। 30 (41 फीसदी) फिर से लोकसभा के लिए चुनी गई हैं। इस बार 74 महिला प्रत्याशियों ने जीत हासिल की है। 2019 में 17वीं लोकसभा में यह संख्या 78 थीं। पिछली लोकसभा ने महिला आरक्षण का जो कानून बनाया है, उसके हिसाब से 33 फीसदी यानी करीब 180 सीटें महिलाओं को मिलनी चाहिए, लेकिन फिलहाल 14 फीसदी सीटें ही महिलाओं को मिली हैं।

जिस देश की 80 प्रतिशत जनसंख्या को सरकार मुफ्त में राशन दे रही है, जहां 20 करोड़ लोग अभी भी गरीबी रेखा के नीचे हैं, जहां बेरोजगारी और गरीबी बड़े मुद्दे हैं, उस देश के सांसदों में 93 प्रतिशत करोड़पति हैं और अधिकतर सांसदों पर आपराधिक मुकद्दमे भी दर्ज हैं। उपरोक्त तथ्यों से समझा जा सकता है कि भारतीय राजनीति में धनबल और बाहुबल आज भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इसके अलावा जातिवाद भारत की राजनीति की दिशा और दशा को प्रभावित करता है।

धनबल, बाहुबल और जातिवाद से अगर राजनीति को मुक्त करना है तो हमें देश के शिक्षा ढांचे को मजबूत करना होगा। शिक्षित व जागरूक नागरिक ही देश की राजनीति को धनबल, बाहुबल व जातिवाद के प्रभाव से मुक्त नहीं तो इनका प्रभाव कम कर ही सकता है।

-इरविन

महासागर रक्षा संकल्प दिवस है विश्व महासागर दिवस

मानव संस्कृति में समुद्र अर्थात सागर का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। समुद्र का शाब्दिक अर्थ जलराशि का एकत्रित रूप है। इस पृथ्वी को चारों ओर से घेरे हुए जलराशि को ही समुद्र की संज्ञा दी गई है। समुद्र शब्द संस्कृत से प्रभावित विभिन्न भाषाओं में मिलता है। सागर इस पृथ्वीतल के प्रायः तीन चतुर्थांश (3/4) में व्याप्त है। महासागर जल के किसी भी बड़े निकाय को कहा जाता है, जिसमें विश्व महासागर पारंपरिक रूप से विभाजित है।सागर पृथ्वी के सभी महासागरों का समन्वय है, जिसके अन्तर्गत प्रशान्त (वृहत्तम), अटलाण्टिक, भारतीय, दक्षिणी और उत्तरध्रुवीय महासागर (क्षुद्रतम) आते हैं।पृथ्वी के लगभग 70.8 प्रतिशत भाग में विस्तृत महासागर लवणीय जल का पिण्ड है, जिसमें पृथ्वी का 97 प्रतिशतजल समाहित है। भारतीय संस्कृति में सागर को एक देव के रूप में मान्यता प्राप्त है। पौराणिक कथाओं में सागर को विभिन्न रूपों में प्रदर्शित किया गया है। सागर के अन्य नामों में समुद्र, जलधि, जलनिधि, नीरनिधि, उदधि, पयोधि, नदीश, तोयनिधि, कम्पती, वारीश, अर्णव आदि प्रमुख हैं। चंद्रमा के घटने -बढ़ने का समुद्र के जल पर विशेष प्रभाव पड़ता है। इसके कारण ही ज्वार भाटा आता है। पौराणिक ग्रंथों में समुद्र की उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक कथाएं अंकित हैं। भारतीय मान्यतानुसार आदि सृष्टि काल में जल से विष्णु की नाभि से निकले एक कमल पुष्प से सृष्टिकर्ता ब्रह्मा की उत्पति हुई। तत्पश्चात मनुष्यों की सृष्टि हुई। आधुनिक विज्ञान के अनुसार भी जीवन की उत्पत्ति सर्वप्रथम समुद्र के जल में हुई थी। पौराणिक मान्यतानुसार अति प्राचीन काल में देव व असुरों द्वारा समुद्र मंथन किए जाने से चौदह रत्नों की प्राप्ति हुई थी। सब प्रकार के रत्नों के समुद्र से ही निकलने के कारण उसे रत्नाकर की संज्ञा दी गई है। वैदिक, पौराणिक ग्रंथों में समुद्र की महता, प्रशंसा, उपयोगिता, आवश्यकता व हर युग में प्रासंगिकता का अतिशय मनोरम शब्दों में महिमागान की गई है। पौराणिक ग्रंथों में समुद्र को सात भागों में बांटा गया है-लवण का सागर, इक्षुरस का सागर, सुरा का सागर, घृत का सागर, दधि का सागर, क्षीर का सागर और मीठे जल का सागर। दधि सागर का अर्थ दही का सागर नहीं, सुरा सागर का अर्थ किसी मदिरा का सागर नहीं, अपितु उस तरह की प्रकृति का सागर माना गया है। पौराणिक ग्रंथों में समुद्र को देवता माना गया है। समुद्र की पत्नी का नाम मही था। मान्यता है कि समुद्र देव और मही नदी का विवाह गुजरात के वेराखाडी गांव में हुआ था। ऋग्वेद में समुद्र शब्द 133 बार आया है। इससे स्पष्ट है कि अत्यंत प्राचीन काल से से ही भारतीयों का समुद्र से नाता, संबंध रहा है। वेद, रामायण, महाभारत, सूत्र-ग्रंथ, पुराण, बौद्ध जातक आदि प्राचीन ग्रंथों में समुद्र के संबंध मे अंकित विवरणियों में इस बात के प्रमाण मौजूद हैं कि

प्राचीन भारतीय व्यापार, धर्मप्रचार, जलयुद्ध आदि के लिए समुद्रयात्रा करते थे। वैदिक और पौराणिक ग्रंथों के अध्ययन से इस बात की पुष्टि होती है कि प्राचीन भारतीय व्यापार, धर्मप्रचार, युद्ध या उपनिवेशस्थापना आदि के लिए, जल-स्थल दोनों ही मार्गों के द्वारा अनेक देशों में गमनागमन करते थे। वे समुद्रयात्रा

अशोक प्रवृद्ध

किया करते थे। उनके पास जहाज़ थे। संसार का भौगोलिक वृत्तान्त भी उन्हें बखूबी पत्ता था। वे सभ्य, साहसी, उदार, व्यापारकुशल, शिल्पकलानिपुण, वीर और अध्यवसायशील थे। उस समय के प्रायः सभी सभ्य और अर्द्धसभ्य देशों से उनका सम्बन्ध था। संसार के प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद के अनेक मंत्रों में प्राचीन भारतीयों के व्यापार आदि के लिए समुद्र की राह चलने का वर्णन करते हुए कहा गया है कि प्राचीन भारतीय व्यापार आदि कार्यों के लिए अन्य देशों को जाते थे। ऋग्वेद 1/25/7 के अनुसार समुद्र में जिस रास्ते जहाज चलते हैं, उसका पूर्ण ज्ञान वरुण को है। ऋग्वेद 1/48/3 के अनुसार लोभ के वशीभूत होकर व्यापारी लोग अपने अपने जहाज विदेशों को ले जाते हैं। ऋग्वेद 1/56/2 के अनुसार व्यापारी बड़े ही कर्मशील हैं, वे अपने लाभ के लिए सब जगह जाते हैं। समुद्र का ऐसा कोई भी हिस्सा नहीं, जहाँ वे न गये हों। ऋग्वेद 7/88/3-4 के अनुसार अत्यंत उन्नत कला कौशल से निर्मित अर्थात बड़ी कारीगरी से बनाई गई एक जहाज़ पर सवार होकर वशिष्ठ और वरुण समुद्रयात्रा करने गये थे। उन्हें उसके हिलकोलों अर्थात हिलने से बडा आनन्द आया था। ऋग्वेद 1/166/3 के अनुसार राजर्षि तुग्र नेसुदूर-द्वीप-निवासी अपने कुछ शत्रुओं पर आक्रमण करने के लिए अपने पुत्र भुज्यु को जलसेना के साथ भेजा था। रास्ते में तूफ़ान आ जाने से जहाज़ टूट गया। इस कारण भुज्यु अपने साथियों समेत, समुद्र में डूबने लगा। वहाँउस समयउसे उसविपत्ति से बचानेवाला कोई न था। परन्तु दैव-योग से अश्विनौ कुमार नामक जुड़वां भाइयों ने वहाँ आकर उसकी रक्षा की और वह जहाज डूबने से बच गया। अन्य वेदों में भी नौयान अर्थात जहाज, नौका निर्माण, सामुद्रिक आवागमन में उसके उपयोग तथा अन्य प्रयोग के विस्तृत वर्णन प्राप्य हैं।

उल्लेखनीय है किइस ग्रह के लगभग 361,000,000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में समुद्री जल विस्तृत है। महासागर पृथ्वी के जलमण्डल का प्रमुख घटक है। इसलिए यह पृथ्वी पर जीवन का अभिन्न अंग है। विशाल ताप भण्डार के रूप में कार्य करते हुए महासागर जलवायु और मौसम के स्वरूप, कार्बन चक्र और जल चक्र को प्रभावित करता है। समुद्री जल में ऑक्सीजन, कार्बन डाईऑक्साइड और नाइट्रोजन सहित बड़ी मात्रा में घुली हुई गैसें होती हैं। यह गैस विनिमय समुद्र की सतह पर होता है और विलेयता जल के तापमान और लवणता पर निर्भर करती है। जीवाश्म ईंधन के दहन के कारण वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड की बढ़ती सान्द्रता समुद्री जल में उच्च सान्द्रता की ओर ले जाती है, जिसके परिणामस्वरूप महासागरीय अम्लीकरण होता है। महासागर समाज को जलवायु नियमन सहित महत्वपूर्ण पर्यावरणीय सेवाएं प्रदान करता है। यह व्यापार, परिवहन और भोजन और अन्य संसाधनों तक अभिगमन का साधन भी प्रदान करता है। इसे 2.3 लक्षाधिक प्रजातियों के आवास के रूप में जाना जाता है। अभी भी इसमें बढ़ोतरी की आशंका व्यक्त की जाती है, औरइसके बीस लक्षाधिक प्रजातियों तक शामिल हो सकने के अनुमान भी लगाए जाते हैं। वर्तमान मेंमहासागर समुद्री प्रदूषण, अत्यधिक मत्स्याखेट, महासागरीय तापमान वृद्धि, महासागरीय अम्लीकरण, समुद्र तल परिवर्तन आदि के कारण जलवायु परिवर्तन के प्रभावआदिकई मानवजनित पर्यावरणीय संकटों के परिणामस्वरूप संकटग्रस्त हैं। मानवीय गतिविधियों से महाद्वीपीय मग्नतट, तटीय जल सबसे अधिक प्रभावित और असुरक्षित होते हैं। भारत में प्राचीन काल से ही महासागर के संरक्षण, संवर्द्धन के लिए अनेक उपाय किए जाते रहे हैं। परंतु बाद में इन उपायों के कार्यान्वयन के प्रति लोगों की लापरवाही के कारण महासागरों पर कई प्रकार से संकट के बादल मंडराने लगे हैं। महासागरों को इन संकटों से बचाने के लिए जनजागरूकता की आवश्यकता है। इसीलिए महासागरों की रक्षा तथा उनके स्वाभाविक रूप से होने वाले सार को संरक्षित करने और संसार के महासागरों के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए 2008 सेसंयुक्त राष्ट्र संघ की पहल पर आधिकारिक तौर पर प्रतिवर्ष 8 जून को विश्व महासागर दिवस वैश्विक स्तर पर मनाया जाता है।

पंजाब में नहीं चला दलबदलू फैक्टर

इस बार लोकसभा परिणाम जहां चौंकाने वाले रहे वहीं बड़े-बड़े राजनीतिक पंडितों के दावे और सर्वेक्षण भी धराशायी हुए हैं। इन चुनावों में ताबड़तोड़ चुनाव प्रचार, चुनावी वादे, छल-कपट, बाहुबल और मनोवैज्ञानिक प्रभाव सब जनमत के आगे झुकते नजर आए हैं। यही वजह है कि कुछ क्षेत्रीय पार्टियों का फिर से उभार हुआ है जबकि कई कद्दावर नेताओं व सत्ता सुख भोग रहे मंत्रियों का बंटाधार हुआ है। ठीक चुनाव से पहले या चुनाव के दौरान दलबदलूओं का हश्र तो ओर भी बुरा हुआ है।

पंजाब की ही बात करें तो यहां जनता ने मोदी फैक्टर को पूरी तरह से नकार दिया है। वहीं कांग्रेस पर भरोसा कामय करते हुए 13 में से 7 सीटें जनता जनार्दन ने उनकी झोली में डाली हैं। उधर गठबंधन का साथ छोडक़र अकेले मैदान में उतरी भाजपा अपना खाता भी नहीं खोल पाई है। हालांकि एग्जिट पोल में उनको दो से चार सीटों का फायदा दिखाया गया था। मोदी ने पंजाब में धुआंधार चार चुनाव रैलीयां कीं, लेकिन एक भी सीट हासिल करने में नाकामयाब रहे जबकि 2019 में पार्टी ने दो सीटें जीती थी। दुसरा, किसान आंदोलन भी भाजपा की हार की बड़ी वजह रहा। किसानों का विरोध झेल रही भाजपा यहां कोई कमाल नहीं दिखा पाई। उसके प्रत्याशियों को पंजाब में विशेष कर ग्रामीण क्षेत्रों में पग-पग पर किसानों के रोष का सामना करना पड़ा। तीसरा, अन्य दलों से भाजपा में शामिल हुए वहरुपीए नेता भी लोगों का दिल नहीं जीत पाए।

इस बार फिर से पंजाब की जनता ने कांग्रेस पर भरोसा जताया। सात सीटें कांग्रेस को देते हुए लोगों ने उस पर यकीन बनाए रखा है। हालांकि, पिछली बार पार्टी को आठ सीटें मिली थीं। शुरू में क्यास लगाए जा रहे थे कि कांग्रेस चुनाव प्रचार में पिछड़ती जा रही है क्योंकि उसके दो तीन बड़े नेता भाजपा ने खींच लिए थे। दूसरी तरफ उसे अनुभवी प्रत्याशी ढूंढने में भी काफी टाइम लगा। फिर भी पार्टी की मेहनत रंग लाई और उसके प्रत्याशी जालंधर, गुरदासपुर और अमृतसर में अच्छे मार्जिन से जीते हैं।

भले ही सताधारी आम आदमी पार्टी ने 2019 के मुकाबले अपने जीत के आंकड़े को सुधार कर एक से तीन कर लिया है। लेकिन वह 2022 के विधानसभा चुनाव जैसा उत्कृष्ट प्रदर्शन नहीं कर पाई। सीएम मान के गृह जिला संगरूर से पंजाब के मंत्री मीत हेयर ही जीतने में कामयाब हो पाए हैं, जबकि बाकी चार मंत्रियों को हार का सामना करना पड़ा है। आप दल की कुल दस सीटों पर हार हुई है। इसकी मुख्य वजह विधानसभा चुनाव के समय लोगों से किए वायदे पूरे ना होना, नशों पर लगाम न लगना और कानून व्यवस्था ठीक ना होना है।

हेमंत चौहान

वहीं, क्षेत्रीय पार्टी शिरोमणि अकाली दल ने अपना एक गढ़ फिरोजपुर खो दिया है, जबकि बठिंडा सीट बचाने में पार्टी कामयाब हुई है। शिअद को एक ही सीट से संतोष करना पड़ा है। उसके बाकी सभी उम्मीदवार वोटों के मामले में चौथे नंबर पर रहे हैं। बड़े बादल प्रकाश सिंह के बिना यह चुनाव सुखबीर सिंह बादल के लिए किसी चुनौती से कम नहीं था। भले ही उनके साथ पंथक नेता कम ही जुड़े परंतु वे पंजाब बचाओ यात्रा पर अकेले ही अंत तक डटे रहे।

चौंकाने वाले परिणाम में पटियाला से पूर्व सीएम कैप्टन अमरिंदर सिंह की पत्नी परनीत कौर, लुधियाना से रवनीत बिट्टू और जालंधर से सुशील रिंकू को दलबदल का खामियाजा भुगतना पड़ा है। क्योंकि उन्हें जनता ने पूरी तरह नकार दिया है। पूरे पंजाब में सबसे ज्यादा वोटों के अंतर से कांग्रेस के पूर्व मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी ने जीत दर्ज की। चन्नी ने कुल 3,90,053 वोट हासिल किए और अपने प्रतिद्वंदी रिंकू को 1,75,993 वोट से हराया।

पटियाला से कांग्रेस के डॉ. धर्मवीर गांधी ने जीत दर्ज की। गांधी को 3,03,772 वोट पड़े। बड़ी बात ये कि गांधी का मुकाबला यहां आप के मंत्री डॉ. बलबीर सिंह के साथ रहा। गांधी ने डॉ. बलबीर को 14,498 वोट से हराया। कांग्रेस का गढ़ कहे जाने वाली पटियाला सीट पर लोकसभा चुनाव में पूर्व सीएम कैप्टन अमरिंदर सिंह की पत्नी परनीत कौर के कांग्रेस को छोडक़र भाजपा में शामिल होने को बड़े सियासी बदलाव के तौर पर देखा जा रहा था। सियासी दिग्गज इस फेरबदल को कांग्रेस का गढ़ कही जाने वाली पटियाला सीट को भगवें रंग में रंगने का अनुमान लगाए बैठे थे। परन्तु हालत ये रहे कि परनीत कौर तीसरे पायदान पर रहीं। बता दें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी पहली रैली यहीं की थी। लेकिन लोगों के जनाधार ने साबित कर दिया कि पटियाला आज भी कांग्रेस का गढ़ है।

पंजाब में इस चुनाव से कुछ रोचक तथ्य भी ऊपर कर सामने आए हैं। बेशक कांग्रेस ने 7 सीट जीती हैं। लेकिन उसका वोट शेयर कम हुआ है। 2019 में कांग्रेस का वोट शेयर 40.12 प्रतिशत था लेकिन इस बार यह घटकर 26.300 प्रतिशत रह गया है। भले ही भारतीय जनता पार्टी पंजाब में कोई सीट नहीं खींच पाई। परंतु उसका वोट प्रतिशत बड़ा है। 2019 में भाजपा का वोट शेयर 9.63त्न था जो अब बढ़कर 18.56 प्रतिशत हो गया है। यह शिरोमणि अकाली दल से भी ज्यादा है। वैसे भी भाजपा का ज्यादा फोकस मत प्रतिशत बढ़ाने पर था। क्योंकि उसकी नजर पंजाब में 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव पर है।

उधर आप पार्टी के वोट शेयर में भी भारी उछाल आया है भले ही उसे तीन सीट से संतुष्टि करनी पड़ी है। 2019 में आपका वोट शेयर केवल 7.38 प्रतिशत था जो अब बढ़कर 26.02 प्रतिशत हो गया है। आपका वोट शेयर इतना शूट कर जाने के पीछे उनके 92 विधायकों की ताकत भी है। इसके उल्ट पंथक पार्टी अकाली दल का वोट शेयर आधा रह गया है। इस बार अकाली दल को 13.42त्न वोट शेयर ही मिला है जबकि 2019 में यह 27.45त्न था।

भविष्य में क्षेत्रीय पार्टी शिरोमणि अकाली दल का वोट शेयर ओर गिरने की आशंका है। क्योंकि 26 साल बाद दो गर्म विचारधारा वाले आजाद उम्मीदवार चुनाव में जीते हैं। खंडुर साहिब सीट से अमृतपाल सिंह, जो इस समय डिब्रूगढ़,असम की जेल में है। उसने सबसे ज्यादा 1,97,120 वोटों के अंतर से जीत हासिल कर सभी को चौका दिया है। इसी तरह इंदिरा गांधी की हत्या करने वाले बेअंत सिंह का बेटा सरबजीत सिंह खालसा फरीदकोट सीट से विजयी हुआ है। पंजाब की पंथक व क्षेत्रीय राजनीति में यह एक बड़ा घटनाक्रम है। क्योंकि यह दोनों निर्दलीय उम्मीदवारों की जीत में अकाली दल का वोट ही शिफ्ट हुआ है। इस नुकसान की भरपाई शिरोमणि अकाली दल कैसे कर पाएगा यह उसके लिए बड़ी चुनौती रहेगी।

(लेखक चुनावी विश्लेषक हैं)
7087127903

सद्कर्तव्य

बड़ी मुश्किल से मानव जीवन मिलता है। इसलिए ऐसे जीनव को व्यर्थ नहीं करना चाहिए, बल्कि इस जीवन में जितने सद्कर्तव्य किए जाएं उतना अच्छा। पुरुषार्थ किए बगैर भाग्य का निर्माण नहीं हो सकता। मौजूदा संदर्भ में एक सवाल यह उठता है कि कर्म का चयन कैसे किया जाए कि किस व्यक्ति को क्या कर्म करने है? विद्वान कहते है कि अपनी जिम्मेदारियों को निष्काम भाव से निभाना ही कर्म है और सद्कर्तय है। शास्त्रों के अनुसार हर व्यक्ति के कर्तव्य तय है। शिक्षक को अपने छात्र के प्रति, नेता को राष्ट्र के प्रति, पति को अपनी पत्नी और बच्चों के प्रति, दुकानदार को अपने ग्राहक के प्रति ईमानदार व समर्पित होना चाहिए। सिकंदर और पोरस में युद्ध चल रहा था। सिकंदर को सूचना मिली कि शत्रु देश का एक साधु अपनी जड़ी बूटियों से उसके घायल सैनिकों का उपचार कर रहा है। सिकंदर ने उस साधू से मुलाकात की और पुछा कि तुम शत्रुओं की सेवा क्यों कर रहे हो? साधु ने मरी हुई एक चीटी उठाई और पूछा-क्या तुम इसे जीवित कर सकते हो? जब सिकंदर ने इसका उत्तर नहीं में दिया तो साधु ने कहा जब तुम एक चींटी तक को प्राण दे नहीं सकते तो अनगिनत मनुष्यों के प्राण लेने का तुम्हें क्या अधिकार है। शास्त्रों में लिखा है कि आपके हर कर्म का फल इसी जीवन में मिलता है। यानी बबूल के पेड़ बोने पर आम की लालसा नहीं रखनी चाहिए। सद्कर्तव्य और कुछ नहीं, बल्कि मानव धर्म का पालन करना है। महर्षि दयानंद किसी स्थान पर विराजमान थे। उन्होंने देखा कि एक मजदूर सामान से लदे एक ठेले को चढ़ाई पर ले जा रहा है। भार अधिक होने के कारण मजदूर प्रयास करने के बावजूद ठेले को आगे बढ़ा पा रहा है। इससे नाराज उसका मालिक बेंत से उसे पीट रहा है। महर्षि दयानंद उठे और ठेला आगे नहीं बढ़ाने में उस मजदूर की मदद करने लगे। उन्हें सफलता मिल गई, लेकिन यह नजारा देखकर सेठ हाथ जोड़कर दयानंद के सामने खड़ा हो गया। दयानंद ने उससे कहा कि यह तो उनका कर्तव्य व धर्म था। हम जैसा कर्म करेंगे वैसा ही फल हमें मिलेगा। अगर हमारे कर्म अच्छे होंगे तो इससे न केवल हमारा अपना व्यक्तित्व बेहतर होगा बल्कि हमारे आस-पास का वातावरण भी सुधरेगा। अक्सर हम अपने स्वार्थ में सद्कर्मो की अनदेखी कर देते हैं।

मंथन

इंद्रधनुष

फिटनेस मंत्रा

जामुन औषधीय गुणों से भरपूर

जामुन गर्मियों में खाए जाने वाला एक स्वादिष्ट फल है। यह फल मई और जून के महीने में देखने को मिलता है। जामुन अपने मीठे स्वाद के साथ-साथ कई औषधीय गुणों से भरपूर होते हैं। डॉक्टर चंद्र प्रकाश दीक्षित बताते है की जामुन खाने के कई अनगिनत स्वास्थ्य लाभ होते हैं। जैसे पेट दर्द, डायबिटीज, गठिया, पाचन संबंधी कई अन्य समस्याओं को ठीक करने में काफी लाभकारी फल होता है। भरतपुर के आयुर्वेदिक डॉक्टर चंद्रप्रकाश दीक्षित बताते हैं कि मौसम के हिसाब से हमें हर फल खाना चाहिए क्योंकि यह हमारे शरीर के लिए काफी फायदेमंद के होता है। विशेषकर यह फल मौसम के हिसाब से शरीर के लिए फायदा करता है। अब भरतपुर के बाजारों में जामुन फल काफी अधिक मात्रा में देखने के लिए मिल रहा है। लोग इसे काफी पसंद कर रहे हैं, क्योंकि यह फल खाने में स्वादिष्ट होने के साथ शरीर के लिए अत्यंत लाभकारी होता है। यह फल बाजार में दो से तीन महीने ही देखने के लिए मिलता है। आयुर्वेद डॉक्टर चंद्रप्रकाश दीक्षित बताते हैं कि इस फल में काफी पोषण तत्व होते हैं। साथ ही साथ यह फल शरीर में होने वाली बीमारियां जैसे की खून की कमी को पूरा करता है। त्वचा की समस्याओं को दूर करता है। मोटापे को कम करता है। इम्यूनिटी बूस्ट करता है। दिल के लिए भी फायदा करता है एवं विशेष कर डायबिटीज के लिए काफी लाभकारी फल होता है।

ट्रैंड में

ले ट्रैवेन्यूज टेक्नोलॉजी का आईपीओ 10 जून को खुलेगा

ले ट्रैवेन्यूज टेक्नोलॉजी लिमिटेड (आईएक्सआईजीओ) का आईपीओ 10 जून को खुलेगा। कंपनी की ओर से गुरुवार को यहां जारी बयान में कहा है कि ले ट्रैवेन्यूज़ टेक्नोलॉजी लिमिटेड (इक्सिगो) का आईपीओ सब्सक्रिप्शन के लिये 10 जून को खुलेगा और 12 जून को बंद होगा। प्राइस बैंड 88 प्रति इक्विटी शेयर से 93 रुपये प्रति इक्विटी शेयर तय किया गया है। न्यूनतम 161 इक्विटी शेयरों के लिये और उसके बाद 161 इक्विटी शेयरों के गुणकों में बोलियां लगाई जा सकती हैं।

कुल ऑफर साइज़ में एक रुपया मूल्य के इक्विटी शेयरों का नया निर्गम शामिल है, जो कुल 120 करोड़ रुपये तक है। इसमें विक्रय शेयरधारकों द्वारा एक रुपया अंकित मूल्य के 66,677,674 इक्विटी शेयरों की बिक्री के लिये ऑफर फॉर सेल भी शामिल है।

प्रेरक प्रसंग

सिर्फ अहंकार ही व्यर्थ है

एक ऋषि के पास एक युवक ज्ञान के लिए पहुंचा। ज्ञान प्राप्ति के बाद शिष्य ने गुरु दक्षिणा में गुरु को कुछ देना चाहा। गुरु ने दक्षिणा के रुप में वह चीज मांगी जो बिल्कुल व्यर्थ हो। शिष्य व्यर्थ चीज की खोज में निकल पड़ा। उसने मिट्टी की ओर हाथ बढ़ाया तो मिट्टी बोल पड़ी कि तुम मुझे व्यर्थ समझ रहे हो। क्या तुम्हें पता नहीं कि इस दुनिया का सारा वैभव मेरे ही गर्भ में प्रकट होता है? ये विविध वनस्पतियां, ये रुप, रस और गंध सब कहां से आते हैं? शिष्य आगे बढ़ गया। थोड़ी दुरी पर उसे एक पत्थर मिला। शिष्य ने सोचा, इसे ही ले चलूं। जैसे ही उसे लेने के लिए हाथ बढ़ाया, तो पत्थर से आवाज आई। तुम इतने ज्ञानी होकर भी मुझे बेकार क्यों मान रहे हो? तुम अपने भवन और अट्टलिकांए किससे बनाते हो? तुमहारे मंदिर में किसे गढ़ कर देव प्रतिमाएं स्थापित की जाती हैं? मेरे इतने उपयोग के बाद भी तुम मुझे व्यर्थ मान रहे हो? यह सुनकर शिष्य ने फिर अपना हाथ खींच लिया। वह सोचने लगा जब मिट्टी और पतथर इतने उपयोगी हैं तो आखिर व्यर्थ क्या हो सकता है। उसके मन से आवाज आई कि सृष्टि का हर पदार्थ अपने आप में उपयोगी है तो ऐसा क्या है जो मैं गुरु जी को दक्षिणा में दे सकूं। रास्ते में उसे एक संत मिले। युवक ने उन्हें अपनी बात बताई। संत मुस्कुराए और युवक से कहा- ऐसा नहीं है कि व्यर्थ की चीजें सिर्फ वे होती है जिनका सीधे तौर पर आपके जीवन में कोई कार्य नहीं होता बल्कि व्यर्थ की चीजें वे हैं जिनसे किसी का कोई भला नहीं हो सकता। वस्तुतः व्यर्थ और तुच्छ वह है जो दूसरे को व्यर्थ और तुच्छ समझता है। व्यक्ति के भीतर का अहंकार ही एक ऐसा तत्व है जिसका कहीं कोई उपयोग नहीं। यह सुरकर शिष्य सीधा गुरु जी के पास गया और उनके पैरों में गित पड़ा। वह दक्षिणा में अपना अहंकार देने आया था।

हंसगुल्ले

■ पप्पू ने घर का दरवाजा निकाला और कंधे पर रख कर बाजार गया...एक आदमी ने पूछा, ''ओ भाई! क्या दरवाजा बेचना है?'' पप्पू, ''नहीं... ताला खुलवाना है..चाबी गुम हो गई है...'' आदमी, ''अगर घर में चोर घूस गया तो...?'' पप्पू, ''अरे बेवकूफ..! वो अंदर कैसे जाएगा...दरवाजा तो मेरे पास है?''

■एक यात्री ट्रेन से उतरा, उसने गोलू से पुछा, ''यह कौन सा स्टेशन है भाई?'' गोलू जोर से हंसा, हंसते-हंसते बड़ी मुश्किल से अपने आपको संभालते हुए बोला कि, ''अबे बेवकूफ, यह रेलवे स्टेशन है..।''

उत्तम हिन्दू में राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक लेख और अन्य साहित्य सामग्री प्रकाशित करवाने के इच्छुक लोग कृपया इस मेल आईडी lekhuttamhindu@gmail.com पर अपनी प्रकाशन सामग्री भेजें।

https://t.me/AIWC

संवाद
नवभारत टाइम्स
नवभारत टाइम्स । नई दिल्ली। शनिवार, 8 जून 2024

राजस्थान में भारतीय जनता पार्टी को उसका अति आत्मविश्वास ले डूबा
ऐसे खुला कांग्रेस का भाग्य

विजय विद्रोही

दिसंबर 2023 में विधानसभा चुनावों में हार के बाद राजस्थान में कांग्रेस नेता सदमे में थे। जनवरी में राम मंदिर का भव्य उद्घाटन हुआ तो कांग्रेसियों के चेहरे और भी लटक गए। तमाम बड़े नेताओं को लगा कि आलाकमान लोकसभा चुनाव लड़ने को कह सकता है, तो उन्होंने बहाने बनाने शुरू कर दिए। सभी को लग रहा था कि BJP लगातार तीसरी बार राजस्थान में सभी 25 सीटें निकाल लेगी।

बदला माहौल | लेकिन राजनीति अचानक बदल गई, जब BJP ने चूरू लोकसभा सीट से सांसद राहुल कस्वां का टिकट काटने की घोषणा की। कस्वां चले गए कांग्रेस में, जिसने उन्हें टिकट देने में देर नहीं की और देखते ही देखते माहौल बदलने लगा। इस घटना ने कांग्रेस के लिए ट्रिगर का काम किया। पार्टी को लगा कि इस बार कम से कम खाता तो खोला ही जा सकता है। इसके बाद जो हुआ वह सबके सामने है।

दिग्गजों को झटका | BJP मेवाड़, मारवाड़ और हाड़ोती में जीती। कांग्रेस ने शेखावाटी, पूर्वी राजस्थान और उत्तर में परचम लहराया। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा अपने गृह क्षेत्र भरतपुर में भी BJP को जीत नहीं दिला सके। सचिन पायलट अपने पांच-पांच समर्थकों को लोकसभा भिजवाने में कामयाब रहे। अशोक गहलोत पूरा जोर लगाने के बाद भी अपने बेटे वैभव को सिरोही जालौर में जितवा नहीं सके। भजनलाल सरकार के 11 मंत्री अपने-अपने इलाके में पार्टी का भला करने में असफल रहे।

सबक नहीं लिया | BJP को राजस्थान में 25 में से 14 लोकसभा सीटें ही मिलीं। कांग्रेस अपने दम पर 8 और साथियों के बल पर 11 सीटें जीतने में कामयाब रही।

बीजेपी को सियासी झटका
- पार्टी वोट शेयर में भारी गिरावट
- नहीं सधे जातिगत समीकरण
- बाहरियों की एंट्री से नाराजगी

BJP के वोट 9.22% कम हो गए, जो देश में सबसे ज्यादा है। दिलचस्प बात है कि दिसंबर में हुए विधानसभा चुनावों की तर्ज पर ही लोकसभा चुनावों में भी वोटिंग हुई। कांग्रेस गठबंधन इस बार जहां जीता, उन्हीं इलाकों में विधानसभा चुनाव के दौरान BJP पिछड़ी थी। उधर, कांग्रेस ने शुरू से खुद को कमजोर माना और पहली बार तीन सीटों पर गठबंधन किया। नागौर, सीकर और बांसवाड़ा सीट साथियों के लिए छोड़ी गई और तीनों सीटों पर कांग्रेस को जीत मिली।

अपनों की नाराजगी | कांग्रेस ने BJP से आयातित दो नेताओं को टिकट दिया था। एक जीता, एक हारा। दूसरी ओर BJP ने कांग्रेस से आए दो नेताओं को चुनाव लड़ाया और दोनों हार गए। BJP ने अपने दरवाजे खोल दिए। छोटे, बड़े, मझोले किस्म के करीब आठ हजार नेताओं के गले में भगवा पट्टा डाल दिया। लेकिन, इसका उसे खामियाजा ही भुगतना पड़ा। BJP और आरएसएस के स्थानीय कार्यकर्ता खुद की उपेक्षा से नाराज हो घर बैठ गए। BJP ने 2019 में 23 सीटों पर 50% से ज्यादा वोट हासिल किए थे, इस बार वैसा कारनामा सिर्फ 12 जगह दोहरा पाई।

अंतर घटा | लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला कोटा से मात्र 41 हजार वोटों से जीते। जयपुर ग्रामीण जैसी बेहद सुरक्षित सीट BJP सिर्फ 1600 वोटों से जीत सकी। जयपुर शहर की सीट पर कांग्रेस उम्मीदवार प्रताप सिंह खाचरियावास प्रचार करने बहुत कम निकले, लेकिन फिर भी पांच लाख वोट हासिल करने में कामयाब हो गए।

जातिगत समीकरण | राजस्थान में जाट, राजपूत, मीणा (आदिवासी), गुर्जर (OBC), मेघवाल (दलित) जैसी प्रमुख जातियां हैं। कांग्रेस ने बड़ी कुशलता से इन सभी जातियों को साधा। यही नहीं, साथ में उसे 9% मुस्लिमों का एकतरफा समर्थन मिला। लंबे समय बाद जाट वोट BJP से खिसककर कांग्रेस की झोली में गया।

नारे ने डुबोया | 400 पार का नारा BJP को डुबो गया। नरेंद्र मोदी के चेहरे से आतंकित कांग्रेस पहले ही स्थानीय मुद्दों पर चुनाव लड़ रही थी। महंगाई, बेरोजगारी का तड़का लगाया जा रहा था, लेकिन बात बन नहीं रही थी। बात बनी जब 400 पार के नारे का तोड़ संविधान बदलने और आरक्षण खत्म करने की आशंका में तलाशा गया। पीएम मोदी ने राजस्थान के ही बांसवाड़ा में मंगलसूत्र पर बयान दिया था, जिसने मुस्लिमों को एकजुट कर दिया।

भितरघात का शिकार | BJP चुनाव में बिना प्रदेश प्रभारी और बिना प्रदेश संगठन महामंत्री के उतरी। इससे साफ है कि सब कुछ दिल्ली से तय हो रहा था। चार-पांच सीटों पर उम्मीदवारों का जो गलत चयन हुआ, वह उचित फीडबैक के अभाव में हुआ। निचले वर्ग के राजपूत वोटरों की नाराजगी भी BJP को भारी पड़ी। पार्टी ने राजघरानों के राजपूतों को अहमियत दी, लेकिन रावणा राजपूत जैसों की उपेक्षा भी की है। वसुंधरा राजे ने खुद को अपने बेटे दुष्यंत सिंह के झालावाड़ बारां लोकसभा सीट तक सीमित करके सियासी संकेत दिया, जिसे राज्यभर में फैले उनके समर्थकों ने इस संकेत को पकड़ा और फैलाया।

ओवर कॉन्फिडेंस की मार | चुनाव लड़ा गया पीएम मोदी के चेहरे पर और उम्मीदवारों को भी लगा कि भयंकर गर्मी में प्रचार करने का कष्ट क्यों उठाया जाए, जबकि चेहरा जीत दिला ही देगा। मोदी ने 17 सीटों के लिए रैलियां कीं, लेकिन जीत मिली इनमें से 11 सीटों पर।

आगे क्या | BJP 25 में से 14 सीटें जीती, लेकिन जीत के लड्डू पार्टी दफ्तर में नहीं बंटे। कांग्रेस शून्य से 11 पर पहुंची, लेकिन मुंह मीठा करने से कतराती रही। आगे पंचायतों और स्थानीय निकाय के चुनाव हैं। कांग्रेस के पास लोकसभा चुनाव की सफलता को भुनाने का अवसर है। उधर, राज्य में BJP सरकार के पास गलतियां सुधारने का मौका है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

थोड़ी खुशी, थोड़ा गम
कांग्रेस को संगठन पर देना होगा ध्यान

लोकसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद से कांग्रेस में एक अलग तरह का आत्मविश्वास दिख रहा है, जो स्वाभाविक है। हालांकि बड़ा सवाल आज भी यही है कि इससे आगे की उसकी यात्रा कैसी होगी और इस सवाल का जवाब अब भी कई चुनौतियों से घिरा नजर आ रहा है।

आधा भरा या आधा खाली गिलास | अगर सहयोगी दलों की जिद के चलते महाराष्ट्र की सांगली और बिहार की पूर्णिया सीट से निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर लड़ने को मजबूर हुए विशाल पाटिल और पप्पू यादव की जीत को जोड़ लिया जाए तो कांग्रेस की सीट संख्या 101 पर पहुंच जाती है। लेकिन बात सौ पार करने या न करने की उतनी नहीं है। कुल मिलाकर यह चुनाव कांग्रेस के लिए ऐसा नतीजा लाया है, जिसमें यह तय करना मुश्किल है कि ग्लास आधा भरा है या आधा खाली है।

चुनौतियों भरा है आगे का रास्ता

संगठनात्मक ढांचा | कांग्रेस के लिए यह खुशी की बात हो सकती है कि विपक्षी गठबंधन I.N.D.I.A. खुद बहुमत के करीब न पहुंचकर भी कम से कम बीजेपी को बहुमत से दूर रखने में कामयाब हो गया। इस लिहाज से खुद कम सीटों पर लड़ने और संविधान की रक्षा के नारे पर सबसे ज्यादा जोर देने की उसकी रणनीति काम कर गई। लेकिन बतौर राजनीतिक दल उसे उन क्षेत्रों पर ध्यान देना ही होगा जहां उसका संगठनात्मक ढांचा लगातार कमजोर होता रहा है।

फिर से नंबर वन | महाराष्ट्र की राजनीति पिछले पांच वर्षों में जिस तरह की उथल-पुथल और घालमेल से गुजरी, उसमें कांग्रेस का सबसे ज्यादा सांसदों वाली पार्टी के रूप में उभरना निश्चित रूप से काफी मायने रखता है। वहां इसी साल विधानसभा चुनाव होने हैं और बीजेपी की आक्रामकता के मुकाबले महाराष्ट्र की गरिमा का सवाल खड़ा करते हुए भी कांग्रेस के सामने अपने सपोर्ट बेस को सुरक्षित रखने की चुनौती होगी।

नई संभावनाएं | यूपी में रायबरेली से राहुल गांधी को और अमेठी से गांधी परिवार के विश्वासपात्र के एल शर्मा को खड़ा करने की बात हो या अखिलेश को अधिक से अधिक स्पेस मुहैया कराने की, ये सब कारगर साबित हुए। बढ़ी हुई दलित चेतना के साथ खड़े होते हुए कास्ट सेंसस जैसे मसले को आक्रामक ढंग से उठाना भी उत्तर भारत के एक बड़े तबके में कांग्रेस को लेकर उम्मीद जगा रहा है।

सीधे मुकाबले की चुनौती | ऐसे में यह सवाल अहम हो जाता है कि संविधान और लोकतंत्र को कथित खतरों से बचाने वाली इस चुनावी लड़ाई के बाद कांग्रेस आगे की यात्रा के लिए खुद को कैसे तैयार करती है। खासकर ओडिशा और मध्यप्रदेश जैसे राज्य विशेष तवज्जो की मांग करते हैं। ध्यान रहे, देश में 215 सीटों पर कांग्रेस और बीजेपी में सीधा मुकाबला रहा, उनमें 70% बीजेपी के पक्ष में गईं। अपने मुख्य प्रतिद्वंद्वी को बराबरी की टक्कर देते हुए दिखना है तो उसे इस अंतर को पाटने पर ध्यान देना होगा।

दो दूनी चार
क्या अब महंगाई घटेगी

रमेश तिवारी

महंगाई की चिंता गंभीर हो गई है। इस कारण कर्ज लेने वाले लोगों के लिए EMI में कमी का इंतजार लंबा हो गया। रिजर्व बैंक की मॉनेटरी पॉलिसी कमिटी ने शुक्रवार को ब्याज दरों में किसी बदलाव का ऐलान नहीं किया। लगातार आठवीं बार कमिटी ने यही रुख रखा। रिजर्व बैंक ही नहीं, दुनिया भर के सेंट्रल बैंकों को महंगाई की चिंता खा रही है। अमेरिका में भी ब्याज दरों में नरमी को टाला जा रहा है। दुनिया के कुछ सेंट्रल बैंक कमी का कदम उठाने की शुरुआत कर रहे हैं। जैसे यूरोपियन सेंट्रल बैंक ने पांच साल बाद ब्याज दरों में कटौती की है, लेकिन उसने आगे के लिए कोई संकेत नहीं दिया। मतलब साफ है, महंगाई कम होगी या नहीं, अभी भरोसा नहीं कायम हुआ है।

सिर्फ ब्याज दरों में कमी करके भी महंगाई पर काबू नहीं पाया जा सकता है। इस समस्या की वजहें कई हैं। कोविड का असर पहले से था, रूस-यूक्रेन युद्ध ने मुसीबतें बढ़ा दी थीं। भारत में पिछले साल अल-नीनो के कारण मॉनसून में उतार-चढ़ाव देखा गया। इस साल मॉनसून की बारिश ठीक हो सकती है, लेकिन महंगाई कम करने में राजनीतिक फैसलों की भी अहम भूमिका होगी। चुनाव से पहले पता चला था कि नरेंद्र मोदी ने अपनी नई सरकार के 125 दिनों का प्लान बना लिया है। लेकिन उस प्लान पर नए सिरे से सोचने की जरूरत हो सकती है। खास तौर से बजट को देखते हुए। जुलाई में जब सरकार फुल बजट पेश करेगी, तब महंगाई के खिलाफ कदमों की दरकार होगी।

चुनाव नतीजों के बाद जो ढेरों विश्लेषण सामने आए हैं, उनमें बार-बार एक ही बात कही जा रही है। बताया जा रहा है कि महंगाई के मुद्दे ने असर डाला है। इसे कंट्रोल रखने से चुनाव की राह आसान हो सकती है। इस बारे में 2019 का चुनाव याद किया जा सकता है। उस चुनाव से एक साल पहले तक की अवधि देखें तो महंगाई दर नियंत्रित थी, सिर्फ 3.3 पर्सेंट। खाने-पीने की चीजों की महंगाई दर सिर्फ 0.03 पर्सेंट थी। कहा जा सकता है कि 2019 में मोदी सरकार बहुमत के साथ सत्ता में लौटी थी तो यह एक बड़ा फैक्टर था। अब 2024 का चुनाव देख लें। पिछले एक साल में महंगाई दर 5.37 पर्सेंट के करीब थी। खाने-पीने की चीजों की महंगाई तो 7.88 पर्सेंट पर पहुंच गई थी। पिछले साल सितंबर के बाद से महंगाई दर रिजर्व बैंक के टारगेट रेंज 2-6 फीसदी के बीच रही है, लेकिन फूड आइटम्स की महंगाई तेज थी। माना जा रहा है कि इसने जनता में नाराजगी पैदा की।

मोदी सरकार को अंदेशा था कि महंगाई चुनाव नतीजों पर असर डाल सकती है। इसे देखते हुए खाने-पीने की चीजों पर स्टॉक लिमिट लगाई गई, जरूरी चीजों का एक्सपोर्ट रोका गया, इंपोर्ट आसान किया गया। जरूरी अनाज को खुले बाजार में बेचा गया। भारत ब्रैंड के नाम से चावल, आटा, दाल सस्ती दरों पर बाजार में उतारा गया। अब इन्हीं कदमों को जारी रखना होगा। भारत ब्रैंड की उपलब्धता बढ़ानी होगी। दालों और खाद्य तेलों का आयात आगे भी आसान बनाए रखना होगा। जरूरत पड़े तो दूसरे खाद्यान्न भी आयात करने होंगे। सरकार के पास इसके लिए पैसों की कमी नहीं होनी चाहिए। टैक्स से कमाई बंपर रही है। रिजर्व बैंक ने अच्छा खासा सरप्लस दिया है। कई तरह की सबसिडी में कमी आई है।

ऑफ दि ट्रैक
रोबॉट्स पर इंसान हैं भारी
मृत्युंजय राय

ऑनलाइन रीटेलर एमेजॉन डिजिट नाम के humanoid robots की टेस्टिंग कर रही है, जिसे बनाया है Agility नाम की कंपनी ने। 2 मीटर लंबे और पक्षियों जैसे पांवों वाले ये रोबॉट कंपनी के गोदामों में काम करने वाले कर्मचारियों की मदद कर रहे हैं। इसी तरह इंसानों जैसी आकृति वाले Atlas रोबॉट्स का इस्तेमाल जल्द ही दक्षिण कोरियाई ऑटो कंपनी ह्यूंदै करने वाली है। Atlas को बनाया है बोस्टन डायनेमिक्स नाम की मेसाचुसेट्स की कंपनी ने। 2020 के बाद Humanoid robots बनाने वाले स्टार्टअप्स में 2.3 बिलियन डॉलर का निवेश हो चुका है। इन उभरती कंपनियों का मुकाबला बोस्टन डायनेमिक्स, टेस्ला और चाइनीज रोबॉटिक्स कंपनी ubTech से है। लेकिन ये इंसानों की जगह लेने के योग्य नहीं हैं। 2023 में एक स्विस यूनिवर्सिटी ने एक शोध प्रकाशित किया था। इसमें 27 humanoid robots की तुलना कामकाज के लिहाज से इंसानों से की गई थी। इसमें पता चला कि फंक्शनल लेवल पर तो रोबॉट इंसानों को मात दे सकते हैं। रोबॉट जिन मोटरों से संचालित होते हैं, वे कई घंटे तक काम कर सकते हैं। लेकिन साइज, वजन और एनर्जी की खपत के हिसाब से तुलना करने पर पता चला कि ये एफिशिएंसी या स्पीड में मानव शरीर का मुकाबला नहीं कर सकते।

भारत का गोल्ड कहां

RBI ने पिछले दिनों करीब 100 टन यानी एक लाख किलो सोना ब्रिटेन से वापस मंगाया। यह गोल्ड लंदन में बैंक वॉल्ट में रखा गया था। भारत को अपना सोना दूसरे देश में रखने की जरूरत क्यों पड़ी, समझते हैं:

लंदन पर भरोसा क्यों

सोने के व्यापार के लिए जरूरत है ट्रांसपेरेंट और लिक्विड मार्केट की, जहां बड़े पैमाने पर खरीदार और विक्रेता मौजूद हों। इन मामलों में लंदन खरा उतरता है। वहां गोल्ड और सिल्वर मार्केट पर निगरानी के लिए London Bullion Market Association है।

बाकी जगह सुविधा क्यों नहीं

लंदन को गोल्ड मार्केट बनने में लंबा समय लगा। उपनिवेश के दौर में पूरी दुनिया से सोना लंदन भेजा जाता था। वहां रिफाइनरी, बैंक और व्यापार से जुड़ा सिस्टम डिवेलप हो गया। 20वीं सदी तक लंदन गोल्ड ट्रेडिंग का ग्लोबल हब बन गया था।

AI image

RBI के पास कितना सोना

रिजर्व बैंक के पास 822 टन गोल्ड है। यह आंकड़ा मार्च 2024 तक का है। पिछले फाइनैंशल ईयर में ही RBI ने अपने भंडार में 27.5 टन सोना और जोड़ा था। यह मांग लगातार बढ़ रही है। 2023 में रिजर्व बैंक ने पूरे साल में जितना गोल्ड खरीदा था, उससे डेढ़ गुना इस साल जनवरी से अप्रैल के बीच ही खरीद लिया। बैंक दरअसल अपने रिजर्व को डाइवर्सिफाई करना चाहता है।

विदेश में कितना सोना

भारत का 413 टन से अधिक गोल्ड अब भी ब्रिटेन में है। यह सोना द बैंक ऑफ इंग्लैंड में जमा है। वैसे आजादी के पहले से ही भारत का सोने का कुछ स्टॉक लंदन में रखा जाता रहा है। दुनिया के कई देशों की पारंपरिक पसंद ब्रिटेन का बैंक है, जहां वे अपने गोल्ड को रखते हैं और बदले में कुछ फीस देते हैं।

अब वापस क्यों मंगाया सोना

इसके पीछे मौजूदा वैश्विक परिस्थितियों को कारण बताया जा रहा। यूक्रेन के साथ युद्ध छिड़ने पर ब्रिटेन और अमेरिका ने अपने यहां मौजूद रूस के सोने को जब्त कर लिया था। माना जा रहा है कि भारत ने इस तरह के किसी भू-राजनीतिक जोखिम को कम किया है।

प्रस्तुति : **शैलेंद्र पांडेय**

पहले एशिया के टॉप 10 में आए भारत

भारतीय फुटबॉल टीम के कप्तान सुनील छेत्री ने 6 जून को अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल को अलविदा कह दिया। अपने प्रदर्शन से दुनिया के दिग्गज फुटबॉलरों के साथ अपना नाम जोड़ने वाले छेत्री खुश हैं कि वह 150 से ज्यादा मैच देश के लिए खेलने में कामयाब रहे। हालांकि आगे फुटबॉल से किस तरह जुड़े रहेंगे, इस बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उनसे बातचीत की ***रौशन झा*** *ने। प्रस्तुत हैं मुख्य अंश :*

सप्ताह का इंटरव्यू
सुनील छेत्री

■ संन्यास के लिए 6 जून की तारीख क्यों चुनी? यह इत्तेफाक है या कोई खास वजह?

कोई खास वजह नहीं है। 6 जून को मैच पड़ गया इसलिए यह तारीख तय हो गई। इस मैच से पहले के दो मैच खेलने के बाद मेरे अंदर एक फीलिंग आई कि अब संन्यास ले लेना चाहिए। मेरे पास बहुत समय था। मैंने काफी सोचा। हर एक चीज तौलने की कोशिश की और इस नतीजे पर पहुंचा कि मुझे अब इस जिम्मेदारी से आगे बढ़ना चाहिए। इसलिए मैंने डिसाइड किया कि यह मेरा आखिरी मैच होगा।

■ अब हम आगे सुनील छेत्री को किस रूप में देख सकते हैं। कोई जिम्मेदारी मिलेगी तो स्वीकारेंगे?

मैं पिछले 19 साल से जिम्मेदारी ही तो निभा रहा हूं। फिलहाल थोड़ा ब्रेक चाहूंगा। अभी तो मेरे लायक कुछ जिम्मेदारी मुझे दिख भी नहीं रही है। यह टीम बहुत सक्षम है। आगे फ्यूचर में क्या होगा, किसी को पता नहीं। अगर ऐसा कुछ दिखेगा तो सोचूंगा। अभी के लिए मैं एक फैन की तरह टीम से जुड़ा रहूंगा।

■ आपने कहा कि जिम्मेदारी अगर दिखेगी तो सोचूंगा। मेरा सवाल इसी से जुड़ा है कि भारत में क्रिकेटर रिटायरमेंट के बाद भी टीम से जुड़ जाते हैं। कोच बन जाते हैं। लेकिन फुटबॉल में ऐसा क्यों नहीं होता?

क्रिकेट की तो नहीं बता पाऊंगा। लेकिन, फुटबॉल के बारे में बात करूं तो एक कोच, जो टीम चलाता है उसको बहुत सारा नॉलेज और बहुत ज्यादा एक्सपीरियंस चाहिए होता है। हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण कोच ही होता है। सारे निर्णय वही करता है। तो उस इंसान का सक्षम, जानकार और एक्सपीरिएंस्ड होना बहुत जरूरी होता है। ऐसा भी नहीं है कि कोई भी प्लेयर, जो अच्छा खेला है, बहुत टाइम तक खेला है वह अचानक कोच बन जाएगा। कुछ उदाहरण नजर आएंगे लेकिन वह खिलाड़ी पहले से इसके लिए तैयारी कर रहा होता है। पहले से कोचिंग ले रहा होता है। इसलिए बहुत सारे प्लेयर, जो हमारे देश में पहले अच्छे प्लेयर थे, अभी कोचिंग सीख रहे हैं। लेकिन, उनके एक बड़े लेवल तक आकर एक आईएसएल क्लब को या फिर नैशनल टीम को कोच करने में थोड़ा वक्त लगेगा।

■ ऐसा दिन कब आएगा जब भारतीय फुटबॉल टीम में एक साथ कई स्टार्स दिखेंगे। आपसे पहले बाईचुंग भूटिया का नाम था। फिर आपके समय में आप ही एक फेमस चेहरा बन सके। ऐसा क्यों?

मैं अगर कहूं तो पहले ही वह समय आ चुका है। मेरे जाने के बाद बहुत सारे ऐसे प्लेयर हैं जो ऑन फील्ड इस जिम्मेदारी को लेने के लिए तैयार हैं। अभी शायद आप मुझसे कंपेयर कर रहे हैं तो इसलिए आपको थोड़ा कम लग रहा होगा। लेकिन, ऐसे बहुत सारे प्लेयर हैं जो बहुत अच्छा कर रहे हैं। उनका अपना-अपना फैन बेस भी है और वे आगे बढ़ते रहेंगे। वैसे आप भारतीय फुटबॉल की तुलना सीधे क्रिकेट से कर रहे हैं। ऐसा है तो बता दूं कि अगर रोहित शर्मा, विराट कोहली या ऋषभ पंत को करोड़ों लोग जानते हैं तो संदेश झींगन, राहुल को लाखों में लोग जानते हैं।

■ आपकी तुलना रोनाल्डो, मेसी जैसे दिग्गजों से होती रही। खासकर सबसे ज्यादा गोल करने के मामले में। मैदान पर इसका आपके ऊपर प्रेशर होता था या फिर संतुष्टि मिलती थी कि मेरी तुलना इनसे हो रही है?

प्रेशर तो मेरे ऊपर कभी आया ही नहीं। जहां तक तुलना की बात है तो ऐसा भी कुछ नहीं है। जिस स्तर के वे खिलाड़ी हैं उनसे तो मेरी कोई तुलना ही नहीं है। मेरे जैसे हजारों प्लेयर इन दो प्लेयर्स के फैन हैं, इनसे सीखते हैं। मैं कभी प्रेशर नहीं लेता कि मैं इनसे ऊपर या नीचे हूं स्कोरिंग में। हां, मुझे इस बात की खुशी है कि मैंने अपने देश के लिए इतने सारे गोल मारे। मुझे इससे भी ज्यादा खुशी इस बात की है कि मैं अपने देश के लिए 150 मैच खेल सका। और ये दो चीजें मुझसे कोई नहीं छीन पाएगा।

> 2016 से 2020 तक हम एशियाई रैंकिंग्स में टॉप-20 में आ गए। अब हमें टारगेट करना होगा कि हम एशिया में टॉप-10 में आएं। अभी एशिया से पांच टीमें खेलती हैं। आने वाले वर्ल्ड कप से शायद आठ टीमें खेलने जाएंगी। तो अगर हम टॉप-10 में रहेंगे तो पता चल जाएगा कि हम वर्ल्ड कप से कितने दूर या कितने पास हैं

■ अच्छा, यह बताइए वर्ल्ड कप में कब तक खेलने लग जाएंगे?

इस तरह के सवाल काफी होते हैं। इससे कभी-कभी खिलाड़ी पर भी प्रेशर आता है। मैं साथी खिलाड़ियों को बोलता हूं कि आप ज्यादा प्रेशर ना लें। जितना हो सके, अपना बेस्ट दीजिए। हो सके तो क्लब में भी बेस्ट करें और यही आपको फायदा पहुंचाएगी। जहां तक वर्ल्ड कप की बात है तो यह देखिए कि वर्ष 2016 से 2020 तक हम एशियाई रैंकिंग्स में टॉप-20 में आ गए। अब हमें टारगेट करना होगा कि जितनी जल्दी हो सके हम एशिया में टॉप-10 में आएं। अगर ऐसा होता है तो हम ऑस्ट्रेलिया, जापान, साउथ कोरिया, यूएई के साथ खड़े हो जाएंगे। अभी एशिया से पांच टीमें खेलती हैं। आने वाले वर्ल्ड कप से शायद आठ टीमें खेलने जाएंगी। तो अगर आठ टीम वर्ल्ड कप खेलती है और हम टॉप-10 में रहेंगे तो हम सबको पता चल जाएगा कि हम कितने दूर या कितने पास हैं।

■ कोई मैच जिसने आपको इमोशनल किया हो...

ऐसे बहुत सारे मैच हैं। लेकिन, अगर एक मैच चुनना पड़े तो मैं हमेशा अपना पहला मैच चुनता हूं जो पाकिस्तान के अगेंस्ट था। वह मैच शायद मैं कभी नहीं भूल पाऊंगा। मैं तब 19-20 साल का था और पहली बार देश को रिप्रेजेंट करने का मौका मिला था। इसलिए वह दिन मैं कभी नहीं भूल पाऊंगा।

लेपर्ड से मिली वह सीधी नज़र

खुद अपनी आंख से
दिलीप लाल

साल 2004 की बात है। पतझड़ का मौसम गुजर गया था और पेड़ों पर कोंपलें नजर आने लगी थीं। अहमदाबाद, गुजरात से करीब 60-70 किलोमीटर पश्चिम साणंद गांव से सटे नल सरोवर पक्षी अभयारण्य घूमने गया था। साथ में कुछ वन्यजीव प्रेमी और वन विभाग के अधिकारी थे। जंगल में घूमते-फिरते शाम हो गई। लगभग 7 बजे हमलोग तय कार्यक्रम के अनुसार कैंप साइट पर पहुंच गए। अब हमलोग चांद निकलने का इंतजार कर रहे थे ताकि उस रोशनी में जंगली जीवों की गतिविधियों को देख सकें।

साढ़े 8 बजे तक चांद सामने दिख रहा था और उसकी चांदनी में पूरा जंगल साफ नजर आ रहा था। अभयारण्य के बीच एक तालाब है। वहां झुंड में हिरण पानी पीने आते हैं। हिरणों का पीछा करते-करते लेपर्ड भी आसपास आ जाते हैं। उन्हें देखने हम निकल पड़े। दो जीप में हमारे साथी लोग थे और रेंज फॉरेस्ट अफसर गढ़वी साहब अपनी बुलेट पर। उन्होंने मुझे ऑफर किया कि आप चाहें तो मेरे साथ चल सकते हैं। इच्छा भी थी कि खुली हवा का लुत्फ उठाया जाए। वह जंगली जीवों और जंगल के बारे में अपनी जिज्ञासाओं को शांत करने का मौका भी था। पत्ते के बीच से कोई सरसराहट होती तो डर लगता। गढ़वी साहब धीरे-धीरे बुलेट चला रहे थे ताकि आसपास के किसी वन्य जीव को दिक्कत न हो, खासकर पक्षियों को। चूंकि पक्षी बहुत जल्दी अपने घोंसले में आराम करने चले जाते हैं। अपवाद में नॉक्टरनल बर्ड, जैसे उल्लू रात में ही भोजन की तलाश में निकलते हैं।

मैंने पूछा, 'लेपर्ड दिखता है क्या इधर?' उन्होंने कहा, 'बिलकुल। हिरणों के चलते लेपर्ड इसी इलाके में रात में घूमते हैं। हम जहां से गुजर रहे हैं, यह लेपर्ड वाला ही एरिया है। लेकिन चिंता की बात नहीं।' मुझे समझाते हुए उन्होंने नैतिक ज्ञान भी दे डाला- मनुष्य से ज्यादा घातक शिकारी कोई नहीं होता। मनुष्य से सभी जीव डरते हैं। इसी बीच एकदम तीखी ढलान आ गई। सड़क लगभग 10 फुट की गहराई में चली गई। ऐसा लग रहा था कि किसी खोह से गुजर रहे हैं। तभी सर्रर की एक आवाज ने चौंका दिया। सड़क की चौड़ाई करीब 20 फुट रही होगी। बाईं तरफ एक लेपर्ड ने छलांग लगाई, उसके दो पैर सड़क पर पड़ते दिखे और उसी तेजी से जंप लगाकर वह सड़क की दाईं ओर चला गया। बाइक की रोशनी में सब कुछ साफ-साफ दिख रहा था। गढ़वी साहब ने झटके में ब्रेक लगाया और फिर तेजी से बाइक निकाल ली। लगभग 50-60 फुट आगे जाकर बाइक रोक दी। मैं डरा हुआ था। मैंने पूछा- यहां रुकना ठीक रहेगा? हंसते हुए उन्होंने टाल दिया। फिर हमने बाइक वहीं छोड़ी और लेपर्ड को देखने पीछे की तरफ चल पड़े।

लगभग 20-25 फुट पीछे ऊंचाई पर झाड़ियों में कंचे की तरह नीली-नीली गोलियों जैसी उसकी आंखें दिख रही थीं। पूछा, उसका मूड क्या है? कुछ नहीं, उसका शिकार अब छूट गया है। उसने काफी ऊर्जा लगा दी छलांग लगाने में, अब वह थोड़ी देर बाद शिकार पर निकलेगा। तब तक घूमते-घूमते जीप के सारे साथी वहां पहुंच गए। हम जिस रोमांच से अभी-अभी गुजरे थे, वह उनकी आंखों में ईर्ष्या के भाव ला रहा था।

चलते-चलते...

फुटबॉल वर्ल्ड कप का हॉन्गकॉन्ग में क्वालिफाइंग मैच हो रहा था। इसमें तीन फुटबॉल फैन्स को गिरफ्तार कर लिया गया। आरोप है कि उन्होंने अपने देश के राष्ट्रगान का अपमान किया। जब राष्ट्रगान बजा, तब उन्होंने ग्राउंड की ओर पीठ कर ली, खड़े भी नहीं हुए। उन्हें अधिकतम तीन साल की सजा हो सकती है। ब्रिटेन ने पहले हुए समझौते के तहत 1997 में चीन को हॉन्गकॉन्ग लौटाया था।

रीडर्स मेल

सामंजस्य से बनेगी बात
5 जून का संपादकीय 'सरप्राइज!' पढ़ा। इस बार के चुनाव नतीजों ने एग्जिट पोल के अनुमानों को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया है। चुनाव परिणाम सबके सामने है, NDA के घटक दलों में से TDP और JDU किंगमेकर की भूमिका में आ गए हैं। दूसरी तरफ, I.N.D.I.A. भले ही बहुमत से काफी दूर है, पर विपक्ष में बैठने के लिए मजबूत हालत में है। नरेंद्र मोदी लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने जा रहे हैं, पर उन्हें अपनी अब तक की कार्यशैली के विपरीत सहयोगी दलों के साथ सामंजस्य बैठाकर चलना होगा। सवाल है कि क्या वह ऐसा कर सकेंगे? अब तक वह विशाल बहुत वाली सरकार की ही अगुआई करते रहे हैं। उनकी छवि भी मनचाहे फैसले करने वाले नेता की रही है। ऐसे में देखना दिलचस्प होगा कि तीसरे कार्यकाल में नरेंद्र मोदी किस तरह के पीएम के रूप में सामने आते हैं।

प्रतीक सिन्हा, ईमेल से

जनमत की ताकत
प्रजातंत्र में जनता ही सर्वशक्तिमान और सर्वोपरि है। हाल ही में आए लोकसभा चुनाव परिणामों ने इस बात को और ज्यादा स्पष्ट कर दिया है। गौर करने की बात है कि एक समय ऐसा लगने लगा था कि जनता के हाथ में कुछ नहीं है। लेकिन अब सत्तापक्ष और विपक्ष दोनों तरफ की पार्टियों को यह पूरा अहसास हो गया होगा कि जनता चाहे तो राजनीतिक हवा का रुख अपने हिसाब से बदल सकती है और मझधार में फंसी लोकतंत्र की नाव को किनारे लगा सकती है। लोकतंत्र में जनता किसी की भी तानाशाही एक हद से आगे बर्दाश्त नहीं करती। हालांकि जनता का यह संदेश पांच साल में एक बार चुनाव नतीजों के ही रूप में बाहर आ पाता है। उसके पहले आम दिनों में उसकी आवाज इतनी कमजोर होती है कि उसकी तरफ शासकों का ध्यान नहीं जाता। स्वस्थ लोकतंत्र में यह जरूरी है कि पनपते असंतोष के क्षीण स्वरों को लगातार सुना और दर्ज किया जाता रहे। ऐसा हो तो सरकारों में तानाशाही प्रवृत्तियां मजबूती नहीं हासिल कर पाएंगी। उन पर अंकुश लगाना आसान होगा।

नलिन खोईवाल, ईमेल से

आर.एन.आई. नं. 510/57© सर्वाधिकार सुरक्षित। लिखित अनुमति के बिना संपूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित। स्वत्वाधिकारी बैनेट, कोलमैन एण्ड कम्पनी लिमिटेड के लिए राजीव यादव द्वारा, 7 बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित तथा **टाइम्स ऑफ इंडिया प्रेस, साइट IV, औद्योगिक क्षेत्र साहिबाबाद** और प्लॉट नंबर 7-8, सेक्टर M-11, ट्रांसपोर्ट हब, इंडस्ट्रियल मॉडल टाउनशिप, मानेसर, हरियाणा से मुद्रित। फोन : 23302000 फैक्स: 23492047, पंजीकृत कार्यालय : दादाभाई नौरोजी रोड, मुंबई-400001। विमान सेवा शुल्क : 1 रु. प्रति कॉपी। नेपाल में कुल मूल्य : सोमवार से शनिवार : नेपाली 5 रु. ; रविवार : नेपाली 6 रु.
संपादक (दिल्ली मार्केट) : आशीष पांडे (इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी)

https://t.me/AllNewsPaperPaid

राष्ट्रीय सहारा
नई दिल्ली • शनिवार • 8 जून • 2024
www.rashtriyasahara.com

अनमोल वचन

निश्चंत मन, भरी थैली से अच्छा है
-अरबी कहावत

उन्माद का प्रतिफल

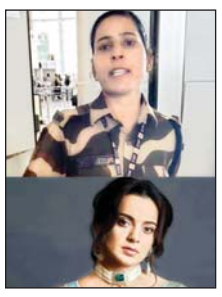

फिल्म अभिनेत्री से नेता बनी कंगना रानावत को चंडीगढ़ एयरपोर्ट पर महिला कांस्टेबल ने थप्पड़ मार दिया। सीआईएसएफ की यह कांस्टेबल कुलविंदर कौर दो साल से यहां तैनात है। कौर को फौरन गिरफ्तार कर सस्पेंड कर दिया गया। कंगना मंडी से भाजपा की सांसद चुनी गई हैं। वह संसदीय दल की बैठक में हिस्सा लेने दिल्ली आ रही थीं। सांसद द्वारा जारी वीडियो में कहा थप्पड़ मारने वाली किसान आंदोलन की समर्थक थी। उसने सामने से चेहरे पर मारा और अपशब्द कहने लगी, जबकि फौरन कपूरथला की कौर का वीडियो भी सोशल मीडिया में आया, जिसमें वह कंगना पर आरोप लगा रही है कि उन्होंने सौ-सौ रुपए लेकर किसान आंदोलन में महिलाओं के बैठने की बात की थी, जिसमें कौर की मां भी शामिल थी। कंगना अपने वीडियो में

पंजाब में आतंकवाद व उग्रवाद बढ़ रहा है, उसे हम कैसे हैंडल करेंगे, भी कह रही हैं। जिस पर अलग विवाद हो गया। सुरक्षाकर्मी का यह बर्ताव बेहद निंदनीय व दुर्भाग्यपूर्ण है। आंदोलन करना या उसके खिलाफ बयान देना, निजी मसला है, जिसका संवैधानिक तरीके से विरोध किया जाना चाहिए, परंतु जिस तरह का आवेग व प्रतिरोध के कौर ने जनप्रतिनिधि के प्रति दर्शाया, वह घोर निंदनीय है। साथ ही सुरक्षाबलों पर संदेह उपजाने वाला साबित हो सकता है। गौरतलब है कि केंद्र सरकार द्वारा लाए कृषि कानूनों को लेकर 2020-2021 के दरम्यान किसानों ने धरना-प्रदर्शन किया था। उस वक्त भी कंगना ने अपने ट्वीट पर विवाद होते ही, उसे डिलिट कर दिया था। मगर कौर के प्रति अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए उन्होंने एकबार फिर समूचे पंजाब को आतंकवाद व उग्रवाद की तरफ बढ़ता बता कर, जल्दबाजी दिखा दी। यह सांप्रदायिक विभाजन की लकीर खींचने सरीखा है। देश के तमाम लोग सुरक्षाकर्मी के पक्ष में भी आ खड़े हुए। उन्होंने सोशल मीडिया में किसानों, पंजाबवासियों व आंदोलनकारियों की पक्षधरता में कोई संकोच नहीं किया। चूंकि अब कंगना मात्र फिल्मकार नहीं हैं, उन्हें जनता ने चुन कर संसद तक पहुंचाया है। इसलिए उनका हर बयान गंभीर व तथ्यपरक होना चाहिए। उनके साथ जो अभद्रता हुई, वह गलत है मगर समुदाय विशेष, राज्य या जाति पर बंटवांरा करके उसे गलत ठहराना उचित नहीं कहा जा सकता। जांच चालू है, शीघ्र ही उचित कार्रवाई का नतीजा सबके सामने होगा।

पानी पर दिल्ली को राहत

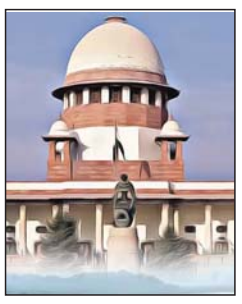

राजधानी दिल्ली में पानी की भारी किल्लत पर सर्वोच्च अदालत की टिप्पणी मायनेखेज है। शीर्ष अदालत ने इसी के मद् देनजर हिमाचल प्रदेश को 7 जून को दिल्ली के लिए 137 क्यूसेक अतिरिक्त जल छोड़ने का निर्देश दिया। साथ ही हरियाणा से कहा कि वह दिल्ली तक पानी का सुगम प्रवाह सुनिश्चित करे। दरअसल, दिल्ली में पानी की घनघोर किल्लत पिछले एक महीने से लगातार बनी हुई है। पानी को लेकर दिल्ली में हिंसक झड़प भी हुई। यहां तक कि एक शख्स की मौत भी हुई। दूसरी ओर, दिल्ली सरकार में मंत्री और आम आदमी पार्टी की वरिष्ठ नेता अतिशी ने पिछले हफ्ते हरियाणा और उत्तर प्रदेश सरकार को पत्र लिखकर अतिरिक्त पानी देने का अनुरोध किया था। हकीकी तौर पर दिल्ली में पानी को लेकर हमेशा से राजनीति होती रही है। इस

बार भी कुछ ऐसा ही हो रहा था। एक तरफ भाजपा ने जहां दिल्ली सरकार को पानी के मसले पर लगातार घेरा और पानी की कमी को लेकर केजरीवाल सरकार की नाक में दम किए रखी। वहीं आम आदमी पार्टी का कहना है कि इस बार चूंकि गर्मी का कहर ज्यादा रहा इसलिए राज्य में पानी की जोरदार कमी महसूस की गई, मगर हरियाणा और उत्तर प्रदेश ने मानवीय मूल्यों की परवाह नहीं की और दिल्ली की जनता को पानी के लिए तरसाया। खैर, सर्वोच्च अदालत को इस बात का इल्म है कि पानी पर यहां जमकर राजनीति हो रही है। यही वजह है कि उसने इस मामले में राजनीति न करने की सख्त हिदायत दी है। बहरहाल, पानी की बर्बादी किस तरह की जाती है इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता है। अगर लोगों में यह समझ पैदा हो जाए कि पानी का समझदारी से इस्तेमाल और इसे बचाने में ही भलाई है तो ऐसी दुर्गति से बचा जा सकता है। यह शाश्वत सत्य है कि पानी को बचाया जा सकता है, मगर पानी बनाया नहीं जा सकता है। वैसे भी जल संकट दिल्ली की बड़ी और काफी दिनों की समस्या है। इससे निपटने का कोई युक्तसंगत उपाय हर हाल में तलाशना होगा। साथ ही अगर जो लोग पानी की बर्बादी करते पाए जाएंगे तो उन पर सख्ती भी की जानी चाहिए। पानी की जरूरत का अहसास तभी होता है जब यह नहीं मिलती है। इस बात को हमें समझना ही होगा।

कटाक्ष/ कबीरदास

दुहाई राम जी दुहाई!

राम जी ये आपने बिल्कुल भी ठीक नहीं किया। बताइए, अपनी नगरी में ही अपने ध्वजाधारियों को हरवा दिया। बात सिर्फ किसी लल्लू सिंह की हार-जीत की होती तो चलो आपकी दिल्लगी समझ कर दिल को समझा भी लेते। पर खुद मोदी जी का फोटो हर जगह मैदान में था, आपने फिर भी हरवा दिया। आप को पता भी है लोग क्या कह रहे हैं? कह रहे हैं--अयोध्या तो झांकी है, अभी मथुरा, काशी बाकी है!

राम जी आपने भी हद कर दी, कैसे अपोजीशन वालों के पाले में ही जाकर खड़े हो गए? बताइए, चार सौ पार तो क्या होते, आपने तो तीन सौ पार के भी लाले पड़वा दिए। सिंहासन छोड़िए, कुर्सी तक पहुंचना मुश्किल करा दिया। खुद ही सोचिए, अब की बार, नायडू, नीतीश पर दारोमदार! आपको भी खूब मजाक करने की सूझी? नहीं क्या! पर अचानक हुआ क्या? कोई नाराजगी थी, कुछ बुरा लगा था, तो पहले ही बता देते। आप कोई विपक्ष वाले थोड़े ही थे कि आप की सुनी नहीं जाती। आप बेरोजगार नौजवान भी नहीं थे। आप कोई अग्निवीर भी नहीं थे। किसान भी नहीं थे। मैले कपड़े वाले मजदूर-वजदूर होने का तो सवाल ही कहां उठता था। दलित-वलित भी नहीं। महिला पहलवान भी नहीं। आप की कैसे नहीं सुनी जाती? एक बार कहकर तो देखते। मोदी जी कुछ न कुछ कर के और कुछ न होता तो कोई स्मारक वगैरह बनवा कर, आपको संतुष्ट कर ही देते। सच पूछिए तो इसीलिए तो अयोध्या में आपका भव्य मंदिर बनवाया था। कुछ और चाहिए था, वह भी मांग लेते, अडानी जी-अंबानी जी से बात कर के, मोदी जी कुछ न कुछ जुगाड़ कर ही देते। घर की बात घर में रह जाती। आपने तो घर की हांडी चौराहे पर लाकर फोड़ दी। भला अपने झंडाबरदारों के साथ ऐसा भी कोई करता है?

कोई कह रहा है कि आप तो उंगली पकड़ाकर लाए जाने की बात का बुरा मान गए। तो कोई कह रहा है कि मोदी जी के सीधे परमात्मा का दूत होने से आप कंपटीन मान बैठे। और कोई कह रहा है कि आप भी लैफ्टिस्टों की बातों में आ गए हैं। जो भी हो, यह तो बचपना है। अयोध्या में बालरूप में आए हैं, तो क्या सचमुच बचपना करेंगे? और कब तक? ग्रो अप मैन!

कई मोर्चों पर लड़ना होगा

उत्तर प्रदेश

सुधांशु अनिरुद्ध

हमसे का भूल हुई जो ये सजा हमका मिली, अब तो चारों ही तरफ बंद है दुनिया की गली।' हालांकि राजनीति में कभी गली और दरवाजे बंद नहीं होते। भारतीय जनता पार्टी के लिए सारे दरवाजे और गलियां खुली हुई है। सरकार के गठन की तैयारियां चल रही है। विपक्ष जश्न में डूबा है। हां सत्ता पक्ष जरूर चिंतन की मुद्र में है। हां, यह सवाल जरूर खड़ा हो गया है कि आखिर क्यूं राम राज्य की सबसे बड़ी संकलपना वाले राज्य में भाजपा को तमाम राजनैतिक प्रयोग के बावजूद इतने बड़े उलटफेर का सामना करना पड़ा। जब इस बात की तह में जाते हैं तब समझ आती है कि भाजपा ने उम्मीदवारों के नाम जल्दी घोषित किए पर कार्यकर्ताओं की राय नहीं ली, राम का साथ लिया पर संघ की अवहेलना की, सर्वे किया पर खुद को सर्वोत्तम समझा।

संविधान बचाओ के आगे फेल हुआ हिंदुवाद का नारा , दलित मुस्लिम गोलबंदी

भारतीय जनता पार्टी के इन निर्णयों के अलावा आरक्षण और संविधान बदलने वाले नेताओं के बेलगाम बयानों ने भी नुकसान करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। पिछले लोक सभा-विधान सभा चुनाव में भाजपा ने प्रदेश में बसपा के कैडर से अलग गैर-जाटव को वोट को लाने में सफलता हासिल की थी इन बयानों की वजह से वह समाजवादी और कांग्रेस की तरफ शिफ्ट हुए। इससे उन्हें फायदा भी हुआ। कांग्रेस के संविधान बदलने वाले नैरेटिव को यदा-कदा आने वाले इन बयानों से भारतीय जनता पार्टी के नेताओं द्वारा शबरी के घर जा कर खाना खाने से भी बदलना मुश्किल रहा। उत्तर प्रदेश जैसे दलित-मुस्लिम बहुल वाले राज्य में संविधान बचाओ के नारे ने दलित-मुस्लिम समुदाय के वोटरों को किया गोलबंद। मुस्लिम इसलिए गोलबंद हुए कि उनको लगा कि संविधान, कांग्रेस या समाजवादी ही उन्हें बचा सकते हैं। यही कारण रहा कि भारतीय जनता पार्टी को मुस्लिम समुदाय का वोट नहीं मिला। मोदी जी के बयान की 'जब तक मैं जीवित हूं दलित आरक्षण में कटौती कर मुस्लिम समुदाय को नहीं देने दूंगा।' यह नैरेटिव सेट कर दलित वोट बैंक को रिझाने की कोशिश की गई, लेकिन संविधान बचाओ के आगे यह बहुत कारगर नहीं हुआ।

असंतोष और आस्था

भारतीय जनता पार्टीकी सरकार द्वारा अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण के बाद ये ज्यादातर नेताओं ने मान लिया था कि हम देश के किसी कोने में हार सकते हैं, लेकिन उत्तर प्रदेश में नहीं, नतीजन यहां के स्थानीय नेताओं की शीर्ष नेतृत्व की ओर से अनदेखी की गई और स्थानीय स्तर का संवाद टूट गया। संवादहीनता की इस स्थिति का असर हुआ कि कार्यकर्ताओं में हताशा निराशा का भाव

बढ़ा। इसका असर मतदान में भी दिखा। मंदिर निर्माण में लगे हजारों-करोड़ों लोगों ने राम के लिए आस्था दिखाई पर हताशा निराशा के कारण वोट में तब्दील नहीं हो पाई। भारतीय जनता पार्टी के शीर्ष नेतृत्व के लोगों को राम के साथ-साथ कार्यकर्ताओं में भी आस्था दिखानी होगी, नहीं तो हर बार मुंह की खानी होगी ।

मायावती से इनकार, चंद्रशेखर से इकरार

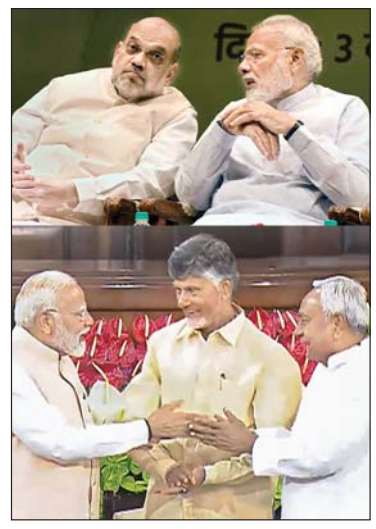

उत्तर प्रदेश चुनाव में मायावती एक मजबूत फैक्टर रहीं हैं। हर बार जो जनता मायावती और समाजवादियों से विमुख होकर भारतीय जनता पार्टी की तरफ जाती थी इस बार जनता ने उन्हें इनकार कर चंद्रशेखर से इकरार कर लिया। भाजपा के लिए मायावती का घटता जनाधार और चंद्रशेखर की बढ़ती शाख भी इस चुनाव में हार की मुख्य वजह रही है। मायावती के समर्थक ज्यादातर उनके वोटर भी रहें । संविधान और तमाम मसलों को लेकर मायावती के मौन ने उन वोटर्स को निराशा के घेरे में छोड़ दिया जिसके भरोसे वो खुद को सुरक्षित महसूस कर रहे थे, जिसके कारण उस वोट का बंटवारा हो गया। अब केवल जाटव नहीं बल्कि तमाम दलित समुदाय खुद को असुरक्षित महसूस करने लगा और विरोधियों द्वारा संविधान बचाओ, संविधान खतरे में है, आरक्षण खत्म हो जाएगा, चुनाव नहीं होंगे जैसे नैरेटिव की ओर झुका और जो जाटव समुदाय मायावती के अलावा किसी को नेता मानने को तैयार नहीं था, समाजवादी की ओर देखना नहीं चाहता था कुछ समय तक वो भाजपा का वोटर रहा, लेकिन इस बार उसने मायावती से तौबा कर लिया और चंद्रशेखर से सम्झौता कर लिया। अब तक हो ये रहा था कि मायावती जाटव वोट को एकत्र कर रही थी और गैर जाटव वोट भाजपा को जा रही थी । कांग्रेस समाजवादी की इन वोटर्स से दूरी बनी हुई थी। इस बार कांग्रेस और समाजवादी पार्टी इन वोटर्स को अपने पक्ष में लाने में सफल रही।

कठिन है डगर, घटक दलों के साथ दिखेगा विपक्ष का असर

उत्तर प्रदेश के चुनावी नतीजे का असर कितना गहरा हुआ कि गर्त में डूबा विपक्ष आज सरकार बनाने की स्थिति में आ पहुंचा है। मोदी जी के चार सौ के नारे की हवा तक निकालने का दावा करने लगा है। मोदी सरकार के बहाने से अब योगी सरकार पर प्रहार करता रहेगा। अब तक तंत्र का दबाव झेल रहा विपक्ष अब हमलावर होगा। अब वो सवाल-जवाब की स्थिति में होगा। मोदी जी के तीसरे काल में उनके बयान की भ्रष्टाचार को लेकर सख्त होगी। हमारी सरकार पर अभी से कांग्रेस समेत तमाम विरोधी दलों ने कहना शुरू कर दिया है कि क्या मोदी सरकार अभी तक भ्रष्टाचार पर सख्त होने के लिए तीसरे कार्यकाल का इंतेजार कर रही थी या ये भी और नारे की तरह सिर्फ जुमला था। कोई कह रहा है मोदी को जनता ने नकार दिया है तो कोई कह रहा है अब मोदी का करिश्मा खत्म हो गया तो कोई मोदी से नैतिकता के आधार पर इस्तीफा मांग रहा है।

आने वाले दिनों में बढ़ेंगी मुसीबतें

राज्य सरकारों को दबाव में लाने की रणनीति पर लगेगा अंकुश। केंद्र में सरकार कमजोर होगी तो राज्य में इसका असर दिखेगा। उत्तर प्रदेश की सरकार की हिन्दू मुस्लिम नीति है उसको लेकर भी सवाल खड़े रहेंगे। केंद्र में घटक दल तेलगु देशम की मुस्लिम समुदाय को चार प्रतिशत आरक्षण की नीति बिलकुल साफ है, क्या केंद्र में रहते हुए भाजपा देश के अन्य हिस्से में मुस्लिम समुदाय के खिलाफ किसी भी बयान को लेकर मौन रहेगी। जातीय जनगणना को लेकर नीतीश कुमार क्या खामोश रहेंगे? ऐसे कई सवाल हैं जिनका उत्तर वक्त के गर्भ में है पर इन सब सवालों का जवाब भाजपा को तलाशनी होगी। नहीं तो कठिन होगी डगर, घटक दलों के साथ-साथ दिखेगा विपक्ष का असर।

उत्तर प्रदेश जैसे दलित-मुस्लिम बहुल वाले राज्य में संविधान बचाओ के नारे ने दलित-मुस्लिम समुदाय के वोटरों को किया गोलबंद। मुस्लिम इसलिए गोलबंद हुए कि उनको लगा कि संविधान, कांग्रेस या समाजवादी ही उन्हें बचा सकते हैं। यही कारण रहा कि भारतीय जनता पार्टी को मुस्लिम समुदाय का वोट नहीं मिला। मोदी जी के बयान की 'जब तक मैं जीवित हूं दलित आरक्षण में कटौती कर मुस्लिम समुदाय को नहीं देने दूंगा।' यह नैरेटिव सेट कर दलित वोट बैंक को रिझाने की कोशिश की गई, लेकिन संविधान बचाओ के आगे यह बहुत कारगर नहीं हुआ

एशिया-प्रशांत क्षेत्र के मजदूर बेहद गरीबी में

- एशिया-प्रशांत क्षेत्र के श्रमिक विश्व के अन्य क्षेत्रों के श्रमिकों की तुलना में अधिक समय तक काम करते हैं। औसतन प्रति सप्ताह 44 घंटे काम करते हैं
- पिछले साल इस क्षेत्र में लगभग 7.3 करोड़ मजदूर बेहद गरीबी में रह रहे थे और क्रयशक्ति के लिहाज से उनकी प्रति व्यक्ति दैनिक आय 2.15 डॉलर से भी कम थी

(आईएलओ)

नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू ने पूरी ताकत से नरेन्द्र मोदी का समर्थन कर उन लोगों का दिल तोड़ दिया जो ख्याली पुलाव पका रहे होंगे। दोनों ने अपने राज्यों के हितों के साथ देश के मुद्दों और पीएम मोदी के नेतृत्व का भी जिक्र किया। यानी सारे फैसले मोदी पर ही छोड़े। एकनाथ शिंदे ने भी कहा कि यह फेवीकोल का जोड़ है, टूटेगा नहीं।

अखिलेश शर्मा, पत्रकार
@akhileshsharma1

ये सभ्य तरीका नहीं

थप्पड़ कांड | प्रियंका सौरभ

वैचारिक मतभेदों को व्यक्त करने का घृणित तरीका, खासकर जब आप वर्दी पहने हों। 'शर्मिंदगी और हैरानी इस बात की है कि ये काम सीआईएसएफ की सुरक्षाकर्मी ने किया है जो लोगों की सुरक्षा के लिए होते हैं। क्या ये कंगना के खिलाफ चंडीगढ़ एयरपोर्ट पर प्लांड अटैक है। सांसद पर चंडीगढ़ एयरपोर्ट पर हुआ हमला बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है, खासकर एक सुरक्षाकर्मी द्वारा, जिन पर सुरक्षा का जिम्मा होता है। अपनी शिकायत को रखने का और भी सभ्य तरीका होता है।'

भारतीय राजनीति और सामाजिक जीवन में हम अक्सर इस तरह की घटनाओं के बारे में सुनते हैं। 'थप्पड़' कहने से हिंसा की गंभीरता कम होती है और हिंसा के शिकार की कमजोरी ज्यादा उजागर होती है। थप्पड़ से किसी की जान नहीं जाती, उसकी निष्कवचता अधिक प्रकट होती है। उसमें किसी योजना की जगह एक प्रकार की स्वतःस्फूर्तता का तत्व होता है। कहा जा सकता है कि थप्पड़ मारने वाले की मंशा सिर्फ नाराजगी का इजहार होता है। राजनीति और सिस्टम (लोकतंत्र या तानाशाही) में विरोध जायज है और यही विरोध तरह तरह के स्वरूपों में हमारे सामने आता रहता है। थप्पड़ या स्याही हमला भारतीय राजनीति में कोई नया किस्सा नहीं है। पहले भी हमारे नेता इन हमलों का दंश झेलते रहे हैं। इतना ही नहीं कई नेताओं पर जूता उछाले जाने की घटनाएं भी हुई हैं। लोकतंत्र लोगों को विरोध प्रदर्शन की आजादी देता है और लोग विरोध के नए-नए तरीके खोज लाते हैं। कभी विरोध में अंडे, टमाटर फेंके जाते हैं, तो कभी जूते-चप्पल 'कंगना ने किसान आंदोलन के खिलाफ में कुछ बोला तो सीआईएसफ की कांस्टेबल ने आज कंगना पर हमला कर दिया। ये कहां तक उचित है? जो लोग इसे सही ठहरा रहे हैं वे ये समझ लें कि रक्षक को भक्षक नहीं बनना होता है। आपकी व्यक्तिगत सोच और विचारधारा आपकी ड्यूटी के बीच में नहीं आनी चाहिए। देशभर में दर्जनों नेता है जो सेना के खिलाफ बोलते आए हैं। कभी सिक्यूरिटी के दौरान किसी सैनिक की भावना उसकी ड्यूटी के बीच आ गई तो ऐसे नेताओं का वहीं हिसाब हो जाएगा। धारा 370, राम मंदिर जैसे मुद्दों पर कई

नेताओ और सेलिब्रिटीज़ के घटिया और भद्दे बयान सबके सामने हैं। ऐसे लोगों के खिलाफ अगर हर सुरक्षाकर्मी सिक्युरिटी के दौरान अपनी भवनाएं दिखाने लगा तो बहुत बड़ी दिक्कत हो जाएगी। मुझे तो ये समझ नहीं आ रहा है कि लोग कैसे इस महिला के एक्ट को जस्टिफाई कर सकते हैं। क्या लोग ये भूल गए कि ऐसे ही दो सुरक्षा कर्मचारियों की भावनाएं उनकी ड्यूटी के बीच आ गई थी जिसकी वजह से इंदिरा गांधी की हत्या हुई। हिंसा की भर्त्सना बिना शर्त जब तक न की जाएगी, जब तक उसके लिए कोई औचित्य तलाशा जाता रहेगा और जब तक वह विचारधारा के आधार पर सही या गलत मानी जाएगी, उसकी पुनरावृत्ति होती रहेगी। संचार माध्यमों द्वारा हिंसा को नयनाभिराम बनाकर अगर उपभोग्य बना दिया गया तो वह फिर बार-बार 'अदा' की जाएगी और अपनी भयावहता भी खो बैठेगी। वह लोकतंत्र का सबसे सबसे खतरनाक क्षण होगा। देश का हर नेता किसी न किसी के बारे में आए दिन जहर उगलता रहता है। अगर हर नेता की बात पर सुरक्षा बलों के जवान इसी तरह रिएक्ट करना शुरू कर दें तो देश की व्यवस्था का क्या होगा? क्या इसको बढ़ावा देना उचित है? क्या कल को और कोई नहीं ऐसे किसी नेता या पब्लिक फिगर पर हाथ उठेगा? क्या गारंटी है कि कल को यही घूम कर सभी के पास आएगा। थप्पड़ मारने को उचित नहीं कहा जा सकता, साथ ही ऐसे गुस्से को भी सुनना तो पड़ेगा, सुनना चाहिए।

राजनेताओं को समझना चाहिए कि पीड़ित जनता की भावनाओं के प्रति यदि वे न केवल संवेदनहीन बल्कि क्रूर व अमानवीय रवैया अपनाएंगे तो जनता अपनी हताशा किसी रूप में तो व्यक्त करेगी। किसी को थप्पड़ मारना अपराध है। इस तरह के मामलों में पुलिस आईपीसी के सेक्शन 323 के तहत केस दर्ज करती है। उन्होंने आगे कहा कि आईपीसी के सेक्शन 323 के तहत अगर कोई अपनी इच्छा से किसी को चोट या नुकसान पहुंचाता है, तो ऐसा करने पर उसे 1 साल की जेल हो सकती है। साथ ही 1 हजार रुपये का जुर्माना या दोनों की सजा हो सकती है, लेकिन अगर ये बात सामने आती है कि किसी ने बदसलूकी की और फिर ये घटना हुई तो अदालत सजा को बदल भी सकती है या मामले को ही खारिज कर सकती है। देश का हर नेता किसी न किसी के बारे में आए दिन जहर उगलता रहता है। अगर हर नेता की बात पर सुरक्षा बलों के जवान इसी तरह रिएक्ट करना शुरू कर दें तो देश की व्यवस्था का क्या होगा? अपनी ड्यूटी निभाते हुए यह करना क्या उचित है? इस प्रकार का अतिवाद ही आतंकवाद के लिए जगह बनाता है। एक बार फिर से इस राज्य में जिस तरह अलगाववाद फन फैला रहा है वो कभी भी पंजाब को उसके खूनी दौर में वापस पहुंचा सकता है।

मित्र | संत राजिन्दर

आजकल हम एक ऐसे समय में रह रहे हैं, जहां चारो ओर एकांत और अकेलापन फैला हुआ है। अपने जीवन की व्यस्तता के कारण हम एक-दूसरे

से बात करने और अपने आस-पास के लोगों की उपस्थिति का आनंद लेने में कम समय बिताते हैं। बहुत कम लोगों से संपर्क होने के कारण हम हर जगह अलग-थलग और अकेलापन महसूस करते हैं। जिसकी वजह से हमारे अंदर यह डरावना अहसास आता है कि जीवन में हमारा कोई सहारा नहीं हैं। परिणामस्वरूप यह अवस्था बदले में हमें तनाव, एकांत और मोहभंग की स्थिति की ओर ले जाती है। इस तनावपूर्ण स्थिति से बाहर निकलने के लिए हम सभी को एक-दूसरे का सहारा, प्यार और कद्र महसूस करने की ज़रूरत है। जब हम स्वयं इस प्यार और एक-दूसरे को समझने की स्थिरता को महसूस करते हैं तो हमारे लिए इस कठिन समय से गुजरना आसान हो जाता है और हम अधिक प्रेमपूर्ण, शांत और सुखी जीवन जीने के लायक हो जाते हैं। इसमें कोई दो राय नहीं है कि जीवन में एक सच्चा दोस्त होना बहुत जरूरी है, जिससे कि हम अपना बोझ और परेशानियों को बांट सकें और उस पर हम भरोसा कर सकें, ताकि हमारा अकेलापन दूर हो, लेकिन हमें ऐसी दोस्ती कहां मिल सकती है जो हमेशा बनी रहे? संत-महापुरुष हमें समझाते हैं कि इस संसार में केवल एक ही चीज हमेशा-हमेशा के लिए रहने वाली है और वह हैं पिता-परमेश्वर। इस दुनिया की बाकी सभी चीजें बदल जाने वाली हैं। केवल पिता-परमेश्वर ही हमेशा हमारी रक्षा करने वाले, हमेशा हमारे साथी, हमेशा हमारे सच्चे मित्र और हमेशा हमारे ऊपर अपना प्यार बरसाने वाले हैं। जब हम उनके प्रेम का अनुभव करते हैं और उनके साथ अपनी मित्रता पाते हैं तो हमारे लिए एक पूरी नई दुनिया खुल जाती है। जब हमें पिता-परमेश्वर के प्यार का अनुभव होता है तो हम अंदर से प्यार और सुरक्षा की भावना से भर जाते हैं और अपने आस-पास की उथल-पुथल से प्रभावित हुए बिना अपना जीवन जीना शुरू कर देते हैं। हम ध्यान-अभ्यास के माध्यम से पिता-परमेश्वर के साथ अपनी मित्रता का अनुभव कर सकते हैं। इसके जरिये हमें अपने अंदर ही पिता-परमेश्वर के रूप में एक सच्चा मित्र मिल जाता है, जिनके साथ जुड़कर हम सुख प्राप्त कर सकते हैं।

रीडर्स मेल

लय में खेले भारत

टी-20 विश्व कप में चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान के साथ भारत का 9 जून को मुकाबला है जिस पर दुनिया के निगाहें लगी हुई है। पाकिस्तान के साथ खेलने और उससे जीत हासिल करने की अहमियत कुछ अलग ही है। इस मैच में भारतीय खिलाड़ियों को आत्मविश्वास के साथ खेलना होगा क्योंकि अमेरिका जैसी नौसीखिया टीम ने पाकिस्तान को पटखनी देकर उसे पहले ही जख्मी कर दिया है। ऐसे में हमारे साथ उसका मुकाबला बड़ा ही दिलचस्प होगा। भारतीय टीम को मैच को गंभीरता से खेलना होगा क्योंकि इसी मैच में जीत का उत्साह भारतीय टीम को अगले मैचों के लिए ऊर्जा प्रदान करेगा। भारतीय टीम पूरी तरह लय में खेले और गेंद और बल्ले के साथ ही क्षेत्ररक्षण में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करें तो पाकिस्तान जैसी टीम को बड़ी आसानी से हराया जा सकता है।

अमृतलाल मारू 'रवि' इंदौर, मप्र

चुनौतियों से पार पाना होगा

भाजपा के लिए अपने दम पर सरकार बनाने के आंकड़े से कुछ सीटें कम रहना एक असहज स्थिति है। एनडीए के सहयोगी दलों की बैठक में प्रधानमंत्री पद को लेकर भले ही नरेन्द्र मोदी के नाम पर सहमति बन गई हो, परंतु इस नई सरकार के बनने के बाद अनेकों तरह की चुनौतियां भी आएंगी। एनडीए के सहयोगी दल जेडीयू ने अग्निवीर योजना को लेकर इस बात के संकेत भी दे दिए हैं कि इस योजना की पुन : समीक्षा की जानी चाहिए। नई सरकार के गठन के बाद भी जनता से किए गए वादों और अपने संकल्प पत्र पर कार्य करने के साथ ही ऐसी ही अनेकों चुनौतियों से निपटने की दोहरी जिम्मेदारी भी भाजपा पर ही रहेगी। कुल मिलाकर नई सरकार बनने के बाद अब परिस्थितियां पिछले एक दशक जैसी नहीं होगी। एनडीए के लिए अपने सभी दलों के बीच तालमेल बनाकर सरकार चलाना किसी अग्नि परीक्षा से कम नहीं होगा। बहरहाल, उम्मीद है नई सरकार देश की जनता की आशा और आकांक्षाओं पर खरी उतरकर विकसित भारत के सपने को पूरा करने का भरसक प्रयास करेगी।

हितेंद्र डेढा, दिल्ली

हिंसा पर काबू जरूरी

लोक सभा चुनाव के बाद एक बार फिर पश्चिम बंगाल में हिंसा का बढ़ना, लोगों में डर पैदा होना, भय का वातावरण बनना, आम जनजीवन का अनहोनी होने की आशंकाओं से घिरा होना चिंताजनक है। यही वजह है कि कलकत्ता हाईकोर्ट में एक याचिका दायर की गई है, जिसमें विपक्षी पार्टी के कार्यकर्ताओं को सुरक्षा देने की मांग की गई है। याचिका में मांग की गई है कि पुलिस को निर्देश दिए जाएं कि वे विपक्षी कार्यकर्ताओं को हिंसा से बचाने के लिए सुरक्षा दें। पश्चिम बंगाल में लोक सभा चुनाव बाद की हिंसा पर दायर याचिका की सुनवाई करते हुए कलकत्ता हाईकोर्ट ने गंभीर चिंता जताई एवं ममता बनर्जी सरकार को कड़ी फटकार लगाई। बंगाल का लोकतंत्र तानाशाही मानसिकता से गुजर रहा है। इन स्थितियों से तो यही लगता है कि राजनीतिक वोट बैंक के लिए ममता संविधान एवं सुरक्षा-व्यवस्था की जितनी अवमानना कर सकती है, उसने की है और आगे भी वह करती रहेगी। चुनाव में ऐसी हिंसक एवं विडम्बनापूर्ण स्थितियां लोकतंत्र पर एक धुंधलका है, जिस पर नियंत्रण जरूरी है।

ललित गर्ग, ई मेल से

letter.editorsahara@gmail.com

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

https://t.me/AllNewsPaperPaid

राष्ट्रीय सहारा • राष्ट्रीयता • कर्त्तव्य • समर्पण
वर्ष-33, अंक 295
सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक जिया कादरी द्वारा सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन प्रेस, सी-2,3,4, सेक्टर-11, नोएडा में मुद्रित तथा 705-706, सातवां तल, नवरंग हाउस, 21 के.जी. मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। । समूह संपादक - डॉ. विजय राय। स्थानीय संपादक - रत्नेश मिश्र* ।
दूरभाष - दिल्ली कार्यालय - 23352368, 23352369, 23352371, 23352372, फैक्स - 23352370, दूरभाष - नोएडा प्रेस 0120-2444755, 2444756 फैक्स - 2550750
आर.एन.आई. सं. 53469/91, पंजीकरण संख्या UP/BR /GZB- 38/2024-2026
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन तथा कानूनी मामलों के लिए उत्तरदायी

तीसरा कार्यकाल

नरेंद्र मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने की दिशा में कदम बढ़ा चुके हैं और उन्हें आधिकारिक रूप से राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के संसदीय दल का नेता चुन लिया गया है। नेता चुने जाते ही नरेंद्र मोदी ने उचित ही आश्वस्त किया कि वह अपनी अगली सरकार के सभी फैसलों में सर्वसम्मति सुनिश्चित करने का प्रयास करेंगे। वह पहले भी गठबंधन की सरकार चला चुके हैं, मगर इस बार गठबंधन पर उनकी निर्भरता है। ऐसे में, सहयोगी दलों के साथ मिलकर चलना इस कार्यकाल की मांग है। यह अपने आप में सुखद है कि उनकी आगामी सरकार में दक्षिण भारत से चंद्रबाबू नायडू का मजबूत प्रतिनिधित्व रहेगा, तो उत्तर भारत से सबसे बड़े सहयोगी नीतीश कुमार रहेंगे। नायडू और नीतीश कुमार, दोनों को विश्वास में लेते हुए अगर केंद्र सरकार काम करती है, तो जाहिर है, विपक्ष को भी उसे अस्थिर करने के ज्यादा मौके नहीं मिलेंगे। विपक्ष तो इसी ताक में हमेशा रहेगा कि एनडीए में फूट पड़े और भाजपा कमजोर हो।

खैर, अब यह भारतीय इतिहास में दर्ज हो गया है कि भाजपा के वरिष्ठ नेता राजनाथ सिंह ने संसदीय दल के नेता के रूप में नरेंद्र मोदी का नाम प्रस्तावित किया और उनके प्रस्ताव का अमित शाह, तेदेपा प्रमुख एन चंद्रबाबू नायडू, बिहार के मुख्यमंत्री व जद-यू प्रमुख नीतीश कुमार और अन्य नेताओं ने समर्थन किया। प्रधानमंत्री के नाम पर गठबंधन में सर्वसम्मति है और अब उनके भावी कार्यकाल की ओर सबकी निगाह रहने वाली है। नरेंद्र मोदी भी अपने तीसरे कार्यकाल का महत्व अच्छी तरह समझ रहे हैं और इसी रोशनी में उन्होंने स्पष्ट कर दिया है कि अगले दशक में भारत के लिए उनका व्यक्तिगत सपना सुशासन, विकास और प्रत्येक नागरिक के जीवन में सुधार पर केंद्रित होगा। उन्होंने यह भी कहा है कि लोगों के जीवन में सरकारी हस्तक्षेप कम करने से हमारा लोकतंत्र ही मजबूत होगा। वाकई अपने देश में अभी भी कोई नई पहल या किसी नए उद्यम की स्थापना आसान नहीं है। लोगों को तरह-तरह से परेशान करने वाली प्रक्रियाएं हैं, पुलिस के पास जरूरत से ज्यादा शक्तियां हैं, अतः नई सरकार अगर सामान्य जन-जीवन में सरकारी हस्तक्षेप को न्यूनतम कर सकी, तो यह एक बड़ा बदलाव होगा। प्रधानमंत्री ने स्पष्ट कर दिया है कि हम विकास, सुशासन और समावेशी भागीदारी की एक नई यात्रा शुरू कर रहे हैं। वाकई, इसकी इस देश को जरूरत है। गौर करने की बात है कि शुक्रवार को प्रधानमंत्री ने संविधान को अपने माथे से लगाया, उनका यह कृत्य दरअसल विपक्ष को दिया गया जवाब था। चुनाव प्रचार के दौरान यह बार-बार कहा गया था कि भाजपा सत्ता में आई, तो संविधान बदल देगी।

नेता चुने जाते ही नरेंद्र मोदी ने उचित ही आश्वस्त किया कि वह अपनी अगली सरकार के सभी फैसलों में सर्वसम्मति सुनिश्चित करने का प्रयास करेंगे।

नरेंद्र मोदी का संबोधन एनडीए और भाजपा, दोनों को ही बल प्रदान करेगा। आज मिलकर चलने की जरूरत है। प्रधानमंत्री के संबोधन से साफ लगता है कि आगामी दिनों में समाज में परस्पर कटुता कम होगी। गरीबों को आर्थिक-सामाजिक रूप से ऊपर लाया जाएगा और अमीरों को देश के विकास व रोजगार के प्रति जवाबदेह बनाया जाएगा। भारत जैसे विविधता भरे समाज में तीसरी बार लगातार प्रधानमंत्री बनने की कामयाबी किसी चमत्कार से कम नहीं है, इस चमत्कार को लोगों के जीवन में सकारात्मक भाव से उतरना चाहिए। जनादेश ने बता दिया है कि लोगों को अभी भी प्रधानमंत्री से बहुत उम्मीदे हैं और उस पर खरा उतरने के अलावा कोई रास्ता नहीं है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तीसरी बार जनादेश लेकर सरकार बनाने जा रहे हैं। पंडित जवाहरलाल नेहरू लगातार तीन जीत दर्ज करके प्रधानमंत्री बने थे। मई 1962 में तीसरी लोकसभा के पहले सत्र में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर जो बहस हुई थी, वह आज भी गौरतलब है।

कई मामलों में नाकाम रह गई केंद्र सरकार

लक्ष्मी मल्ल सिंघवी | वरिष्ठ नेता व सांसद

- कांग्रेस को अपनी विजय पर फूल नहीं उठना चाहिए, विचार करना चाहिए।
- सरकार भ्रष्टाचार को रोकने में बिल्कुल असफल रही है।
- सरकार बेरोजगारी की समस्या को हल नहीं कर सकी है।

मैं भारतीय लोकतंत्र के राष्ट्रपति (डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद) को विदा का प्रणाम प्रस्तुत करते हुए उन्हें अपनी श्रद्धा के फूल भेंट करता हूं। उन्होंने देश के समक्ष बलिदान और देश सेवा का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत किया है, परंतु इसके साथ ही मैं यह भी निवेदन कर देना चाहता हूं कि उनका अभिभाषण उन आश्वासनों को पूरा नहीं करता, जिसका आश्वासन कांग्रेस दल ने चुनावों के समय दिया था। उसमें सरकार की नीतियों तथा कार्यक्रमों का कोई नया नक्शा नहीं प्रस्तुत किया गया। अभिभाषण में बड़ी गंभीर बातों की उपेक्षा की गई है।

यह तो संतोष की बात है कि भारत ने लोकतंत्रीय प्रणाली को अपनाया है और बहुत बड़ा चुनाव इस देश में हुआ है, जिसकेलिए हमें अपने चुनाव आयोग को मुबारकबाद देनी चाहिए, परंतु इस दिशा में कुछऐसी भी बातें हुई हैं, जिनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। पदासीन दल ने सरकारी शक्ति का खूब प्रयोग किया है। कांग्रेस के नेता एक ओर तो सांप्रदायिकता और जाति भेद इत्यादि की निंदा करते हैं, परंतु दूसरी ओर, वे सांप्रदायिक वर्गों जैसे ढंग अपनाते रहे हैं। कांग्रेस दल को अपनी विजय पर फूल नहीं उठना चाहिए, बल्कि उसे चुनावों में जो कमियां रह गई हैं, उन पर विचार करना चाहिए, ताकि भविष्य में भारत में लोकतंत्र मजबूत हो सके। इस बारे में मेरा मत यह है कि ससंदीय प्रजातंत्र प्रणाली के लिए विरोधी दल का होना जरूरी है। एक सक्रिय विरोधी दल के बिना प्रजातंत्र सफल नहीं हो सकता।

यह भी बड़ी खेदजनक बात है कि राष्ट्रपति के अभिभाषण में देश में सर्वत्र विद्यमान भ्रष्टाचार का कोई उल्लेख नहीं किया गया। इसे दूर करने का आश्वासन भी नहीं दिया गया। मेरा कहना तो यह है कि सरकार इसे रोकने में बिल्कुल असफल रही है। इस बुराई को दूर किया जाना बहुत ही आवश्यक है, इसके बिना देश प्रगति की ओर नहीं बढ़ सकता। देश के लिए एक स्वच्छ, ईमानदार तथा सकुशल प्रशासन सुनिश्चित किया जाना चाहिए। विभिन्न राज्यों में चौकसी समितियां बनाई जानी चाहिए तथा प्रक्रियाओं को कड़ा बनाया जाना चाहिए। नमूने के तौर पर किसी भी राज्य में राजनीति में भाग लेने वाले व्यक्तियों की संपत्ति की जांच की जानी चाहिए। पंजाब और राजस्थान में तो इस प्रकार की जांच की बहुत ही आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त सरकारी कामों में जो लालफीताशाही का बोलबाला हो रहा है, उसे भी कम किया जाए। इससे भी काम की बहुत हानि होती है।

आर्थिक समस्या को हल करने के बारे में भी अभिभाषण में कोई विशेष संकेत नहीं है। इस दिशा में प्रगतिशील दृष्टिकोण का नितांत अभाव है। समाजवाद का नाम लेकर ही सारे अवगुणों और दोषों को छिपाने का यत्न किया जाता है। मेरा निवेदन है कि हमें इस सरकारी पूंजीवाद को समाजवाद का दरजा नहीं देना चाहिए। स्थिति में सुधार के लिए प्रयत्न किए जाने चाहिए। सरकारी उपक्रमों का अध्ययन करने पर पता चलता है कि जितनी फिजूलखर्ची वहां होती है, उतनी उन गैर-सरकारी उपक्रमों में नहीं होती है, जिनका निरंतर विरोध किया जाता है। उनकी मजदूरी व्यवस्था तथा उत्पादन व्यय गैर-सरकारी संस्थानों से बहुत अधिक है और कोई वाद श्लाघा योग्य नहीं है। हमें व्यावहारिक रूप में समाजवाद का प्रभाव देखना चाहिए व समाजवाद के नाम पर चल रहा भ्रष्टाचार रोकना होगा।

इसके अतिरिक्त आज एक बहुत बड़ी महत्वपूर्ण समस्या है बेरोजगारी, जिसे सरकार हल नहीं कर सकी है। स्वयं सरकार की ओर से भी इस बात को स्वीकार किया गया है। शायद सरकार यह समझने लग गई है कि यह प्रश्न हल नहीं हो सकता, परंतु इसके प्रति अधिक देर उदासीन नहीं रहा जा सकेगा। इस समस्या के साथ शिक्षित बेरोजगारों की समस्या भी संबद्ध है। अतः इससे देश में क्रांति हो सकती है, इसे बहुत संतोषजनक ढंग से हल करना ही होगा।

(लोकसभा में दिए गए उद्बोधन से)

आमने-सामने

सिर्फ नाकामियां गिना देने से कोई लाभ नहीं

जवाहरलाल नेहरू | तत्कालीन प्रधानमंत्री

- जो विकास शताब्दियों में होता, उसे कुछ वर्षों में करने की कोशिश है।
- हर समय भ्रष्टाचार की चीख-पुकार मचाते रहना उचित नहीं है।
- बेरोजगारी निरंतर बढ़ने वाली है, पर हम कोशिश कर रहे हैं।

यह धन्यवाद प्रस्ताव औपचारिक ही नहीं है, इसमें वास्तविकता है। ...मैं यहां हर बात में सरकार की वकालत करने या देश में होने वाली सभी चीजों या घटनाओं का औचित्य बताने के लिए खड़ा नहीं हुआ हूं। हालांकि, मैं मानता हूं कि देश में जो भी कुछ होता है, उसका दायित्व सरकार पर ही है, फिर भी देश में जो भी हुआ है, उस सब को लेकर भ्रष्टाचार के पुराने आरोपों या सरकार या प्रशासन की नाकामियों को ही गिनाने से कोई लाभ नहीं। आलोचकों को इसके साथ ही सरकार या प्रशासन की सफलताओं को भी देखना चाहिए। तभी आप अपने दृष्टिकोण में एक संतुलन रख पाएंगे।

यह तो सभी जानते और महसूस करते हैं कि भारत के सामने बहुत बड़े-बड़े काम, बड़ी-बड़ी समस्याएं हैं। हमारे दायित्व बड़े लंबे-चौड़े हैं।... असल मुश्किल इस बात से पैदा होती है कि ...जो विकास कई शताब्दियों में होता, हम उसे कुछ ही वर्षों में पूरा करने की कोशिश कर रहे हैं... आशा है, हमें इसमें सफलता मिलेगी और इतिहास हमारी सफलता का साक्षी होगा। ...हमें भारत का अपना व्यक्तित्व बनाए रखते हुए, उसकी जड़ें महफूज रखते हुए ही भारत को आधुनिक बनाना है; उसके सोचने का तरीका आधुनिक बनाना है। ...सवाल इस बात का है कि हमें मनुष्यों को बदलना है और हम उन्हें बदलते कैसे हैं।

...यह भी शिकायत की गई है कि चुनावों के दौरान लोगों ने जातिवाद और सांप्रदायिकता की भावनाओं का इस्तेमाल किया है। ...जातिवाद की असल में एक मनोवृत्ति होती है और यह मनोवृत्ति विशेषाधिकारहीन, निचले तबकों में ही नहीं, काफी समृद्ध विशेषाधिकार प्राप्त लोगों में भी मिलती है, पर आज के युग में वैसी मनोवृत्ति के लिए कोई स्थान नहीं रह गया है।...

हो सकता है कि हमारी जितनी भी आलोचनाएं यहां की गई हैं, सभी उचित हों, पर उनको हमारी समस्याओं के साथ रखकर भी देखना चाहिए। ...हर समय हर मौके पर भ्रष्टाचार की चीख-पुकार मचाते रहना उचित नहीं है। इस तरह की चीख-पुकार से तो भ्रष्टाचार और बढ़ता है। भ्रष्टाचार का एक माहौल बन जाता है। लोग सोचने लगते हैं कि सभी तो कर रहे हैं। ...कुछ आलोचनाएं भारत की एक बड़ी गलत तस्वीर पेश करती हैं। ... हम समाजवादी व्यवस्था के हामी हैं। इसको लेकर भी आलोचना की गई है। हम समाजवाद की तरफ कैसे बढ़ रहे हैं? असमानताएं तो मौजूद हैं और बढ़ती जा रही हैं। काफी हद तक बात ठीक है, पर यह भी देखिए कि इस परिस्थिति में और किया क्या जा सकता है? मैं समाजवाद का यह अर्थ नहीं लगाता कि लोगों में गरीबी बांट दी जाए, हर एक को गरीब बना दिया जाए।...

भारत में बेरोजगारी बढ़ने का एक कारण यह भी है कि अब महिलाएं भी नौकरी करने लगी हैं। यह एक अच्छी बात है, पर इस उल्लेख का मेरा अभिप्राय यह है कि पहले ये नौकरियां नहीं करती थीं। यही कारण है कि बेरोजगारी में अब वृद्धि हुई है। पढ़े-लिखे लोगों में बेकारी है। विश्वविद्यालयों से विद्यार्थियों की संख्या पढ़-लिखकर निकल रही है और वे नौकरी चाहते हैं। समाज के माहौल में बदलाव हो रहा है। पहले लोग पढ़-लिखकर भी गांवों में रहते थे, पर अब कोई रहना पसंद नहीं करता, सब नौकरी चाहते हैं। इस कारण भी बेकारी, बेरोजगारी बढ़ रही है।...यह एक बड़ी समस्या ही नहीं है, अपितु निरंतर बढ़ने भी वाली है। इस समस्या का एकमात्र हल अधिक से अधिक औद्योगिकीकरण और नवीनतम उपायों को अपनाना है।...

इसमें संदेह नहीं कि कुछ कीमतें बढ़ी हैं, किंतु... कीमतों का स्तर 1962 के पिछले तीन महीनों से लगभग स्थिर है। आपको यह याद रखना चाहिए कि विकसित होने वाली अर्थव्यवस्था में मूल्यों का बढ़ना स्वाभाविक है। यह संतोष की बात है कि इसके बावजूद इस प्रवृत्ति को रोक लिया गया है।

(लोकसभा में दिए गए उद्बोधन से)

आम, लीची और केले पर पड़ने लगा बढ़ते ताप का असर

एस के सिंह | प्रोफेसर व कृषि वैज्ञानिक

फूलों और फलों को झुलसकर गिरने से बचाना होगा। हम किसानों को समझाते रहते हैं कि अपने बाग की मिट्टी को सूखने मत दीजिए, मिट्टी सूखेगी, तो लगे हुए फल असमय गिरेंगे।

अपने देश में आम को फलों का राजा और लीची को फलों की रानी कहा जाता है। हर साल की तरह इस साल भी इन दिनों बाजार में दोनों फलों की बहार आई हुई है। आम की फसल की पहले चर्चा करें, तो इस बार भी मौसम की मार आम पर पड़ी है। अप्रैल के महीने तक सब ठीक था, लेकिन हीट वेव या लू से नुकसान हुआ। पहले हीट वेव का दौर तीन-चार दिन का होता था, इस बार अप्रैल में ही हीट वेव बारह से पंद्रह दिन का हो गया। लू की वजह से बड़ी मात्रा में फल समय से पूर्व ही पेड़ से गिर गए हैं। आखिर ऐसा क्यों हुआ?

दरअसल, समस्या यह है कि किसान बाग तो लगा देते हैं, पर पर्याप्त पानी की व्यवस्था नहीं करते। कृषि वैज्ञानिक बोल-बोलकर थक गए हैं कि बाग में पानी की व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि फूलों और फलों को असमय झुलसकर गिरने से बचाया जा सके। हम किसानों को समझाते रहते हैं कि अपने बाग की मिट्टी को सूखने मत दीजिए, मिट्टी सूखेगी, तो लगे हुए फल असमय गिरेंगे।

फसल इस बार बहुत प्रभावित हुई है। ऐसा भी लगता है कि किसानों का ज्यादा ध्यान चुनाव की ओर चला गया। वैसे किसानों की स्थिति देखें, तो ज्यादातर किसान अभाव में जीते हैं और बाग में पानी की यथोचित व्यवस्था नहीं कर पाते, जिससे आम की पैदावार जितनी व जिस गुणवत्ता की हो सकती थी, वैसी नहीं हो पाई है।

आम की तुलना में लीची बहुत ज्यादा प्रभावित हुई है। पिछले दिनों एक मित्र ने मुझसे पूछा कि लीची के पेड़ों पर फूल-फल इतने कम क्यों आए हैं? हमें समझना चाहिए कि कोई पेड़ दो चरण से गुजरता है। एक चरण में पेड़ में पत्तियां होती हैं और दूसरे चरण में उसमें फूल और फल आता है। जब पेड़ फूल और फल देने की प्रक्रिया में आ जाता है, तब वह इस प्रक्रिया में किसी तरह की छेड़छाड़ बर्दाश्त नहीं करता है। अगर फूल-फल के चरण में छेड़छाड़ हो, तो पेड़ फिर पत्तियां देने के चरण में चला जाता है। एक तो इस बार सर्दी देर से पड़ी थी और इसके ठीक बाद तापमान बढ़ गया। पेड़ को यह लगा कि गरमी आ गई और वह पत्तियां बनाने के चरण में चला गया, तो उसका फूलना-फलना कम हो गया, ठीक ऐसा ही लीची के साथ ज्यादा हुआ है। कहीं न कहीं मौसम की गड़बड़ी से फलों और उनकी गुणवत्ता भी प्रभावित हो रही है। जिन किसानों ने कुछ मेहनत की है, उन्होंने अपनी फसल व पैदावार को बचा लिया है।

बहरहाल, यह बताते चलें कि भारत में कुल 720.12 हजार मैट्रिक टन लीची का उत्पादन प्राप्त होता है, जबकि अकेले बिहार से 308.06 हजार मैट्रिक टन लीची का फल प्राप्त होता है। बिहार में लीची की उत्पादकता 8.40 टन/हेक्टेयर है, जबकि इसकी राष्ट्रीय उत्पादकता 7.35 टन/हेक्टेयर है। भारत में पैदा होने वाली लीची का लगभग 40 फीसदी उत्पादन बिहार में ही होता है। उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, हिमाचल और पश्चिम बंगाल जैसे प्रदेशों में भी लीची की खेती होती है। अकेले मुजफ्फरपुर में 11 हजार हेक्टेयर में लीची के बाग हैं।

अब बदलते समय के साथ बिहार की कृषि जलवायु में हो रहे परिवर्तन लीची की खेती के लिए गंभीर खतरे के रूप मे उभर रहे हैं। तापमान का 40 डिग्री सेल्सियस या इससे ऊपर कई बार पहुंचना लीची उत्पादक किसानों के लिए बहुत ही चिंता का विषय है। लीची के बागों में पेड़ों पर जल छिड़काव की व्यवस्था अब जरूरी है। साथ ही, उनमें मधुमक्खी पालन से भी अच्छी गुणवत्ता वाले फलों की पैदावार 15-20 प्रतिशत तक बढ़ जाती है।

आम, लीची की तरह केला उत्पादन पर भी ध्यान देने की जरूरत है। इसकी खेती के लिए भी आवश्यक है कि तापमान 13-40 डिग्री के बीच हो। सर्दी के दिनों में न्यूनतम तापमान जब 10 डिग्री से नीचे जाता है, तब भी केला उत्पादन पर असर पड़ता है। अब विगत कई वर्षों से हीट वेव की साल-दर-साल बढ़ती आवृत्ति और तीव्रता चिंता का कारण बनती जा रही है। भारत में बुनियादी रूप से हमेशा उपलब्ध किफायती फल केले की पैदावार तब प्रभावित होती है, जब तापमान विशेष रूप से 40 डिग्री सेल्सियस से ऊपर चला जाता है। लू चलने और जल की कमी से भी केला उत्पादन पर असर पड़ता है। संकेत स्पष्ट है कि उत्तर भारत के एक बड़े क्षेत्र में किसानों को ज्यादा जल और बेहतर कृषि ज्ञान की जरूरत है, ताकि इन फलों की मिठास बनी रहे।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

हिन्दुस्तान | 75 साल पहले 08 जून, 1949

खाद्य मंत्री की चेतावनी

भारत सरकार के खाद्य-मंत्री श्री रामदास दौलतराम ने घोषणा की है कि केन्द्र से कमी वाले प्रांतों को जितना अन्न मिलता है, उसमें भारत सरकार की खाद्य संबंधी आत्मनिर्भरता नीति के अनुसार क्रमशः कमी की जाती रहेगी। यह प्रांतों के लिए एक सामयिक चेतावनी है और इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि भविष्य में खाद्य संबंधी समस्याओं के निराकरण का उत्तरदायित्व केन्द्र नहीं बल्कि प्रांतों पर होगा। यद्यपि खाद्य मंत्री की इस घोषणा में कोई नई बात नहीं है और पिछले वर्ष सितम्बर मास में भी उन्होंने यही कहा था कि देश के खाद्य-संकट को प्रांत ही अपने प्रयत्नों द्वारा दूर कर सकते हैं, तथापि हमें इस घोषणा का स्वागत करना होगा, क्योंकि इसमें भारत सरकार एक पग आगे बढ़ गई है और जिस तथ्य पर वह केवल सिद्धांत और आदर्श की दृष्टि से बल दे रही थी, उसे अब उसने कार्य रूप देने की घोषणा कर दी है।

सम्भवतः यह बताने की आवश्यकता नहीं कि खाद्य-संकट आज भी देश के सामने मुंह बाये खड़ा है और यद्यपि उससे संघर्ष करने में केन्द्रीय सरकार किसी प्रकार पीछे नहीं हट रही है, तथापि वास्तव में उसका भार प्रांतों को ही उठाना चाहिए। उन्हें जहां एक ओर अधिक से अधिक अन्न उपजाने का प्रयत्न करना चाहिए, वहां दूसरी ओर अन्न संग्रह आंदोलन को भी सफल बनाने में दत्तचित्त होना चाहिए। केन्द्रीय सरकार इन दोनों आवश्यकताओं पर बराबर जोर देती रही है, किंतु दुःख की बात है कि प्रांतीय सरकारें अब तक अधिक नहीं कर पाई हैं। यों तो अन्न संग्रह और ''अधिक अन्न उपजाओ'' आंदोलनों के ढोल बड़े जोरों से प्रांतों में पीटे जाते रहे हैं और कुछ प्रांतों- विशेषतः युक्त प्रांत ने इन दिशाओं में सराहनीय सफलता भी प्राप्त की है। किंतु अधिकांश प्रांतों से इसकी असफलता के ही समाचार मिले हैं और बम्बई, मद्रास, तथा पश्चिमी बंगाल जैसे प्रांतों में अन्न समस्या की विकरालता अल्प नहीं हुई है। सब से बड़ी बात तो यह है कि चूंकि केन्द्रीय सरकार विदेश से अन्न मंगा-मंगाकर किसी प्रकार प्रांतों को दुर्भिक्ष से बचा रही है, प्रांत निजी पराक्रम में शिथिलता दिखा रहे हैं। वे सम्भवतः इस बात को भी कम अनुभव करते हैं कि विदेशों से अन्न मंगाना स्वदेश के लिए कितना अहितकर है।

मनसा वाचा कर्मणा

सत्संग में विश्राम

संस्कृत की एक पुरानी कहावत है कि ऋषियों और ज्ञानियों की वाणी तत्काल अनुभव बन जाती है। *रामचरितमानस* में भी गोस्वामी जी ने कहा है- *झूठि न होई देवरिषि बानी।* तुम्हारा पूरा शरीर परमाणुओं से बना है। जब तुम इस सत्य के साथ होते हो, तुम्हारे भीतर ऊर्जा प्रज्वलित होती है और चेतना उन्नत होती है। जब तुम भजन गाते हो, उसकी ध्वनि की ऊर्जा का स्पंदन तुम्हारे शरीर के कण-कण में समा जाता है। जैसे एक माइक्रोफोन ध्वनि को पकड़कर विद्युत तरंगों में परिवर्तित करता है, शरीर ध्वनि के स्पंदन को समेटकर चेतना में परिवर्तित करता है। जब तुम भजन करते हो, तुम्हारा शरीर ऊर्जा से तर जाता है और चेतना में परिवर्तन आता है। यदि तुम बठे-बैठे गप्प मारते हो या तीव्र संगीत सुनते हो, तब वह ऊर्जा तुम्हारे शरीर में समा जाती है। जब तुम ज्ञान को सुनते हो, या पूण हृदय से जप करते हो, तब तुम्हारी चेतना उन्नत होती है। कभी गौर किया है कि लोगों को घर की जरूरत क्यों होती है? क्या वे बिना किसी आश्रय के पशुओं की तरह जंगल में रह सकते हैं? मनुष्य को परिवर्तनशील प्रकृति से सुरक्षा चाहिए, इसलिए वह अपने शारीरिक सुख के लिए एक आश्रय बनाता है। इसी प्रकार, आध्यात्मिक और मानसिक सुख के लिए सत्संग एक आश्रय है।

जो सत्संग (सत्य की संगत) में शामिल नहीं होता, वह पशु के समान है। सत्संग ही मनुष्य को सुसभ्य बनाता है। सत्संग ही जीवन के कठोर और परिवर्तनशील प्रभावों से बचने का आश्रय है। सत्संग वह घोंसला है, जहां तुम विश्राम पाते हो। यदि तुम खुशियां बटोरने में लगे हो, तुम्हें दुख मिलता है। यदि तुम खुशियां बांटने में लगते हो, तुम्हें प्रेम और आनंद मिलता है।

श्री श्री रविशंकर

मलाला यूसुफजई | नोबेल विजेता

इजरायल ने गाजा में एक और स्कूल पर बमबारी की है, जहां हजारों लोगों ने पनाह ले रखी थी। स्कूलों को कभी भी निशाना नहीं बनाया जाना चाहिए। आखिर हम कितने और बेगुनाहों को यूं मरने देंगे?

चुनाव जीतने वाले सभी सांसद बराबर

आम चुनाव के नतीजे आ चुके हैं और जिन दो परिणामों ने काफी ज्यादा चौंकाया है, उनमें से एक है, कश्मीर की बारामूला संसदीय सीट से अब्दुल राशिद शेख का जीतना और दूसरा, पंजाब की चर्चित लोकसभा सीट खडूर साहिब से अमृतपाल सिंह की जीत। इन दोनों की राजनीतिक पारी से सियासी गलियारों में एक नई बहस शुरू हो गई है। राशिद शेख पेशे से एक इंजीनियर हैं, लेकिन उन पर 'आतंकियों को धन मुहैया' कराने का आरोप है। उनको साल 2019 में ही गिरफ्तार किया गया था और इस समय वह दिल्ली की तिहाड़ जेल में बंद हैं। उन्होंने कश्मीरी राजनीति के बड़े खिलाड़ी उमर अब्दुल्ला को दो लाख से अधिक वोटों से हराया है। उधर, अमृतपाल सिंह ने कांग्रेस उम्मीदवार कुलबीर सिंह जीरा को 1.97 लाख से भी अधिक मतों से शिकस्त दी। यह पंजाब की लोकसभा सीटों में किसी भी उम्मीदवार द्वारा दर्ज की गई जीत का सबसे बड़ा अंतर है। दोनों विजेता बतौर निर्दलीय मैदान में थे।

सवाल है, अब सरकार क्या करेगी? क्या इनके निर्वाचन को रद्द घोषित किया जाएगा या फिर इनको शपथ लेने से रोका जाएगा? अगर इन्होंने शपथ ले भी ली, तो क्या संसदीय कार्यवाहियों में ये हिस्सा ले सकेंगे? इनको शपथ लेने से तो नहीं रोका जा सकता, लेकिन संसदीय कार्यवाहियों में शामिल होने पर रोक लगाई जा सकती है। हालांकि, बात चाहे शपथ ग्रहण की हो या संसद के कामकाज में हिस्सा लेने की, दोनों को अदालत की अनुमति के बाद ही जेल से बाहर आने की इजाजत मिलेगी। इस पूरे घटनाक्रम को इस नजरिये से भी देखा जा सकता है कि जिसे हमारा पुलिस-प्रशासन अपराधी मानता है, उसे जनता के दरबार से क्लीन चिट मिली है। यह कहीं न कहीं हमारे लोकतंत्र की विडंबनाओं को भी उजागर करता है। वैसे, लोकतंत्र के मंदिर में जिस तरह से दागी प्रतिनिधियों की संख्या लगातार बढ़ रही है, उसको देखकर अमृतपाल या राशिद जैसे लोगों का संसद में पहुंचाना आश्चर्य पैदा नहीं करता। अगर अन्य अपराधों के आरोपी संसद की शोभा बन सकते हैं, तो ये क्यों नहीं? एडीआर की ही रिपोर्ट कहती है कि साल आपराधिक मामले घोषित करने वाले सांसदों की संख्या में साल 2009 से 55 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इस साल जीतने वाले 251 दागी उम्मीदवारों में से 170 पर हत्या, हत्या का प्रयास, बलात्कार, अपहरण और महिलाओं के खिलाफ अपराध सहित कई गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं। अगर ये लोग संसदीय कार्यवाही में निर्बाध रूप से भाग ले सकते हैं, तो इंजीनियर राशिद और अमृतपाल को आखिर किस मुंह से रोका जा सकेगा?

जंग बहादुर सिंह, टिप्पणीकार

अनुलोम-विलोम

दागी सांसद

ऐसे प्रतिनिधियों पर संसद रोक लगाए

यह कैसा संविधान है हमारा? ऐसे लोगों पर कानूनन रोक क्यों नहीं है? जेल के भीतर रहते हुए भी ये लोग चुनाव कैसे लड़ लेते हैं? संविधान में ऐसे कट्टर लोगों को रोकने के लिए प्रावधान क्यों नहीं किए गए हैं? पंजाब की खडूर साहिब सीट पर कट्टरपंथी अमृतपाल सिंह ने जीत दर्ज की, जबकि जम्मू-कश्मीर की बारामूला सीट पर आतंकियों के वित्त-पोषक अब्दुल राशिद शेख को जीत मिली है। दोनों अभी जेल में बंद हैं, लेकिन सवाल यह कायम है कि सलाखों के पीछे रहने वाले ऐसे लोगों को जनता क्या सोचकर वोट देती है? क्या इनको संसद पहुंचाना सरकार के ही खर्चे पर देश तोड़ने वाली शक्तियों को प्रश्रय देना नहीं है? अगर अपराध हल्का-फुल्का होता, तो बात समझ में आ सकती थी, लेकिन यहां तो मामला अलगाववाद और आतंकवाद से जुड़ा है। ऐसे लोगों के साथ तो अपराधी सरीखा व्यवहार होना चाहिए, फिर चाहे अदालत में इन पर दोष साबित होने में वक्त क्यों न लग रहा हो! अच्छा अपराधी या बुरा अपराधी जैसी कोई संकल्पना नहीं होती, अपराधी सिर्फ अपराधी होता है और उसकी जगह सलाखों से पीछे है, न कि संसद में।

मंजू चौधरी, टिप्पणीकार

देशहित के खिलाफ

केंद्र में भाजपा की सरकार हो या किसी भी अन्य दल की, यह सभी की जिम्मेदारी है कि वे ऐसा कोई कानून बनाएं कि आतंकी गतिविधियों में लिप्त रहने वाले या जिन पर लिप्तता की शंका भी हो, वे चुनाव प्रक्रिया का हिस्सा न बन सकें। इस काम में सभी जिम्मेदार सांसदों को सरकार का साथ देना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि गंभीर आपराधिक पृष्ठभूमि वाले लोगों और राष्ट्रदोहियों को संसद में प्रवेश न मिले। ये देश और समाज, सभी के लिए हानिकारक हो सकते हैं। यह विडंबना है कि जब किसी आम नागरिक पर कोई मुकदमा चलता है, तो वह सरकारी नौकरी के लिए अमान्य घोषित कर दिया जाता है, पर आपराधिक पृष्ठभूमि वाला नेता सरकार का हिस्सा बन सकता है। यह किस तरह की नीति है? जिस तरह आपराधिक पृष्ठभूमि वाले नौजवानों को सरकारी नौकरी नहीं मिलती, ठीक इसी तरह ऐसे लोगों को भी संसदीय चुनावों से दूर रखना चाहिए। यह देश की भलाई, उन्नति, विकास आदि के लिए जरूरी है। कल्पना कीजिए कि आज अमृतपाल या राशिद जैसे एकाध लोग ही संसद में जीत कर आ रहे हैं, अगर इनको अभी नहीं रोका गया, तो आने वाले वर्षों में कई अमरजीत और राशिद लोकसभा की शोभा बढ़ा रहे होंगे। इसलिए इस प्रवृत्ति पर जल्दी अंकुश लगे।

कुमार राजेंद्र, टिप्पणीकार

https://t.me/AINewsPaperPdf

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
शनिवार 8 जून, 2024

दैनिक जागरण

हमारे जीवन की दिशा का निर्धारण हमारी संगति से होता है

राजग सरकार

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन यानी राजग संसदीय दल का नेता चुने जाने के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भाजपा और सहयोगी दलों के नेताओं एवं नवनिर्वाचित सांसदों को संबोधित करते हुए इस गठबंधन को जिस तरह सहज-स्वाभाविक राजनीतिक समूह बताया, उससे यही स्पष्ट होता है कि वह गठबंधन सरकार चलाने की तैयारी करने के साथ ही देश को यह संदेश भी दे रहे हैं कि ऐसा करते हुए कहीं कोई समस्या आने वाली नहीं है। चूंकि अतीत की गठबंधन सरकारों का नेतृत्व करने वाले दलों के मुकाबले इस बार भाजपा के पास कहीं अधिक संख्या बल है, इसलिए यह उम्मीद की जाती है कि गठबंधन सरकार का संचालन करने का अनुभव न होने के बावजूद प्रधानमंत्री मोदी को अपने तीसरे कार्यकाल को आगे बढ़ाने में किसी बाधा का सामना नहीं करना पड़ेगा। यह उम्मीद इसलिए भी की जाती है, क्योंकि पहले मुख्यमंत्री और फिर प्रधानमंत्री के रूप में उनके पास सत्ता के संचालन का व्यापक अनुभव है। उनके पास गठबंधन सरकार चलाने का अनुभव भले न हो, लेकिन उनके राजनीतिक अनुभव का कोई सानी नहीं है। यह उल्लेखनीय है कि वह तमाम चुनौतियों के बावजूद बड़े और कड़े फैसले लेने में सक्षम हैं। अपने पहले और दूसरे कार्यकाल में उन्होंने कई ऐसे बड़े फैसले लिए, जिनमें राज्यसभा में गैर-राजग दलों के सहयोग-समर्थन की आवश्यकता थी। वह अपने राजनीतिक कौशल से यह सहयोग हासिल करने में समर्थ भी रहे।

प्रधानमंत्री मोदी ने जिस तरह राजग के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले प्रकाश सिंह बादल, बाला साहब ठाकरे, जार्ज फर्नांडिस और शरद यादव का स्मरण किया, उससे यह भी संकेत मिलता है कि वह सुखबीर सिंह बादल और उद्धव ठाकरे को यह संदेश देना चाह रहे हैं कि वे भाजपा के स्वाभाविक सहयोगी हैं। कहना कठिन है कि ये नेता उनके संदेश को सुनने के लिए तैयार होते हैं या नहीं, लेकिन उन्होंने जिस तरह विपक्षी दलों को निशाने पर लिया, उससे यह भी पता चलता है कि वह उनके अनुचित दबाव का प्रतिकार करने को तैयार हैं। यह समय ही बताएगा कि विपक्षी दल रचनात्मक विपक्ष की भूमिका निभाते हैं या नहीं, लेकिन प्रधानमंत्री ने जिस प्रकार इन खबरों पर कटाक्ष किया कि सहयोगी दलों की ओर से अमुक-अमुक मांगें की जा रही हैं, उससे यही रेखांकित हुआ कि वह इस प्रचलित धारणा को खारिज कर अपनी भावी सरकार की मजबूती बयान करना चाहते हैं कि ऐसी सरकारों को घटक दलों के दबाव की राजनीति का सामना करना पड़ता है। फिलहाल तो सहयोगी दलों के नेताओं और विशेष रूप से नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू ने प्रधानमंत्री मोदी की प्रशंसा करते हुए उन्हें भरपूर सहयोग देने का वादा किया, लेकिन यह भी एक तथ्य है कि गठबंधन सरकार के कुछ नकारात्मक पक्ष होते हैं। प्रधानमंत्री के संबोधन से यह स्पष्ट होता है कि उन्हें इसका अच्छी तरह भान है।

तनाव में काम नहीं होता

बिहार के शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव केके पाठक इन दिनों छुट्टी पर हैं और उनकी अनुपस्थिति से शिक्षा जगत को काफी राहत महसूस हो रही है। कह सकते हैं कि शिक्षक, छात्र और अभिभावक तनाव मुक्त महसूस कर रहे हैं। प्रभार में चल रहे अपर मुख्य सचिव एस सिद्धार्थ ताबड़तोड़ पाठक के उन आदेशों का संशोधित प्रारूप जारी कर रहे हैं, जिनके चलते शिक्षा जगत में बेचैनी महसूस की जा रही थी। हम यह नहीं कह सकते कि केके पाठक के सभी आदेश तनाव देने वाले ही हैं। उनके कई आदेशों से पठन पाठन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। काम के वरीयता क्रम में पठन-पाठन को नीचे रखने वाले शिक्षकों में सुधार देखा गया है। लेकिन स्कूलों की समय सारिणी को लेकर हमेशा विवाद ही होता रहा है। शिक्षकों, छात्रों और अभिभावकों का बड़ा वर्ग इनमें काम से अधिक परेशान करने के उद्देश्य को देख रहा है। आप अपने अधीनस्थों से काम लीजिए। उनकी क्षमता से अधिक काम लीजिए। लगे हाथ यह भी देखिए कि कार्य स्थल पर काम करने के लायक उचित माहौल है या नहीं। शिक्षण ऐसा कार्य है, जिसमें एकाग्रता और मनोयोग की जरूरत होती है। शिक्षक और छात्र प्रतिदिन भारी मन से स्कूल या कालेज पहुंचें तो इसमें पठन पाठन क्या होगा। इसे भी समझा जाना चाहिए। हां ड्यूटी पूरी होगी, जिससे शिक्षकों और छात्रों का कुछ भी भला नहीं होगा। देखना यह होगा कि छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल रही है या नहीं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की जरूरत इसलिए भी है कि सरकारी स्कूलों में आम लोगों के बच्चे पढ़ते हैं। इन बच्चों का एक समूह ऐसा है, जिसे सरकारी स्तर पर शिक्षा न मिले तो पढ़ ही नहीं पाएंगे। इस तथ्य को ध्यान में रखकर ही शिक्षा विभाग को कोई निर्णय लेना चाहिए। यह तथ्य भी ध्यान में रखा जाना चाहिए कि राज्य के बजट का करीब बीस प्रतिशत हिस्सा शिक्षा पर ही खर्च होता है। यह राज्य के खजाने के व्यय-अपव्यय से भी जुड़ा हुआ है।

स्थानीय कारकों ने बिगाड़ा भाजपा का खेल

प्रदीप भंडारी

प्रत्याशियों के चयन और सोशल इंजीनियरिंग के मोर्चे पर मिली मात ने भाजपा की सीटों की संख्या घटाने का काम किया

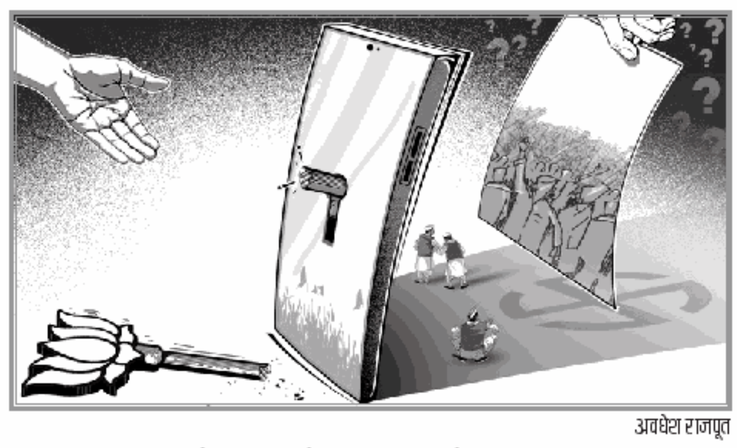

अवधेश राजपूत

नरेन्द्र मोदी लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने जा रहे हैं। भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में यह एक विराट उपलब्धि है, लेकिन आम चुनाव के परिणाम में भाजपा के लिए अपेक्षा से कुछ कम सीटों ने विश्लेषण को एक नया विमर्श दिया है। भाजपा जहां जीतने के बाद भी चिंतन-मंथन की मुद्रा में है, वहीं विपक्ष हारकर भी उत्साहित दिख रहा है। जिस भाजपा के लिए अपने दम पर सामान्य बहुमत हासिल करना सहज लग रहा था, उसकी गाड़ी बहुमत के आंकड़े से पहले कैसे अटक गई? इस सवाल की पड़ताल करें तो कम से कम 70 ऐसी सीटें रहीं, जहां स्थानीय कारकों ने भाजपा के राजनीतिक समीकरण बिगाड़े। ये सीटें मुख्यतः उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बंगाल, हरियाणा और राजस्थान की हैं। राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण उत्तर प्रदेश में गत आम चुनाव में भाजपा को 49.5 प्रतिशत वोट मिले थे, जो इस बार 41.37 प्रतिशत रहे। इसी दौरान बसपा का वोट प्रतिशत भी 19 से घटकर नौ प्रतिशत रह गया, जिसका सीधा लाभ सपा को मिला और वह 34 प्रतिशत वोट ले गई। इन छिटके मतदाताओं ने अंबेडकर नगर, संत कबीर नगर, जौनपुर, बलिया और चंदौली जैसी सीटों पर सपा के लिए निर्णायक असर डाला। कुर्मी, कुशवाहा, निषाद और राजभर जैसी गैर-यादव ओबीसी जातियां भी सपा के पक्ष में लामबंद हुईं। कुछ सीटों पर ब्राह्मणों ने भी भाजपा के लिए कम मतदान किया। पश्चिमी उत्तर प्रदेश की मुजफ्फरनगर और कैराना जैसी सीटों पर ठाकुर मतदाताओं ने भाजपा से मुंह तो नहीं मोड़ा, लेकिन पिछले चुनाव की तुलना में कम संख्या में बूथ तक पहुंचे। कुल मिलाकर उत्तर प्रदेश में स्थानीय कारक, जातिगत समीकरण और अधिकांश संख्या में पुराने उम्मीदवार उतारना भाजपा को भारी पड़ा। अग्निपथ योजना के चलते युवा भी उससे कुछ कट गए। सपा ने गैर-यादव पिछड़ों और दलितों को चतुराई के साथ टिकट बांटकर अपने राजनीतिक हित साधे। पार्टी ने 27 ओबीसी, 15 दलित और 11 सवर्णों को टिकट दिया।

बंगाल में ममता बनर्जी अपना राजनीतिक किला न केवल बचाने, बल्कि उसे और मजबूत बनाने में सफल हुईं। 2018 के पंचायत चुनाव में उपजी हिंसा के बाद 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा को यहां 40 प्रतिशत वोट मिले थे। भाजपा इस आंकड़े को बढ़ाने में सफल नहीं रही, उलटे उसका मत प्रतिशत और घट गया। दूसरी ओर ममता विधानसभा चुनाव का अपना 45 प्रतिशत मत कायम रखने में कामयाब रहीं। संदेशखाली जैसे मुद्दे के बावजूद ममता को महिलाओं के 58 प्रतिशत वोट मिले। महिला केंद्रित योजनाओं का उन्हें लाभ मिला। ममता के खिलाफ जो कुछ आक्रोश था, उसे भाजपा अच्छे प्रत्याशियों के अभाव में भुना नहीं पाई। बैरकपुर सीट पर तृणमूल के टिकट से वंचित उम्मीदवार को भाजपा ने प्रत्याशी बना दिया, जो हार गया। आसनसोल, दुर्गापुर और मेदिनीपुर की स्थितियां भी अलग नहीं रहीं। लगता है भाजपा ने विधानसभा चुनाव में मिली हार से सबक नहीं सीखा। विधानसभा हारे कई उम्मीदवारों को भाजपा ने लोकसभा का टिकट पकड़ा दिया। इससे मतदाताओं में भरोसा नहीं जगा और मोदी के पक्ष में बने माहौल का लाभ भाजपा उठाने से वंचित रह गई। वहीं, ममता ने सरकारी मशीनरी और प्रशासन के रणनीतिक उपयोग से सत्ता विरोधी रुझान को मात दी।

हरियाणा और राजस्थान में भाजपा ने पिछले चुनाव में शत प्रतिशत सफलता हासिल की थी, लेकिन इस बार यहां करीब आधी सीटें उसके हाथ से फिसल गईं। राजस्थान में नागौर, सीकर, झुंझुनूं, चूरू और बाड़मेर में जाट मतदाताओं ने भाजपा के खिलाफ मोर्चाबंदी की। टोंक-सवाई माधोपुर और दौसा जैसी सीटों पर मीणा समुदाय का भाजपा से मोहभंग हुआ। राजस्थान में सरकार बनने के बाद कुछ वर्गों की अपेक्षाओं पर खरा न उतर पाने का खामियाजा भी उसे भुगतना पड़ा। भरतपुर, धौलपुर जैसी सीटों पर पार्टी के प्रतिबद्ध मतदाता भी उसका साथ छोड़ कांग्रेस के पाले में चले गए। लगता है राज्य में मोदी फैक्टर के आगे उम्मीदवारों का चयन और जातिगत समीकरण भारी पड़े। राजस्थान में भाजपा का मत प्रतिशत 58.02 से घटकर 46.11 प्रतिशत रह गया। हरियाणा में रोहतक और सोनीपत में जाट भाजपा के खिलाफ लामबंद हुए। ग्रामीण क्षेत्रों में भी कांग्रेस के पक्ष में मतदान बढ़ा। सिरसा सीट पर दलित मतदाताओं ने कांग्रेस को प्राथमिकता दी। यहां पिछले चुनाव में भाजपा को 58 प्रतिशत वोट मिले, जबकि इस चुनाव में 46.11 प्रतिशत। 48 लोकसभा सीटों वाले महाराष्ट्र में जहां पिछले चुनाव में भाजपा को 27.59 प्रतिशत वोट मिले, वहीं इस बार 26.18 प्रतिशत। कांग्रेस का वोट प्रतिशत लगभग स्थिर रहा, लेकिन उसकी सीटों की संख्या एक से बढ़कर 13 हो गई। यहां भी स्थानीय कारकों ने भाजपा की मुसीबतें बढ़ाने का काम किया। उद्धव ठाकरे और कांग्रेस के वोटों के पूरी तरह से हस्तांतरण की उम्मीद तो पहले से ही थी, लेकिन भाजपा मुंबई और विदर्भ में पिछले चुनाव जैसा करिश्मा नहीं दोहरा पाई।

राष्ट्रीय परिदृश्य की बात करें तो भाजपा का वोट प्रतिशत पिछले चुनाव के बराबर ही रहा। दक्षिण भारत में उसे कांग्रेस के मुकाबले अधिक मत मिले। कांग्रेस से सीधे मुकाबले में भी भाजपा का पलड़ा खासा भारी रहा। हालांकि प्रत्याशियों के चयन और उत्तर प्रदेश में सोशल इंजीनियरिंग के मोर्चे पर मिली मात ने भाजपा की सीटों की संख्या घटाने में अहम भूमिका निभाई। यदि उसके खिलाफ सत्ता विरोधी रुझान होता तो उसे पिछली बार के लगभग बराबर मत नहीं मिलते।

चुनाव परिणाम आने के बाद एक्जिट पोल्स को भी निशाने पर लिया गया, लेकिन ऐसा करने वाले जान लें कि इन सर्वेक्षणों में जनता की धारणा के अनुपात में ही आकलन प्रस्तुत किया जाता है। दुनिया भर में एक्जिट पोल कई बार सटीक साबित होते रहे हैं तो कभी कभार गलत भी। हालिया एक्जिट पोल्स ने दो धारणाओं को समाहित किया था। एक पीएम की लोकप्रियता कायम है और उनकी योजनाओं को व्यापक रूप से, विशेषकर महिलाओं द्वारा सराहा जा रहा है। दूसरे, स्थानीय प्रत्याशियों के विरुद्ध आक्रोश के साथ महंगाई व बेरोजगारी जैसे मुद्दों पर भी गौर किया गया था।

(लेखक चुनाव विश्लेषक और 'जन की बात' संस्था के संस्थापक हैं)

response@jagran.com

गठबंधन सरकार की चुनौतियां

डा. जगदीप सिंह

गठबंधन सरकार होने के नाते यह देखना रोचक होगा कि भाजपा अपने एजेंडे को कैसे आगे बढ़ाती है?

मोदी के नेतृत्व में पहली गठबंधन सरकार। फाइल

देश में केंद्रीय स्तर पर एक बार फिर गठबंधन सरकार की शुरुआत हो गई है। चुनाव में जब कोई भी पार्टी पूर्ण बहुमत प्राप्त नहीं कर पाती तो गठबंधन के माध्यम से सरकार बनाना एक मजबूरी बन जाती है। गुजरात और फिर केंद्र में लगभग ढाई दशक तक बहुमत वाली सरकारों की अगुवाई करने के बाद नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री के रूप में अपने तीसरे कार्यकाल में पहली बार एक गठबंधन सरकार का नेतृत्व करने जा रहे हैं। नई सरकार में टीडीपी के मुखिया चंद्रबाबू नायडू और जदयू प्रमुख तथा बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। मोदी को इस दौरान लोकसभा में प्रतिनिधित्व करने वाले अपने अन्य सहयोगी दलों के साथ समन्वय बनाए रखना होगा। ऐसे में देखना होगा कि उनके नेतृत्व में नई सरकार किस प्रकार के शासन माडल को अपनाती है। भाजपा की योजना प्रचंड बहुमत के साथ सरकार बनाकर देश में समान नागरिक संहिता लागू करने और सभी प्रकार के चुनाव एक साथ कराने की थी। गठबंधन सरकार होने के नाते यह देखना रोचक होगा कि भाजपा इन एजेंडे पर कैसे आगे बढ़ती है?

वैसे तो देश में 1967 से गठबंधन की राजनीति शुरू हुई थी। तब से क्षेत्रवाद के उदय के साथ भारत में गठबंधन आधारित राजनीति में काफी परिवर्तन आया है। गठबंधन सरकार का देश की व्यवस्था पर सकारात्मक और नकारात्मक, दोनों प्रकार के प्रभाव पड़ सकते हैं। इसके सकारात्मक पहलू को देखें तो गठबंधन सरकार में एक दल की मंत्रिपरिषद के बजाय कई दलों को मिलाकर मंत्रिपरिषद का गठन होता है। जब कई दलों के सदस्यों को मंत्रिपरिषद में शामिल किया जाता है तो इससे अधिक योग्य लोगों की टीम बनती है। इससे सभी दलों के वरिष्ठ सदस्यों की योग्यता का लाभ देश को मिलता है। गठबंधन में शामिल दलों की संख्या जितनी अधिक होती है, सरकार को उतना ही अधिक जन समर्थन प्राप्त होता है। इससे सरकार की स्वीकार्यता भी बढ़ती है। गठबंधन की राजनीति से अतिवादी दृष्टिकोण से भी बचा जा सकता है। एक दल की सरकार जनता पर अपने दृष्टिकोण को थोपने का प्रयास कर सकती है, जबकि गठबंधन में कोई भी दल अकेले अपनी नीतियां और सिद्धांत थोप नहीं सकता, क्योंकि अन्य दल विरोध कर सकते हैं। गठबंधन राजनीति का एक लाभ यह भी है कि एक राजनीतिक दल अकेले सत्तारूढ़ दल का उतना प्रभावशाली प्रतिरोध नहीं कर सकता, जितना कई दलों का गठबंधन कर सकता है। जैसे जब संप्रग की सरकार थी, तब राजग ने प्रभावशाली ढंग से उसका प्रतिरोध किया। वर्तमान में राजग की सरकार बनने जा रही है तब आइएनडीआइए नामक गठबंधन उसकी मनमानी को प्रभावी ढंग से रोक सकता है। गठबंधन सरकार की मंत्रिपरिषद को प्रायः एक न्यूनतम साझा कार्यक्रम के अनुसार काम करना होता है। वह मनमाने तरीके से कार्य नहीं कर सकती। प्रधानमंत्री को भी कोई फैसला लेते समय गठबंधन के सभी दलों की नीतियों और सिद्धांतों का ध्यान रखना पड़ता है।

यह ठीक है कि गठबंधन सरकार में विभिन्न पार्टियां मिलकर सरकार चलाती हैं और हर फैसले से पहले सबकी राय ली जाती है, ताकि किसी एक पार्टी का वर्चस्व न हो, लेकिन अक्सर ऐसा होता नहीं है। गठबंधन सरकार में जब मंत्रालयों का बंटवारा होता है, तो अधिक सीटों वाली पार्टी महत्वपूर्ण मंत्रालयों की मांग करती है। सत्ता की मजबूरी में बड़ी पार्टी इसे स्वीकार भी लेती है। अगले पांच साल तक समर्थन देने वाली पार्टी उस मंत्रालय में मनमानी करती है और बड़ी पार्टी विरोध नहीं कर पाती, क्योंकि ऐसा करने पर उसके द्वारा समर्थन वापस लेने का डर रहता है। इस कारण कई बार सरकार कठिन और महत्वपूर्ण फैसले नहीं ले पाती। जब सरकार महत्वपूर्ण फैसले नहीं लेती और केवल सत्ता में बने रहने की कोशिश करती है, तो गठबंधन की राजनीति से उसकी स्थिति कमजोर पड़ जाती है। ऐसी सरकार देश-विदेश से जुड़े मामलों में दृढ़ निर्णय लेने में असमर्थ रहती है। गठबंधन में विभिन्न विचारधाराओं और सिद्धांतों वाले दल शामिल होते हैं, जो कई बार राष्ट्र के बजाय अपने हित साधने वाली नीतियां बनाने की मांग करते हैं। इससे सरकार स्पष्ट नीति निर्धारित नहीं कर पाती और इसका प्रभाव उसके कार्यों पर पड़ता है। गठबंधन सरकार में स्थिरता की भी कमी होती है। देखा जाता है कि छोटे दल गठबंधन सरकार पर अपने हितों की पूर्ति के लिए दबाव बनाते रहते हैं। क्षेत्रीय दल अक्सर राष्ट्रीय हितों के बजाय क्षेत्रीय हितों को प्राथमिकता देते हैं, जिससे देश के हितों को हानि पहुंचती है। प्रधानमंत्री को अक्सर सहयोगी दलों के दबाव में काम करना पड़ता है। कई बार तो उन्हें विदेशी समझौतों और संधियों में भी उनकी सलाह लेनी पड़ती है। इससे वैश्विक मामलों में देश की स्थिति कमजोर हो जाती है।

चूंकि गठबंधन सरकार के मंत्री अपने दल के नेतृत्व के निर्देशों का पालन करते हैं, इस कारण कई अवसरों पर पीएम अनिर्णय की स्थिति में रहते हैं। गठबंधन शासन में सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और विभागों में समन्वय की भी कमी देखी जाती है। गठबंधन छोटे दलों के उदय को भी प्रोत्साहित करता है, जो स्थायी सरकारों के गठन में एक बाधा है। गठबंधन सरकार का संचालन मोदी के लिए चुनौती है। साथ ही चंद्रबाबू नायडू और नीतीश कुमार के साथ काम करना भी बड़ी चुनौती है। ये दोनों नेता अनुभवी हैं और अपनी बातें मनवाने में सक्षम हैं, जिससे मोदी को दबाव की राजनीति का सामना करना पड़ सकता है। नरेन्द्र मोदी और अमित शाह की राजनीतिक प्रगति इसी पर निर्भर करेगी कि वे इस दबाव के बीच कैसे आगे बढ़ते हैं। उनके तीसरे कार्यकाल की सफलता भी इसी पर निर्भर करेगी।

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

आत्मा का भोजन

हमारे दार्शनिक ग्रंथों का चिंतन है कि जिस प्रकार इस पंच भौतिक शरीर को स्वस्थ रखने के लिए पौष्टिक भोजन की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार इस शरीर के भीतर रहने वाले नित्य, अनादि तत्व आत्मा का भी अपना भोजन होता है। हमारे वैदिक ग्रंथों में बताया गया है कि ध्यान में अवस्थित होकर ईश्वर की उपासना ही जीवात्मा का भोजन है। इसी भोजन से आत्मा में आत्मिक तथा आध्यात्मिक बल एवं शक्ति का संचार होता है जिससे जीवात्मा सत्, चित्त और आनंद के गुणों से परिपूर्ण होकर ईश्वर के आनंद की अनुभूति करने की क्षमता प्राप्त करता है।

हमारे ऋषियों ने ध्यान को ईश्वर से जुड़ने का परम साधन माना है। एकाग्रचित्त ध्यान के माध्यम से की गई ईश्वर की उपासना से आत्मा को अलौकिक एवं दिव्य आनंद रूपी भोजन की प्राप्ति होती है। मनुष्य संसार में आकर इस भौतिक शरीर को प्राप्त करके केवल इसी की सजावट एवं संवर्धन में लगा रहता है और नाना प्रकार के व्यंजनों से शरीर को तृप्त करने में लगा रहता है, परंतु इस शरीर के भीतर विद्यमान आत्म तत्व के भोजन से वह सदैव अनभिज्ञ ही रहता है।

उपासना रूपी आध्यात्मिक संपत्ति से ही आत्मा के भोजन का प्रबंध होता है। तीनों लोकों की संपत्ति में भी आत्मा के भोजन का प्रबंध करने की क्षमता नहीं है। वैदिक ग्रंथों का स्वाध्याय करके, ध्यान एवं उपासना के पथ पर अग्रसर होकर ही हम इस आत्मा को आनंद से परिपूर्ण तृप्ति प्रदान कर सकते हैं। ज्ञान के माध्यम से ईश्वर के आनंद की अनुभूति ही जीवात्मा का वास्तविक भोजन है। इसी दिव्य भोजन से आत्मा के अंदर आध्यात्मिक एवं साधना के पथ पर ले जाने वाली विभूतियों का उदय होता है। शरीर के भोजन के साथ आत्मा के भोजन का भी प्रबंध करना चाहिए। बिना इस दिव्य भोजन के आत्मा निर्बल, अशक्त, ज्ञानहीन होकर ईश्वर के सान्निध्य से सदैव वंचित ही रहता है।

आचार्य दीप चंद भारद्वाज

साइबर अपराध से बचाव के उपाय

सुनीता मिश्रा

बीते दिनों मध्य प्रदेश के सीधी में वाइस चेंजर एप (आवाज बदलने वाले एप) के माध्यम से महिला प्रिंसिपल की आवाज में छात्राओं को बुलाकर उनके साथ लूट एवं दुष्कर्म जैसे घिनौने अपराध को अंजाम दिया गया। मुख्य आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है। वह ऐसी सात और घटनाओं को अंजाम दे चुका है। मुख्यमंत्री मोहन यादव ने इस मामले को गंभीरता से लेते हुए इसकी जांच के लिए विशेष जांच दल (एसआइटी) का गठन करने का आदेश दिया है। इसके अलावा प्रदेश सरकार ने वाइस चेंजर एप पर प्रतिबंध लगाने के लिए केंद्रीय गृह मंत्रालय को पत्र भी भेजा है। ताकि प्ले स्टोर से इस तरह के एप जल्द से जल्द हटा दिए जाएं।

वर्तमान में जैसे-जैसे तकनीक आगे बढ़ रही है, वैसे-वैसे इसका दुरुपयोग भी बढ़ता जा रहा है। इन दिनों डीपफेक वीडियो के अलावा वाइस चेंजर एप के भी कई मामले सामने आ चुके हैं, जिसकी शिकार कई बड़ी हस्तियां भी हुई हैं। आधुनिक तकनीक के जरिये फर्जी वीडियो बनाना और आवाज को बदलना अपराधियों के लिए बहुत आसान हो गया है। वाइस चेंजर एप का उपयोग कर बहुत ही आसानी से किसी अन्य व्यक्ति, महिला, बुजुर्ग या किसी बच्चे की आवाज में काल पर बात की जा सकती है। ये एप आपके जानने वालों की आवाज की हूबहू नकल कर सकते हैं। हालांकि जागरूकता और थोड़ी सी सावधानी रखकर इस तरह की घटनाओं से बचा जा सकता है। अपराधी पहले आपके बारे में जानकारी एकत्रित करेगा फिर आपके रिश्तेदार या किसी परिचित की आवाज में आपको काल करके किसी स्थान पर बुलाकर अपराध कर सकता है। ऐसे में सतर्क हो जाएं। जब तक आप फोन पर काल करने वाले की पहचान के बारे में आश्वस्त न हो जाएं, तब तक किसी को कोई भी व्यक्तिगत जानकारी न दें। यदि आपको किसी भी तरह से कोई भी गतिविधि संदिग्ध लगे तो बिना देर किए तत्काल पुलिस को रिपोर्ट करें। ऐसा करके आप किसी बड़ी घटना का शिकार होने से बच सकते हैं।

डीपफेक वीडियो और वाइस चेंजर एप के ऐसे कई मामले सामने आ चुके हैं, जिनमें कई बड़ी हस्तियां भी निशाना बनी हैं

इस तरह की घटनाओं पर विराम लगाने के लिए केंद्र और प्रदेश सरकार के साथ-साथ समाज को भी आगे आना होगा। परिवार में लड़कों को भी अच्छे संस्कार देने की जरूरत है। उन्हें बताना होगा कि लड़कियों को धमकाना नहीं चाहिए। उन्हें परेशान नहीं करना चाहिए। ऐसा करने वाले लड़कों को कमजोर समझा जाता है। ऐसे लड़के समाज में तरक्की नहीं कर सकते हैं और न ही कोई उनका सम्मान करता है। अध्यापकों को भी उन्हें बेहतर इंसान बनाने की ओर अग्रसर करना चाहिए। उन्हें लड़कों को बताना होगा कि हमारी संस्कृति में महिला का स्थान आदरणीय है।

(लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

गठबंधन सरकार की वापसी

'भाजपा को बदलनी होगी रीति-नीति' शीर्षक से प्रकाशित अवधेश कुमार का लेख पढ़ा। भाजपा को गठबंधन सरकार चलाने के लिए अब अपने सहयोगियों को साथ लेकर चलने की रीति-नीति अपनानी होगी। दस वर्षों के कार्यकाल में भाजपा के पास खुद का पूर्ण बहुमत था। ऐसे में पार्टी का शीर्ष नेतृत्व जो रोडमैप तैयार कर आगे बढ़ जाता था, सभी सांसद कदमताल मिलाते हुए उसका समर्थन करते थे, किंतु अब स्थिति बदल गई है। भाजपा को अपने सहयोगियों को खुश रखना होगा। उनके अनुरूप ही रोडमैप तैयार करना होगा, अन्यथा सरकार पर संकट के बादल कभी भी छा सकते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आश्वस्त थे कि उन्हें इस बार भी पूर्ण बहुमत मिलेगा, किंतु ऐसा नहीं हुआ, जो भाजपा के लिए निश्चित रूप से बड़ा आघात है। अब मोदी अपने संबोधनों में शब्दचयन का विशेष ध्यान रख रहे हैं। भाजपा की जगह ज्यादा से ज्यादा एनडीए का प्रयोग कर रहे हैं। निश्चित रूप से गठबंधन सरकार को ठीक ढंग से चलाने और भविष्य में अच्छा प्रदर्शन के लिए भाजपा को अपनी रीति-नीति में बदलाव करने होंगे। राजनीति में कौन कब और कहां बैठ जाए इस बात का कोई अंदाजा नहीं होता। ऐसे में नेताओं को जनसभाओं और भाषणों में विशेष ध्यान रखना होगा कि अपने सहयोगियों के प्रति कटुता के ऐसे शब्द मुंह से न निकलें जिससे भविष्य में उन्हें बड़ा नुकसान हो जाए और अफसोस जताना पड़े।

harishtutor1@gmail.com

मेलबाक्स

भाजपा को अपेक्षित सफलता क्यों नहीं

एनडीए की सरकार तीसरी बार शपथ ग्रहण करने जा रही है। इसके प्रमुख घटक भाजपा को 2019 की अपेक्षा इस बार सीटें कम मिली हैं। सीटें कम मिलने के अनेक कारण बताए जा रहे हैं। कुछ ''इस बार 400 पार'' के नारे को इसके लिए जिम्मेदार मान रहे हैं। इस नारे से प्रभावित होकर उसके अनेक समर्थकों ने मतदान न करने की लापरवाही दिखलाई और विपक्ष ने यह आरोप लगा दिया कि सरकार संविधान संशोधन करके ओबीसी का आरक्षण समाप्त करने वाली है। कुछ लोगों का आरोप है कि भाजपा एवं मोदी सत्ता के मद में अहंकारी हो गए हैं। कुछ ने कहा कि प्रत्याशियों के चयन में योगी की राय की उपेक्षा की गई। अन्य दलों द्वारा जातिवाद को बढ़ावा देकर हिंदू वोटों को विभाजित करने का षड्यंत्र रचा गया। मुस्लिमों ने एक जुट होकर भाजपा विरोधी दल को वोट दिया। नड्डा ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सहायता को नकार दिया। बीएसपी का किसी भी सीट पर लड़ाई में न होने के कारण सभी मुस्लिमों एवं अधिकतर दलितों के एकमुश्त वोट उस विरोधी दल को मिल गए जो भाजपा को हरा सकता था। योगी के बढ़ते कद से जलने वाले नेताओं ने उनको किनारा करने की कोशिश की। महंगाई, बेरोजगारी ने निम्न एवं मध्यम वर्ग को बहुत परेशान किया। राजपूतों की नाराजगी आदि ने भी भाजपा की सफलता की राह में कांटे बोए।

धर्मेंद्र नाथ रस्तोगी, गाजियाबाद

दूषित भोजन के नुकसान

वैश्वीकरण के बाद इन तीन दशकों में हमारे खान-पिन, रहन-सहन में काफी बदलाव आए हैं। हमारे जीवन में फास्ट फूड और जंक फूड का दायरा काफी बढ़ा है। अधिक फास्ट फूड और जंक फूड के कारण हमारी जीवन शैली काफी हद तक प्रभावित हुई है और हमें कई तरह के बीमारियों का सामना करना पड़ रहा है। एक रिपोर्ट के अनुसार दूषित खाने से हर साल लाखों लोग बड़े स्तर पर बीमार होते हैं जिनमें से कई लोगों को दूषित भोजन के कारण अपने जीवन से हाथ भी धोना पड़ता है। दूषित भोजन के कारण ही हमें 200 से अधिक खतरनाक बीमारियों जैसे कि (पीलिया, हैजा, उल्टी, डायरिया आदि) का सामना करना पड़ता है। आम जनमानस को चाहिए कि वह दूषित भोजन से बचने के लिए आम जागरूकता का पालन करे और भोजन से जुड़ी स्वच्छता और सफाई पर अधिक से अधिक ध्यान देकर अपने आप को कई बड़े बीमारियों से बचाए।

विजय किशोर तिवारी, नई दिल्ली

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल : mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए; नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

****

संपादकीय जागरण

(10) शनिवार, 8 जून, 2024 : ज्येष्ठ शुक्ल - 2 वि. 2081

हमारे जीवन की दिशा का निर्धारण हमारी संगति से होता है

राजग सरकार

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन यानी राजग संसदीय दल का नेता चुने जाने के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भाजपा और सहयोगी दलों के नेताओं एवं नवनिर्वाचित सांसदों को संबोधित करते हुए इस गठबंधन को जिस तरह सहज-स्वाभाविक राजनीतिक समूह बताया, उससे यही स्पष्ट होता है कि वह गठबंधन सरकार चलाने की तैयारी करने के साथ ही देश को यह संदेश भी दे रहे हैं कि ऐसा करते हुए कहीं कोई समस्या आने वाली नहीं है। चूंकि अतीत की गठबंधन सरकारों का नेतृत्व करने वाले दलों के मुकाबले इस बार भाजपा के पास कहीं अधिक संख्या बल है, इसलिए यह उम्मीद की जाती है कि गठबंधन सरकार का संचालन करने का अनुभव न होने के बावजूद प्रधानमंत्री मोदी को अपने तीसरे कार्यकाल को आगे बढ़ाने में किसी बाधा का सामना नहीं करना पड़ेगा। यह उम्मीद इसलिए भी की जाती है, क्योंकि पहले मुख्यमंत्री और फिर प्रधानमंत्री के रूप में उनके पास सत्ता के संचालन का व्यापक अनुभव है। उनके पास गठबंधन सरकार चलाने का अनुभव भले न हो, लेकिन उनके राजनीतिक अनुभव का कोई सानी नहीं है। यह उल्लेखनीय है कि वह तमाम चुनौतियों के बावजूद बड़े और कड़े फैसले लेने में सक्षम हैं। अपने पहले और दूसरे कार्यकाल में उन्होंने कई ऐसे बड़े फैसले लिए, जिनमें राज्यसभा में गैर-राजग दलों के सहयोग-समर्थन की आवश्यकता थी। वह अपने राजनीतिक कौशल से यह सहयोग हासिल करने में समर्थ भी रहे। प्रधानमंत्री मोदी ने जिस तरह राजग के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले प्रकाश सिंह बादल, बाला साहब ठाकरे, जार्ज फर्नांडिस और शरद यादव का स्मरण किया, उससे यह भी संकेत मिलता है कि वह सुखबीर सिंह बादल और उद्धव ठाकरे को यह संदेश देना चाह रहे हैं कि वे भाजपा के स्वाभाविक सहयोगी हैं। कहना कठिन है कि ये नेता उनके संदेश को सुनने के लिए तैयार होते हैं या नहीं, लेकिन उन्होंने जिस तरह विपक्षी दलों को निशाने पर लिया, उससे यह भी पता चलता है कि वह उनके अनुचित दबाव का प्रतिकार करने को तैयार हैं। यह समय ही बताएगा कि विपक्षी दल रचनात्मक विपक्ष की भूमिका निभाते हैं या नहीं, लेकिन प्रधानमंत्री ने जिस प्रकार इन खबरों पर कटाक्ष किया कि सहयोगी दलों की ओर से अमुक-अमुक मांगें की जा रही हैं, उससे यही रेखांकित हुआ कि वह इस प्रचलित धारणा को खारिज कर अपनी भावी सरकार की मजबूती बयान करना चाहते हैं कि ऐसी सरकारों को घटक दलों के दबाव की राजनीति का सामना करना पड़ता है। फिलहाल तो सहयोगी दलों के नेताओं और विशेष रूप से नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू ने प्रधानमंत्री मोदी की प्रशंसा करते हुए उन्हें भरपूर सहयोग देने का वादा किया, लेकिन यह भी एक तथ्य है कि गठबंधन सरकार के कुछ नकारात्मक पक्ष होते हैं। प्रधानमंत्री के संबोधन से यह स्पष्ट होता है कि उन्हें इसका अच्छी तरह भान है।

तनाव में काम नहीं होता

राज्य के शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव केके पाठक इन दिनों छुट्टी पर हैं और उनकी अनुपस्थिति से शिक्षा जगत को काफी राहत महसूस हो रही है। कह सकते हैं कि शिक्षक, छात्र और अभिभावक तनाव मुक्त महसूस कर रहे हैं। प्रभार में चल रहे अपर मुख्य सचिव एस सिद्धार्थ ताबड़तोड़ पाठक के उन आदेशों का संशोधित प्रारूप जारी कर रहे हैं, जिनके चलते शिक्षा जगत में बेचैनी महसूस की जा रही थी। हम यह नहीं कह सकते कि केके पाठक के सभी आदेश तनाव देने वाले ही हैं। उनके कई आदेशों से पठन पाठन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। काम के वरीयता क्रम में पठन-पाठन को नीचे रखने वाले शिक्षकों में सुधार देखा गया है। लेकिन, स्कूलों की समय सारिणी को लेकर हमेशा विवाद ही होता रहा है। शिक्षकों, छात्रों और अभिभावकों का बड़ा वर्ग इनमें काम से अधिक परेशान करने के उद्देश्य को देख रहा है। आप अपने अधीनस्थों से काम लीजिए। यह भी देखिए कि कार्य स्थल पर काम करने के लायक उचित माहौल है या नहीं। शिक्षण ऐसा कार्य है, जिसमें एकाग्रता और मनोयोग की जरूरत होती है। शिक्षक और छात्र प्रतिदिन भारी मन से स्कूल या कालेज पहुंचें तो इसमें पठन पाठन क्या होगा। हां ड्यूटी पूरी होगी, जिससे शिक्षकों और छात्रों का कुछ भी भला नहीं होगा। देखना यह होगा कि छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल रही है या नहीं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की जरूरत इसलिए भी है कि सरकारी स्कूलों में आम लोगों के बच्चे पढ़ते हैं। इन बच्चों का एक समूह ऐसा है, जिसे सरकारी स्तर पर शिक्षा न मिले तो पढ़ नहीं पाएंगे। इस को ध्यान में रखकर शिक्षा विभाग को कोई निर्णय लेना चाहिए। यह भी ध्यान में रखा जाए कि राज्य के बजट का करीब बीस प्रतिशत हिस्सा शिक्षा पर ही खर्च होता है।

> शिक्षण ऐसा कार्य है, जिसमें एकाग्रता और मनोयोग की जरूरत होती है।

कह के रहेंगे — माधव जोशी

जागरण जनमत — कल का परिणाम

क्या गठबंधन सरकार को सहयोगी दलों के दबाव का सामना करना पड़ेगा?

आज का सवाल
क्या अग्निपथ योजना की समीक्षा की मांग सही है?

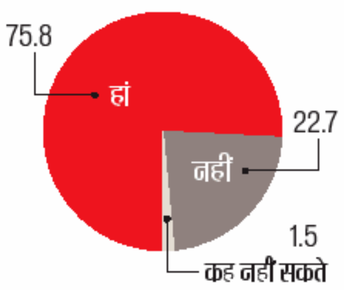

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

स्थानीय कारकों ने बिगाड़ा भाजपा का खेल

प्रदीप भंडारी

प्रत्याशियों के चयन और सोशल इंजीनियरिंग के मोर्चे पर मिली मात ने भाजपा की सीटों की संख्या घटाने का काम किया

नरेन्द्र मोदी लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने जा रहे हैं। भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में यह एक विराट उपलब्धि है, लेकिन आम चुनाव के परिणाम में भाजपा के लिए अपेक्षा से कुछ कम सीटों ने विश्लेषण को एक नया विमर्श दिया है। भाजपा जहां जीतने के बाद भी चिंतन-मंथन की मुद्रा में है, वहीं विपक्ष हारकर भी उत्साहित दिख रहा है। जिस भाजपा के लिए अपने दम पर सामान्य बहुमत हासिल करना सहज लग रहा था, उसकी गाड़ी बहुमत के आंकड़े से पहले कैसे अटक गई? इस सवाल की पड़ताल करें तो कम से कम 70 ऐसी सीटें रहीं, जहां स्थानीय कारकों ने भाजपा के राजनीतिक समीकरण बिगाड़े। ये सीटें मुख्यतः उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बंगाल, हरियाणा और राजस्थान की हैं। राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण उत्तर प्रदेश में गत आम चुनाव में भाजपा को 49.5 प्रतिशत वोट मिले थे, जो इस बार 41.37 प्रतिशत रहे। इसी दौरान बसपा का वोट प्रतिशत भी 19 से घटकर नौ प्रतिशत रह गया, जिसका सीधा लाभ सपा को मिला और वह 34 प्रतिशत वोट ले गई। इन छिटके मतदाताओं ने अंबेडकर नगर, संत कबीर नगर, जौनपुर, बलिया और चंदौली जैसी सीटों पर सपा के लिए निर्णायक असर डाला। कुर्मी, कुशवाहा, निषाद और राजभर जैसी गैर-यादव ओबीसी जातियां भी सपा के पक्ष में लामबंद हुईं। कुछ सीटों पर ब्राह्मणों ने भी भाजपा के लिए कम मतदान किया। पश्चिमी उत्तर प्रदेश की मुजफ्फरनगर और कैराना जैसी सीटों पर ठाकुर मतदाताओं ने भाजपा से मुंह तो नहीं मोड़ा, लेकिन पिछले चुनाव की तुलना में कम संख्या में बूथ तक पहुंचे। कुल मिलाकर उत्तर प्रदेश में स्थानीय कारक, जातिगत समीकरण और अधिकांश संख्या में पुराने उम्मीदवार उतारना भाजपा को भारी पड़ा। अग्निपथ योजना के चलते युवा भी उससे कुछ कट गए। सपा ने गैर-यादव पिछड़ों और दलितों को चतुराई के साथ टिकट बांटकर अपने राजनीतिक हित साधे। पार्टी ने 27 ओबीसी, 15 दलित और 11 सवर्णों को टिकट दिया।

बंगाल में ममता बनर्जी अपना राजनीतिक किला न केवल बचाने, बल्कि उसे और मजबूत बनाने में सफल हुईं। 2018 के पंचायत चुनाव में उपजी हिंसा के बाद 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा को यहां 40 प्रतिशत वोट मिले थे। भाजपा इस आंकड़े को बढ़ाने में सफल नहीं रही, उलटे उसका मत प्रतिशत और घट गया। दूसरी ओर ममता विधानसभा चुनाव का अपना 45 प्रतिशत मत कायम रखने में कामयाब रहीं। संदेशखाली जैसे मुद्दे के बावजूद ममता को महिलाओं के 58 प्रतिशत वोट मिले। महिला केंद्रित योजनाओं का उन्हें लाभ मिला। ममता के खिलाफ जो कुछ आक्रोश था, उसे

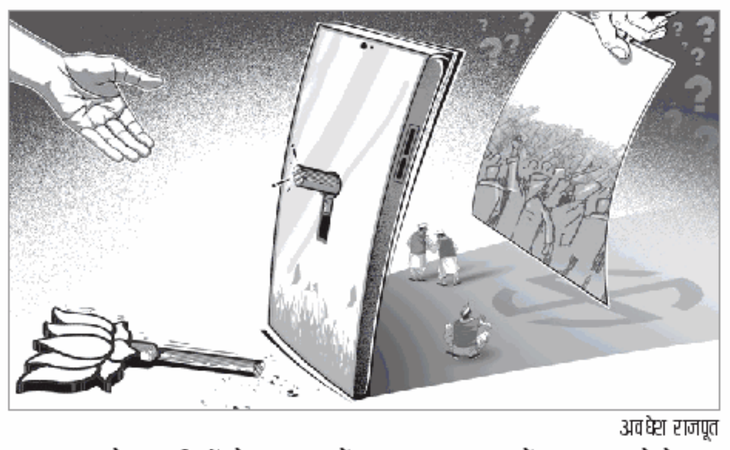

अवधेश राजपूत

भाजपा अच्छे प्रत्याशियों के अभाव में भुना नहीं पाई। बैरकपुर सीट पर तृणमूल के टिकट से वंचित उम्मीदवार को भाजपा ने प्रत्याशी बना दिया, जो हार गया। आसनसोल, दुर्गापुर और मेदिनीपुर की स्थितियां भी अलग नहीं रहीं। लगता है भाजपा ने विधानसभा चुनाव में मिली हार से सबक नहीं सीखा। विधानसभा हारे कई उम्मीदवारों को भाजपा ने लोकसभा का टिकट पकड़ा दिया। इससे मतदाताओं में भरोसा नहीं जगा और मोदी के पक्ष में बने माहौल का लाभ भाजपा उठाने से वंचित रह गई। वहीं, ममता ने सरकारी मशीनरी और प्रशासन के रणनीतिक उपयोग से सत्ता विरोधी रुझान को मात दी।

हरियाणा और राजस्थान में भाजपा ने पिछले चुनाव में शत प्रतिशत सफलता हासिल की थी, लेकिन इस बार यहां करीब आधी सीटें उसके हाथ से फिसल गईं। राजस्थान में नागौर, सीकर, झुंझुनूं, चूरू और बाड़मेर में जाट मतदाताओं ने भाजपा के खिलाफ मोर्चाबंदी की। टोंक-सवाई माधोपुर और दौसा जैसी सीटों पर मीणा समुदाय का भाजपा से मोहभंग हुआ। राजस्थान में सरकार बनने के बाद कुछ वर्गों की अपेक्षाओं पर खरा न उतर पाने का खामियाजा भी उसे भुगतना पड़ा। भरतपुर, धौलपुर जैसी सीटों पर पार्टी के प्रतिबद्ध मतदाता भी उसका साथ छोड़ कांग्रेस के पाले में चले गए। लगता है राज्य में मोदी फैक्टर के आगे उम्मीदवारों का चयन और जातिगत समीकरण भारी पड़े। राजस्थान में भाजपा का मत प्रतिशत 58.02 से घटकर 46.11 प्रतिशत रह गया। हरियाणा में रोहतक और सोनीपत में जाट भाजपा के खिलाफ लामबंद हुए। ग्रामीण क्षेत्रों में भी कांग्रेस के पक्ष में मतदान बढ़ा। सिरसा सीट पर दलित मतदाताओं ने कांग्रेस को प्राथमिकता दी। यहां पिछले चुनाव में भाजपा को 58 प्रतिशत वोट मिले, जबकि इस चुनाव में 46.11 प्रतिशत। 48 लोकसभा सीटों वाले महाराष्ट्र में जहां पिछले चुनाव में भाजपा को 27.59 प्रतिशत वोट मिले, वहीं इस बार 26.18 प्रतिशत। कांग्रेस का वोट प्रतिशत लगभग स्थिर रहा, लेकिन उसकी सीटों की संख्या एक से बढ़कर 13 हो गई। यहां भी स्थानीय कारकों ने भाजपा की मुसीबतें बढ़ाने का काम किया। उद्धव ठाकरे और कांग्रेस के वोटों के पूरी तरह से हस्तांतरण की उम्मीद तो पहले से ही थी, लेकिन भाजपा मुंबई और विदर्भ में पिछले चुनाव जैसा करिश्मा नहीं दोहरा पाई। भाजपा को अपने सहयोगियों से भी आशातीत लाभ नहीं मिला।

राष्ट्रीय परिदृश्य की बात करें तो भाजपा का वोट प्रतिशत पिछले चुनाव के बराबर ही रहा। दक्षिण भारत में उसे कांग्रेस के मुकाबले अधिक मत मिले। कांग्रेस से सीधे मुकाबले में भी भाजपा का पलड़ा खासा भारी रहा। हालांकि प्रत्याशियों के चयन और उत्तर प्रदेश में सोशल इंजीनियरिंग के मोर्चे पर मिली मात ने भाजपा की सीटों की संख्या घटाने में अहम भूमिका निभाई। यदि उसके खिलाफ सत्ता विरोधी रुझान होता तो उसे पिछली बार के लगभग बराबर मत नहीं मिलते।

चुनाव परिणाम आने के बाद एक्जिट पोल्स को भी निशाने पर लिया गया, लेकिन ऐसा करने वाले जान लें कि इन सर्वेक्षणों में जनता की धारणा के अनुपात में ही आकलन प्रस्तुत किया जाता है। दुनिया भर में एक्जिट पोल कई बार सटीक साबित होते रहे हैं तो कभी कभार गलत भी। हालिया एक्जिट पोल्स ने दो धारणाओं को विशेष रूप से समाहित किया था। एक तो प्रधानमंत्री की लोकप्रियता कायम है और उनकी योजनाओं को व्यापक रूप से और विशेषकर महिलाओं द्वारा खासा सराहा जा रहा है। दूसरे, स्थानीय प्रत्याशियों के विरुद्ध आक्रोश के साथ महंगाई और बेरोजगारी जैसे मुद्दों पर भी गौर किया गया था।

(लेखक चुनाव विश्लेषक और 'जन की बात' संस्था के संस्थापक हैं)

response@jagran.com

गठबंधन सरकार की चुनौतियां

देश में केंद्रीय स्तर पर एक बार फिर गठबंधन सरकार की शुरुआत हो गई है। चुनाव में जब कोई भी पार्टी पूर्ण बहुमत प्राप्त नहीं कर पाती तो गठबंधन के माध्यम से सरकार बनाना एक मजबूरी बन जाती है। गुजरात और फिर केंद्र में लगभग ढाई दशक तक बहुमत वाली सरकारों की अगुवाई करने के बाद नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री के रूप में अपने तीसरे कार्यकाल में पहली बार एक गठबंधन सरकार का नेतृत्व करने जा रहे हैं। नई सरकार में टीडीपी के मुखिया चंद्रबाबू नायडू और जदयू प्रमुख तथा बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। मोदी को इस दौरान लोकसभा में प्रतिनिधित्व करने वाले अपने अन्य सहयोगी दलों के साथ समन्वय बनाए रखना होगा। ऐसे में देखना होगा कि उनके नेतृत्व में नई सरकार किस प्रकार के शासन माडल को अपनाती है। भाजपा की योजना प्रचंड बहुमत के साथ सरकार बनाकर पूरे देश में समान नागरिक संहिता लागू करने और सभी प्रकार के चुनाव एक साथ कराने की थी। गठबंधन सरकार होने के नाते यह देखना रोचक होगा कि भाजपा इन महत्वपूर्ण एजेंडे पर कैसे आगे बढ़ती है?

वैसे तो देश में 1967 से गठबंधन की राजनीति शुरू हुई थी। तब से क्षेत्रवाद के उदय के साथ भारत में गठबंधन आधारित राजनीति में काफी परिवर्तन आया है। गठबंधन सरकार का देश की व्यवस्था पर सकारात्मक और नकारात्मक, दोनों प्रकार के प्रभाव पड़ सकते हैं। इसके सकारात्मक पहलू को देखें तो गठबंधन सरकार में एक दल की मंत्रिपरिषद के बजाय कई दलों को मिलाकर मंत्रिपरिषद का गठन होता है। जब कई दलों के सदस्यों को मंत्रिपरिषद में शामिल किया जाता है तो इससे अधिक योग्य लोगों की टीम बनती है। इससे सभी दलों के वरिष्ठ सदस्यों की योग्यता का लाभ देश को मिलता है। गठबंधन में शामिल दलों की संख्या जितनी अधिक होती है, सरकार को उतना ही अधिक जन समर्थन प्राप्त होता है। इससे सरकार की स्वीकार्यता भी बढ़ती है। गठबंधन की राजनीति से अतिवादी दृष्टिकोण से भी बचा जा सकता है। एक दल की सरकार जनता पर अपने दृष्टिकोण को थोपने का प्रयास कर सकती है, जबकि गठबंधन में कोई भी दल अकेले अपनी नीतियां और सिद्धांत थोप नहीं सकता, क्योंकि अन्य दल विरोध कर

डा. जगदीप सिंह

गठबंधन सरकार होने के नाते यह देखना रोचक होगा कि भाजपा अपने एजेंडे को कैसे आगे बढ़ाती है?

मोदी के नेतृत्व में पहली गठबंधन सरकार ● फाइल

सकते हैं। गठबंधन राजनीति का एक लाभ यह भी है कि एक राजनीतिक दल अकेले सत्तारूढ़ दल का उतना प्रभावशाली प्रतिरोध नहीं कर सकता, जितना कई दलों का गठबंधन कर सकता है। जैसे जब संप्रग की सरकार थी, तब राजग ने प्रभावशाली ढंग से उसका प्रतिरोध किया। वर्तमान में राजग की सरकार बनने जा रही है तब आइएनडीआइए नामक गठबंधन उसकी मनमानी को प्रभावी ढंग से रोक सकता है। गठबंधन सरकार की मंत्रिपरिषद को प्रायः एक न्यूनतम साझा कार्यक्रम के अनुसार काम करना होता है। वह मनमाने तरीके से कार्य नहीं कर सकती। प्रधानमंत्री को भी कोई फैसला लेते समय गठबंधन के सभी दलों की नीतियों और सिद्धांतों का ध्यान रखना पड़ता है।

यह ठीक है कि गठबंधन सरकार में विभिन्न पार्टियां मिलकर सरकार चलाती हैं और हर फैसले से पहले सबकी राय ली जाती है, ताकि किसी एक पार्टी का वर्चस्व न हो, लेकिन अक्सर ऐसा होता नहीं है। गठबंधन सरकार में जब मंत्रालयों का बंटवारा होता है, तो अधिक सीटों वाली पार्टी महत्वपूर्ण मंत्रालयों की मांग करती है। सत्ता की मजबूरी में बड़ी पार्टी इसे स्वीकार भी लेती है। अगले पांच साल तक समर्थन देने वाली पार्टी उस मंत्रालय में मनमानी करती है और बड़ी पार्टी विरोध नहीं कर पाती, क्योंकि ऐसा करने पर उसके द्वारा समर्थन वापस लेने का डर रहता है। इस कारण कई बार सरकार कठिन और महत्वपूर्ण फैसले नहीं ले पाती। जब सरकार महत्वपूर्ण फैसले नहीं लेती और केवल सत्ता में बने रहने की कोशिश करती है, तो गठबंधन की राजनीति से उसकी स्थिति कमजोर पड़ जाती है। ऐसी सरकार देश-विदेश से जुड़े मामलों में दृढ़ निर्णय लेने में असमर्थ रहती है। गठबंधन में विभिन्न विचारधाराओं और सिद्धांतों वाले दल शामिल होते हैं, जो कई बार राष्ट्र के बजाय अपने हित साधने वाली नीतियां बनाने की मांग करते हैं। इससे सरकार स्पष्ट नीति निर्धारित नहीं कर पाती और इसका प्रभाव उसके कार्यों पर पड़ता है। गठबंधन सरकार में स्थिरता की भी कमी होती है। देखा जाता है कि छोटे दल गठबंधन सरकार पर अपने हितों की पूर्ति के लिए दबाव बनाते रहते हैं। क्षेत्रीय दल अक्सर राष्ट्रीय हितों के बजाय क्षेत्रीय हितों को प्राथमिकता देते हैं, जिससे देश के हितों को हानि पहुंचती है। प्रधानमंत्री को अक्सर सहयोगी दलों के दबाव में काम करना पड़ता है। कई बार तो उन्हें विदेशी समझौतों और संधियों में भी उनकी सलाह लेनी पड़ती है। इससे वैश्विक मामलों में देश की स्थिति कमजोर हो जाती है।

चूंकि गठबंधन सरकार के मंत्री अपने दल के नेतृत्व के निर्देशों का पालन करते हैं, इस कारण कई अवसरों पर प्रधानमंत्री अनिर्णय की स्थिति में रहते हैं। गठबंधन शासन में सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और विभागों में समन्वय की भी कमी देखी जाती है। गठबंधन छोटे राजनीतिक दलों के उदय को भी प्रोत्साहित करता है, जो स्थायी सरकारों के गठन में एक बाधा है। कुल मिलाकर गठबंधन सरकार का संचालन नरेन्द्र मोदी के लिए एक चुनौती है। इसके साथ ही चंद्रबाबू नायडू और नीतीश कुमार के साथ काम करना भी एक बड़ी चुनौती है। ये दोनों नेता अनुभवी हैं और अपनी बातें मनवाने में सक्षम हैं, जिससे मोदी को दबाव की राजनीति का सामना करना पड़ सकता है। नरेन्द्र मोदी और अमित शाह की राजनीतिक प्रगति इसी पर निर्भर करेगी कि वे इस दबाव के बीच कैसे आगे बढ़ते हैं। उनके तीसरे कार्यकाल की सफलता भी इसी पर निर्भर करेगी।

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

आत्मा का भोजन

हमारे दार्शनिक ग्रंथों का चिंतन है कि जिस प्रकार इस पंच भौतिक शरीर को स्वस्थ रखने के लिए पौष्टिक भोजन की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार इस शरीर के भीतर रहने वाले नित्य, अनादि तत्व आत्मा का भी अपना भोजन होता है। हमारे वैदिक ग्रंथों में बताया गया है कि ध्यान में अवस्थित होकर ईश्वर की उपासना ही जीवात्मा का भोजन है। इसी भोजन से आत्मा में आत्मिक तथा आध्यात्मिक बल एवं शक्ति का संचार होता है जिससे जीवात्मा सत्, चित्त और आनंद के गुणों से परिपूर्ण होकर ईश्वर के आनंद की अनुभूति करने की क्षमता प्राप्त करता है।

हमारे ऋषियों ने ध्यान को ईश्वर से जुड़ने का परम साधन माना है। एकाग्रचित्त ध्यान के माध्यम से की गई ईश्वर की उपासना से आत्मा को अलौकिक एवं दिव्य आनंद रूपी भोजन की प्राप्ति होती है। मनुष्य संसार में आकर इस भौतिक शरीर को प्राप्त करके केवल इसी की सजावट एवं संवर्धन में लगा रहता है और नाना प्रकार के व्यंजनों से शरीर को तृप्त करने में लगा रहता है, परंतु इस शरीर के भीतर विद्यमान आत्म तत्व के भोजन से वह सदैव अनभिज्ञ ही रहता है।

उपासना रूपी आध्यात्मिक संपत्ति से ही आत्मा के भोजन का प्रबंध होता है। तीनों लोकों की संपत्ति में भी आत्मा के भोजन का प्रबंध करने की क्षमता नहीं है। वैदिक ग्रंथों का स्वाध्याय करके, ध्यान एवं उपासना के पथ पर अग्रसर होकर ही हम इस आत्मा को आनंद से परिपूर्ण तृप्ति प्रदान कर सकते हैं। ज्ञान के माध्यम से ईश्वर के आनंद की अनुभूति ही जीवात्मा का वास्तविक भोजन है। इसी दिव्य भोजन से आत्मा के अंदर आध्यात्मिक एवं साधना के पथ पर ले जाने वाली विभूतियों का उदय होता है। शरीर के भोजन के प्रबंध के साथ-साथ हमें आत्मा के भोजन का भी प्रबंध करना चाहिए। बिना इस दिव्य भोजन के आत्मा निर्बल, अशक्त, ज्ञानहीन होकर ईश्वर के सान्निध्य से सदैव वंचित ही रहता है।

आचार्य दीप चंद भारद्वाज

पाठकनामा

pathaknama@pat.jagran.com

गठबंधन सरकार की वापसी

'भाजपा को बदलनी होगी रीति-नीति' शीर्षक से प्रकाशित अवधेश कुमार का लेख पढ़ा। भाजपा को गठबंधन सरकार चलाने के लिए अब अपने सहयोगियों को साथ लेकर चलने की रीति-नीति अपनानी होगी। दस वर्षों के कार्यकाल में भाजपा के पास खुद का पूर्ण बहुमत था। ऐसे में पार्टी का शीर्ष नेतृत्व जो रोडमैप तैयार कर आगे बढ़ जाता था, सभी सांसद कदमताल मिलाते हुए उसका समर्थन करते थे, किंतु अब स्थिति बदल गई है। भाजपा को अपने सहयोगियों को खुश रखना होगा। उनके अनुरूप ही रोडमैप तैयार करना होगा, अन्यथा सरकार पर संकट के बादल कभी भी छा सकते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आश्वस्त थे कि उन्हें इस बार भी पूर्ण बहुमत मिलेगा, किंतु ऐसा नहीं हुआ, जो भाजपा के लिए निश्चित रूप से बड़ा आघात है। अब मोदी अपने संबोधनों में शब्दचयन का विशेष ध्यान रख रहे हैं। भाजपा की जगह ज्यादा से ज्यादा एनडीए का प्रयोग कर रहे हैं। निश्चित रूप से गठबंधन सरकार को ठीक ढंग से चलाने और भविष्य में अच्छा प्रदर्शन के लिए भाजपा को अपनी रीति-नीति में बदलाव करने होंगे। राजनीति में कौन कब और कहां बैठ जाए इस बात का कोई अंदाजा नहीं होता। ऐसे में नेताओं को जनसभाओं और भाषणों में विशेष ध्यान रखना होगा कि अपने सहयोगियों के प्रति कटुता के ऐसे शब्द मुंह से न निकलें जिससे भविष्य में उन्हें बड़ा नुकसान हो जाए और अफसोस जताना पड़े।

harishtutor1@gmail.com

नई व्यवस्था के तहत भुगतान आवश्यक

'दूर हो गतिरोध' शीर्षक से प्रकाशित लेख को पढ़ा। इसे पढ़कर राज्य के विश्वविद्यालयों में चल रही वित्तीय व्यवस्था एवं उसमें व्याप्त संकट का पता चला। राजभवन सचिवालय द्वारा की जा रही नई वित्तीय व्यवस्था आवश्यक है। जिसके तहत विश्वविद्यालयों के शिक्षकेत्तर कर्मचारियों एवं गैर शिक्षकेत्तर कर्मचारियों तथा पेंशनरों के वेतन व पेंशन का भुगतान सीधे उनके बैंक खाते में जमा करने की बात है। यह बदलाव कर्मियों व पेंशनरों के हक में है। अभी की व्यवस्था के अनुसार इनका वेतन भुगतान विश्वविद्यालय के कुलपति की ओर से किया जाता है। हाल के दिनों में राज्य के कई विश्वविद्यालयों के कुलपतियों की मनमानी तथा उनके विरुद्ध वित्तीय अनियमितता की शिकायतें मिल रहीं थीं, इस कारण विश्वविद्यालय कर्मियों के वेतन आदि भुगतान में विलंब होता था। इससे कर्मियों को मानसिक तनाव का सामना भी करना पड़ता था। किसी भी शैक्षणिक संस्थान में इस प्रकार के माहौल से उसके विकास में गतिरोध उत्पन्न होता है, जो किसी के हित में नहीं है। इस व्यवस्था के आने से उन्हें ससमय वेतन व पेंशन आदि का भुगतान हो सकेगा, जिससे वे निश्चिंत भाव से जीवन व्यतीत कर सकेंगे और मनोयोग से कार्य करेंगे। गत एक वर्ष से शिक्षा विभाग व विश्वविद्यालयों के बीच अधिकारों की लड़ाई के कारण भी व्यवस्थागत कार्यों में गतिरोध बना रहा। इससे विश्वविद्यालयों की छवि को भी नुकसान पहुंचा। ऐसे में कुलपति व कुलाधिपति के अधिकार, कर्तव्य एवं जवाबदेहियों की भी फिर से व्याख्या की जानी चाहिए। ताकि आगे कभी विभाग से टकराव की स्थिति उत्पन्न नहीं हो।

डा. विकाश कुमार, छपरा, बिहार

पूर्व की नीति पर चलने का संदेश

शिवकांत शर्मा द्वारा लिखित आलेख 'देश-दुनिया के लिए जनादेश का संदेश' पढ़ा। लोकतंत्र में जनादेश का सम्मान करना चाहिए। जनता ने अपना फैसला सुना दिया है। भाजपा 240 सीट के साथ सबसे बड़े दल के रूप में उभर कर सामने आई है। एनडीए को जनता ने पूर्ण बहुमत प्रदान किया है, एवं कांग्रेस को मजबूत विपक्ष के रूप में कार्य करने का संदेश दिया है। कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों को पूर्व की तुलना में भारी बढ़त मिली है, तो दूसरी ओर एनडीए अपने स्वनिर्धारित चार सौ पार के लक्ष्य से पीछे रह गई है। इस कारण भाजपा की जीत को भी विपक्षी खेमा हार मान रहा है। आश्चर्य का विषय है कि कुछ मीडियाकर्मी भी इसे मोदी की पराजय के रूप में देख रहे हैं, जबकि सच्चाई यह है कि लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री बनना एक दुर्लभ उपलब्धि है। यह जनादेश नरेन्द्र मोदी की लोकप्रियता की देन है। इससे पूर्व यह प्रदर्शन प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कर दिखाया था। अपनी तीसरी पारी में प्रधानमंत्री मोदी को गठबंधन धर्म का पालन करना होगा। प्रधानमंत्री ने अपने पहले संबोधन में यह स्पष्ट कर दिया है, कि यह सरकार अपने पूर्व की नीति के अनुसार कार्य करेगी। कोई भी सहयोगी दल अकेले सरकार पर दबाब बनाने की स्थिति में नहीं है। मोदी कड़े एवं साहसिक निर्णय के लिए जाने जाते हैं। विपक्षी दलों को मजबूती के साथ सकारात्मक विपक्ष की भूमिका निभानी चाहिए।

ई हिमांशु शेखर, केसपा, गया

पोस्ट

राजनीतिक दलों को अब तक मनपसंद रिपोर्टर ही चाहिए थे, लेकिन अब उन्हें मनपसंद सवाल भी चाहिए! कुछ भी कहो, मीडिया का खौफ तो अभी भी है।

प्रभाकर कुमार मिश्र@PMishra_Journo

मैंने हमेशा से कहा है कि भारत इसलिए सेक्युलर देश है, क्योंकि यहां के हिंदू सेक्युलर हैं। भारत की मूल प्रकृति सेक्युलर है। हालिया लोकसभा चुनाव ने इसे एक बार फिर साबित कर दिया है।

डा. एसवाई कुरैशी@DrSYQuraishi

अगर कोई व्यक्ति अपनी वर्दी पर अपनी राजनीतिक विचारधारा को हावी होने देता है तो वह निश्चित रूप से मानसिक और नैतिक रूप से उस वर्दी को पहनने के लिए उपयुक्त नहीं है।

तुषार गुप्ता@Tushar15_

कंगना रनौत को थप्पड़ मारे जाने पर जो लोग जश्न मना रहे हैं, उनकी कही न जाने कितनी बातों के लिए न जाने कितने थप्पड़ प्रतीक्षा में होंगे। नफरत में अंधे होकर इस घटिया हरकत की वाहवाही करने वालों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हिंसा हिंसा को जन्म देती है!

अभिषेक उपाध्याय@upadhyayabhi

जनपथ

मतदाता भगवान में दिखे एक ही खोट,
कर दो लाख विकास पर गिरे जाति पर वोट।
गिरे जाति पर वोट भयंकर ये बीमारी,
भारत माता आज इसी से दिखती हारी।
सुख-सुविधा की खेप भले वह रोज उड़ाता,
पर जाता है भूल सभी कुछ ये मतदाता!

– ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व.पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान सम्पादक- स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन- महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान सम्पादक -संजय गुप्त

जागरण प्रकाशन लिमिटेड के लिये आनन्द त्रिपाठी द्वारा दैनिक जागरण प्रेस C-5, C-6 & 15 इंडस्ट्रियल एरिया, पाटलिपुत्रा, पटना - 800013 से प्रकाशित एवं मुद्रित, सम्पादक (बिहार/प, बंगाल)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी, स्थानीय सम्पादक - आलोक मिश्रा * दूरभाष : 0612-2277071, 2277072, 2277073
E.mail : patna@pat.jagran.com, R.N.I. NO. BIHHIN/2000/03097* इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर वी.एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी पटना जीपीओ रजि.नं. R-10/NP-18/14-16 समस्त विवाद पटना न्यायालय के अधीन ही होंगे। वर्ष 25 अंक 57

****

अमर उजाला

प्रवाह

महोत्सव विश्वास का

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

नई दिल्ली ■ शनिवार, 8 जून 2024

जीत और हार जीवन के अहम हिस्से हैं, जिन्हें समानता के साथ देखना चाहिए।
-अटल बिहारी वाजपेयी

यूनिसेफ की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक, दुनिया के करीब अठारह करोड़ बच्चे भुखमरी से जूझ रहे हैं, तो यह व्यवस्था की ही विफलता है। इस गंभीरतम मानवीय संकट से निपटने के लिए सभी देशों को सामूहिक जिम्मेदारी समझते हुए आगे आना होगा।

भूखे बच्चे

आज की दुनिया में, जहां तकनीकी और आर्थिक विकास ने हमें चमत्कारों की ओर अग्रसर किया है, वहीं एक कड़वा सच यह भी है कि दुनिया के करोड़ों बच्चे भुखमरी का शिकार हो रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (यूनिसेफ) की ताजा रिपोर्ट ने इसी स्थिति को उजागर किया है, जिसके मुताबिक, दुनिया में पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों में 27 फीसदी यानी करीब अठारह करोड़ बच्चे गंभीर खाद्य संकट का सामना कर रहे हैं। यह आंकड़ा किसी भी सभ्य समाज के लिए शर्मनाक है। बच्चों को पर्याप्त भोजन न मिल पाना उनके शारीरिक व मानसिक विकास को तो प्रभावित करता ही है, इससे उनके जीवन की गुणवत्ता नकारात्मक रूप से प्रभावित होती है और भविष्य भी अंधकारमय होता है। यूनिसेफ की इस रिपोर्ट के निष्कर्षों की पुष्टि हाल ही में जारी संयुक्त राष्ट्र की एक अन्य रिपोर्ट से भी होती है, जिसके अनुसार, 32 देशों में भूख से जूझते 3.60 करोड़ बच्चों में से पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों में कुपोषण का स्तर गंभीरतम स्तर पर है। दरअसल, आज अगर दुनिया का हर चार में से एक बच्चा गंभीर खाद्य संकट का सामना कर रहा है, तो इसकी बड़ी वजह वैश्विक युद्ध, असमानता और जलवायु संकट के अलावा विकराल गरीबी भी है। इस मामले में भारत की स्थिति भी कुछ खास अच्छी नहीं है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के आंकड़े बताते हैं कि पिछले 24 घंटों में पौष्टिक भोजन न करने वाले छह से 23 महीने के बच्चों का प्रतिशत 2016 में 17.2 फीसदी था, जो बढ़कर 2021 में 17.8 फीसदी हो गया। अमेरिका के जेएएमए ओपन नेटवर्क और हार्वर्ड की एक हालिया रिपोर्ट भी इन आंकड़ों की पुष्टि करती है। गौरतलब है कि बच्चों को अगर पौष्टिक आहार नहीं मिल पा रहा है, तो यह महज एक स्वास्थ्य संकट नहीं, बल्कि संकेत है कि हम अपने समाज और मानवता के प्रति कर्तव्यों को निभाने में भी विफल हो रहे हैं। इस मामले में बर्किना फासो और रवांडा जैसे

अफ्रीकी देश जरूर मिसाल बनकर उभरे हैं, जिन्होंने राजनीतिक व सामाजिक अस्थिरता, बेहद गरीबी, गंभीर खाद्य असुरक्षा और अनियमित वर्षा के बावजूद पिछले दस वर्षों में बच्चों में भुखमरी की समस्या को कम करने में कामयाबी पाई है। यूनिसेफ की कार्यकारी निदेशक कैथरीन रसेल का यह कहना बिल्कुल मुनासिब है कि यदि हमारे बच्चे भूख से जूझ रहे हैं, तो यह उन बच्चों के माता-पिता की नहीं, बल्कि व्यवस्था की विफलता है। ऐसे में, अगर वाकई बच्चों को भूखे मरने से बचाना है, तो इससे निपटने के लिए सभी देशों को सामूहिक जिम्मेदारी समझते हुए आगे आना होगा।

खिड़की खुली, दरवाजा बाकी

भारतीय जनता पार्टी ने दक्षिण की 130 सीटों में से 29 सीटों पर जीत दर्ज की। इस चुनाव ने साबित कर दिया कि दक्षिण में भाजपा का दबदबा बढ़ रहा है और आने वाले समय में दक्षिण भारतीय राजनीतिक समीकरण भाजपा की राजनीति के साथ एक बड़े बदलाव के लिए तैयार हैं।

भारत का बहुप्रतीक्षित आम चुनाव संपन्न हो गया है और भाजपा के नेतृत्व में राजग गठबंधन सरकार बन रही है। नरेंद्र मोदी कल तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने वाले हैं। हालांकि उत्तर भारत में भाजपा को सीटों का भारी नुकसान हुआ, पर दक्षिण भारत में दिलचस्प वोटिंग पैटर्न उभरकर सामने आए हैं, जो वहां भाजपा की चुनावी बढ़त से स्पष्ट है। बेशक दक्षिण में मिली बढ़त उत्तर भारत में हुए नुकसान की भरपाई नहीं कर सकती, पर इस चुनाव में भाजपा के संबंध में दक्षिण की मतदान प्रवृत्ति का विश्लेषण एक ऐसी अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जो दक्षिण में पैठ बनाने की इच्छुक किसी भी राष्ट्रीय पार्टी के लिए ध्यान देने योग्य है।

महेंद्र बाबू कुरुवा
राजनीतिक विश्लेषक

लंबे समय से दक्षिणी राज्यों में भाजपा को 'उत्तर भारतीय पार्टी' माना जाता रहा है। तमाम प्रयासों के बावजूद कर्नाटक को छोड़कर यह दक्षिणी राज्यों में अपनी पैठ नहीं बना पाई। हालांकि 2019 में मोदी लहर में भी आंध्र प्रदेश, केरल और तमिलनाडु में एक भी सीट नहीं जीत पाने के बाद भाजपा दक्षिण के प्रति गंभीर हो गई। इन तीनों राज्यों में भाजपा की हार के पीछे कई कारण थे। आंध्र में भाजपा के खिलाफ लोगों में काफी नाराजगी थी, क्योंकि उसने राज्य को विशेष राज्य का दर्जा नहीं दिया और जगन मोहन रेड्डी के नेतृत्व में वाईएसआर कांग्रेस ने आंध्र प्रदेश में किसी अन्य पार्टी के लिए राज्य के चुनावी मैदान में उतरने की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी थी। तमिलनाडु में पारंपरिक रूप से द्रविड़ पार्टियों की राजनीति हावी रही है। यहां तक कि केरल में भाजपा की हिंदुत्व की राजनीति भी उल्टी पड़ गई और भाजपा द्वारा उठाए गए सबरीमाला मुद्दे का ज्यादातर लाभ केरल कांग्रेस को मिला।

मगर 2024 के आम चुनाव में चीजें बदल गईं। दक्षिण भारत की 130 सीटों में से भाजपा ने 29 सीटें हासिल कीं, जिनमें से तीन आंध्र प्रदेश में, 17 कर्नाटक में, आठ तेलंगाना में और एक सीट केरल में है। आंध्र प्रदेश में पार्टी का वोट शेयर 2019 के 0.98 फीसदी से बढ़कर अब

11.28 फीसदी हो गया है। यह पूर्व राजग सहयोगी एवं तेदेपा प्रमुख चंद्रबाबू नायडू के साथ समझौते के कारण हुआ, जो अब केंद्र में 'किंग मेकर' बन गए हैं। आंध्र में भाजपा की वापसी का कारण उसके दूसरे सहयोगी और जनसेना पार्टी के फिल्म स्टार पवन कल्याण द्वारा हासिल भारी युवा वोट भी हैं। आंध्र प्रदेश से सटे तेलंगाना में हाल ही में संपन्न विधानसभा चुनाव में भाजपा की स्थिति खराब हो गई थी, लेकिन आम चुनाव में यह पूरी ताकत के साथ उभर कर सामने आई है। भाजपा ने तेलंगाना की छह में से तीन सीटें हासिल कीं, इसने बीआरएस को तीसरे स्थान पर धकेल दिया। बूथ स्तर पर अपना स्वयं का पार्टी कैडर तैयार करने के लगातार प्रयासों का नतीजा है कि भाजपा का वोट शेयर 2019 के 19.65 प्रतिशत से बढ़कर 2024 में 35.08 प्रतिशत हो गया। इसके अलावा, राज्य की कांग्रेस सरकार द्वारा तेलंगाना के किसानों से कर्ज माफी का वादा पूरा नहीं करने का लाभ भी भाजपा को मिला।

'देवताओं का अपना देश' कहे जाने वाले केरल में खाता खोलने का भाजपा का लंबे समय का सपना पूरा हो गया, क्योंकि पार्टी के प्रत्याशी ने त्रिशूर निर्वाचन क्षेत्र से जीत हासिल की। पार्टी ने कट्टर हिंदुत्व के अपने एजेंडे से विकास की तरफ अपना रुख मोड़ दिया, जिससे उसका वोट शेयर 2019 के 13 प्रतिशत से बढ़कर 2024 में 16.68 प्रतिशत हो गया। भाजपा को तमिलनाडु से काफी उम्मीदें थीं, क्योंकि उसके युवा राज्य प्रमुख अन्नामलाई पूर्व आईपीएस हैं और पार्टी ने उन्हें खुली छूट दे रखी है। लेकिन कद्दावर नेताओं के बार-बार दौरे, भाजपा की केंद्रीय इकाई द्वारा तमिल संस्कृति एवं परंपरा पर जोर दिए जाने तथा 'कच्चातिवु' मुद्दे को उठाने के बावजूद पार्टी वहां सीट नहीं जीत सकी। हालांकि 2019 के 3.66 फीसदी के मुकाबले उसका वोट शेयर बढ़कर 2024 में 11.24 फीसदी जरूर हो गया, जो कि तीन गुना ज्यादा है। भाजपा द्वारा हासिल यह वोट शेयर 1999 से भी ज्यादा है, जब वह राज्य में अपने चरम पर थी और उसने तीन सीटें जीती थीं। यह दर्शाता है कि भाजपा ने द्रविड़ पार्टियों के वोट शेयर में सेंध लगा दी है, खासकर अन्नाद्रमुक के वोट शेयर में, जो पार्टी सुप्रीमो जयललिता के निधन के बाद बदहाल है। हालांकि द्रमुक के वोट शेयर में सेंध लगाना मुश्किल है, जिसने राज्य की 39 में से 22 सीटों पर जीत दर्ज की है।

कर्नाटक का परिणाम अजीबोगरीब रहा, जहां भाजपा का वोट शेयर 2019 के 51.38 से घटकर इस बार 46.06 फीसदी रह गया है। जद (एस) के साथ गठजोड़ करना भी भाजपा को भारी पड़ गया, जद (एस) प्रज्वल रेवन्ना से संबंधित विवादों के कारण राज्य के वोट पैटर्न में जबर्दस्त बदलाव दिखा। वर्ष 1996 के बाद यह पहली बार था, जब राज्य के दोनों प्रमुख समुदाय-वोक्कालिंगा एवं लिंगायत भाजपा के साथ थे। इस तरह, भले ही भाजपा ने सीटें हारी हों, लेकिन उसे कुछ अप्रत्याशित समुदायों का वोट मिला है।

दक्षिण में भाजपा के समग्र प्रदर्शन से कोई भी राष्ट्रीय पार्टी चार सबक सीख सकती है। पहला, दक्षिण भारत कोई एक इकाई नहीं है, जैसा कि कई उत्तर भारतीय मानते हैं। हर राज्य के अपने सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक कारक होते हैं, जो मतदान को प्रभावित करते हैं। यही कारण है कि दक्षिण के प्रत्येक राज्य में भाजपा ने वोट शेयर और जीती गई सीटों के मामले में विरोधाभासी प्रदर्शन किया है। दूसरा, कोई भी राष्ट्रीय पार्टी दक्षिण की क्षेत्रीय पार्टियों की अनदेखी नहीं कर सकती। तेदेपा एवं जद (एस) ने इसे एक बार फिर साबित किया है। तीसरा सबक यह है कि विचारधारा और राजनीतिक बयानबाजी से वोट तो मिल सकते हैं, लेकिन सिर्फ यह वोटों के सीटों में तब्दील होने की गारंटी नहीं है। केरल और तमिलनाडु ने भाजपा के लिए इसे साबित किया है। अंतिम सबक यह है कि दक्षिण की राजनीति में अब फिल्म स्टार उतने प्रासंगिक नहीं रहे। आंध्र प्रदेश और केरल में फिल्म स्टार के साथ भाजपा के जुड़ाव और उससे मिले चुनावी लाभ से यह साफ है। कुल मिलाकर, इस चुनाव ने साबित कर दिया कि दक्षिण में भाजपा का दबदबा बढ़ रहा है और आने वाले समय में दक्षिण भारतीय राजनीतिक समीकरण भाजपा की राजनीति के साथ एक बड़े बदलाव के लिए तैयार हैं।

edit@amarujala.com

जीवन धारा

परमहंस योगानंद

जो कुशल हैं, उनकी कुशलता का मुख्य कारण यही है कि उनमें अहंकार की वृत्ति क्षीण होती है। वे दूसरों को प्रोत्साहन देते हैं। अगर कभी अपने किसी आदमी से कोई गलती हो जाए, तो उसे अपने सिर पर लेते हैं।

हर काम में आड़े आता है मनुष्य का अहंकार

अहंकार एक आवरण है। दीपक के ऊपर हांडी को उलट दें, तो उसमें प्रकाश होते हुए भी अंधकार हो जाता है। अंधकार और प्रकाश के बीच में एक दीवार खड़ी हो जाती है। ऐसे अंधकार का ही दूसरा नाम अहंकार है, जहां अज्ञानता होती है, वहां अंधकार होता है। दीपक के ऊपर हांडी दीपक को ऑक्सीजन से वंचित रखती है और दीपक अपने ही द्वारा उत्पन्न की गई कार्बन डाईऑक्साइड से घिरे रहने पर थोड़ी ही देर में बुझ जाता है। इसी प्रकार अहंकारी मनुष्य अपने इर्द-गिर्द विकार का वातावरण खड़ा कर लेता है, जिससे उसकी प्राणशक्ति क्षीण हो जाती है और उसमें दुखी होता हुआ वह एक दिन इस संसार से कूच कर जाता है। अहंकारी लोग तिल-तिल कर जीवन भर खुद को नष्ट करते रहते हैं।

मनुष्य का अहंकार हर काम में आड़े आता है। जो मनुष्य अहंकारी होता है, वह बात-बात में अपनी महत्ता को दर्शाता है। वह 'मैंने यह काम किया, मैं बड़ा बुद्धिमान हूं' आदि डींगें हांकता रहता है। वह समझता है कि सब काम मेरी ही वजह से हो रहे हैं। उसका न किसी पर विश्वास है, न कोई उसके साथ काम करने को ही राजी होता है। सारांश यह कि किसी भी मनुष्य को अहंकारी नहीं होना चाहिए। अहंकारी से सब दूर रहना चाहते हैं। इसलिए अहंकार किसी भी काम में बड़ी बाधा है। बच्चे सब को इसलिए प्रिय लगते हैं कि उनमें अहंकार नहीं होता है। उनसे बात करने में प्रसन्नता होती है। वे सहज-सरल हैं। इसलिए उनसे सब बात करते हैं, जिससे एक प्रकार की स्फूर्ति मिलती है। जो कार्य करने में कुशल हैं, उनकी कुशलता का मुख्य कारण यही है कि उनमें अहंकार की वृत्ति क्षीण होती है। वे दूसरों को प्रोत्साहन और बढ़ावा देते हैं। अगर कभी अपने किसी आदमी से कोई गलती हो जाए, तो उसे अपने सिर पर लेते हैं। अगर कभी कोई अच्छा काम हो जाता है, तो सारी शाबाशी वे दूसरों को ही देते हैं। इससे दूसरों का दिल बढ़ता है और वे भविष्य में और अधिक प्रवीणता से काम करते हैं। वे जिनको शाबाशी देते हैं, वे व्यक्ति हृदय से आभारी होकर उनके सहयोगी बन जाते हैं। इसी प्रकार अहंकार का त्याग करने पर लोगों की आत्मा शुद्ध होती है और यश एवं शांति मिलती है। जिस प्रकार बल्ब पर काली स्याही लगा देने से उसका प्रकाश विकसित नहीं होता, उसी प्रकार अहंकार से व्यक्तित्व नहीं निखर पाता। आत्मा व परमात्मा दोनों एक ही हैं, पर परमात्मा की प्राप्ति तभी हो सकती है, जब अहं मिट जाता है। अहंकार मिट जाना ही परमात्मा का मिलन है। जब तक अहं है, तब तक परमात्मा नहीं और जहां अहं नहीं, वहां परमात्मा है। अतः हमें स्वार्थ और परमार्थ, दोनों में अहं का त्याग करना चाहिए, तभी हम संसार के सच्चे मार्गदर्शक और आत्मदर्शी हो सकते हैं। जो अपने व्यक्तित्व और अपने अहं को ब्रह्म में समाहित कर देते हैं, वे ईश्वर के साथ एकत्व प्राप्त कर लेते हैं, वे संसार के भयंकर उपद्रवों से बच जाते हैं।

साढ़े तीन हाथ...

सूत्र

जब मनुष्य अपने-आप को छिपाकर, प्रकृति के साथ एक होकर रहता है, तब वह संसार से बचा रहता है, उसके ऊपर किसी प्रकार का प्रहार नहीं होता, वह अपनी साधना में संलग्न हो अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर लेता है, जो मनुष्य साढ़े तीन हाथ के शरीर में अहं भाव भरकर 'मैं-मैं' कहता रहता है, उस मनुष्य का भी गला एक दिन मैं-मैं करने वाली बकरी की तरह कट जाता है।

दूसरा पहलू

विमानों के लिए विक्षोभ की स्थिति तब पैदा होती है, जब ऊंचाई पर दो तरह की हवा एक दूसरे से टकराती हैं।

जलवायु परिवर्तन से हवाई यात्रा में जोखिम

विमान यात्रियों के लिए विक्षोभ का अनुभव एक सामान्य अनुभव है। विक्षोभ की स्थिति तब पैदा होती है, जब ऊंचाई पर दो तरह की हवा एक दूसरे से टकराती है। विक्षोभ के खतरनाक स्तर पर पहुंचने के उदाहरण कम हैं, लेकिन जब ऐसे मामले सामने आते हैं, तो वे बेहद भीषण होते हैं। पिछले दिनों लंदन से सिंगापुर जाने वाली सिंगापुर एयरलाइंस के साथ हुए हादसे ने इसे फिर से साबित कर दिया है, जिसमें एक यात्री की दिल का दौरा पड़ने से मौत हो गई, और कई यात्री घायल हो गए। उस फ्लाइट की आनन-फानन में बैंकॉक में लैंडिंग कराई गई थी, ताकि घायल यात्रियों को अस्पतालों में तत्काल इलाज सुलभ हो सके।

डाउग ड्री

ऊंचाई पर भी दूसरे विमानों के नजदीक आने या खासकर सूखे के दौरान रेतीले तूफान के कारण विमानों को विक्षोभ का सामना करना पड़ सकता है।

ऊंचाई पर विमानों को एक और तरह के विक्षोभ का सामना करना पड़ता है, जिसे क्लीयर एअर टर्बुलेंस कहते हैं और जो ज्यादातर पहाड़ी इलाकों में घटित होते हैं। ये काफी खतरनाक होते हैं।

हवाई रूटों में विक्षोभ की घटना कहीं भी हो सकती है, लेकिन विक्षोभ के मामले में कुछ हवाई रूट दूसरे रूटों की तुलना में ज्यादा खतरनाक होते हैं।

विशेषज्ञों का मानना है कि जलवायु परिवर्तन के कारण हवाई रूटों पर विक्षोभ की घटनाएं बढ़ेंगी। बल्कि कुछ अध्ययन तो बताते हैं कि पिछले कुछ दशकों में विक्षोभ की घटनाएं बढ़ गई हैं, जिस कारण हवाई सफर ज्यादा जोखिम भरा हो गया है। पिछले साल प्रकाशित एक रिपोर्ट के मुताबिक, 1979 से 2020 तक हवाई विक्षोभ की घटनाएं तेजी से बढ़ी हैं। कुछ हवाई रूटों पर विक्षोभ की घटनाओं में 35 फीसदी तक की वृद्धि हुई है। आजकल हर उड़ान को एक या दूसरे तरीके से विक्षोभ की घटनाओं का कमोबेश सामना करना पड़ता है। मसलन, यदि एक विमान के उड़ान भरने या लैंड करने के तुरंत बाद दूसरा विमान उड़ान भरता या लैंड करता है, तो पहले विमान के इंजन और उसके डैनों से निकली हवा दूसरे विमान के लिए विक्षोभ की स्थिति पैदा कर सकती है।

हवाई अड्डे के आसपास के इलाके में तेज हवा चलने से भी जमीनी स्तर पर विमानों को विक्षोभ का सामना करना पड़ सकता है। इसी तरह, ऊंचाई पर भी दूसरे विमानों के नजदीक आने या खासकर सूखे के दौरान रेतीले तूफान के कारण विमानों को विक्षोभ का सामना करना पड़ सकता है। ऊंचाई पर विमानों को एक और तरह के विक्षोभ का सामना करना पड़ता है, जिसे क्लीयर एअर टर्बुलेंस कहते हैं और जो ज्यादातर पहाड़ी इलाकों में घटित होते हैं। खतरनाक बात यह है कि यह विक्षोभ अदृश्य होता है, और इससे बचा नहीं जा सकता। इस विक्षोभ की स्थिति तब होती है, जब गर्म हवा ठंडी हवा में प्रवेश करती है। विशेषज्ञों का मानना है कि जलवायु परिवर्तन के कारण इस तरह के विक्षोभ की घटनाएं बढ़ी हैं। *(कन्वर्सेशन से)*

आंकड़े

बीन्स उत्पादन

ताजा रिपोर्ट के अनुसार, बीन्स उत्पादन में भारत पूरी दुनिया में पहले नंबर पर है।

चीन पहले (4.58%) और अमेरिका सातवें (4.14%) नंबर पर

स्रोत: FAO

कुरुक्षेत्र में रहने वाले मुद्गल पूर्णिमा और अमावस के दिन ही भोजन करते थे। दुर्वासा ऋषि द्वारा परीक्षा लेने के कारण वह तीन महीने तक भूखे रहे थे।

दुर्वासा ने ली परीक्षा

अंतर्यात्रा
संकलित

द्वापर युग में मुद्गल नामक व्यक्ति कुरुक्षेत्र में रहते थे। वह पूर्ण जितेंद्रिय, सत्यवादी, दयालु और धर्मात्मा थे। वह माह में पूर्णिमा और अमावस पर ही महीने में दो दिन भोजन करते थे। इतना ही नहीं, इन दिनों में उनके घर पर कोई अतिथि आ जाए, तो उसे भी भोजन कराने के बाद बचने पर ही खुद आहार लेते थे।

इससे मुद्गल की कीर्ति चारों ओर फैल रही थी। एक बार दुर्वासा ऋषि के मन में आया कि क्यों न मुद्गल की परीक्षा ली जाए? पूर्णिमा के दिन दुर्वासा ऋषि मुद्गल के घर पहुंच गए। उन्होंने ऋषि का आदर-सत्कार कर भोजन कराया। दुर्वासा ने मुद्गल के घर में बना हुआ सारा भोजन निपटा दिया। मुद्गल ने ऋषि का धन्यवाद कर विदा किया। इसके बाद अमावस के दिन भी दुर्वासा ऋषि मुद्गल के घर पहुंचे और उन्होंने पूर्व की भांति सारा भोजन कर लिया। यह क्रम करीब तीन महीने तक चला।

तीन महीने तक मुद्गल के पेट में अन्न का एक दाना तक नहीं गया, लेकिन उनके मन में तनिक भी दुख या क्रोध का भाव नहीं आया। यह देख दुर्वासा ऋषि बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा, इस लोक में तुम्हारे समान दाता कोई और नहीं है। भूख ऐसी चीज है, जो अच्छे-अच्छों के ज्ञान और धैर्य का नाश कर डालती है। भूखे रहकर भी तुम्हारी इंद्रियां नहीं भटकीं। तुम मेरी परीक्षा में सफल हुए। मैं तुम्हें परमपद प्राप्त करने का आशीर्वाद देता हूं।

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 09 फरवरी, 1950

अमेरिकी सीनेट में रूस को मनाने का प्रस्ताव

संसार की तबाही रोको
प्रेसीडेंट ट्रूमैन से मांग
विश्व निशस्त्रीकरण सम्मेलन बुलाया जाए
बादशाह खान काल कोठरी में

अमेरिका की शस्त्र निर्माण समिति के सदस्य ने अमेरिकी सीनेट में प्रस्ताव रखा है कि दुनिया को विनाश से बचाने के लिए विश्व निशस्त्रीकरण सम्मेलन बुलाया जाए, जिसमें रूस को आमंत्रित कर उसे मनाया जाए।

सितारे हमारे-आपके बीच के लोग

भारत में चूंकि अभी इंटरनेट बाजार में पर्याप्त संभावनाएं हैं, इसलिए अभी सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर का यह दौर चलेगा, पर कुछ चिंताएं भी हैं।

मुकुल श्रीवास्तव

सोशल मीडिया

आज से पांच साल पहले किसी ने सोचा भी नहीं था कि एक ऐसा वक्त भी आएगा, जब आप कुछ न करते हुए भी बहुत कुछ करेंगे और पैसे भी कमाएंगे। बात चाहे यात्राओं की हो या खान-पान की या फिर फैशन की, देश-विदेश की बड़ी कंपनियां ऐसे लोगों को, जो इंटरनेट पर ज्यादा फॉलोवर रखते हैं, अपने उत्पाद के विज्ञापन के लिए पैसे दे रही हैं और उनके खर्चे भी उठा रही हैं।

इंटरनेट की दुनिया की खास बात है गतिशीलता। नया बहुत जल्दी पुराना हो जाता है और नई संभावनाओं के द्वार खुल जाते हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स में नए-नए फीचर जुड़ रहे हैं। इस कवायद का मतलब ऑडियंस को ज्यादा वक्त तक अपने प्लेटफॉर्म से जोड़े रखना है। बड़ा कारण इंटरनेट द्वारा पैदा हो रही आय भी है। इसके अलावा, सोशल मीडिया रातों-रात लोगों को सेलिब्रिटी बना दे रहा है, जिसमें बड़ी भूमिका फेसबुक, इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसी साइट्स की है।

मूल्यांकन सलाहकार फर्म क्रोल की ताजा रिपोर्ट के अनुसार, एक साल में एक तिहाई भारतीय ब्रांड्स ने अपनी इन्फ्लुएंसर मार्केटिंग पर खर्च दोगुना कर दिया है। कोरोना महामारी ने बड़ी मात्रा में डिजिटलीकरण को प्रेरित किया। भारत में सोशल मीडिया की कंटेंट क्रिएटर इंडस्ट्री पच्चीस प्रतिशत की रफ्तार से बढ़ रही है, जिसके साल 2025 में 29.03 करोड़ डॉलर होने की संभावना है। सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स अब ब्रांड को एक बड़े दर्शक वर्ग पर कम खर्च में पहुंचाने का सुलभ तरीका बन रहा है। आज भारत में लगभग आठ करोड़ कंटेंट क्रिएटर हैं। डिजिटल मार्केटिंग एजेंसी आई क्यूब्स वायर के शोध से पता चलता है कि करीब 35 फीसदी ग्राहकों के खरीदारी निर्णय सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर पोस्ट, रील्स व वीडियो देखकर लिए जा रहे हैं।

सोशल मीडिया यूजर्स अपनी बड़ी फैन फॉलोइंग का फायदा 'सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर' के तौर पर उठा रहे हैं और यह विज्ञापन के नए माध्यम के रूप में तेजी से उभर रहा है। सोशल मीडिया आम इंटरनेट यूजर्स को सितारा बना रहा है। सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर, व्यक्ति और ब्रांड प्रमोशन का बड़ा औजार बनकर सामने आए हैं। सोशल मीडिया विज्ञापन का एक अपरंपरागत माध्यम है, जो बाकी सारे मीडिया से अलग है। यह एक वर्चुअल वर्ल्ड बनाता है, जिसे उपयोग करने वाला व्यक्ति सोशल मीडिया के किसी प्लेटफॉर्म आदि का उपयोग कर किसी भी इंटरनेट से जुड़े व्यक्ति तक पहुंच बना सकता है।

सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर वह आम व्यक्ति होता है, जिसके विभिन्न प्लेटफॉर्म पर कई फॉलोवर होते हैं। वह अपनी लोकप्रियता का इस्तेमाल विभिन्न तरह के उत्पाद के विज्ञापन में करता है। इसमें दूसरे विज्ञापन माध्यमों के मुकाबले निवेश पर रिटर्न अधिक है। देश के लाखों युवा सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर को एक बेहतर कॅरिअर विकल्प के रूप में देख रहे हैं। सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर जहां विज्ञापनों की दुनिया में एक नया आयाम गढ़ रहे हैं, वहीं विज्ञापनों में सेलिब्रिटी स्टेटस को खत्म भी कर रहे हैं, जहां हमारे-आपके बीच के लोग ही स्टार बन रहे हैं। भारत में चूंकि अभी इंटरनेट बाजार में पर्याप्त संभावनाएं हैं, इसलिए अभी सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर का यह दौर चलेगा, पर कुछ चिंताएं भी हैं। भारत के इन्फ्लुएंसर मार्केटिंग उद्योग को विनियमन की आवश्यकता है, ताकि तथ्यों के गलत प्रस्तुतीकरण से बचा जा सके। जनवरी 2023 में, भारत के उपभोक्ता मामले मंत्रालय ने इसके लिए गाइडलाइंस जारी करते हुए घोषणा की कि ऐसी गाइडलाइंस ग्राहक हितों की रक्षा के लिए जरूरी हैं।

सोशल मीडिया पर विज्ञापन करने वाले सलेब्रिटीज भी इसके दायरे में होंगे। भ्रामक विज्ञापन करने व विनियमन संबंधी दिशा-निर्देशों को नहीं मानने पर इन्फ्लुएंसर्स को 10 लाख रुपये तक का जुर्माना देना होगा। लगातार अवमानना पर 50 लाख रुपये तक जुर्माना देना होगा। साथ ही समर्थन करने वाले को दो से छह महीने तक किसी भी तरह का एंडोर्समेंट करने से रोका जा सकता है। संबंधित प्लेटफॉर्म को ब्लॉक करने की कार्रवाई भी हो सकती है। सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर को आत्म-नियंत्रित करने की आवश्यकता है, जिससे वे नीति निर्माण में भाग ले सकें, ताकि इस उद्योग पर सकारात्मक प्रभाव हो। परंपरागत विज्ञापनों में शामिल खिलाड़ियों और सिने कलाकारों के प्रति लोगों का मोह एकदम से कम तो नहीं हुआ है, पर इसकी शुरुआत जरूर हो गई है। इन दोनों की लड़ाई में कौन जीतेगा, इसका फैसला वक्त को करना है।

हो सकता है मैं आपके विचारों से सहमत न हो पाऊं फिर भी विचार प्रकट करने के आपके अधिकारों की रक्षा करूंगा। –वाल्तेयर

राजस्थान पत्रिका
संस्थापक
कर्पूर चन्द्र कुलिश

बच्चों में कुपोषण की चिंताजनक तस्वीर

पांच साल से छोटे बच्चों को उचित पोषण नहीं मिले तो उनमें कुपोषण जनित दुर्बलता होना स्वाभाविक है। पांच साल तक के बच्चों में खाद्य गरीबी यानी पौष्टिक आहार तक पहुंच न होने की स्थिति को लेकर यूनिसेफ की ताजा रिपोर्ट बताती है कि दुनिया के विकसित कहे जाने वाले देशों में भी बच्चों में कुपोषण की समस्या बनी हुई है। रिपोर्ट में यह तथ्य चौंकाने वाला है कि दुनिया का हर चौथा बच्चा गंभीर कुपोषण का शिकार है। एक तरफ हम विकास की पटरी पर सरपट दौड़ने का दावा करते हैं, दूसरी तरफ उन बच्चों की सेहत की अनदेखी कर रहे हैं जिन्हें आगे चलकर अपने-अपने क्षेत्रों में काम करना है। खाद्य गरीबी का पैमाना शरीर के लिए जरूरी मूलभूत खाद्य पदार्थों जैसे- रोटी, चावल, दाल, फल, दूध आदि के अभाव को परिलक्षित करता है।

जो तस्वीर सामने है उसको देखकर यह कहा जा सकता है कि सीमेंट-कंक्रीट की इमारतों, व तकनीक के क्षेत्र में नित नई ऊंचाइयों के पायदान पर पहुंचना भर ही विकास नहीं होता। हमें उन जीवित संरचनाओं पर भी ध्यान देना होगा जिनके बल पर ही दुनिया जीवन के तमाम क्षेत्रों में बुलंदियों तक पहुंचने की उम्मीद रखती है। पर्याप्त पोषण के अभाव में ऐसे बच्चों का भविष्य आखिर कैसा होगा? या तो ये बच्चे जीवित ही नहीं रह पाएंगे और यदि उन्हें कुछ उम्र मिल भी गई तो यह तय है कि वे ठीक तरह से जीवन जीने की स्थिति में नहीं रहने वाले। पर्याप्त पोषण के बिना आखिर हम कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि हमारी यह भावी पीढ़ी दुनिया को कुछ नया देने में सफल होगी। ऐसे बच्चे तो बोझ ही बन कर रह जाने वाले हैं। दुनिया के तमाम देशों को इस तथ्य को समझना होगा। दुर्भाग्य से खाद्य गरीबी के कारण निशाने पर आ रही बच्चों की इस दुनिया में हमारा देश भी शामिल है। भीषण खाद्य गरीबी भारत में 40 प्रतिशत है। मध्यम खाद्य गरीबी में हम 36 प्रतिशत पर हैं। दोनों में सिर्फ अफगानिस्तान ही है, जो हमसे खराब हालत में है। खाद्य गरीबी को लेकर हमारे देश की इस तस्वीर को बदलने के लिए पिछले सालों में खूब काम हुआ है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता। खाद्य सुरक्षा योजना के तहत परिवारों तक पहुंचाया जाने वाला खाद्यान्न इसी कामकाज का हिस्सा है। फिर भी जो हालात हैं, उसमें हम स्थिति को ज्यादा बेहतर नहीं कह सकते।

यूनिसेफ की यह रिपोर्ट दर्शाती है कि अभी बहुत सा काम किया जाना शेष है। हमारे देश में आंगनबाड़ी केन्द्रों के जरिए बच्चों में कुपोषण दूर करने की दिशा में बरसों से काम हो रहा है। लेकिन इस तंत्र की व्यवस्था में कमी को इसी रूप में समझा जा सकता है कि हर साल दस लाख से ज्यादा बच्चे कुपोषित बच्चों की सूची में जुड़ते जाते हैं। शिशु और मातृ मृत्यु दर में भारत की चिंताजनक तस्वीर की वजह भी यही है। मोटे तौर पर सरकारों को चाहिए कि वे आंगनबाड़ियों की व्यवस्थाओं में भी सुधार लाएं। बच्चों की सेहत का ध्यान रखना पहली प्राथमिकता होनी चाहिए।

सद् कर्म ही कर्म है। निरर्थक कर्म अकर्म या मन्द कर्म है। शास्त्र विरुद्ध-विकर्म दुष्कर्म कहलाते हैं। तीनों ही कर्म विवर्त बल तत्त्व के विस्तार से अनेक रूप धारण कर लेते हैं। ये तीनों ही कर्म विद्या और अविद्या भाव से युक्त होने से भिन्न-भिन्न फल प्रदान करते हैं।

कर्म के विवर्त

गुलाब कोठारी
प्रधान संपादक
पत्रिका समूह
@patrika.com

शरीर ही ब्रह्माण्ड

ज्ञान और कर्म दोनों का समन्वय ही शान्ति का कारण है। कृष्ण का बुद्धियोग वैराग्य है। 'समत्वं योग उच्यते, योग: कर्मसु कौशलम्' ही कृष्ण का मन्तव्य है। समत्व का पूर्ण विकास वैराग्य बुद्धियोग से ही सम्बन्ध रखता है। स्वयं कभी यह अभिमान न करें कि, मैं इनका कर्त्ता हूं।

पंचपर्वा विश्व में सूर्य मध्य में है। सूर्य के ऊपर अमृत (ज्ञान) तथा नीचे मृत्यु (कर्म) तत्त्व प्रधान है। सूर्य में ज्ञान और कर्म दोनों का समन्वय है। पृथ्वी सूर्य का ही उपग्रह है अतः उसमें अमृत भाग का अंश भी अवश्य है। भूपिण्ड का ही उपग्रह चन्द्रमा है जो अत्रिप्राण के सहयोग से उत्पन्न हुआ है। अतः चन्द्रमा भी अमृत-मृत्युमय ही है। सूर्य-चन्द्रमा-पृथ्वी क्रमशः वाक्-अन्न-अन्नाद कहलाते हैं (इन्द्र-सोम-अग्नि)। तीनों अमृत-मृत्युमय हैं। अर्द्धं ह वै प्रजापतेरात्मनो मर्त्यमासीदर्द्धममृतम् अर्थात् प्रजापति का स्वरूप भी आधे भाग से अमृत तथा आधे भाग से मृत्यु कहा गया है। तीनों के कर्म क्रमशः दिव्य-पितर-पार्थिव कहलाते हैं। ये कर्म भी अमृत-मृत्यु रूप दो-दो विभागों में बंटे हैं।

सूर्य देवलोक है-33 प्राणों से युक्त है। चन्द्रमा पितर लोक है-पितर प्राणों का लोक है, पृथ्वी मनुष्य लोक है। मानव में देव-पितर प्राणों का अंश भी रहता है। अतः तीन कर्म धाराओं का समावेश रहता है। व्यक्ति को किसी न किसी कर्म में अवश्य प्रवृत्त रहना पड़ता है। कर्म मार्ग में प्रवृत्त करने वाली प्रकृति (योगमायात्मिका) के पांच पर्व हैं-स्वयंभू-परमेष्ठी-सूर्य-पृथ्वी-चन्द्रमा। पांचों ही पर्व रस और बल के सम्बन्ध से आत्मा-शरीर दो-दो भागों में विभक्त हैं। आत्मा ब्रह्म है, ज्ञान है। शरीर कर्म है। इसी पंचपर्वा विश्व को आधिदेविक कहा है। यही ज्ञानप्रधान दृष्टि से ब्रह्माश्वत्थ है, कर्मप्रधान दृष्टि से कर्माश्वत्थ है। ब्रह्माश्वत्थ अपरिवर्तनीय है, कर्माश्वत्थ सम्यक्-संसरणशील है। यही संसारवृक्ष कहलाता है।

जीव ब्रह्म-कर्म रूप अव्यय का ही अंश है। इसमें भी अंशी के दोनों भाव-ज्ञान और कर्म हैं। आधिदेविक पुरुष के ब्रह्म-कर्म धातु सम भाव में तथा वैकृतिक आधिभौतिक पुरुष के धातु विषम भाव में रहते हैं। रोदसी त्रिलोकी (भू, भुवः, स्वः) के पार्थिव जीव सर्ग में सूर्य-चन्द्रमा-पृथ्वी के ब्रह्म-कर्म युग्मों की प्रधानता रहती है। इसमें भी सौर ब्रह्म-कर्म मात्रा पूर्ण विकसित होती है तथा सूर्य समभावों के कारण समत्व योग (बुद्धियोग) की प्रतिष्ठा बनता है। चन्द्रमा में ज्ञान मात्रा अर्द्ध विकसित है, कर्म मात्रा पूर्ण विकसित है। पृथ्वी में ज्ञान की अपेक्षा कर्म बलवान है। सूर्य में ज्ञानशक्ति, चन्द्रमा में क्रियाशक्ति तथा पृथ्वी में अर्थशक्ति विकसित है।

पार्थिव प्राणयुक्त होने से मानव का कर्म अर्थ प्रधान रहता है। तमोगुण युक्त अर्थ की आसक्ति ही तामस गति का कारण बनती है। इसके प्रभाव से प्रज्ञाभाग तामसी हो जाता है। अर्थ-काम की प्रधानता के कारण अर्थ संचय तथा इन्द्रिय कामनाओं की तृप्ति ही लक्ष्य होता है। देव-पितर आदि से ऋण लेकर उत्पन्न मानव क्या करता है? पशु की तरह पेट पालना कोई कर्म नहीं। तब तो अर्थजीवी ही अर्थी पर आरुढ़ है। यही स्वार्थी भाव है। धरती का भार है।

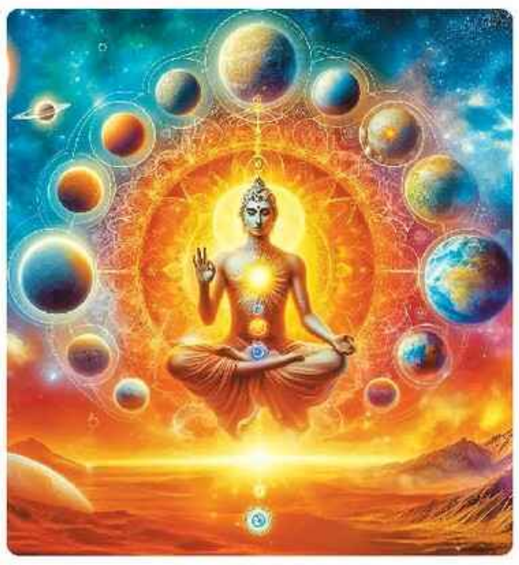

अपने स्वार्थ के साथ-साथ दूसरों की भलाई सोचने में चन्द्रमा के पितृ कर्म का विकास ही प्रेरक है। परमार्थ कर्म श्रद्धासूत्र द्वारा पितृ प्राण की प्रेरणा का फल कहा जाता है। इष्ट-आपूर्त-दत्त तीन प्रकार के कर्म होते हैं। स्वजनों के हित के लिए किए कर्म इष्ट हैं। अन्य दरिद्र-अनाथ-असमर्थ लोगों की सहायता-रक्षा करना दत्त कर्म कहा जाता है। समाज के लाभार्थ मन्दिर-तालाब-धर्मशाला आदि बनवाना आपूर्त्त कर्म कहलाता है। सूर्य से प्रकाशित चान्द्र पितृ प्राण चित् प्रधान है। चित् प्राण युक्त पितृ कर्म निवृत्ति प्रधान होकर बन्धन मुक्ति करते हैं। जिस भाग में सूर्य का प्रकाश नहीं रहता वह वृत्र प्रधान भाग निम्न कर्म का क्षेत्र कहा जाता है।

चन्द्रमा के समान पृथ्वी का भी आधा भाग सूर्य द्वारा प्रकाशित रहता है, आधा छायाभाग होता है। प्रकाशित भाग अदिति तथा छाया भाग दिति कहलाता है। प्रकाशित भाग में 33 देवता रहते हैं, जो अग्निप्रधान हैं। दिति भाग में 99 असुर हैं जो सोमप्रधान हैं। अग्नि प्राण अमृत प्राण हैं अतः लौकिक कर्म के बन्धन से मुक्त करने में सहायक हैं या बन्धन ही नहीं करते। दिति प्राण मृत्यु प्राण हैं तथा प्रवृत्ति कर्म के कारक हैं। अमृत कर्म निवृत्ति प्रधान तथा मृत्यु कर्म प्रवृत्ति प्रधान होते हैं। इसलिए यदि कर्म के साथ अमृत को आधार बनाते हुए प्रवृत्त कर्मों को निवृत्ति प्रधान बना दिया जाए, तो ये ही कर्म–असंग या अकर्म बन जाते हैं। इसी को कर्मयोग कहते हैं। इसीलिए कृष्ण गीता में कह रहे हैं कि कर्म की गति गहन है। कर्म-अकर्म और विकर्म तीनों ही जानने योग्य हैं-

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः।
अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः।। (गीता 4.17)

सद् कर्म ही कर्म है। निरर्थक कर्म अकर्म या मन्द कर्म है। शास्त्र विरुद्ध-विकर्म दुष्कर्म कहलाते हैं। तीनों ही कर्म विवर्त बल तत्त्व के विस्तार से अनेक रूप धारण कर लेते हैं। ये तीनों ही कर्म विद्या और अविद्या भाव से युक्त होने से भिन्न-भिन्न फल प्रदान करते हैं। कर्म-अकर्म और विकर्म में से कर्म ही निवृत्तिप्रधान है जबकि अकर्म और विकर्म प्रवृत्तिप्रधान कर्म है।

प्रवृत्त कर्म संस्कार को जन्म देते हैं। इसी से वासना संस्कार का उदय होता है। विद्याजनित प्रवृत्ति कर्म करने वाला जीव दिव्य संस्कार बन्धन से युक्त रहता है और देवयान मार्ग का अधिकारी बनता है। विद्या निरपेक्ष प्रवृत्ति कर्म में पितृ प्राण प्रबल रहता है। आत्मा पितृयान मार्ग पकड़ता है। निवृत्ति-बुद्धि से कर्मजनित संस्कार का जीव के साथ ग्रन्थि बन्धन नहीं हो पाता। अतः विद्यासापेक्ष, विद्या निरपेक्ष तथा लौकिक तीनों निवृत्ति कर्मों से संस्कार बन्धन नहीं होता। संचित संस्कार बन्धन कट जाते हैं। प्रारब्ध भोगने पर आत्मा देवयान गति पाता है। लौकिक-निरर्थक, विरुद्ध कर्मों, स्वार्थ कर्मों से जीव अज्ञान के अंधकार में घिरा रहता है। ऐसा आत्मा पितृयान (यम मार्ग) से नरक की ओर जाता है।

ज्ञान और कर्म दोनों का समन्वय ही शान्ति का कारण है। कृष्ण का बुद्धियोग वैराग्य है। 'समत्वं योग उच्यते, योगः कर्मसु कौशलम्' ही कृष्ण का मन्तव्य है। समत्व का पूर्ण विकास वैराग्य बुद्धियोग से ही सम्बन्ध रखता है। स्वयं कभी यह अभिमान न करें कि, मैं इनका कर्त्ता हूं। फल एवं कामासक्ति का त्याग करते हुए सभी कर्म करने चाहिए। बुद्धियोग में धर्म की प्रधानता है। जीवों में बुद्धि के चार सात्त्विक रूप धर्म, ज्ञान, वैराग्य और ऐश्वर्य हैं। किन्तु वे तामस रूपों अर्थात् अधर्म, अज्ञान, अवैराग्य, अनैश्वर्य से दबे हुए रहते हैं। ईश्वर में केवल चारों सात्विक रूप ही हैं। तामस रूपों का वहाँ स्पर्श भी नहीं होता। अपनी मुक्ति चाहने वाले जीव का कर्तव्य है कि तामस रूपों को दबाकर सात्विक रूपों के साथ योग करे। बुद्धि का सात्विक रूप वैराग्य है। उस वैराग्य के द्वारा ईश्वर से योग करना चाहिए। फलाशा से कर्म करना बहुत छोटी श्रेणी का है। क्योंकि फलाशा रखने वाले तो सब देवताओं के सामने कृपण अर्थात् दीन रहा करते हैं। वैराग्य बुद्धि प्राप्त कर लेने वाले की दृष्टि में कोई छोटा-बड़ा रहता ही नहीं। जैसा कि कहा गया है-

तृष्णाञ्चेह परित्यज्य को दरिद्रः कः ईश्वरः।
तस्याश्चेत् प्रसरोदत्तो दास्यं तु शिरसि स्थितम्।।

विद्या भाव के साथ कर्म करते हुए बुद्धियोग से आवरण हटाने के लिए विद्या द्वारा आत्मा का प्रसाद गुण प्रकट हो जाता है। जिससे धर्म-वैराग्य, ऐश्वर्य, ज्ञान आदि बुद्धि के भाव भी प्रसाद गुण वाले हो जाते हैं। तब आत्म शक्तियों के विकसित होते ही साधक कृष्ण या ईश्वर बन जाता है।

क्यूआर कोड को स्कैन कर आप आलेख सुन भी सकते हैं।

आर्ट एंड कल्चर

बदलते गांवों की तस्वीर 'पंचायत 3'

'पंचायत' के पिछले सीजन की तरह इस सीजन में भी गांव को हम देखते भर नहीं, महसूस करते हैं। 'पंचायत' की शुरुआत 2020 में हुई थी और अब यह तीसरा सीजन 2024 में आया। इस अंतराल के बावजूद तीनों सीजन एक दूसरे से इस तरह गुंथे हुए हैं कि आपको पहले वाले सीजन एक बार फिर से देख लेने की इच्छा होने लगेगी। पिछले सीजन का अंत गांव के उपप्रधान प्रह्लाद चा के फौजी बेटे के बलिदान से हुई थी। इस सीजन की शुरुआत से ही शहीद की प्रतिमा और स्मृति में बना पुस्तकालय बार-बार उस शहादत की याद दिलाता है, जिस दुख से उबरना प्रह्लाद चा जैसे जुझारू इंसान के लिए भी कठिन हो रहा है। जाहिर है तमाम हंसी खुशी के साथ एक उदासी पूरी सीरीज पर तारी दिखती है। जीवंत सिचुएशनल कामेडी से पहचान बनाने वाले निर्देशक दीपक कुमार मिश्र के लिए सीरीज में उदासी का अहसास कराना आसान नहीं रहा होगा।

विनोद अनुपम
राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्राप्त कला समीक्षक
@patrika.com

'पंचायत' मानव मन की अच्छाइयों की कथा रही है। इस बार भी यह प्रह्लाद चा की कथा है, जो बेटे के बलिदान पर मिले 50 लाख रुपए की अनुकम्पा राशि को हथेली पर लिए घूम रहे हैं कि कोई सही जगह लगा दे इसे। यह उस प्रधान की भी कथा है,जो अपने अधबने घर की दीवारों पर खुद पानी डाल रहा है, जिसे कार भी भाड़े पर बुलानी पड़ती है। यह उस समाज की कथा है,जहां लौकी और कटहल एक दूसरे के घर से मांग लिए जाते हैं, जहां प्रह्लाद के खाने-पीने का ध्यान रखना हर किसी की जवाबदेही होती है। कोई समाज ठहरा हुआ नहीं रहता, गांव भी समय के साथ बदल रहे हैं। सरकारी योजनाएं और सरकारी पैसा किस तरह ग्रामीणों को भी लोभी और भ्रष्ट बनाने की कोशिश कर कर रहा है, 'पंचायत 3' इस बार इसे भी रेखांकित करने की कोशिश करती है। दादी के बदले व्यवहार से भी इसका पता चलता है। शहीद की स्मृति में गांव में पंचायत भवन के ठीक सामने भव्य पुस्तकालय भवन दिखता है,लेकिन पंचायत भवन में जहां सत्ता की गहमागहमी दिखती है, वहीं लगता है कि पुस्तकालय की सीढियां भी कोई नहीं चढ़ता। यह भी हमारे गांवों में आया बदलाव ही है। शायद पंचायत इसीलिए दर्शकों से कनेक्ट करती है, जितना यह बोलती है, उससे कहीं अधिक बताती है।

अमरीका

ट्रंप से जुड़ा 'अपराधी' शब्द, चुनाव में होगा नकारात्मक असर

अमरीका के मैनहट्टन के जिला अटॉर्नी एल्विन ब्रैग और उनकी टीम ने पूर्व राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप को 34 मामलों में दोषी करार दिया है। इससे यह साबित हुआ कि कोई भी शख्स कानून से ऊपर नहीं है। फैसले से साफ है कि आरोप स्पष्ट थे, गढ़े हुए नहीं जैसाकि आलोचक दावा करते हैं। जिला अटॉर्नी ब्रैग ने गवाहों के बयानों के आधार पर उन्हें दोषी पाया और वर्ष 2016 के राष्ट्रपति चुनाव को प्रभावित करने की साजिश में हिस्सा लेने के दस्तावेजों ने उन्हें दोषी करार देने की पुष्टि की। विडंबना यह है कि दोषी ठहराए जाने के बाद भी कोई रिपब्लिकन यह सुझाव देने के लिए आगे नहीं आया कि ट्रंप को पार्टी का राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार नहीं होना चाहिए।

जेनिफर रुबिन
पत्रकार और स्तंभकार
द वाशिंगटन पोस्ट से विशेष अनुबंध के तहत

कानूनी विशेषज्ञों का एक समुदाय जो इस बात पर जोर दे रहा था कि ट्रंप पर मुकदमा चलाना संवैधानिक रूप से अनुचित और रणनीतिक रूप से नासमझी है, अब शर्मिंदगी से भरे और कठिन स्थिति में दिखाई दे रहा है। कोई भी पूर्व राष्ट्रपतियों के लिए अभियोजन के अलग मानक की वकालत करते हुए कानून के शासन की रक्षा नहीं कर सकता है। अपने विरोधियों को नजरअंदाज करते हुए जिला अटॉर्नी ब्रैग डटे रहे और उन्होंने अपनी शपथ बरकरार रखी तथा चुनाव से पहले ट्रंप के खिलाफ फैसला सुनाया।

अब ट्रंप के नाम के साथ अपराधी जोड़ा जाएगा। उनके चुनाव अभियान के दौरान यह मुद्दा महत्त्वपूर्ण रहेगा। ट्रंप का व्यक्तित्व इस दिखावे के इर्द-गिर्द है कि वह एक ताकतवर व्यक्ति हैं, हमलों से अप्रभावित हैं और अपने समर्थकों की रक्षा करने में पूरी तरह सक्षम हैं। ट्रंप तब इस बात पर जोर दे सकते हैं कि मतदाताओं की इच्छा और सत्ता संभालने का उनका अधिकार किसी भी सजा से अधिक महत्त्वपूर्ण है। अगर अमरीकी मतदाता एक अपराधी को चुनते हैं, तो लोकतंत्र रक्षकों को भयभीत होना चाहिए।

बतंगड़

मैंने तुझे चुन लिया तू भी मेरी सुन...

हरीश पाराशर

'अपने मुंह मियां मिट्ठू' मत बनो। 'वोटों की लड़ाई' का ऐलान हुआ तब से दोनों पक्षों को ही खूब समझा रहे थे। लेकिन दोनों की ही नजर कुर्सी पर 'अर्जुन की आंख' की माफिक थी। इसलिए किसी ने कोई 'कसर' बाकी नहीं रखी। हां, नतीजे आए तो दोनों के लिए ही 'कसक' बाकी रह गई। सोचा था सब 'रामभरोसे' हो जाएगा। लेकिन 'रामजी की लीला' भी तो निराली है। जो दिया बस खुश करने लायक ही। वे भी खुश और ये भी खुश। उनकी खुशी इसलिए कि 'सिंहासन' बरकरार है, और इनकी इसलिए कि पिछली बार चरमराई कुर्सी के 'पाए' इस बार ज्यादा मजबूत हो गए। पहले ही कहा था ना, 'हाथ पर हाथ' धर बैठने से काम नहीं चलेगा। मेहनत नहीं करने पर 'हाथ मलते रह जाना' वाली कहावत तो सुनी ही है ना। हाड़-तोड़ मेहनत करने पर ही सफलता हाथ लगती है। होना तो यह था कि मेहनत में कोई कोर कसर बाकी नहीं रहती पर हुआ उल्टा। एक-दूसरे को 'मुंह तोड़ जवाब' देने में किसी ने कोई कमी नहीं रखी। ये तो कुछ नए 'किले' बन गए, इसलिए दोनों की ही 'लाज' रह गई। जिन्हें भी जो किले मिले वे किस्मत से ही। यूं तो 'हवाई किले' खूब बने थे पर किसी ने 'किलेबंदी' करने पर ध्यान ही नहीं दिया। वैसे शोर तो इस बात का भी हो रहा था कि नतीजे आते ही ईवीएम पर ठीकरा फोड़ा जाएगा, लेकिन ठीकरे अब काम ही नहीं आए। ईवीएम के आगे तो अगरबत्ती लगाकर पूजा करने का मन करता है। अब शायद ही कोई वोट उगलने वाली इस मशीन को भरा-बुला कहने की हिम्मत जुटाए। खैर अबकी बार 'आर-पार' भले ही नहीं हुआ पर 'तीसरी बार' जरूर हो गया। सारी महिमा 'देवतुल्यों' की है। ये जब देते हैं तो छप्पर फाड़ कर देते हैं और जब लेते हैं तो मुंह का निवाला तक छिन जाता है। देवतुल्यों ने फैसला सुना दिया। अब जिनको चुना है बारी उनकी है। वे तो यही कह रहे हैं- 'मैंने तुझे चुन लिया, अब तू भी मेरी सुन।'

शोर था कि नतीजे आते ही ईवीएम पर ठीकरा फोड़ा जाएगा, लेकिन अब तो ईवीएम के आगे अगरबत्ती लगाकर पूजा करने का मन करता है।

harish.parashar@epatrika.com

लोकसभा चुनाव परिणाम : महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यह नई पीढ़ी का चुनाव था

मतदाता विकल्प खड़ा करने में सक्षम, राजनीतिक दलों का तोड़ दिया भ्रम

हाल ही में संपन्न लोकसभा चुनाव के परिणाम का निहितार्थ सिर्फ इतना ही नहीं है कि भाजपा को अपने दम पर संसद में स्पष्ट बहुमत नहीं मिला और दस वर्ष बाद देश में फिर गठबंधन की सरकार का दौर लौट आया। या कि विपक्षी दलों के 'इंडिया' गठबंधन ने बेहतर प्रदर्शन करते हुए वापसी की है और राहुल गांधी के चुनावी राजनीति के सफर में पहली बार सफलता का अध्याय जुड़ा है। बहुत सारे सबक और जिज्ञासाएं इस चुनाव परिणाम में समाई हुई हैं, जिनकी परतें खोलने की कोशिश की जा रही है।

यह चुनाव परिणाम उस अवधारणा को खारिज करता है जिसमें यह मान लिया गया था कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सामने विपक्ष का प्रधानमंत्री का कोई चेहरा नहीं होना उसकी सबसे बड़ी कमजोरी है। मतदाताओं ने किसी चेहरे के बिना भी विपक्षी दलों के गठबंधन को इतनी सफलता दी कि वह सरकार बनाने की संभावना के करीब आ गया। चुनावी राजनीति में विकल्पहीनता के नाम पर कोई दल लंबे समय तक सत्ता में नहीं बना रह सकता। विकल्प मतदाता स्वयं खड़े कर देता है।

चुनाव परिणाम यह भी बताता है कि कोई दल या राजनेता कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, लोकतंत्र में वह अपराजेय नहीं होता। एक बात और स्पष्ट होती है कि धर्म या संप्रदाय आधारित मुद्दे चुनाव में सफलता की गारंटी नहीं होते। राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा तथा मुख्यमंत्री योगी के काशी, मथुरा के वादों के बाद भी भाजपा को उत्तर प्रदेश में भारी नुकसान हुआ। इसके विपरीत सामाजिक समीकरण को साधते हुए समाजवादी पार्टी ने अपने राजनीतिक जीवन में सबसे अधिक सफलता हासिल की। पिछले लोकसभा चुनाव में जनेऊ पहनकर मंदिरों की परिक्रमा करने वाली कांग्रेस को कोई लाभ नहीं हुआ था। जबकि इस चुनाव में संविधान, आर्थिक असमानता व सामाजिक बराबरी में मुद्दों के साथ उसकी इस चुनाव में बेहतरीन वापसी हुई। दलबदल आज की राजनीति का 'न्यू नार्मल' हो चला है लेकिन आम मतदाता इसे किस रूप में लेता है, इसे महाराष्ट्र के चुनाव परिणाम में देखा जा सकता है। हरियाणा के आयाराम, गयाराम के बाद कुछ साल पहले महाराष्ट्र में हुआ दलबदल काफी चर्चित हुआ। शरद पवार और उद्धव ठाकरे की पार्टी का नाम व चुनाव चिह्न उनसे छिन गया लेकिन मतदाताओं ने उन्हें भारी चुनावी बढ़त देकर मजबूत बना दिया है। भाजपा को भी नुकसान झेलना पड़ा।

गिरिजाशंकर
वरिष्ठ राजनीतिक विश्लेषक
@patrika.com

मतदाता केंद्र में बहुमत वाली सरकार तो चाहता था, लेकिन उतना ही बहुमत जिससे सरकार ठीक-ठाक चल सके, एकतरफा बहुमत वाली सरकार नहीं। देश के अलग-अलग राज्यों के भिन्न-भिन्न चुनाव परिणामों के बाद भी देश में बहुमत वाली सरकार भी बन रही है और एक मजबूत विपक्ष भी उभर आया है।

हर सरकार के खिलाफ मतदाताओं में सत्ता विरोधी भावना होती है, यह सही नहीं है। लेकिन, अधिक समय तक सत्ता में रहने वाले दल के खिलाफ सत्ता विरोधी लहर जरूर होती है। बशर्ते उस लहर का लाभ लेने की रणनीति के साथ विपक्ष चुनाव मैदान में उतरे। उड़ीसा विधानसभा चुनाव में भाजपा की तथा आंध्र विधानसभा चुनाव में तेलुगु देशम पार्टी की सफलता इस तथ्य को रेखांकित करती है। विपक्ष की खासकर कांग्रेस की ऐसी तैयारी के अभाव में आधा दर्जन से अधिक राज्यों में भाजपा ने लोकसभा चुनाव में लगातार तीसरी बार क्लीन स्वीप किया। 10 साल तक पूर्ण बहुमत की भाजपा सरकार के चलते क्षेत्रीय दलों की प्रासंगिकता कटघरे में आ रही थी। इस चुनाव परिणाम ने क्षेत्रीय दलों को नया जीवन दिया है और उनकी अहमियत पुरजोर तरीके से स्थापित हुई है। क्षेत्रीय दलों के साथ गठबंधन के चलते ही कांग्रेस को सीटों का लाभ हुआ तो भाजपा को बहुमत तक पहुंचने से रोकने में भी क्षेत्रीय दलों की ही मुख्य भूमिका रही है। क्षेत्रीय दलों के चलते ही एनडीए को बहुमत मिल सका है और केन्द्र सरकार का स्थायित्व क्षेत्रीय दलों के समर्थन पर ही निर्भर रहेगा।

इस चुनाव की सबसे बड़ी पहचान यह उभरी कि यह एक तरह से नई पीढ़ी का चुनाव था। इस चुनाव में ऐसे कई उदाहरण देखे जा सकते हैं, जहां नई पीढ़ी के नेतृत्व ने अपने-अपने दलों को अच्छी खासी सफलता दिलाने में अपना कमाल दिखाया है। उत्तरप्रदेश में मायावती ने नई पीढ़ी को आगे बढ़ाने का अपना फैसला बदल दिया और 10 सीटों वाली बसपा शून्य पर आ गई।

इस लोकसभा का चुनाव परिणाम राजनीतिक दलों के लिए अलग-अलग मायने रखता हो लेकिन आम मतदाताओं को बेहद पसंद आने वाला चुनाव परिणाम रहा। आम मतदाता केंद्र में बहुमत वाली सरकार तो चाहता था, लेकिन उतना ही बहुमत जिससे सरकार ठीक-ठाक चल सके, एकतरफा बहुमत वाली सरकार नहीं। देश के अलग-अलग राज्यों के भिन्न-भिन्न चुनाव परिणामों के बाद भी देश में बहुमत वाली सरकार भी बन रही है और एक मजबूत विपक्ष भी उभर आया है। एकतरफा जीत वाली सरकार का न होना लोकतंत्र को मजबूत करता है और देश का आम मतदाता इसी लोकतंत्र का पक्षधर रहा है।

आपकी बात

सरकार गंभीर नहीं

गरीबी उन्मूलन के प्रति सरकार गंभीर नहीं है। देश में रोजगार के अवसर कम हैं। जिनके पास संसाधन हैं, वे और बढ़ाने का प्रयास करते हैं। इसलिए वंचित वर्ग के अवसर सीमित हो जाते हैं। कम आय वालों की आय बढ़ाने का प्रयास किया जाना चाहिए। उन्हें स्वावलम्बी बनने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

-आलोक वालिम्बे, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

सरकारी सिस्टम में धांधली

सरकारी तंत्र में धांधली की वजह से निम्न वर्ग के लोगों को गरीबी उन्मूलन की योजनाओं का फायदा नहीं मिल पाता। सरकारी सिस्टम को दुरुस्त करने की जरूरत है, ताकि जरूरतमंदों को योजनाओं का लाभ मिल सके और वे गरीबी के दलदल से बाहर निकल सकें। इससे देश के विकास में भी मदद मिलेगी।

-प्रसन्न शुक्ला, कोटा

आज का सवाल

क्या अग्निवीर योजना बंद होनी चाहिए?

कल का सवाल था, गरीबी उन्मूलन के प्रयास सफल क्यों नहीं हो पा रहे?

ईमेल करें
edit@epatrika.com

आवश्यक है जनसंख्या नियंत्रण

गरीबी उन्मूलन की समस्या को जड़ से मिटाने के मार्ग में सबसे बड़ीबांधा जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ घुसपैठ है। बुनियादी सुविधाओं की कमी है। ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार की कमी और नशे की प्रवृत्ति बढ़ने के कारण गरीबी उन्मूलन की योजनाएं सफल नहीं हो पातीं। सरकार को जनसंख्या नियंत्रण पर ध्यान देना चाहिए।

-प्रहलाद यादव, महू, मध्यप्रदेश

https://t.me/AllNewsPaperPaid

समाज की खुशहाली सुरक्षित रखने का एक ही उपाय है कि लोगों को अपने मन-मस्तिष्क का स्वतंत्रतापूर्वक उपयोग करने दिया जाए।

- हेरोल्ड लास्की

तीसरी बार

तमाम कयासों पर पानी फेरते हुए राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के सांसदों ने सर्वसम्मति से नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री चुन लिया। यह भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में दूसरी बार होगा, जब किसी नेता को लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलाई जाएगी। निस्संदेह यह प्रधानमंत्री मोदी के व्यक्तित्व का प्रभाव और उनके कामकाज के तरीके पर भरोसे का ही नतीजा है। इस बार बेशक भाजपा को अकेले दम पर पूर्ण बहुमत नहीं मिल पाया, मगर राजग को बहुमत से कुछ अधिक सीटें मिली हैं, इसलिए गठबंधन की सरकार बनने में कोई अड़चन नहीं थी। यह गठबंधन चुनाव पूर्व का है, इसलिए इसके सभी घटक दल पहले से ऐसी स्थिति में समर्थन देने को प्रतिबद्ध थे। मगर चूंकि चंद्रबाबू नायडू और नीतीश कुमार के साथ गठबंधन के पहले के अनुभवों को देखते हुए कयासों को बल मिला था कि वे सरकार बनाते समय अपनी कड़ी शर्तें रख सकते हैं और उनके पूरा न होने पर छिटक भी सकते हैं। मगर अच्छी बात है कि दोनों नेताओं ने अपनी उस पुरानी छवि को इस अवसर पर दुरुस्त करके दिखाया। हालांकि अब भी विपक्षी गठबंधन को लगता है कि गठबंधन की यह सरकार लंबे समय तक चल नहीं पाएगी, मगर फिलहाल तो इसे एक खामखयाली ही माना जाना चाहिए।

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि तीसरी बार जिम्मेदारी मिलने के बाद प्रधानमंत्री के कामकाज के तरीके में कुछ बदलाव देखा जा सकेगा। केवल इसलिए नहीं कि उन पर लगातार गठबंधन का दबाव बना रहेगा, बल्कि इसलिए भी कि इस लोकसभा का चुनाव भाजपा उनके नाम पर लड़ी थी। प्रधानमंत्री ने खुद अपने नाम से बहुत सारे कामों की गारंटी दी है। उन गारंटियों को पूरा करने का दायित्व उन पर ही है। उन्हें पूरा करने के लिए नए ढंग से रणनीति बनानी होगी। उसमें स्वाभाविक ही सहयोगी दलों को साथ लेकर चलने की जरूरत पड़ेगी। घटक दलों ने सत्ता की बागडोर उनके हाथ में सौंपी है, तो जाहिर है कि उनकी मांगें मान ली गई हैं। विभागों आदि के बंटवारे पर सहमति बन चुकी है। इसलिए जो विभाग भाजपा से इतर दलों को मिलेंगे, वे प्रधानमंत्री की नीतियों और योजनाओं को आगे बढ़ाने में सहयोग करेंगे। कोई भी सरकार तकरार से चल नहीं सकती और न उससे किसी दल को लाभ मिलता है। इसलिए घटक दलों को यह बात अच्छी तरह पता है कि सरकार की उपलब्धियों पर ही उनकी भी सफलता और विफलता निर्भर करती है।

यह जरूर है कि पिछली दो सरकारों के समय जिस तरह प्रधानमंत्री और उनके मंत्री फैसले करते, नीतियों का निर्धारण करते रहे हैं, अनेक मौकों पर विधेयकों को बिना उचित बहस के पारित करा लिया गया, अब वैसा संभव नहीं होगा। इसलिए कि सदन में एक मजबूत विपक्ष भी मौजूद रहेगा और उसकी बातों की अनदेखी करना संभव नहीं होगा। इस लिहाज से भी प्रधानमंत्री के पास एक अच्छा अवसर होगा कि वे लोकतांत्रिक ढंग से मुद्दों पर निर्णय कर सकेंगे। ऐसे निर्णयों में स्थायीत्व होगा और किसी प्रकार के विवाद की गुंजाइश कम होगी। जाहिर है, इससे लोगों तक अधिक व्यावहारिक नीतियां और योजनाएं पहुंच सकेंगी। अभी तक कुछ फैसलों पर इसीलिए अंगुलियां उठती रही हैं कि वे एकतरफा और बिना उचित विचार-विमर्श के किए गए थे। उनमें से कुछ फैसलों पर घटक दलों ने सरकार बनने से पहले ही पुनर्विचार की जरूरत भी रेखांकित कर दी है।

स्थिर मुद्रा

भारतीय रिजर्व बैंक ने अपनी द्विमासिक मौद्रिक समीक्षा में एक बार फिर बैंक दरों के साथ कोई छेड़छाड़ करना उचित नहीं समझा। रेपो दर यथावत साढ़े छह फीसद पर बनी रहेगी। आरबीआइ गवर्नर का कहना है कि उनकी प्राथमिकता खाद्य मुद्रास्फीति को संतुलित करना और चार फीसद तक लाना है। अभी खाद्य मुद्रास्फीति पांच फीसद के आसपास बनी हुई है। इसमें कभी अचानक वृद्धि देखी जाती है। हर समय इसके रुख में अनिश्चितता बनी हुई है। महंगाई पर काबू न पाए जा सकने की वजह से सामान्य लोगों के जीवन पर बहुत बुरा असर पड़ रहा है। हालांकि कुछ औद्योगिक समूहों ने मांग उठानी शुरू कर दी है कि रेपो दरों में कम से कम पच्चीस आधार अंक की कटौती करने का समय आ गया है। मगर आरबीआइ इस दिशा में कोई जोखिम मोल नहीं लेना चाहता। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि ऊंची रेपो दर की वजह से कुछ हद तक महंगाई पर लगाम लगी है, मगर यह कब तक टिकाऊ उपाय साबित होगा, कहना मुश्किल है।

दरअसल, रेपो दर में बढ़ोतरी का असर बैंकों से लिए गए कर्ज की किश्तों पर पड़ता है। बहुत सारे लोगों को इसकी वजह से अपने घर, वाहन, कारोबार आदि के मद में लिए गए कर्ज की ऊंची किश्तें चुकानी पड़ रही हैं, जबकि कोरोनाकाल के बाद से बहुत सारे लोगों की आमदनी घट गई है। औद्योगिक समूहों को कर्ज पर ब्याज अधिक चुकाने के चलते अपने उत्पाद की कीमतें ऊंची रखनी पड़ती हैं, जिससे अंततः उपभोक्ता पर बोझ बढ़ता है। इसलिए एक तरफ जहां महंगाई को संतुलित करने में कुछ हद तक मदद मिल रही है, वहीं दूसरी तरफ महंगाई बढ़ भी जाती है। रिजर्व बैंक ने इस वित्तवर्ष में विकास दर सात फीसद से ऊपर रहने की संभावना जताई है। मगर विकास दर और महंगाई के बीच कोई सीधा संबंध नजर नहीं आ पा रहा। विकास दर ऊंची रहने के बावजूद सामान्य लोगों के जीवन में बेहतरी के संकेत नहीं दिखाई दे रहे। सबसे हैरानी की बात है कि रोजमर्रा खपत की जिन खाद्य वस्तुओं का उत्पादन भरपूर होता है, उनकी खुदरा कीमतें भी बाजार में अधिक देखी जाती हैं।

गेहूं आयात से आफत में किसान

हाल के वर्षों में भारत के गेहूं उत्पादन में उल्लेखनीय गिरावट देखी गई है। 2021-22 में 11.05 करोड़ टन की अधिकतम फसल हुई थी, लेकिन 2022 और 2023 में भीषण गर्मी ने पैदावार को काफी प्रभावित किया।

केसी त्यागी
बिशन नेहवाल

खाद्यान्न उत्पादन में कीर्तिमान दर्ज करने के बावजूद सरकार ने गेहूं को शुल्क मुक्त आयात करने का फैसला किया है। छह साल बाद सरकार घटते भंडार और बढ़ती घरेलू कीमतों का सामना करने के लिए गेहूं का फिर से आयात शुरू करने को तैयार है। लगातार तीन वर्षों तक प्रतिकूल मौसम के कारण औसत से कम उत्पादन होने के चलते लिए गए इस निर्णय ने राष्ट्रीय बहस को जन्म दे दिया है। कुछ लोग इसे खाद्य सुरक्षा के लिए आवश्यक कदम मानते हैं। दूसरी ओर किसान संगठन और अन्य किसान हितधारक इसे आटा मिल मालिकों और व्यापारियों के दवाब में लिया गया निर्णय बता रहे हैं। इसके घरेलू किसानों पर गंभीर परिणाम हो सकते हैं।

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा 2021-22 के लिए जारी आंकड़ों के मुताबिक देश में 31 करोड़ 60 लाख टन खाद्यान्न उत्पादन हुआ है। खाद्यान्न उत्पादन लगातार नया कीर्तिमान बना रहा है। आजादी के बाद 1950-51 में देश में खाद्यान्न का कुल उत्पादन 5.1 करोड़ टन था, जो बढ़ते-बढ़ते 2012-13 में 25.5 करोड़ टन हो गया। मतलब यह कि खाद्यान्न उत्पादन के मामले में भी बीते दस वर्षों में करीब 5.6 करोड़ टन का इजाफा हुआ है। 1960 के दशक में हरित क्रांति के बाद गेहूं और चावल के उत्पादन में जबर्दस्त वृद्धि हुई और 2015-16 तक, देश के कुल खाद्यान्न उत्पादन में गेहूं और चावल की हिस्सेदारी 78 फीसद हो गई। मगर हाल के वर्षों में भारत के गेहूं उत्पादन में उल्लेखनीय गिरावट देखी गई है। 2021-22 में 11.05 करोड़ टन की अधिकतम फसल हुई थी, लेकिन 2022 और 2023 में भीषण गर्मी ने पैदावार को काफी प्रभावित किया। इसका असर इतना गंभीर था कि सरकार को घरेलू जरूरतों को प्राथमिकता देते हुए मई 2022 में गेहूं के निर्यात पर प्रतिबंध लगाने के लिए मजबूर होना पड़ा। इस वर्ष 11.2 करोड़ टन की शुरुआती भविष्यवाणियों के बावजूद अब 6.25 फीसद कम होने की उम्मीद है, जिससे पहले से ही कम हो रहे सरकारी भंडार पर और दबाव पड़ने की संभावना है।

उत्पादन में गिरावट और आपूर्ति में कमी के कारण घरेलू गेहूं की कीमतों में थोड़ी-बहुत बढ़त हुई है, जो सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम समर्थन मूल्य 2,275 रुपए प्रति कुंतल के आसपास है। इस वृद्धि का थोड़ा-बहुत लाभ उन किसानों को मिलता दिख रहा था, जो मुख्य फसल के रूप में गेहूं पर अधिक निर्भर हैं। बढ़ती कीमतों को नियंत्रित करने और भंडार को फिर से भरने के लिए, सरकार गेहूं पर 40 फीसद आयात शुल्क हटाने पर विचार कर रही है, जिससे निजी व्यापारियों के लिए शायद रूस जैसे प्रमुख निर्यातकों से मामूली मात्रा में आयात करने का रास्ता खुल जाएगा। सरकार का यह कदम पहले से ही खराब मौसम और बढ़ती लागत की मार से जूझ रहे किसानों के लिए आत्मघाती प्रतीत होता है। बीज, उर्वरक, बिजली और पानी जैसे कृषि आदानों पर सबसिडी देने के बावजूद, अधिकांश किसान लगातार संकट में हैं, और आत्महत्या या आंदोलन कर रहे हैं।

हालांकि गेहूं आयात के समर्थकों का तर्क है कि खाद्य सुरक्षा को प्राथमिकता देने के लिए यह एक आवश्यक कदम है। 140 करोड़ से अधिक की आबादी वाला भारत गेहूं की उपलब्धता में किसी भी तरह की कमी को बर्दाश्त नहीं कर सकता। सरकारी भंडार को फिर से भरने से 'अतिरिक्त भंडारण' सुनिश्चित होता है, जिसका उपयोग प्राकृतिक आपदाओं या वैश्विक गेहूं बाजार में व्यवधान जैसी अप्रत्याशित परिस्थितियों के मामले में किया जा सकता है। यह दृष्टिकोण स्थिरता को प्राथमिकता देता है और केवल घरेलू उत्पादन पर निर्भर रहने से जुड़े जोखिमों को कम करता है, जो जलवायु परिवर्तन के प्रति तेजी से संवेदनशील होता जा रहा है। इसके अलावा, आयात को घरेलू गेहूं बाजार को शांत करने और उपभोक्ता कीमतों को कम करने के तरीके के रूप में देखा जाता है। यह बढ़ती खाद्य लागतों से जूझ रहे परिवारों को बहुत जरूरी राहत प्रदान कर सकता है।

> आज भारत को खाद्य सुरक्षा की आवश्यकता है, लेकिन यह घरेलू किसानों की कीमत पर नहीं होनी चाहिए। किसानों को उनकी फसल का उचित मूल्य दिलाने और उनकी आजीविका की सुरक्षा करने के लिए ठोस कदम उठाने चाहिए। शून्य शुल्क पर गेहूं आयात करने का सरकार का निर्णय भारतीय किसानों के लिए गंभीर चिंताएं पैदा करता है। प्राथमिक चिंता भारतीय किसानों पर संभावित नकारात्मक प्रभाव को लेकर है। सस्ते आयात से घरेलू गेहूं की कीमतों में गिरावट आ सकती है, जिससे किसानों को अपनी फसल का उचित मूल्य नहीं मिल पाएगा।

यह सच है कि आज भारत को खाद्य सुरक्षा की आवश्यकता है, लेकिन यह घरेलू किसानों की कीमत पर नहीं होनी चाहिए। किसानों को उनकी फसल का उचित मूल्य दिलाने और उनकी आजीविका की सुरक्षा करने के लिए ठोस कदम उठाने चाहिए। शून्य शुल्क पर गेहूं आयात करने का सरकार का निर्णय भारतीय किसानों के लिए गंभीर चिंताएं पैदा करता है। प्राथमिक चिंता भारतीय किसानों पर संभावित नकारात्मक प्रभाव को लेकर है। सस्ते आयात से घरेलू गेहूं की कीमतों में गिरावट आ सकती है, जिससे किसानों को अपनी फसल का उचित मूल्य नहीं मिल पाएगा। इससे उनकी आजीविका और ऋण चुकाने की क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। समय के साथ अप्रत्याशित मौसम पैटर्न, फसल की कीमतों में उतार-चढ़ाव और अपर्याप्त संस्थागत समर्थन के कारण कर्ज का चक्र और गहरा हो गया है। इससे किसान भविष्य में गेहूं की खेती करने से हतोत्साहित हो सकते हैं, जिससे आयात पर दीर्घकालिक निर्भरता बढ़ेगी और गेहूं उत्पादन में भारत की आत्मनिर्भरता कमजोर हो सकती है। आयात पर निर्भरता बढ़ने से बाजार में अस्थिरता बढ़ सकती है, जिससे किसानों को भविष्य की योजना बनाना मुश्किल हो जाएगा। सरकार द्वारा गेहूं की खरीद में कमी हो सकती है, जिससे किसानों को अपनी फसल बेचने में मुश्किल होगी।

वर्तमान स्थिति में आयात पर निर्भर रहने के बजाय अधिक सूक्ष्म दृष्टिकोण की आवश्यकता है। सरकार को खाद्य सुरक्षा के लिए दीर्घकालिक, टिकाऊ रणनीति बनाने की आवश्यकता है। इसमें एमएसपी खरीद को मजबूत करना और वैध बनाना सबसे महत्त्वपूर्ण है। एमएसपी को वैध बनाना किसानों को एक सुरक्षा जाल प्रदान करता है, जिससे उन्हें बाजार में उतार-चढ़ाव के बावजूद उनकी फसलों के लिए न्यूनतम मूल्य का आश्वासन मिलता है। यह आश्वासन उन्हें बिचौलियों द्वारा संकटपूर्ण बिक्री और शोषण से बचाता है, जिससे उन्हें वित्तीय बर्बादी के लगातार डर के बिना अपनी कृषि पद्धतियों के बारे में निर्णय लेने में सशक्त बनाया जा सकता है।

इसके अलावा, भारत की गेहूं और चावल जैसी कुछ मुख्य फसलों पर भारी निर्भरता इसे बाहरी झटकों के प्रति संवेदनशील बनाती है। किसानों को दालों, बाजरा और अन्य सूखा प्रतिरोधी फसलों के विकल्पों में विविधता लाने के लिए प्रोत्साहित करने से समग्र खाद्य सुरक्षा और पोषण विविधता को बढ़ाया जा सकता है। इसे लक्षित सबसिडी, वैकल्पिक फसलों पर जानकारी और प्रशिक्षण प्रदान करने वाली विस्तार सेवाओं और इन फसलों के लिए मजबूत बाजार स्थापित करने के माध्यम से हासिल किया जा सकता है। अपर्याप्त भंडारण सुविधाओं और अकुशल परिवहन प्रणालियों के कारण फसल कटाई के बाद होने वाले नुकसान भारत में खाद्य असुरक्षा के प्रमुख कारण हैं। कोल्ड स्टोरेज सुविधाओं, बेहतर परिवहन नेटवर्क और मौसम पूर्वानुमान प्रणालियों में निवेश करने से खाद्य सुरक्षा में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है। गेहूं के आयात से जुड़ी जटिलताओं पर गहराई से विचार करते हुए, एक स्थायी खाद्य सुरक्षा रणनीति के लिए वैकल्पिक समाधानों की खोज करने की आवश्यकता है।

साक्षर या शिक्षित!

गौरव बिस्सा

हाल ही में यह खबर आई कि अमेरिका के कुछ स्कूलों में अध्यापकों को बंदूक लेकर आने की अनुमति होगी। निश्चित रूप से इसकी पृष्ठभूमि यह होगी कि पिछले कुछ समय से लगातार किसी बंदूकधारी द्वारा स्कूली बच्चों पर अंधाधुंध गोलीबारी करने की घटनाएं हुईं। मगर सवाल यह भी उठता है कि आखिर अमेरिका की शिक्षा प्रणाली किस जगह अनुतीर्ण हो गई? इंसानी मूल्यों से रहित शिक्षा मनुष्यों के रूप में शैतानों का निर्माण करती प्रतीत होती है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में पैसा कमाने, किसी पद को प्राप्त करने, येन-केन-प्रकारेण सभी सुविधाओं का भंडारण करने को ही सफलता मान लिया गया है। इसके पीछे शिक्षा का एक सबसे बड़ा उद्देश्य पिछड़ता प्रतीत हो रहा है, वह है अच्छे नागरिकों का निर्माण और मनुष्यता का विकास। तथाकथित डिग्रीधारियों का अत्यधिक पेशेवराना रुख विचलित करता है। 'फायदा क्या है', 'पैसा कितना मिलेगा' आदि की सूचना लेना एक स्तर तक तो सही है, लेकिन सिर्फ इसी विषय को सोचते रहना क्या शिक्षित होना है? यह प्रश्न मन को कचोटता है।

किसी कक्षा की उपाधि या डिग्री लेना, लिपिक जैसी नौकरी करना, पैसा कमाना और सिर्फ एक प्रतियोगिता का हिस्सा बनकर रह जाना ही क्या जीवन है? यही जीवन है, ऐसी शिक्षा कहां से मिली? दरअसल, वर्तमान समय में शिक्षित होने का अर्थ है आर्थिक क्षेत्र में महारत हासिल करना। शिक्षा तंत्र पैसा कमाना मात्र सिखा रहा लगता है। पैसा कमा लेना बहुत आसान है। उससे ज्यादा मुश्किल है ज्ञान कमाना यानी पढ़कर प्रज्ञा या विद्वता का विकास करना। प्रज्ञा का अर्थ है ज्ञान को जीवन में उतारने की शक्ति। इन दोनों से ही मुश्किल काम है मनुष्यता कमाना यानी लोगों से जुड़ना और उनके सुख-दुख में काम आने का भाव रखना। कष्ट काल में हमारे पास जितने अधिक मित्र होंगे, हम उतने ही सफल और शिक्षित माने जाएंगे। समस्या यह है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली मनुष्य न बनाकर मानो पैसा कमाने वाले यांत्रिक मनुष्यों का निर्माण कर रही है। इस प्रणाली में सभी के पास पैसा, सुविधाएं और संसाधन तो हैं, लेकिन उनमें लोगों से जुड़ कर उन्हें खुशी देने का भाव कमतर है।

शिक्षित होने का अर्थ इंसानियत का विकास है, मनुष्यता का जागरण है, समानुभूति महसूस करने का प्रक्रम है। अगर ये गुण नहीं तो कैसी शिक्षा, कैसी डिग्री और कैसी सफलता? एक चिकित्सक मरणासन्न मरीज को सामने पड़ा देखने के बावजूद अपनी फीस और खर्च पहले मांगे तो क्या वह शिक्षित है? अध्यापक बालक को पढ़ाने के बजाय उसे कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न देने का कहकर पैसे मांगे तो क्या वह अध्यापक शिक्षित है? ये चिकित्सक या अध्यापक सिर्फ एक डिग्रीधारी साक्षर अनुपयोगी अमानुष हैं। पुस्तकों को रट कर उपाधियां प्राप्त कर चुके संवेदनहीन ऐसे लोगों से समाज भरा पड़ा है। क्या ऐसे लोगों को सफल माना जा सकता है? क्या रोटी कमा लेना, आलीशान मकान और गाड़ी खरीद लेना और सभी संसाधन जुटा लेना ही जीवन है? नहीं। जीवन इससे कुछ अधिक, कुछ बड़ा है।

रोजाना मनुष्यों के अंग बेच देने, बेवजह शल्यक्रिया करने, अपनी जगह किसी अन्य व्यक्ति को परीक्षा में बिठाने आदि के विषय में पढ़कर पीड़ा होती है। क्या ऐसे काम करने वाले व्यक्तियों के पास उपाधियां नहीं थीं? वे उपाधिधारक थे, लेकिन मनुष्य वेश में अमानुष थे। इनके लिए पैसा ही सब कुछ था। सिर्फ पैसा बनाने लायक हो जाना ही शिक्षित होना है, तो आज कुछ तथाकथित शिक्षितों के माता-पिता वृद्धाश्रमों में क्यों होते हैं? वे वृद्धाश्रमों में इसलिए हैं कि उनकी संतानों के पास सिर्फ उपाधियां हैं, नैतिकता और संस्कार नहीं। वास्तविक शिक्षा नैतिक मूल्य देती है और इससे विहीन शिक्षा विकृत मानसिकता वाले लोगों को जन्म देती है। आंकड़ों के अनुसार, तथाकथित शिक्षित समाज में सर्वाधिक तलाक होते हैं अहंकार के चलते। तुच्छ बातों के कारण तलाक होना, तलाक दर का निरंतर बढ़ना क्या दर्शाता है? शिक्षा यह सिखा न सकी कि शिक्षित होने का दूसरा अर्थ है अहंकार का दमन। 'इदं न मम' के भाव का विकास शिक्षा है, जिसके अनुसार जो है वह दूसरों का है, मेरा नहीं।

पैसा कमाना द्वितीयक है। प्रारंभिक कार्य है मनुष्य में जीवन मूल्यों का संचार। इसी पल विचार करके देखा जा सकता है कि हमारा दस वर्षीय पुत्र नकल करके कक्षा में प्रथम आ जाता है। क्या हम उसकी पीठ थपथपाएंगे? नहीं। हम उसे समझाएंगे। बाद में वही पुत्र छब्बीस साल का होता है और रिश्वत देकर नौकरी लेना चाहता है। क्या हम उसे यह कहेंगे कि यह तो सेवा शुल्क है और भ्रष्टाचार ही आज का शिष्टाचार है? हम ऐसा नहीं कहेंगे। इसकी वजह है नैतिक मूल्य। शिक्षा नैतिक आचरण, समाज में योगदान देने की सीख देती है, सिर्फ पैसा कमाना नहीं सिखाती।

पशुओं के पास अपनी प्रकृति का निवास होता है, सुविधाएं होती हैं, भोजन होता है और सुंदरता भी। इन सबके बावजूद उनमें मनुष्य की तरह की संवेदना नहीं दिखती। मनुष्य में संवेदना और दूसरों के प्रति करुणा जगाने का काम करती है शिक्षा। अगर प्रेम, मनुष्यता और संवेदना नहीं है तो मनुष्य सिर्फ डिग्रीधारी निस्पंद संवेदनहीन मूरत है, शिक्षित नहीं। शिक्षा का अर्थ केवल कुछ तथ्यों का भंडारण नहीं है। शिक्षा, भीतर सोए मनुष्य तत्त्व को जगाना है। शिक्षा, आंतरिक श्रेष्ठता के जागरण का प्रकल्प है। शिक्षा से विनम्रता, प्रेमपूर्ण व्यवहार और राष्ट्रप्रेम के साथ समाज को योगदान देने का भाव जागना चाहिए। अगर ऐसा नहीं है तो वह व्यक्ति शिक्षित नहीं है, वह सिर्फ साक्षर है। पढ़ाई के साथ गुणों का विकास भी जरूरी है। शिक्षा व्यवहार में, सीख में, दूसरों को महत्त्वपूर्ण मानने में, समाज को सम्मान देने में झलकती है।

दुनिया मेरे आगे

> मनुष्य में संवेदना और दूसरों के प्रति करुणा जगाने का काम करती है शिक्षा। अगर प्रेम, मनुष्यता और संवेदना नहीं है तो मनुष्य सिर्फ डिग्रीधारी निस्पंद संवेदनहीन मूरत है, शिक्षित नहीं। शिक्षा का अर्थ केवल कुछ तथ्यों का भंडारण नहीं है। शिक्षा, भीतर सोए मनुष्य तत्त्व को जगाना है। शिक्षा, आंतरिक श्रेष्ठता के जागरण का प्रकल्प है।

सरोकार से दूर

जिस तरह कुछ वर्षों में सत्ता के लिए नैतिक क्षरण हुआ है, उससे राजनीति कलंकित हुई है। जाति, धर्म का दुरुपयोग हुआ है। कुर्सी ही सब कुछ नहीं है। चुनाव में जिस तरह से व्यक्तिगत हमले हुए हैं, वह स्वस्थ्य लोकतंत्र के लिए कतई उचित नहीं है। शीर्ष पर बैठे राजनेताओं से यह कदापि अपेक्षा नहीं है। लोकतंत्र में सर्वोपरि जनता होती है। जनता हर काम के लिए दर-दर की ठोकर खा रही है। नौकरशाह हर दफ्तर में अपमानित करते हैं और बिना चढ़ावा लिए कोई काम होता ही नहीं है। सवाल है कि आखिर जनता को इतना बेबस और लाचार किसने बनाया? बेरोजगार युवा बेरोजगारी पर सवाल नहीं पूछ सकता है। किसान अपनी फसलों के उचित दाम नहीं नहीं मांग सकते हैं, मजदूर अपनी उचित मजदूरी नहीं ले सकते हैं, तो आखिर इनकी सुध लेने वाला कौन है? जनप्रतिनिधियों को सुविधाएं इसलिए दी जाती हैं कि जनता की आवाज को सरकार के सामने रखें, लेकिन जनप्रतिनिधि किसी दल विशेष का होकर रह जाते हैं। हर जनप्रतिनिधि को हृदय पर हाथ रखकर बताना चाहिए कि वह जनता के लिए कितना समर्पित हैं और उसे कितना समय देते हैं।

- प्रसिद्ध यादव, बाबूचक, पटना

मानवता के विरुद्ध

गाजा पट्टी में इजराइल हमास युद्ध लगातार जारी है। इस युद्ध में इजराइल ही हावी नजर आ रहा है। 7 अक्तूबर के हमले के बाद से अब तक मौत का आंकड़ा 36284 हो चुका है। अब तक इस युद्ध में 82 हजार लोग घायल हो चुके हैं। हमास, जो शुरू में काफी बढ़-चढ़ कर हमले कर रहा था, अब उसके हौसले काफी पस्त हो चुके हैं। अब हमास ने कहा है कि अगर इजरायल युद्ध रोक देता है, तो वह बंधकों की अदला-बदली और फिर समझौते के तहत पूर्ण रूप से युद्ध बंदी को भी तैयार है। मगर उसका यह भी कहना है कि जब तक इजराइल हमले जारी रखेगा तब तक वह किसी भी तरह की वार्ता में शामिल नहीं होगा। मगर इजराइल ने युद्ध को आखिरी सीमा तक ले जाने की बात कही है। इंसानी जानों के साथ आखिर यहां कब तक खिलवाड़ होगा, अब इस युद्ध को समाप्त होना ही चाहिए। इस युद्ध को आठ माह हो चुके हैं। इस युद्ध को बंद कराने के लिए बड़ी ताकतों को अब बीच में आना ही होगा।

- मनमोहन राजावतराज, शाजापुर

शिक्षा का स्तर

इस बार 'क्यूएस' विश्वविद्यालय रैंकिंग 2025 में दुनिया के शीर्ष डेढ़ सौ विश्वविद्यालयों की सूची में केवल दो विश्वविद्यालय भारत के हैं। ये दो विश्वविद्यालय हैं- आइआइटी बांबे और आइआइटी दिल्ली। आइआइटी बांबे 118वें स्थान पर और आइआइटी दिल्ली 150वें स्थान पर है। ये दोनों विश्वविद्यालय तकनीकि शिक्षा से संबद्ध हैं। मानविकी विषयों की शिक्षा से संबद्ध कोई भी भारतीय विश्वविद्यालय इन डेढ़ सौ विश्वविद्यालयों में शुमार नहीं है। भारत एशिया में तीसरे नंबर पर है, जापान और चीन पहले और दूसरे नंबर पर हैं। शीर्ष चार सौ विश्वविद्यालयों में दिल्ली विश्वविद्यालय 328वें स्थान पर और अन्ना विश्वविद्यालय 383वें स्थान पर हैं। यह हमारी कमजोरी को दिखाता है कि हमारी शिक्षा की स्थिति ठीक नहीं है। हमें विकसित भारत बनाने के लिए केवल जीडीपी नहीं, शिक्षा की गुणवत्ता पर भी ध्यान देना होगा।

- वेद सिंह यादव, लखनऊ

मतदान और मौसम

चुनाव के सबक' (संपादकीय 5 जून) जनादेश का नीर क्षीर विवेचन है। मतदाताओं ने व्यथित मन से सत्तापक्ष या विपक्ष के किसी भी दल को बहुमत न देकर यह मनन करने योग्य संदेश दिया है कि देश में व्याप्त अत्यंत संवेदनशील मुद्दों से विचलन कर-के चुनाव प्रचार में गैर-उत्पादकीय मसलों को भावनाओं के क्रूर भंवर से अब उन्हें उबरना होगा। जनादेश का यह भी मौन संदेश है कि देशहित में सत्ता और विपक्ष कटुता व वैमनस्य की विभीषिका से उबरते हुए परस्पर सहयोग तथा रचनात्मक समर्थन की दिशा में न्यूनतम दो कदम अवश्य चलें। 'चुनाव के सबक' में साफ संकेत है कि चुनाव आयोग भविष्य में मौसम को दृष्टिगत रखते हुए ही न्यूनतम समय में चुनाव संपन्न कराए। आज जब पूरे देश में डिजिटल संसाधन का शोर है, तो फिर मतदान प्रक्रिया को भी इससे युक्त करने पर आयोग को गंभीरता से विचार करना चाहिए।

- अशोक कुमार, पटना

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

https://t.me/AllNewsPaperPdf

www.readwhere.com

चिंतन

नई उम्मीदों-चुनौतियों से भरा होगा मोदी 3:0 कार्यकाल

भाजपा नेता नरेन्द्र मोदी राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के नेता सर्वसम्मति से चुने गए हैं। अब वे 9 जून रविवार को तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेंगे। इसी के साथ मोदी 3:0 कार्यकाल शुरू होगा। राजग संसदीय दल के नेता चुने जाने पर मोदी ने भरोसा दिया है कि राजग सरकार के सभी फैसलों में सर्वसम्मति सुनिश्चित करने का प्रयास रहेगा। स्वाभाविक है कि गठबंधन की सरकार रहने के चलते पिछले दो कार्यकाल से इस तीसरे कार्यकाल में कार्यशैली अलग होगी। अब प्रधानमंत्री के रूप में मोदी नोटबंदी जैसे ऐलानिया फैसले नहीं कर सकेंगे। सरकार के फैसलों में कैबिनेट के समावेशी स्वरूप का असर दिखेगा। तीसरे कार्यकाल में जहां मोदी के सामने भाजपा के संकल्प पत्र में किए गए चुनावी वादे पूरे करने की चुनौती होगी, वहीं सहयोगियों की आकांक्षाओं को पूरा करने का लक्ष्य भी होगा। हो सकता है मोदी के नेतृत्व वाली नई राजग सरकार एक न्यूनतम साझा कार्यक्रम के अनुरूप कार्य करे। मोदी ने सुशासन, समावेशी विकास, जीवन की गुणवत्ता सुधारने, राज्यों के साथ बेहतर संबंध बनाने, वैश्विक विकास व शांति में भारत के योगदान को बढ़ाने, भारत को पांच साल में पांचवीं से तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने आदि का भरोसा दिया है। टीडीपी अध्यक्ष और राजग के अहम घटक चंद्रबाबू नायडू ने साफ संकेत दिया है कि क्षेत्रीय आकांक्षाओं और राष्ट्रीय हितों का संतुलन जरूरी है। यह मोदी के लिए साफ संकेत है। इस बार राजग सरकार को मजबूत विपक्ष का भी सामना करना होगा, राज्यसभा में बहुमत की राह और कठिन होगी। विपक्ष को भी रचनात्मक राजनीति को अंगीकार करना चाहिए और संसद में स्वस्थ बहस की परंपरा फिर से शुरू होनी चाहिए। मोदी की नई राजग सरकार के सामने अपने संकल्प पत्र में किए गए सेवा, सुशासन, गरीब क्लयाण, मुफ्त राशन, पानी और गैस कनेक्शन, पीएम सूर्यघर, आयुष्मान भारत, पक्के घर, स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार, उच्च शिक्षा में सुधार, इंफ्रास्ट्रक्चर, इन्वेस्टमेंट, हाई वैल्यू सर्विसेज, स्टार्टअप और टूरिज्म में बेहतर सुधार, 3 करोड़ लखपति दीदी, नारी वंदन अधिनियम, किसान कल्याण, श्री अन्न, नैनो यूरिया और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा, कृषि इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास, ग्लोबल मैन्युफैक्चरिंग हब, आत्मनिर्भर भारत, अर्बन हाउसिंग, ट्रांसपोर्टेशन, वाटर मैनेजमेंट, साफ हवा, कचरे के ढेर से मुक्ति और स्वच्छ पानी के लिए मिशन मोड पर काम, नए एयरपोर्ट हाईवे, मेट्रो, अंडरवाटर मेट्रो का निर्माण, भारत स्पेस, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, क्वांटम, सेमीकंडक्टर, ग्रीन हाइड्रोजन, इलेक्ट्रिक वीकल टेक्नोलॉजी में अग्रणी बनने जैसे वादे पूरे करने की चुनौती होगी। समान नागरिक संहिता और एक देश, एक चुनाव जैसे एजेंडे भी सामने होंगे। कृषि, श्रम, उर्वरकों और बिजली पर सब्सिडी में सुधार के कदम उठाए जाने हैं। पेट्रोलियम को जीएसटी के दायरे में लाया जाना है। कुछ पीएसयू बैंकों का निजीकरण, संसदीय सीटों का परिसीमन और जनगणना जैसे अहम काम भी करने होंगे। जाति जनगणना, एससी व ओबीसी कोटे में मुस्लिम आरक्षण, समान नागरिक संहिता जैसे मुद्दे नेपथ्य में रखने पड़ सकते हैं। विधानसभा व लोकसभा में महिला आरक्षण भी लागू किया जाना है, परिसीमन के बाद लागू करने की बात है। मोदी की नई राजग सरकार में अब सरकार व घटक दलों के बीच संवाद को प्राथमिकता देनी होगी। आर्थिक सुधार के अगले चरण में भी प्रवेश किया जाना है। नई सरकार जनाकांक्षाओं पर खरा उतरने की कोशिश करेगी।

आम चुनाव
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

लोकसभा के जनादेश के मायने

> आम चुनाव परिणामों ने एक बार फिर सिद्ध कर दिया है कि मतदाता के मन को समझना इतना सरल, इतना आसान नहीं है। इसी तरह से एक्जिट पोल और धरातलीय परिणामों में अंतर से साफ हो जाता है कि मतदाता खुलता भी नहीं है तो किसके पक्ष में मतदान करके आया है उसे वह मुखर होकर बताता भी नहीं है। चुनाव परिणामों से सट्टा बाजार की भी पोल खुल कर रह गई है। ऐसे में सवाल यह हो जाता है कि मतदाता इस जनादेश के माध्यम से आखिर संदेश क्या देना चाहते हैं?एक बात और साफ हो जानी चाहिए कि 18वीं लोकसभा के चुनाव परिणाम कहीं भी खंडित जनादेश नहीं है। इन्हें खंडित जनादेश मानने की गलती की भी नहीं जानी चाहिए।

अठारहवीं लोकसभा के चुनाव परिणामों ने एक बार फिर सिद्ध कर दिया है कि मतदाता के मन को समझना इतना सरल, इतना आसान नहीं है। इसी तरह से एक्जिट पोल और धरातलीय परिणामों में अंतर से साफ हो जाता है कि मतदाता खुलता भी नहीं है तो किसके पक्ष में मतदान करके आया है उसे वह मुखर होकर बताता भी नहीं है। चुनाव परिणामों से सट्टा बाजार की भी पोल खुल कर रह गई है। ऐसे में सवाल यह हो जाता है कि मतदाता इस जनादेश के माध्यम से आखिर संदेश क्या देना चाहते हैं? लोकसभा चुनाव परिणामों से यह तो साफ हो गया है कि मतदाता ने राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन(एनडीए) को तीसरी बार सरकार चलाने या यों कहें कि कंटिन्यूटी का अवसर दे दिया है, क्योंकि एनडीए को स्पष्ट बहुमत दिया है। ऐसा नहीं है कि परिणाम के बाद किसी बाहरी दल के सहयोग की आवश्यकता हो। बहुमत के 272 की तुलना में एनडीए को 293 सीटें मिली हैं वहीं पिछले दो चुनावों की तरह इस बार भाजपा को अकेले स्पष्ट बहुमत के आंकड़े से दूर अवश्य रखा है, पर सबसे बड़े दल के रूप में भारतीय जनता पार्टी(भाजपा) सामने आई है। देखा जाए तो 10 साल बाद किसी भी एक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला है। इससे यह भी तो स्पष्ट हो जाता है कि सत्ता विरोधी लहर उतनी नहीं रही जितनी दस साल के शासन के बाद सामान्यतः आ जाती है, पर उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, हरियाणा आदि के माध्यम से मतदाता ने अपनी नाराजगी जाहिर करने में किसी तरह का संकोच भी नहीं किया है। दरअसल जनआंकाक्षाओं और सरकार की परफारमेंस के बीच अंतर को पाटने में सरकार पूरी तरह से सफल नहीं रही। हांलाकि परफारमेंस के पैरामीटर्स या यों कहें कि मापदंड बदलते रहते हैं। एक बात यह भी स्पष्ट हो जानी चाहिए कि यह जनादेश केन्द्र सरकार की वर्तमान नीतियों का नकार नहीं हैं, अपितु मतदाता सरकार द्वारा नेपथ्य में डाले हुए विषयों को सामने लाकर आगे बढ़ने की दिशा में दिया गया संदेश है और इस जनादेश से एकदम साफ संदेश है कि सरकार की प्राथमिकता में इन विषयों को लेना ही होगा।

दरअसल जनता कहीं ना कहीं संतुलन चाहती है। सरकारों को जहां एग्रेसिव होना अच्छा लगता है वहीं जनता कहीं ना कहीं डिलीवरी सिस्टम को लेकर भी चिंतित रहती है। केवल उज्वल और एग्रेसिव छवि, सफल विदेश नीति, राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद, धर्म, आर्थिक विकास या यों कहें कि इकोनोमिक ग्रोथ के साथ ही बहुत से ऐसे कारक है जिन्हें नकारा नहीं जा सकता। इसमें कोई दो राय नहीं कि दुनिया का सबसे बड़ा और सफलतम लोकतंत्र हमारे यहां है। लोकतांत्रिक देशों में सर्वाधिक राजनीतिक दलों वाला भी हमारा ही देश है। हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था व चुनाव व्यवस्था की सारी दुनिया कायल है, पर इसके साथ ही अब आमजन का मनोभाव यह है कि राजनीतिक दलों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा होनी चाहिए ना कि मंडी बाजार जैसी एक दूसरे पर छींटाकशी के हालात। वास्तविकता तो यह है कि प्रमुख राजनीतिक दलों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा तो

रही ही नहीं है,अपितु दिन प्रतिदिन एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप लगाना ही एकमात्र काम रह गया। मानो या ना मानो पर आज हालात यह हो गए हैं कि राजनीतिक शालीनता तो रही ही नहीं। दूसरी बात धर्म की करें तो उत्तर प्रदेश में अयोध्या की सीट पर भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार की हार और यूपी के परिणाम बीजेपी के लिए घोर निराशाजनक होने से साफ संकेत हैं कि केवल श्रीराम लला या धर्म के नाम पर ज्यादा दिन नहीं चला जा सकता। लोगों का मानना है कि अब राम मंदिर बन गया वह सबके सामने हैं तो अब उसे जनमानस की आस्था का केन्द्र रहने दो न कि उसे राजनीतिक रूप से भुनाना। हिन्दी बेल्ट के परिणाम इसे साफ कर देते हैं। लोग आतंकवादी गतिविधियों व असामाजिक गतिविधियों के खिलाफ सख्त कदम को तो उचित मानते हैं, पर अब इसमें धर्म का प्रयोग कुछ अति ही लगने लगा है।

एक अन्य बिंदु आर्थिक एजेंडा को लेकर है। कहीं भी मतदाता ने आर्थिक एजेंडे को नकारा नहीं है, पर लोग अब महंगाई से त्रस्त हो रहे हैं तो बाजार पर सरकार का नियंत्रण कम होने से परेशान हैं। जनमानस जहां आर्थिक क्षेत्र में हाई ग्रोथ चाहने लगा है तो सबसे बड़ी समस्या रोजगार के अवसरों को लेकर है। पक्ष व विपक्ष सभी का प्रिय मुद्दा नौकरियां है। सरकार जहां कहती है कि लाखों की संख्या में नौकरी के अवसर विकसित किए हैं वहीं विपक्ष नौकरियां नहीं मिलने की बात करता रहा है। इन चुनावों में भी हिंदी बेल्ट में नौकरियों की कमी का अंडर करंट अवश्य रहा है, इसलिए नौकरियों के अवसर विकसित करने के साथ ही नौकरियां उपलब्ध कराने और उसका प्रोपेगेंडा करने की आवश्यकता है। इसके साथ ही आम आदमी का जीवनयापन आसानी से हो सके, इसके लिए सरकार को विजिलेंट रहना ही होगा। इसी तरह से आधारभूत संरचनाओं के विस्तार पर जोर देना होगा। स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवहन, सड़क आदि क्षेत्रों में सरकार को अपने एजेंडे को आगे बढ़ाना ही काफी है। आमजन शांति, प्रेम और स्नेह का वातावरण, तेजी से समग्र विकास, विदेशों में गौरव और आधारभूत सुविधाओं का विस्तार चाहता है। रोजगार की सहज उपलब्धता और बाजार पर सरकार की नियंत्रण होने से जीवनयापन और अधिक आसान हो सकता है।

जहां तक विदेश नीति की बात है इसमें कोई दो राय नहीं कि पिछले दस सालों में भारत अब दुनिया के देशों के सामने चौधरी की भूमिका निभाने लगा है। आज कोई भी देश चाहे वह कितना भी बड़ा, संपन्न और शक्तिशाली हो पर भारत को इग्नोर करने की गलती नहीं कर सकता। एक बात और साफ हो जानी चाहिए कि 18वीं लोकसभा के चुनाव परिणाम कहीं भी खंडित जनादेश नहीं है। इन्हें खंडित जनादेश मानने की गलती की भी नहीं जानी चाहिए। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को स्पष्ट बहुमत दिया गया है तो भारतीय जनता पार्टी को सबसे बड़ा दल बनाते हुए सबको साथ लेकर चलते स्वस्थ प्रतिस्पर्धा से आगे बढ़ने का मैसेज है। केन्द्र व राज्यों के संबंधों को विकास में सहभागी बनाने की आवश्यकता है, इसलिए निराश होने की कोई बात नहीं है अपितु राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को स्पष्ट बहुमत और मजबूत विपक्ष के माध्यम से लोकतांत्रिक व्यवस्था को और अधिक गतिमान बनाने का मैसेज है। नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री के रूप में अपने तीसरे कार्यकाल में देश को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और विदेशों से संबंध के रूप में देश को आगे ले जाने की कोशिश करेंगे। अर्थव्यवस्था को और मजबूत करेंगे, नई आर्थिक क्षेत्र में भारत में निवेश देखने को मिलेगा। मोदी सबको साथ लेकर चलेंगे और सबका विकास करेंगे।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया **edit@haribhoomi.com** पर दे सकते हैं।

क्षमा करें और भूल जाएं

संकलित
दर्शन

जीवन में हमें कई बार चुनौतियों और निराशाओं का सामना करना पड़ता है। जीवन में हमारा किसी न किसी ऐसी घटना से साक्षात्कार होता है, जो हमें पसंद नहीं होती या जिसके कारण हमें दुख होता है। जैसे किसी व्यक्ति ने हमारा किसी तरह अनुचित किया हो, शब्दों से हमें भावनात्मक रूप से दुख पहुंचाया हो या शारीरिक कष्ट पहुंचाया हो। परिणाम यह होता है कि हम निराश, दुखी और क्रोधित हो जाते हैं। जब तक हम किसी को क्षमा नहीं करते, तब तक हमारे साथ क्या होता है? हम हमेशा उसी घटना के बारे में सोचते रहते हैं या किसी और से भी उन बातों को दोहराते रहते हैं। कुछ लोग जिनका स्वयं पर नियंत्रण नहीं होता, वे शारीरिक रूप से उस व्यक्ति को हानि पहुंचाते हैं या अपना क्रोध किसी और पर निकालते हैं। ऐसा होने पर हम अपने चारों ओर नकारात्मक वातावरण पैदा कर लेते हैं। अपने मन की शांति खो देते हैं। कुछ क्षणों में घटित हुई घटना के लिए हम अपने जीवन के तमाम घंटे इस बात में लगा देते हैं कि उसका बदला कैसे लें। यदि हम इसके बजाय क्षमा कर दें तो हम इस समय का शांतिपूर्वक सदुपयोग कर सकते हैं। हम अपना ध्यान उस ओर लगाएं, जो आध्यात्मिक रूप से मददगार हो। जैसे कि पिता-परमेश्वर को याद करना, ध्यान-अभ्यास करना, निष्काम सेवा करना और आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करना। आध्यात्मिक मार्ग पर ध्यान-अभ्यास में सफलता अपने मन को स्थिर करके अंतर में ध्यान टिकाने पर निर्भर है।

भगवान को आपके धन की कोई आवश्यकता नहीं

संकलित
प्रेरणा

एक सेठ के पास एक व्यक्ति काम करता था। सेठ उस व्यक्ति पर बहुत विश्वास करता था। वो व्यक्ति भगवान का बहुत बड़ा भक्त था। वह सदा भगवान के चिंतन भजन कीर्तन स्मरण सत्संग आदि का लाभ लेता रहता था। एक दिन उस ने सेठ से श्री जगन्नाथ धाम यात्रा करने के लिए कुछ दिन की छुट्टी मांगी सेठ ने उसे छुट्टी देते हुए कहा- भाई! मैं तो हूं संसारी आदमी हमेशा व्यापार के काम में व्यस्त रहता हूं, तुम जा ही रहे हो तो यह लो 100 रुपए मेरी ओर से श्री जगन्नाथ प्रभु के चरणों में समर्पित कर देना। भक्त सेठ से सौ रुपए लेकर श्री जगन्नाथ धाम यात्रा पर निकल गया। वह श्री जगन्नाथ पुरी पहुंचा। मंदिर की ओर प्रस्थान करते समय उसने रास्ते में देखा कि बहुत सारे संत, भक्त जन, वैष्णव जन, हरि नाम संकीर्तन बड़ी मस्ती में कर रहे हैं। भक्त भी वहीं रुक कर हरिनाम संकीर्तन का आनंद लेने लगा। उसने सोचा क्यों ना सेठ के सौ रुपए से इन भक्तों को भोजन करा दूँ। सबको भोजन कराने में उसे कुल 98 रुपए खर्च करने पड़े। उसके पास दो रुपए बच गए उसने सोचा चलो अच्छा हुआ दो रुपए जगन्नाथ जी के चरणों में सेठ के नाम से चढ़ा दूंगा। भक्त ने श्री जगन्नाथ जी के दर्शन किए और अंत में उसने सेठ के दो रुपए श्री जगन्नाथ जी के चरणो में चढ़ा दिए। भगवान को आपके धन की कोई आवश्यकता नहीं है। भगवान को वह 98 रुपए स्वीकार है जो जीव मात्र की सेवा में खर्च किए गए और उस दो रुपए का कोई महत्व नहीं जो उनके चरणों में नगद चढ़ाए गए।

सारा संसार

कनिपकम विनायक मंदिर आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में तिरुपति से लगभग 75 किलोमीटर दूरी पर स्थित भारत के प्राचीन गणेश मंदिर में से एक है, जो अपनी ऐतिहासिक संरचना और आंतरिक डिजाइन के लिए जाना जाता है।

आवश्यक
डॉ. मोनिका शर्मा

ईवीएम पर सवाल से पहले सोचें

अठारहवीं लोकसभा चुनावों में बहुत से जनप्रतिनिधियों में ईवीएम की विश्वसनीयता और केंद्रीय चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली पर बार-बार सवाल उठाए। लोकसभा हो या राज्यों की विधानसभा के लिए प्रतिनिधि चुनने की प्रक्रिया। किसी ना किसी दल के लोग चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली को लेकर आशंका जताते रहते हैं। आरोपों और उलाहनों का यह खेल हर बार खेला जाने लगा है। आक्षेपों और आरोपों को किसी पुख्ता सबूत के साथ सामने लाने के बजाय अफवाह फैलाने का ही काम किया जाता है। असल में स्वायत्त संवैधानिक निकाय की कार्यप्रणाली पर यूं प्रश्नचिह्न लगाना देश की आम जनता को भी भय और भ्रम के घेरे में लाने वाला बर्ताव है। ऐसे में अब चुनाव आयोग ने भी सख्ती से कुछ प्रश्न किए हैं। दुखद है कि केंद्रीय चुनाव आयोग के कामकाज को लेकर उठाए जाने सवाल जनादेश अपने पक्ष में आने के बाद सुनाई नहीं देते, जिसका सीधा सा अर्थ है कि निराधार शिकायतों से केवल माहौल बिगाड़ने का प्रयास किया जाता है। चुनावी प्रक्रिया के दौरान शंका का माहौल बनाने वाले जन-प्रतिनिधि परिणामों का रुझान देखकर ही सुर बदल लेते हैं। यही वजह है कि निर्वाचन आयोग 2024 के आम चुनावों के परिणाम घोषित किए जाने पहले ही स्पष्ट कहा था कि जन-प्रतिनिधि किसी भी तरह की गड़बड़ी के साक्ष्य सामने रखें तो जरूर कार्रवाई की जाएगी,वरना अफ़वाहों का कोई इलाज नहीं है। समझना मुश्किल नहीं कि चरम मौसमी स्थितियों और बड़ी आबादी वाले भारतीय लोकतन्त्र में चुनाव प्रक्रिया को पूरा करना आसान काम नहीं है। दुनियाभर में भारतीय चुनाव आयोग के नवाचारों और प्रबंधों को सराहा जाता है। बावजूद इसके आधारहीन आरोप लगाने की स्थितियों के लेकर मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने कहा, 'हम पर झूठे आरोप लगाए गए। हमें लापता जेंटलमेन कहा गया, लेकिन इसी दौरान देश में मतदान का विश्व रिकॉर्ड बन गया। यह हमारे लोकतंत्र की ताकत है। हमने फेक न्यूज रोकी, लेकिन खुद पर होने वाले हमले नहीं रोक पाए। ध्यातव्य है कि पहली बार निर्वाचन आयोग ने लोकसभा चुनाव के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कुछ बातें सामने रखीं हैं। 1952 से लेकर अब तक के किसी भी लोकसभा चुनाव के दौरान आयोग द्वारा मतदान के बाद और परिणाम घोषित किए जाने से पहले कभी प्रेस कॉन्फ्रेंस नहीं की गई है। ऐसे में प्रश्न उठाने वाले राजनीतिक दलों और उनके प्रतिनिधियों को निर्वाचन आयोग के प्रश्नों का भी जवाब देना चाहिए।चिंतनीय है कि कभी ईवीएम में गड़बड़ी करने का आरोप तो कभी निर्वाचन आयोग पर पक्षपात करने के सनसनीखेज आरोप लगाकर चुनाव प्रणाली का उपहास बनाया जाता है, जबकि अब आम जनता भी यह प्रश्न करने लगी है कि किसी दल की अपनी जीत या बेहतर प्रदर्शन करने पर ईवीएम मशीन को लेकर कोई शिकायत क्यों नहीं रहती? लोकसभा चुनाव-2024 में भी बार-बार ईवीएम के साथ छेड़खानी के आरोप लगाए गए। चुनाव आयोग के हर काम में मीनमेख निकालने का रुख अपनाया गया। निर्वाचन आयोग की कोशिशों को सराहने के बजाय हर बार कटघरे में खड़ा करने का ही बर्ताव सामने आया। शोर मचाने वाले दल और जन-प्रतिनिधि जनादेश मिलने पर चुप्पी साध लेते हैं। लोकतन्त्र में नेताओं के आधारहीन असंतुष्टि के इस व्यवहार का दोहराव वाकई चिंतनीय है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

अंतर्मन

आज की पाती

ईवीएम बदनाम होने से बच गई

आम चुनाव से पहले कुछ राजनीतिक दल और अन्य लोग चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली और ईवीएम पर संदेह कर रहे थे। इन पर सवाल ज्यादातर तभी खड़े किए जाते हैं जब कहीं भाजपा जीत हासिल करती है। लेकिन इस बार के आम चुनाव में भाजपा ने जीत हासिल की, पर पूर्ण बहुमत नहीं मिलने के कारण ईवीएम शायद बदनाम होने से बच गई। हैरानी की बात है कि हाल ही में लोकसभा चुनाव में भाजपा को पूर्ण बहुमत न मिलने और कांग्रेस के गठबंधन इंडिया को 200 से अधिक सीटें मिलने के कारण इस पर किसी ने भी, खास तौर पर कांग्रेस और आप ने ईवीएम पर सवाल खड़े नहीं किए। देश में चुनाव आयोग हर चुनाव से पहले ईवीएम की उचित और निष्पक्ष जांच करता है।

-रविन्द्र जोशी, बिलासपुर

करंट अफेयर

फ्रांस यूक्रेन को मिराज लड़ाकू विमान देगा

फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने बृहस्पतिवार को घोषणा की कि फ्रांस यूक्रेन को रूस के आक्रमण के खिलाफ देश की रक्षा में मदद करने के लिए अपने मिराज लड़ाकू विमान प्रदान करेगा। उन्होंने यह बात डी-डे आक्रमण को स्मरण करने के लिए यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की के फ्रांस में विश्व नेताओं के साथ शामिल होने के बाद कही। फ्रांस को नाजियों के कब्जे से छुड़ाने के लिए छह जून, 1944 को नॉरमेंडी नामक स्थान पर लड़ाई शुरू हुई थी। छह जून को फ्रांस में 'डी-डे' के तौर पर मनाया जाता है। जेलेंस्की पश्चिमी देशों से अधिक मदद लेने के लिए फ्रांस में थे जबकि उनकी सेना पूर्वी शहर खारकीव के निकट रूसी हमले को रोकने के लिए संघर्ष कर रही थी जो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोप का सबसे बड़ा संघर्ष बन गया है। मैक्रों ने फ्रांसीसी सार्वजनिक प्रसारक को बताया कि वह शुक्रवार को यूक्रेन के साथ नए सहयोग और फ्रांसीसी निर्मित लड़ाकू विमान मिराज 2005 की बिक्री की घोषणा करेंगे जिससे यूक्रेन को रूसी हमलों के खिलाफ अपनी धरती और अपने हवाई क्षेत्र की रक्षा करने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि रूस यूक्रेनी पायलटों को प्रशिक्षण देना भी शुरू कर देगा।

ऑफ बीट

अल्जाइमर को वास्तव में उलटा किया जा सकता है

अल्जाइमर से पीड़ित दो लोगों ने दावा किया है कि उन्होंने जीवनशैली में साधारण बदलावों से इस बीमारी पर विजय पा ली है। डिमेंशिया और अल्जाइमर पिछले दस वर्षों से यूके में प्रमुख हत्यारों में से एक रहे हैं, जो 2022 में 11.4% मौतों के लिए जिम्मेदार हैं। हालांकि नई दवाएं बीमारी की प्रगति को कम कर सकती हैं, लेकिन अधिक सबूत सामने आ रहे हैं कि अल्जाइमर के लक्षणों को पलटने के लिए स्वस्थ जीवन शैली को एकीकृत करने जैसा सरल कुछ भी नहीं हो सकता है। अल्जाइमर रोग को दो उपसमूहों में विभाजित किया जा सकता है, पारिवारिक और छितराए हुए। अल्जाइमर के केवल 5% रोगी पारिवारिक, वंशानुगत होते हैं, और 95% अल्जाइमर रोगी पर्यावरण, जीवनशैली और आनुवंशिक जोखिम कारकों के कारण छितराए हुए होते हैं। नतीजतन, अल्जाइमर से निपटने के लिए सबसे प्रभावी रणनीति रोकथाम और स्वस्थ जीवन शैली जीना है। इसने शोधकर्ताओं को अल्जाइमर से जुड़े जोखिम कारकों का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया है। अल्जाइमर से पीड़ित दो लोग, सिसी ज़र्बे और साइमन निकोल्स, दावा करते हैं कि उन्होंने जीवनशैली में सीधे बदलावों से इस घातक बीमारी को हरा दिया है।

ट्रेंड

शिक्षा में गुणात्मक बदलाव

मेरे जीवन का हर पल भारत के संविधान के महान मूल्यों के प्रति समर्पित है। ये हमारा संविधान ही है, जिससे पिछड़े परिवार में पैदा हुए मुझ जैसे व्यक्ति को राष्ट्रसेवा का अवसर मिला है। ये हमारा संविधान ही है, जिसकी वजह से आज करोड़ों देशवासियों को गरिमापूर्ण जीवन मिल रहा है।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

इतिहास लिखा जाएगा

जब अब से वर्षों बाद हमारे समय के बारे में इतिहास लिखा जाएगा, तो आइए हम वह पीढ़ी बनें जिसने अपने समय में लोकतंत्र को बचाया। हमारा लोकतंत्र उतना ही मजबूत है जितना हम सब मिलकर इसे मजबूत बनाते हैं।

-जो बाइडेन, अमेरिकी राष्ट्रपति

आहार शुचिता आवश्यक

रोगोत्पत्ति प्रायः अनियमित आहार विहार के कारण होती है। आहार का संबंध मनुष्य के मन से है। शास्त्र और वैज्ञानिकों के अभिमत के अनुसार बिना आहार शुचिता के स्वस्थ जीवन संभव नही है। अत: सभी के लिए सम्पूर्ण पोषण सुनिश्चित करना समाज और सरकारों का उत्तरदायित्व है।

-अवधेशानंद, आध्यात्मिक गुरु

जांच होनी चाहिए

पेपर लीक, धांधली और भ्रष्टाचार नीट समेत कई परीक्षाओं का अभिन्न अंग बन गई हैं। इसकी ज़िम्मेदारी मोदी सरकार की है। ये अभ्यर्थियों के भविष्य से खिलवाड़ है। सुप्रीम कोर्ट की देखरेख में जांच होनी चाहिए।

-मल्लिकार्जुन खरगे, कांग्रेस अध्यक्ष

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय
टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-42422221 पर या सीधे मेल से **aapkepatra.haribhoomi@gmail.com** पर भेज सकते हैं।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

https://t.me/AllNewsPaperPaid https://t.me/AllNewsPaperPaid

Want to get these Newspapers Daily at earliest

1. AllNewsPaperPaid
2. आकाशवाणी (AUDIO)
3. Contact I'd:- https://t.me/Sikendra_925bot

Type in Search box of Telegram
@AllNewsPaperPaid And you will find a Channel
Name All News Paper Paid Paper join it and receive
daily editions of these epapers at the earliest

Or you can tap on this link:

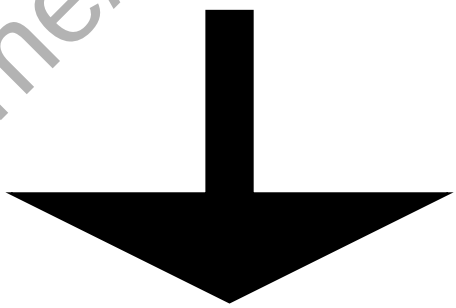

https://t.me/AllNewsPaperPaid

https://t.me/AllNewsPaperPaid https://t.me/AllNewsPaperPaid

https://t.me/AllNewsPaperPaid